विषय सूची

श्री वीतरागाय नमः

रामायण—उत्तरार्द्ध

[तृतीय भाग]

अष्टम त्रिक महापुरुष चरित्र

दोहा

जिन वाणी नित्य दाहिने, अरिहन्त सिद्ध जगदीश।
परमेष्ठि रक्षा करें त्रिपद धार मुनीश।
वाग्देवी वरदायिनी, कविजन केरी माय।
कृपा करी माहे दीजिया, सुमति बुद्धि सुखदाय॥
पास जिस समय लखन के, पहुँचे राम नरेश।
रणभूमि में शूर ने सबके रोप विशेष॥
सम्बोधन कर अनुज को यों बोले भगवान्।
अब भ्राता अपरा मति करो धीरज मैदान॥

बार बार सिंह नाद शब्द कर तुमने मुझे बुलाया है।
पर देखा मैंने आन यहाँ पर, तेरा पक्ष सवाया है॥
अब जल्दी अमोघ शस्त्र धारा शत्रु को मार भगाना है।
क्योंकि पीछे सिया अकेली, शीघ्र यहाँ पर आना है॥

दोहा

सुन राम के जिस समय, अनुज वीर ने बैन।
कुछ रोषी में आनके, लग इस तरह कहन॥

यह सरलपना अब भ्रात कभी ना मन में आपके आता है।
सिंहनाद मैं किया नहीं प्रपंच कोइ दिखलाता है॥

यह विचारवान तमाम फेर, राघव चहुँ ओर घूमते हैं।
पता सिया का नो लगती, वनचर बन फिरे सूझते हैं॥

दोहा

रामचन्द्र वापिस चले, पहुँचे निज स्थान।
सिया नजर आई नहीं लगे करि पछतान॥

रह गये चक्कर के सब तोते हृदय पर वज्रापात हुआ।
वह दुःख कहा नहीं जा सकता जिस काठिन्य से दिल में घाव हुआ॥
इधर उधर को रह घूम नैनों से नीर बरसता है।
बिना नीर मछली जैसे सीता बिन राम तरसता है॥

दोहा

पंख बिना पक्षी पड़ा देखा जब सुखधाम।
सीता को कोई ले गया कही विचारा राम॥

बना सहायक ये सीता का इस कारण यह हाल हुआ।
टूटे पंख मरो हैं समझो इसका भी अब काम हुआ॥
फिर राम ने मूल मंत्र सुना पक्षी का कार्य संवारा है।
कलंक पाप अपना पक्षी फिर चौथे स्वर्ग सिधारा है।
यदि मणि हो तो मणी हो भावों को पर्याय कर डाला।
स्वामी हो तो ऐसे हों जिन विराध का भी दुःख टाला॥
राम ढूँढ रहे सीता को पक्षी स्वर्गों में जा पहुँचा।
वीर विराध भी मौका पा पुष्पक रथ में आ पहुँचा॥

दोहा

रणभूमि में त्रिशिरा लक्ष्मण ने दिया मार।
वीर विराध ने लक्ष्मण का आकर किया जुहार॥

चन्द्रोदर का पुत्र हूँ अनुराधा अंगजात।
खरदूषण शत्रु मेरे करी पिता की घात॥
पाताल लंक को छीन लिया, अब शरण आपकी आता हूँ।
आज्ञा दो मुझ सेवक को, कुछ सेवा करना चाहता हूँ॥
महाराज इशारा कर दीजै, दो हाथ यहाँ पर दिखलाऊँ।
कुछ सेवा आपकी हो जावेगी, पिता का बदला मैं पाऊँ॥

दोहा

इसी काम के वास्ते, संग्रह किया सामान।
प्रभु हमारे पर करो, आप यही अहसान॥
कुछ मुस्काय लक्षमण बोले, सुन योद्धा वीर विराध जरा।
जो रहे भरोसे औरों के, वह आज नहीं तो काल मरा॥
अपने बल से बलवन्त कहावे पर बल नित्य अधूरा है।
जो कष्ट पड़े पर घबरावे विद्वान् नहीं वो शूरा है॥

दोहा

भाव आपके हृदय के, मैंने लिए पहचान।
आराम जरा यहाँ पर करो, देखो रण मैदान॥
यदि राज की इच्छा आपको है तो राम पास जा अर्ज करो।
वह तुम्हें औषधि देवेंगे, जैसी भी जाहिर मर्ज करो॥
विषधर नाग समान विराध की खर के दल पर नजर पड़ी।
हथियारबंद यहाँ विराध की सेना जितनी भी सब तनी खड़ी॥

दोहा

देख विराध को विरोधी खर, भभक उठा तत्काल।
शक्ति जो थी लगा दइ नेत्र करके लाल॥
गरज मेघ समान घोर कर, शक्ति वार भरपूर किया।
पर एक सुमित्रानन्दन ने बहु दल का चकनाचूर किया॥

फेर झपट कर खर मारा, दूषण ने कदम बढ़ाया है।
बस एक बाण से लक्ष्मण ने उसको परभव पहुँचाया है॥

दोहा

ज्यों सहस्रांशु के उदय से, तारागण छिप जाय।
ऐसे ही बाकी शूरमा भागे जान बचाय॥

प्राचीपति निज मार्ग पूर्ण कर, अस्ताचल पर जाने लगा।
इधर सहित विराध अनुज भी पास राम के आने लगा॥
अब चलत समय श्री लक्ष्मण जी का, बाँया नेत्र फड़क रहा।
यूं समझ सिया हो गया विघ्न, कोई दिल अन्दर से धड़क रहा॥

दोहा

रामचन्द्र को आनकर करी अनुज प्रणाम।
रंग फीका श्रीराम का मन में आर्तध्यान॥

भाई के दुःख को देख लक्ष्मण नेत्रों में जल भर लाया है।
श्रीराम के चरणों में गिर कर लक्ष्मण ने वचन सुनाया है॥
यह तो मुझको सूझ गया कि, सिया नजर नहीं आती है।
और देख तुम्हारा अशुभ ध्यान मेरी तबियत घबराती है॥

दोहा

यदि और कोई बात है सो भी कहो उचार।
जिस कारण से आपका आर्तध्यान अपार॥
अब भ्राता कैसे कहूँ दुःख मेरा आकार।
पता नहीं कैसे कहाँ समा गई सिया नार॥

(श्री राम व च)

आज भाई कहूँ क्या मैं निज की व्यथा
न इधर का रहा न उधर का रहा।

शरणागत सिया पत्नी की रक्षा न की,
अब यह तू ही बता मैं किधर का रहा ॥१॥
वन में दिल को जटायु से बहलाती थी
ना समझा उसे राजधानी की थी।
अब लक्ष्मण मा कहाँ यह मुसीबत में है,
मैं इधर का रहा न उधर का रहा ॥२॥
मुझे यह तो है निश्चय ना तोड़े धरम
कर दे प्राणों का त्याग न मुझे यह भ्रम।
कहाँ जनकात्मजा है मेरा शर्म है राम,
मैं इधर का रहा न उधर का रहा ॥३॥
सम्मुख सालों के उसने धरा था मुझे,
रक्षा करना उमर भर कहा था मुझे।
कैसे दुनियाँ में मुख अपना दिखलाऊँगा
ना इधर का रहा ना उधर का रहा ॥४॥
भय कर्म तूने क्या का यह बदला लिया,
इस विपिन में प्यारी जुदा कर दई।
मेरी इज्जत तो खाक क्या गई कर दई,
ना इधर का रहा न उधर का रहा ॥५॥
भय भ्राता यही कारण अशुभ ध्यान का
कोई मारक बना सिया की जान का।
बस मैं इच्छुक सिया के शुभ ध्यान का,
मैं इधर का रहा ना उधर का रहा ॥६॥

दोहा (लक्ष्मण)

भाई क्या तुमको कहूँ, अपनी खोल जबान।
गई ना आवगी कभी सरल मरम की बान॥

आपकी मरजी से मिथिला में जनक भूप के बचन सुने ।
फेर आपकी मरजी से, सीता ने बन में दुःख चुने ॥
कई बार मरजाई से, नामी शत्रु तक तोड़ दिये ।
सब विजय किये वह राज पाट, तुमने निज कर से मोड़ दिये ॥

दोहा

अब इसी सरल स्वभाव का मिला नतीजा आन ।
नीति के प्रयोग बिन सिया गई और शान ॥
जो होना था सो हो गुजरा अब दिल में जरा विचार करो ।
सर्वज्ञ देव का कथन जरा उस पर भी तो कुछ ध्यान धरो ॥
सोच गये का आगम का ख्याल, शूर वीर नहीं करते हैं ।
यदि वर्तमान पर ही पुरुषार्थ करें तो कार्य सरते हैं ॥

दोहा

समय देख कर विराध ने करी सेव चित्त लाव ।
बस खंड में चारों तरफ, दिये सवार दौड़ाय ॥
जितने जितने जवान मिले, सब सेवा करना चाहते हैं ।
वे बुद्धिमान बलवान सभी बन खंड छानते जाते हैं ॥
महा गिरि गुफा दुर्गम नदियाँ सब तरफ मंझते जाते हैं ।
अपनी अपनी तुलना करके, फिर इसी जगह पर आते हैं ॥

दोहा

युधक सभी कहने लगे निज बुद्धि प्रमाण ।
इस बन में ता है नहीं सिया का नामोनिशान ॥
फिर बाल लक्ष्मण वीर विराध की भाई अर्जी सुन लीजे ।
जो आशा करके आया है उस इस पर करुणा कीजे ॥
जो वीर विराध का शत्रु है उस वही हमारा भी होगा ।
यह आया शरण आन का इसको शरण देना होगा ॥

दोहा

देख इशारा लखन का बोले वीर विराध ।
प्रभु अरज सुन लीजिये, फिरूँ हुआ बरबाद ॥
घाव लगा जो हृदय में, सो आपको वीर दिखाऊं क्या ।
अब दुखित हुआ खर के दुख से मैं सो रघुवीर सुनाऊं क्या ॥
मार पिता को लंक लई, माता ने यह फरमाया है ।
ले बदला तब हूं पुत्रवती यदि नहीं बाँझ फरमाया है ॥

दोहा

बहुत आप से क्या कहूं, आप हैं बुद्धिमान ।
मैं चरणों का दास हूं, करूं जो हो फरमान ॥
ढूंढ सिया अब लंक गहन भी, सिया का पता न पाया है ।
यह काम नीच शत्रु का अन्तिम, यही समझ में आया है ॥
एक सिर्फ आपके चरणों से, निज राज ताज पा सकता हूं ।
फिर नभ तो क्या पाताल तलक, सीता की सुध ला सकता हूं ॥
जहाँ गिरे पसीना आपका वहां मैं अपना खून बहाऊं गा ।
आयु पर्यन्त करूं सेवा उपकार ना कभी भुलाऊं गा ॥
महान् पुरुष ही दुनिया में, दुखियों के दुख को हरते हैं ।
चाहे अपना काम बने न बने दूजे का कार्य करते हैं ॥

दोहा

वृक्ष नदी गौ सत पुरुष इनका यही है सार ।
अपने पर सब दुख सहें करते पर उपकार ॥
यह कल्प वृक्ष सम रामचन्द्र दुख सह सह कर फल ही फलते ।
फिर यह तो था सच्चा सेवक क्यों नहीं काम इसका करते ॥
सत्य पथ के पालन में, तल्लीन हर समय रहते थे ।
उनके लिये वैसा करते थे, जैसा कि मुख से कहते थे ॥

दोहा

दुखिया के दुःख को सुना दुखिया ने धर ध्यान ।
संतोष दिखाने के लिये बोले खोल जबान ॥

अय विराध मनोरथ जो तेरा, उसको हम पूरा कर देंगे ।
पाताल लंक का राज्य दिलाकर, ताज शीश पर धर देंगे ॥
अब रात रही थोड़ी बाकी, कुछ देर यहाँ आराम करें ।
अर्चिमाली के चढ़ते ही सब लड़ने का सामान करें ॥

दोहा

पा आज्ञा श्री राम की पहुँचे निज निज धाम ।
निद्रा मानने के लिए, करने लगे आराम ॥

सुख निद्रा चिन्तातुर को कहाँ यूँ बुद्धिमान् फरमाते हैं ।
हाँ जिस्म रहे शय्या ऊपर मन घोड़े दौड़ लगाते हैं ॥
फिर सर्द श्वास भर उठ बैठे श्रीराम को अति बेचैनी है ।
इस समय कहाँ दुःख भोग रही, होगी हा ! कोकिल बैनी है ॥

दोहा

देखा हाल श्रीराम का बोले लक्ष्मण लाल ।
अय भाई तुम किस लिए, होते यूँ बेहाल ॥

गाना—(लक्ष्मण का नं० ८)

अय भाई जरा दिल सबर कीजिए,
तेरी आहें ये मुझ को सुहाती नहीं ॥
क्या कहूँ अपने दिल की व्यथा इस घड़ी
होना जाहिर लबों पर जो चाहती नहीं ॥१॥
देख हालत तुम्हारी फटे है जिगर,
क्या करूँ इस समय पेश जाती नहीं ।

धीरज धरके उपाय क्या सो करू
क्योंकि मेरी अक्ल काम आती नहीं ॥२॥
आज असह्य कष्ट है आया मुझे,
मैं करूँ क्या अक्ल मेरी मारी गई ।
रह गई अकेली बियाबान में,
अबला इतनी न मुझ से विचारी गई ॥३॥
जिस पुरुष ने दिया धोखा सिंहनाद का,
बस उसी छल से है सिया नारी गई ।
कैसे दुनिया में अपना दिखाऊंगा मुंह,
एक औरत न मुझ से संभारी गई ॥४॥

[लक्ष्मण]—तुमको अब तक पता ना है अफसोस ये
जीते लक्ष्मण को दुनिया में डर ही नहीं ।
फिरते लाखों दनुज इस बियाबान में
जीती है या कि मुरदा खबर ही नहीं ॥५॥
माता पूछेगी तुमको कहां है सिया
क्या बताऊंगा जिस को खबर ही नहीं ।
मेरे होते हो ऐसी तुम्हारी शरम,
मुझसा पापी भी कोई बशर ही नहीं ॥६॥

[राम]—जब से भाई सुना शब्द सिंहनाद का,
तब वह नैनों से आंसू बहाने लगी ।
आज शत्रु की सेना ने घेरा लखन,
जाओ जाओ ये हरदम सुनाने लगी ॥७॥
मैंने समझाई लेकिन वह मानी नहीं
उलटे ताने फिर मुझको लगाने लगी ।
तुम हो लक्ष्मण के विश्वास घाती सजन
मैं चला जब वह आखिर सताने लगी ॥८॥

अब भाई अगरचे ना सीता मिली,
तो मरने में मेरे न समझो भ्रम।
शरणागत फिर सीता का मैं दुःख न हरूं,
तो फिर क्षत्रिय का माई कहाँ है धर्म ॥६॥
इसमें नहीं है दोष किसी का मिरन
कोई पिछला उदय आया खोटा करम।
जनापम भी गया और धर्म भी गया,
कैसे दिखलाऊँगा मुख मुझ ये शरम ॥१०॥

दोहा

लक्ष्मण जी कहने लगे, भाई दिल मत गेर।
जनक सुता मिल जायगी है कोई दिन का फेर ॥
जिसने की अपहरण सिया यह समझ काल ने घेरा है।
शत्रु के प्राण सहित सीता लाऊँ यह प्रण बस मेरा है ॥
माता सुमित्रा का नन्दन अब आप तभी कहलाऊँगा।
यदि नहीं तो फिर धिक्कार मुझे, जीते मुख ना दिखलाऊँगा ॥

दोहा

दृढ़ प्रतिज्ञा अनुज ने लई इस तरह धार।
यदि यह पूरी ना करूं तो मुझ नाम निस्सार ॥
इधर प्रतिज्ञा करी उधर, रजनी ने पीठ दिखाई है।
दिनकर ने जब फेंकी मरीचि तो फौजी बिगुल बजाई है ॥
सेना सुनी जब बाजे की सब जमा सुग्रीव के मुख्य हुये।
और सेनापति के पद पर भी श्री लक्ष्मण जी आरूढ़ हुये ॥

दोहा

पाताल लङ्का का नृप किये कर धावा तत्काल।
शूरवीर योद्धा बली रूप अति विकराल ॥

पाताल लङ्क में खर के पद पर, सुन्द नरेश सुहाया है।
पर चैन कहां था उसको भी, इस कारण से सम्मुख आया है॥
जब आन बली से बली मिली, तब शूरवीर ललकारे हैं।
तब वीर विराध ने भी अपने, दिल के गुब्बारे निकाले हैं॥

दोहा

फौरन ही रणभूमि में हुआ रक्त का कीच।
कायर जन गश खा गिरे छिप गैन हो मीच॥

टङ्कार शब्द जब किया लखन ने मानो विद्युत कड़क पड़ी।
फिर बाण बरस रहे लक्ष्मण के, जैसे सावण की लगी झड़ी॥
कइयों ने शस्त्र डाल दिये कुछ वीर विराध से आन मिले।
और सुन्द भाग लंका पहुंचा सब डाल दिये सामान किले॥

दोहा

शूर्पणखा ने यूं किया ससुर गृह का नाश।
अब पहुंची लंकापुरी करने कुमति प्रकाश।

विराध को ताज

दोहा

अधिकार जमाया सब जगह रामचन्द्र ने आन।
जो मुख से कहा विराध को, पूरी करी जबान॥

अनुराधा रानी के दिल में खुशी का ना कुछ पार रहा।
मनोकामना सिद्ध हुई, गद्दी पर शोभ कुमार रहा॥
मात-पुत्र ने रामचन्द्र की सेवा खूब बजाई है।
हम रहें बने चाकर इनके, सबके दिल यही समाई है॥

दोहा

औदार चित्त न कर दिया दूजे का प्रचार ।
अब सीता का हुआ, दिल पर दुःख सवार ॥

इस तरफ राम को सीता बिन, खाना पीना नहीं भाता था ।
उस तरफ लंका में रावण भी वैदेही का गुण गाता था ॥
अब सुनो हाल किष्किन्धा का जहाँ नया माजरा और हुआ ।
असली नकली दो सुग्रीवों का रियासत भर में शोर हुआ ॥

दोहा

रूप धरा सुग्रीव का साहसगति ने आन ।
पार करो कैसे पड़े दो तलवारें एक म्यान ॥

चित्रांग भूप का राजकुमार जो साहसगति कहलाता था ।
ज्वलनसिंह की पुत्री तारा को तन-मन से चाहता था ॥
साहसगति की ज्योतिषियों ने, अल्पायु बतलाई थी ।
इस कारण ज्योतिप पुरपति ने सुग्रीव नरेश को व्याही थी ॥

दोहा

साहसगति का था लगा यही मरोड़ा तीर ।
मन वाञ्छित औषधि बिना मिटे ना मन की पीर ॥

जिसने पुरुषार्थ किया अति फिर उसको था सन्तोष कहाँ ।
जहां तारा थी सुग्रीव के यहाँ था साहसगति का मन भी वहाँ ॥
पर जोर नहीं कुछ चलता था तब यही समझ में आया था ।
रूप परिवर्तन विद्या साधन प्रारम्भ लगाया था ॥
थी रावण को जैसे सीता यहाँ साहसगति को तारा थी ।
नेक को देवी माता सी कामी को काम कटारा थी ॥
थी सीता यदि धर्म राशि तो य भी नेक सितारा थी ।
थी साहसगति का ये बिजली रावण का सीता आरा थी ॥

असली नकली सुग्रीव

दोहा

रूप परिवर्त्तन सर्ई, शक्ति निम बम साथ ।
तारा ही तारा रहा, हृदय में कर याद ॥

अब चला वहाँ से खुशी खुशी, किष्किन्धा में जा श्याम हुआ ।
सुग्रीव बना वन सैर काज, जब समझा शोभन स्याम हुआ ॥
यहाँ महासगति ने भी अपना सुग्रीव रूप झट धारा है ।
असली से पहिले आकर के, नकली ने भवन पधारा है ॥

दोहा

सावधान होकर रहो जितने पहरेदार ।
यदि शिथिलता कुछ हुई, लेऊ शीश उतार ॥

समय आजकल ऐसा है कई रूप बदल आ जाते हैं ।
हैं डाकू चोर उचक्के सब राजाओं तक बन जाते हैं ॥
फिर आगे बढ़ के महलों का जो था नक्शा सब खेंच लिया ।
ऊपर से प्रेम दिखाता था, पर अन्दर से था कैंची लिया ॥

दोहा

नकली बैठा असल के, शयन महल में जाय ।
चाह जिसकी थी मन बसी करने लगा उपाय ॥

इतने में आगया असली तो संतरियों ने रोक दिया ।
और भाग भी ये न जाय कहीं, चहुँ ओर से पहरा ठोक दिया ॥
सुग्रीव और सब अधिकारी, यह बात देखकर घबराये ।
यह रचा किसी ने षड्यन्त्र अरु ये सभी नजर आये ॥

दोहा

देख हाल कपि पति किये अपने नेत्र लाल ।
गर्ज तब कहने लगे मस्तक पर बल डाल ॥

बने बावले सब के सब क्या नशा आज कोई पिया है ।
या काल ने परभव में जाने का आज सन्देशा दिया है ॥
या पागलखाने में तुम निज को भिजवाना चाहते हो ।
या तुम आयु पर्यन्त जेल में पड़कर सड़ना चाहते हो ॥

दोहा

देख तेज सुग्रीव का गये बहुत से काँप ।
कई होगये सामने जैसे फणिधर साँप ॥

बोले बस ज्यादा बक बक न कर क्या भेष बदल कर आया है ।
महाराज महल में विराजमान तैने प्रपञ्च रचाया है ॥
जो कुछ हम बतलाता है तेरे ऊपर ही बरसेगा ।
और पाप का स्वतन्त्रता को स्वप्नमात्र में तरसेगा ॥

दोहा

यदि है तू बहुरूपिया सो भी दे बतलाय ।
बदले कभी इनाम के, जाम मूल की जाय ॥

यह हाल देख कर भूपति का चित्त उथल पुथल सा होने लगा ।
जो साथ गये थे सैर करन फिर उनके चित्त को टोहने लगा ॥
वे सबके सब अपने पास इसके कारण क्यों आन मिले ।
असली की ओर होगये बहुत कुछ नकली के संग जाय रले ॥

दोहा

नकली को असली कहें असली को मक्कार ।
मति भ्रम में पड़ गया सबका भरम कमाल ॥

प्रसंग देख हर एक विचारों का, सागर बन जाता था।
किये उपाय अनेक परन्तु पता नहीं कुछ पाता था॥
रंग ढंग यहां तक बिगड़ा, सेना तक भी यह हाल हुआ।
आधीन बनाई परिस्थिति, यह चन्द्ररश्मि का ख्याल हुआ।

दोहा

बाली सुत बलवान था, चन्द्ररश्मि तसु नाम।
आधीन किये अधिकार सब मुख्य मुख्य जो काम॥

महल चकी के सबसे पहले पहरा दृढ़ लगाया है।
यह झगड़ा दो सुग्रीवों का महारानी ने सुन पाया है॥
जब खबर एकदम फैल गई तो उसी समय दरबार हुआ।
असली से पहिले नकली आ सिंहासन पर असवार हुआ॥
उस तरफ से आ पहुँचा असली, था मस्तक पर बल पड़ा हुआ।
वह तेज प्रताप महाराजा का देख सभी दल खड़ा हुआ॥
अनिमिष दृष्टि से रहे देख कुछ फर्क नजर नहीं आता है।
जो कुछ पूछें असली से बात नकली भी वही बताता है॥

दोहा

भेद कुछ भी नहीं खुला हो अन्तिम लाचार।
बुद्धिमान एकत्र हो, करने लगे विचार॥

अन्तिम निश्चय किया यही, कि जब तक यह न भेद मिले।
तब तक हैं बन्द लिये दोनों क महल हकूमत फौज किले॥
सब राज्य काज का अधिकारी चन्द्ररश्मि होना चाहिये।
और इन दोनों का पृथक्-पृथक् रखकर रहस्य टोहना चाहिये॥
वहां नियत किया जो भी कुछ था सब अमल उसी पर होने लगा।
और साहसगति प्रतिकूल कपि क बीज फूट का बोने लगा॥

दोनों ही थे आर्तध्यानी, करते थे ढेर विचारों का।
तारा का दुःख था नकली को असली को दुःख था सारों का॥

दोहा

एक बार सुग्रीव ने, बुलवाया हनुमान।
अंजनीसुत का बहु किया नकली ने सम्मान॥
पवनकुंवर की आकृ भी, देख हुई हैरान।
हस्ताक्षर तक तुल्य हैं, एक बाण एक शान॥

भूतकाल की बात सभी दोनों इकसार बताते हैं।
अपने अपने अनुकूल सभी, सब तुल्य भाव दर्शाते हैं॥
जैसे तैसे किया परन्तु, असली रहस्य न पाया है।
फिर परीक्षा कारण दोनों का आपस में युद्ध कराया है॥

दोहा

डट गये दोनों शूरमा क्रोध हृदय में धार।
दांव पेंच करने लगे, इक दूजे पर मार॥

वह दोनों ही बलवीर शूरमा दोनों ही विद्याधर थे।
और दोनों ही उस समय समझो एक स्थान के अन्दर थे॥
अनुमान से आयु न सम थे ना अमर शेर नहीं कायर थे।
शस्त्र कला के जानकार क्या बढ़कर कला में माहिर थे॥

दोहा

नकली कुछ हँसकर लगा असली का यूं कहन।
शाबाश तुझे बहुरूपिया स्वाँग हमारा आयन॥
अब तक मैं देखा नहीं इस जैसा स्वाँग।
दूंगा वो ही तुझे, जो तू मुख से माँग॥

भागो मुख से दान रही मा कमर तेरे इस फन में ।
अब आगे मत जान क्योंकि मुश्किल होगी फिर रण में ॥
यह सर घड़ का खेल खेलते क्षत्रिय लोक मगन में।
क्या तेरी औकात तीर से, फेंकू तुझे गगन में ।

महसुगति का गाना

समर का खेल मत हाँसी गिनों बहुरूपिया भाई ।
मैं अब भी तरस खाता हूँ सुनो बहुरूपिया भाइ ॥१॥
किया अनुचित भी जा तून उस मैं माफ करता हूँ ।
मुफ्तमा शीश मत क्याशा तना बहुरूपिया भाइ ॥२॥
पास अपना गवा करके कराबोगे मेरी निन्दा ।
सिखो पक्षों से ताना मत सुनों, बहुरूपिया भाई ॥३॥
अभी तो शांत कर रक्खा है, मैंने अपने गुस्से को ।
एक भी एक यह मुहरें, सुनो बहुरूपिया भाई ॥४॥

दोहा

नकली का व्याख्यान सुन जल बल हो गया ढेर ।
कपि पति बोला गाज कर, जैसे बन में शेर ॥
दम्भी प्रपञ्ची खर्च करता क्या खर नाद ।
भेष बनाने का अभी तुझे मिलेगा स्वाद ॥

अभी मिलेगा स्वाद काल मराया तुझ को भाता है ।
नकली बनकर आप भीम, खर हम को दिखलाता है ॥
छुटकारा नहीं है बचने का क्या मन में पछताता है ।
मरने के डरस अब क्या पीछे हटता जाता है ॥

सुग्रीव का गाना

काल तेरा पठा लाया, तुझे मैं आज कहता हूं ।
य खाव अब तुझे बिढ़िया आगया बाज कहता हूं ॥१॥

कहाँ आकर के फैलाई है, तूने अपनी यह माया ।
चलेगी पेश न तेरी सर सामाज कहता हूँ ॥२॥
चला जा अब भी सम्मुख से फटक ना सामने मेरे ।
नहीं तो मौत का तुझ को मिलेगा ताज कहता हूँ ॥३॥
सम्भल कर आ खड़ा होजा देख यह चोट क्षत्रिय की ।
भँवर में डूबने वाला तेरा, है जहाज कहता हूँ ॥४॥

दोहा

फिर जुट गये मैदान में होकर के विकराल ।
शस्त्र कला में शूर में सम दिखा सम काल ॥

था यही राम और यही स्वामि इसको किस पेंच से मार धरूं ।
जो काँटा है मिट जायेगा, निष्कंटक हो आराम करूं ॥
था साहसगति अतुलित योद्धा सुग्रीव रूप जग जाहिर था ।
एक था नीति के अन्दर दूजा नीति के बाहिर था ॥

दोहा

लड़ते लड़ते हो गये थक कर दोनों चूर ।
पास उपस्थित थे जो फिये हटा कर दूर ॥
इस असल के जौहर को मकली दिल घबराय ।
मन ही मन में सोचता फँसा कहाँ पर आय ॥

मैं राज पाट का छोड़ विपति महा कठिन में आन फँसा ।
वह सुख कहां स्वतन्त्रता के, वर्तमान कहां आन दशा ॥
कष्ट सहे जिस कारण इतने उस प्यारी के दर्शन कहां ।
और प्रेम बदरिया बरस बिन फिर का हृदय भी सर्द कहां ॥

दोहा

मैंने भी तेरे लिए, धुनी दई रमाय।
पर बेघर तो हो गया प्राण रहे चाहे जाय॥

सहसगति का गाना (स्वगत)

प्यारी सितारा तूने मुझको रुला के मारा।
फिरता हूं तेरे दर पै, दिन रात मारा मारा ॥१॥
भाता न खाना पीना, इस राग के मरो में।
इक तीर से ही तूने, मेरा कलेजा फारा ॥२॥
परवश हुआ हूँ लेकिन मुझ को ये गम नहीं है।
असली को अपने जैसा नकली बना ही डारा ॥३॥
अर्पण यह अपना सिर धड़, सब तुमको कर चुका हूं।
इस भव नहीं तो परभव, होगा हिसाब सारा ॥४॥
वर्षों तलक तो मैंने पर्वत पै दुःख उठाया।
तेरे लिए ही प्यारी ये रूप आके धारा ॥५॥

दोहा

सहसगति यूं कर रहा, आर्तध्यान अपार।
वानरपति भी सुस्त हो, करने लगा विचार॥

चार सभी साक्षी गये मुश्किल बनी लाचार।
दुष्ट आत्मा ये कोई, है पूरा मक्कार॥

क्या दोष किसी का बतलावें जब अपनी किस्मत खोट गई।
मात पिता और भ्रात सभी साखी की सर से ओट गई॥
करे न्याय जो यथा तथ्य ना कोई नजर के अन्दर है।
यदि है तो कुछ रावण समझो पर सो भी अभी धन्दर है॥

दोहा

मुर्दे को मुर्दा कहें, सब अनादि की रीत ।
मैं जिन्दा मुर्दा बना है कैसा विपरीत ॥

वैरी मुझ से अच्छे क्योंकि, समाचार दुःख भरते हैं ।
रोगी जन भी मुझसे लेकर अपना इलाज तो करते हैं ॥
पर यह व्याधि ऐसी चिपटी, जिसकी कोई दवा न पाई है ।
अब वही नहीं या मैं ही नहीं अन्तिम दिल बीच सधाई है ॥

सुग्रीव जी का गाना

अय कर्म क्या तुमको अभी आया सबर नहीं ।
क्या क्या दिखायेगा, मुझे कोई खबर नहीं ॥१॥
माता पिता की अय कर्म तूने जुदाई कर दई ।
हरएक बाकी बाकी का भी, आता नजर नहीं ॥२॥
खो दई सारी हकूमत तूने मेरे हाथ से ।
यह जान भी जाने में अब कोई कसर नहीं ॥३॥
धनके मचाकसा कर्म दुनिया में सारे देखले ।
दुखिया हमारे जैसा कोई बशर नहीं ॥४॥
अनन्त शक्ति आत्मा अरिहन्त ने तुम में कही ।
कर हौसला तुम से कर्म कोई जबर नहीं ॥५॥
हर चीज की सिद्धि लिये उद्यम ही सब का मूल है ।
निश्चय 'शुक्ल' मुझको हुआ अब इसका सिर नहीं ॥६॥

दोहा

हां एक और उपाय है आया मुझ को ख्याल ।
जो कि लंक पाताल में हुआ माजरा हाल ॥

दशरथ नन्दन राम लक्ष्मन जो महापुरुष कहलाते हैं ।
लेख और मायस द्वारा हम भी वैसा सुन पाते हैं ॥

सत्य पक्ष के हैं पालक, और काल रूप दुश्मन के हैं।
निर्मम्य गुरु के हैं सेवक, जो कि प्यारे सुर जन के हैं॥

दोहा

सरदूषण ने आ लिया, अम्बर का राज।
वापिस वीर विराध को, दिलवा या वही ताज॥

अब वही कृपानिधान कृपा, कुछ मेरे ऊपर भी कर देंगे।
अब उन्हें दिखाऊं यह माड़ी ये औषधि व्याधि हर लेंगे॥
क्या अच्छा हो सत्यपुरुष स, पहिले पता मंगाऊं मैं।
और वीर विराध क द्वारा ही, अपना सब काम बनाऊं मैं॥
सत्य पुरुष को भूप ने, समझाया सब हाल।
लंक पाताल में जा सभी, करो काम तत्काल॥
इसी समय कर जाइ कहा और खुशी से चेहरा लाल हुआ।
करके प्रणाम बोला स्वामी अब शत्रु का भी काल हुआ॥
किष्किन्धा से चले आय अब आप पाताल में आया है।
श्रीराम लखन के सहित विराध को झुककर माथ नवाया है॥

दोहा

वीर विराध ने अति किया स्वागत और सत्कार।
समय देखकर दूत ने खोला दुःख पिटार॥

शायद आपको मालूम हो जो हाल हुआ किष्किन्धा में।
कर सारा हाल बयान कहा ना समय था शक्ति बन्दा में॥
महाराजा ने फरमाया है बस नैया है मझधार पड़ी।
इस समय आपके चरणों से है पार नहीं निराधार खड़ी॥
आयु पर्यन्त आपका यह उपकार रहेगा मेरे पर।
अब क्या वृत्तान्त कहूं अपना बन बैठा हूं बेघर बेदर॥

बस एक आप की कृपा से, श्रीराम यहां आ सकते हैं।
जो उलट पेच यह आन फंसा, वो ही आ सुलझा सकते हैं॥

दोहा

रहस्य पुरुष से जब सुनी, कपि पति की अरदास।
सन्तोष समझ श्री विराध जी, बोले नम्र सुभाव॥

जो सेवा मुझको फरमाई, उसको कहना सिर मस्तक पर।
श्रीराम का यहां आना होगा, तो होगा आपके आने पर॥
जो व्याधि तुमको विपती है, उस पर भी इक दुख आन पड़ा।
सिया जनक दुलारी को बल से कोई दुष्ट पुरुष ले गया उठा॥
इस समय अर्ज पर अर्ज करें सो भी बुद्धि से बाहिर है।
कभी छाने के पद आर्यों देने यह भी मिसाल जग जाहिर है॥
हाँ इतना निश्चय है मुझको, यदि आप यहाँ पर आ जावें।
और इनके दुख में हो शामिल अपना भी दुख मिटा जावें॥

दोहा

रहस्य पुरुष ने आ कहा श्रीरघु मालिक पास।
उसी समय कपि पति चला करने को अरदास॥

और विराध किष्किन्धा पति श्रीराम पै कर के प्यार गये।
फिर करी चरण प्रणाम सामने बैठ पास ही पास गये॥
सुग्रीव बड़ा ही दाना था नीतिज्ञ और मरदाना था।
अब उसी तर्ज पर चला जिस तरह अपना काम बनाना था॥

दोहा

दुखिया के जिस दम उठे दुखित भरे हो नैन।
उस नैन श्रीराम ने मन मे सोचा बैन॥

है यह भी दुखिया कोई कुछ शरण लेने आया है।
पर आप ही रसना खोलेगा, जो भी कुछ कहने आया है॥
जब नेत्र मिले फिर बात चलन में, कहो देर क्या लगती है।
जैसे ग्रीष्म के लगते ही, पर्वत पर हिम पिघलती है॥

दोहा

क्या दृष्टि के जिस समय, देखे नृप ने नैन।
सोच सोच श्रीराम से, लगा इस तरह कहन॥
किस्मत ने मुझको दिया धोखा दीनानाथ।
रत्न और राज्य मणि, एक समान विख्यात॥

क्या कहूं व्यथा अपनी तुमको सो नहीं खोलना चाहता हूं।
कुछ सेवा मुझको फरमाइये तन-मन से करना चाहता हूं॥
यह सोच लिया कि चार दिनों का दुनिया रैन बसेरा है।
जो भी कुछ तन से बन आवे, सेवा का ही फल मेरा है॥

दोहा

दुख में दुखा यह और भी दुखा मुझे महाराज।
इस कारण मैं क्या कहूं, अपने दिल का राज॥

सीता का पता लगाने में, जैसा हूं वैसा हाजिर हूं।
कैसा भी क्यों ना हूं चरणों का, दुख हरने में कायर हूं॥
मैं सेवक हूं तैयार खड़ा प्रभु सेवा कोई बता दीजे।
जो व्याधि मुझको लगी हुई फिर उसको आप हटा दीजे॥

दोहा

देख चतुर की चतुरता बोले बड़े श्रीराम।
अपनी आप बताइये दुख की व्यथा तमाम॥

यही फरक इन्सानों में जो महापुरुष कहलाते हैं।
वह अपना दुख कहें ना कहें, दूजे का दुख मिटाते हैं॥
अपना कष्ट कहो दुनिया में, कान नहीं धर लेते हैं।
पता दूसरों की अपने सिर, महापुरुष धर लेते हैं॥

दोहा

सुन निस यही राम के, अमृत झरते बैन।
लगा कहन सुग्रीव तब गीले करके नैन॥

महाराज कहूं क्या आपसे मैं इक सख्त पेच में आन फंसा।
है एक और सुग्रीव बना और इसी स्थान में आन धंसा॥
क्या कहूं रामें भाती करते दिन कटे सि रहा न जाता है।
दिन रात यही दुःख लगा हुआ खाना पीना नहीं भाता है॥
हो गया मुझे विश्वास आपकी कृपा मेरे ऊपर होगी।
निज महामान्य समझूं गा आपकी इस तन से सेवा होगी॥
कुछ रहा नहीं अधिकार मुझे, फिर कहो तो क्या कर सकता हूँ।
इस व्याधि से निवृत्त होकर, सीता की सुध ला सकता हूँ॥

दोहा

वीर विराध कहने लगा सुन सुग्रीव सुजान।
इसी वचन पर आपको रखना होगा ध्यान॥

प्राण तलक चाहे अर्पण हों वह काम अवश्य करना होगा।
यदि काम कहीं पर आन पड़ा तो समझो वहां सिर ना होगा॥
अब सवक हा ना सवा हा मजबूत तलक चाला होगा।
तुम निश्चय करलो मित्र भार अपने शीश उठाना होगा॥

दोहा

उत्तर में कहने लगा किष्किन्धा नृप राय।
अपने मान में क्या कहूं इक कर त्रियराय॥

हम यह बाधुक हैं मौके पर, गड़बड़ बिन किये बरसते हैं।
आपत्ति हजारों हों तो भी, सेवा के लिए तरसते हैं॥
तीन खंड में फिरा हुआ, फिर विद्याधर कहलाता हूं।
आप देखते रहें सिया का, कैसे पता लगाता हूं॥
सर्वस्व लगा कर भी सीता माता का पता लगा दूंगा।
मैं गुप्तचरों का मूसलदल पर, माथा जाल बिछा दूंगा॥
नगर नगर क्या गिरि गुहर, सब जगह विमान दौड़ा दूंगा।
राष्ट्र भर का चप्पा चप्पा इस काम में सभी लगा दूंगा॥

दोहा

परोपकारी पल लिये, किष्किन्धा की ओर।
धम्मयाद की ही सदा गूंज रही बाजार॥

देख दरब किष्किन्धा का, श्रीराम लखन हर्षाते हैं।
सामन्त मंत्री अधिकारी सब, स्वागत करने आते हैं॥
था दृश्य एक अद्भुत सुन्दर, आवास वहां पे उतारे हैं।
असली नकली सुग्रीव यहां, फिर दोनों आन पुकारे हैं॥

दोहा

करी परीक्षा राम ने मिला नहीं कुछ भेद।
तन मन में होने लगा जरा जरा सा खेद॥

फिर समझ लिया कि इन दोनों में है कोई एक दुराचारी।
यह भेद प्रकट करने को फिर, वज्रावर्तज पर दृष्टि डारी॥
उधर सुना दिये वह दोनों और इधर धनुष लिया कर धारी।
टंकार शब्द घनघोर किया सरकाया फलक जमीं सारी॥

दोहा

हलक मुरक, लासी सुरक द्रुप बल मद पान।
आप छिपाये ना छिपे प्रकट होय मदान॥

सब नीर क्षीर का भेद खुले, जब हँस चोंच अपनी डारे ।
शुद्ध हेम पिछाना जाता है जिस समय कसौटी हो प्यारे ॥
सच्च जौहरी के आगे क्या लाल रसाये रलता है ।
बब्बर शेर का चर्म पहन, कभी गधा सिंह नहीं बनता है ॥

दोहा

सहसगति की टक्कर से, विद्या हुई काफूर ।
चित्राग पुत्र पर इस समय लगी बरसने धूर ॥

यह हाल देख श्रीरामचन्द्र का रोष एक दम आया है ।
धिक्कार शब्द चहुं ओर महल क्या भूमण्डल गुंजाया है ॥
कहा राम अहा सहसगति, क्यों आर्तध्यान लगाया है ।
यह फल तेरे दुष्कर्मों का अब सम्मुख तेरे आया है ॥

दोहा

सहसगति कहने लगा अर्ज सुनो महाराज ।
कहां उसी का चाहिये जो तिस रही विराज ॥

मात पिता रानी किस कारण छोड़ दिये सब राज किले ।
कम सह गिरि ध्यानों में हरो मिले तो यहीं मिले ॥
निर्मल श्याम शशि जैसे मुख मुद्रा शोभा पाता है ।
सहसगति भी अन्त समय तारा का दर्श चाहता है ॥

दोहा

सहसगति के वचनसुन क्रोधित हुये रघुराय ।
बास बस अब चुप रहो आगे सुना न जाय ॥

जल्दी अब संभल खड़ा होजा मम इषु सम्मुख आता है ।
ऐसे पापी हृदय का यह रक्त शोषणा चाहता है ।
जा जो तूने कर्त्तव्य किये न चित्र वाय को बन आये ॥
इसमें श्राप क्या बला मेरा तेरे दुर्भाग्य लख आये ।

दोहा

सहसगति के राम ने, मारा कस कर तीर।
क्यों बाघ ने दुष्ट का, दिया कलेजा चीर।
चक्कर खा धरणी गिरा साहसगति मुरझाय॥
नर नारी चहुँ ओर से झूम झूम गये आय।
किष्किंध सुत को रघुपति, लगे इस तरह कहन।
अंत समय सुनको जरा शिक्षाप्रद दो बैन॥

जो खिला बाग में पुष्प समस, वह भी इक दिन कुमलायेगा।
जो जन्मा सो भी मनुष्य मात्र, क्या इन्द्र भी मर जायेगा॥
जो अंत गति सो मति भी कहिके देव फरमाते हैं॥
मन लगा कर सुनो जरा यह भी रहस्य सुनाते हैं।

दोहा

सुमति छोड़ कुमति गहे फेर सुमति के धार।
समझ भी संसार से होता बेड़ा पार॥

अब देखो सभी दुर्ध्यान, जिन्हों ने यह दुर्दशा कराई है।
जो होना था सो हो बीता समता में सरी भलाई है॥
यदि इसी ध्यान में प्राण गये, तो नीच गति जा परना है।
अनमोल रत्न नर-तन खोकर, चौरासी का दुख भरना है॥

दोहा

इतना कह सीता पति बैठ गये निज स्थान।
साहसगति के भी जरा दिल में आया ध्यान॥
किया पुण्य कैसा गई ठीक-ठीक सब बैन।
पर कुछ दिल में सोचकर लगा इस तरह कहन॥

गाना (सहसगति का)

चलना जरा संभल कर, पर नारी नागिनी है।
मेरी तरफ ही देखो हालत ये क्या बनी है॥
रखती हजारों फन ये रग रग में गरल व्यसिस।
खावे जिगर को पक्षि ऐसी ये डाकिनी है॥
चलती है चाल बांकी सदरा के जब जमीं पर।
सुध-बुध सभी भुलावे ऐसी यह शाकिनी है॥
पड़ता नहीं है दिल में दिन रात चैन इसके।
जिसके चरम कटारी मारे यह पापिनी है।
किंपाक फल के सदरा लगती मनुष्य को प्यारी
विष से मिली मिठाई नित्य चाहिये त्यागिनि है॥
इस लोक हो ख्वारी पर नरक देवे भारी।
नर जन्म का है वारी ऐसी अभागिनी है॥
ख्याल कर के हाल मेरा शिक्षा ग्रहो भव मित्रो।
नर भव वृथा गँवाया पर नारी बाधिनी है॥
परभव का यह पखेरू सेता है अब सवारी।
शुभ 'शुक्ल' ध्यान ध्याओ बद कर यह रागिनी है॥

दोहा (राम)

सहसगति यह कथन कह परभव गया सिधार।
कपिपति के होने लगा आनन्द मंगलाचार॥
पूर्ववत् निज पाट पर, कपिपति रहा बिराज।
शूरवीर बांका बली चन्द्ररश्मि युवराज॥
रामचन्द्र से कपिपति लगा कहन यूं बात।
पुत्री ब्याहने की प्रभो मेरी है दरख्वास्त॥

कहा श्री रघुराय ने, कपिपति वचन संभाल।
जनक सुता की सुध बिना, दिल का हाल बेहाल॥
जब इधर सिया के शोधन में हुए एकत्र परामर्श करने को।
इस तरफ लंका में शूर्पणखा, पहुँची अपना दुख रोने को॥
पर यहां रंग कुछ और खिला था नशा भूप को चढ़ा हुआ।
किस भंवर से कोई बचा नहीं, था वसी चक्कर में फँसा हुआ॥

दोहा

था विषयासक्ति में फंसा गया मनुष्य भव हार।
चार गति मनुष्यत्व बिन मिले दुःख संसार॥

लग रही थ्याति एक सीता की कुछ खान-पान नहीं भाता है।
बस नाम एक सीता के बिन कुछ और न सुनना चाहता है॥
मिथ्यान कर्म के उदय कोई, चारित्र पाल नहीं सकता है।
विषयानुरागी परोपकार की शक्ति कभी न रखता है॥

शूर्पणखा का जाल

दोहा

शूर्पणखा कहने लगी जय जय बन्धु भगवान।
प्रीतम सुत देकर मरे गया हमारा राज॥

तुम देख रहे दुर्दशा हमारी यही था समझे दुःख बड़ा।
जिस तख्त पै तेरा बहनोई था, उस पर वीर मिराध चढ़ा॥
अब सुध की आप सहाय करें इस समय यदि ना ध्यान दिया।
तो यही नजर में आता है कि, गई लंका भी जान लिया॥

दोहा

रावणके था चढ़ रहा, इश्क मजीठी रंग।
विचार शक्ति रहती कहाँ जिसको डसे भुजंग॥

वह बना असली बैठा था, मन सीता में था भटक रहा।
या यों कहिये कि मन भंवरा था इसी फूल पर अटक रहा॥
फिर खोला वमन होकर बस इस व्याख्या को रहने दे।
और चन्द दिनों तक उनका भी इस बात का खाना लेने दे।
अब किष्किन्धा में निश्चय उनका काम हुआ कर लाया है।
जो खरदूषण का मार विराध को, राज ताज दिलवाया है॥
क्या हैं बन के दो भील विचार महाकुल में पले हुए।
इस दशकन्धर के सन्मुख हा, महायोद्धा भी भा खड़े हुए॥

दोहा

शूर्पणखा कहने लगी रावण को यूं भाप।
कभी कभी वह ले रही लम्बे लम्बे श्वास॥

शूर्पणखा का गाना—रावण के प्रति

आपकी भूल है भाई समझते उनको बिचारे।
सहस्र चौदह समर में एक ने सब साफ कर डारे॥१॥
क्या शक्ति दामिनी की भास उनके धनुष के आगे।
हाथ देकर पति सुत के, कटावे तीर से प्यारे॥२॥
असर करता नहीं उन पर, कोई भी अस्त्र या शस्त्र।
खबर नहीं कैसे वज्र के, बने हैं गजब के मारे॥३॥
समर तब ही मिले मुझको उन्हों का सिर उतार लाओ।
मार कर विराध शत्रु को सुख फिर ताज सिर धारे॥४॥
बने हा शूल चित क्योंकर, करो ये काम जल्दी से।
नहीं तो राज्य यहाँ पर भी, बजेंगे उनके नक्कारे॥५॥

रावण का गाना—भगिनि के प्रति

नहिम जो ख्याल है तेरा, यही मैं कर दिखाऊंगा।
इसी शमशेर से दोनों का, सिर धर से उड़ाऊँगा ॥१॥
बहुत कहने से क्या मतलब, क्योंकि खुद ख्याल है मेरा।
विराध को मार कर के ताज, सुन्द के सिर सजाऊंगा ॥२॥
चाहे हो धनुष बिजली सा चाहे खुद भी हों वज्र के।
स्वाद इस बात का अच्छी तरह उनको चखाऊंगा ॥३॥
जो सोना था सा हो सीता, उसी के ख्याल अब मन से।
उन्ही की तो है शक्ति क्या, अभी तक को दिखाऊंगा ॥४॥
जमाना थरथराता है, नाम सुनकर के रावण का।
बस दिन ठहर जा तुमको, सभी कुछ कर दिखाऊंगा।

दोहा

हाकमटोला कर दड़, शूर्पणखा को धीर।
उसी ध्वनि में फिर लगा, जो बैठा दिल तीर॥

सीता आत्म-निन्दा

रावण्या वहाँ से चला पहुँचा सीता पास।
जनक सुता थी हो रही गम में लम्बे स्वास॥

सिर हिला हिला अपने मस्तक, पर हाथ मारती जाती थी।
निज आत्म निन्दा कर करके नैनों से नीर बहाती थी॥
कभी मन में ऐसा आता था इस तन से अभी विहार करू।
यह सोच सोच रह जाती थी थोड़ा सा और विचार करू॥

दोहा

क्या आज्ञा सर्वज्ञ की कौन गुरु महाराज।
किसकी हूँ मैं कुलवधू कौन मेरे सिरताज॥

सिद्धान्त कौनसा है मुझको जिसने यह ज्ञान बताया है।
और धर्म कौनसा है मेरा जिसने बलवान् बनाया है॥
किसकी राजकुमारी हूँ और क्या मुझको करना चाहिये।
चाहे ये प्राण रहें ना रहें परमेष्ठी का शरणा चाहिये॥

दोहा

तन की खातिर धन तजो दोनों तज रख लाज।
धर्म हेत तीनों तजो कहा श्री जिनराज॥

शिष्य पांच सौ खन्दक के सब धर्म हेतु बलिदान हुए।
सम दम सम हृदय में धारा दुख नरक शोक निर्भय हुए॥
यह चीज कौन-सी दुनिया में जो संग जीव के जाती है।
बस एक शुभाशुभ करनी है जो संग न तजना चाहती है॥
निष्कलंक हैं सब गुरुजन पांच महाव्रत के धारी।
सर्वज्ञ कथित शास्त्र ज्ञाता प्राणी मात्र का हितकारी॥
तथा इस में श्रद्धा है कुलवधू मैं विद्याधर वंश की हूँ।
हरिवंशी नाम थे अनुजनक नृप मुख्य मैं पुत्री उसकी हूँ॥
निष्कलंक जैसे ये सब मैं भी निष्कलंक कहलाऊँगी।
शील धर्म नहीं जाने दूँ इस तन की बलि चढ़ाऊँगी॥
महा शक्तिमान् इस जग में अरिहन्त देव कहलाते हैं।
जो इस पति तन के लिये मस्तक सहर्ष चढ़ाते हैं॥
जो राग द्वेष के वशीभूत हो मरे तो आत्म-हत्या है।
फिर अज्ञानी का अशुभ ध्यान ना धर्म की जिसमें सत्ता है॥

अन्तिम रामचन्द्र शोक रत्न का, रक्षक यह मतवाला है।
जिसने भी इसको लिया संग, इसने वह पार लगाया है॥

दोहा

यही निश्चय मैंने किया, अपने दिल घनश्याम।
यदि समय कोई आ गया तज देऊंगी प्राण॥

दुःख में दुःख है मुझ कोई तो दुःख एक श्रीराम का है।
श्री रामचरण की रज बिन मेरा जीना भी किस काम का है॥
उधर कहाँ फिरते होंगे, प्रीतम हा मेरी तलाशी में।
इस तरफ विरहनी चकवी सम प्रीतम दर्शन की प्यासी मैं॥

दोहा

इतने में ही आ गया दशकन्धर भूपाल।
पीठ फेर बैठी सिया नीची गर्दन डाल॥
सीता के ये बह रहे जल झरने दो नैन।
देख हाल ये भूपति लगा इस तरह कहन॥

प्रलोभन

दोहा

अब सीता कुछ तो करो दिल में सोच विचार।
किस कारण हठ लो रही, रो रो झुले अनार॥

रोकर क्यों विष घोल रही ये दिन हैं आनन्द मंगल के।
कहाँ ये स्वर्णमयी लंका, और कहाँ वे दुख थे जंगल के॥
कंगाली सा भेष बना करके, फिरती थी संग अहीरों के।
यह हेम जड़ित साड़ी आभूषण, पहिना सकल हीरों के॥
दाने दाने पर हीरा है, वह अध्याक्षी निहारो तो।

बिछियों का तो क्या कहना है, यह हार गले में डारो तो ॥
यह सुन्दर कर्णफूल देखो, कुण्डलों की झलक निराली है ।
और लच्छे मोती जड़े हुए, नथ भी यह मतवाली है ॥
यह कड़े ठाड़िये देख कड़े, झांझन पहनो सब चरणों में ।
क्या देख आरसी बाजूबन्द, पौंची पहिना कर कमलों में ॥
ये शीर्षमणि देखो अद्भुत, है जवाहरात से जड़े हुए ।
मनमोहन माला पंचरंगी दाने जिसमें हैं जड़े हुए ॥
ये अंबरमयी श्याम अहो दुनिया में ऐसा और नहीं ।
सब तरह की मजा लगी हुई तुम खाती हो किस तौर नहीं ॥
फिरते फिरते उस जंगल में भीलों के पीछे मर जाती ।
गुलबदन मुझे तू बता फेर कैसे ये ऋद्धि सब पाती ॥
देखो क्या शोभन जलाशय, वृक्षों की पंक्ति लगी हुई ।
और मन्द मन्द सुगन्ध मरुत, शोभन क्या केसर बागी हुई ॥
क्या वर्णम कनक आवासों का निर्माण जवाहिर के सारे ।
हैं फर्श सब जगह रत्नों के, और झाड़ फानूस सजे सारे ॥
अब त्रिखंडी नृप की पटरानी, सीता तुम कहलावोगी ।
यह राजपाट सब कुछ तेरा मनमानी मौज उड़ावोगी ॥
पुण्य सितारा उदय हुआ ऊपर को नजर उठावो तो ।
जैसा भी दिल में ख्याल और सो भी मुख से फरमावो तो ॥

दोहा

रावण का व्याख्यान सुन बोली सीता नार ।
जैसे गर्जे शेरनी गिरी गुफा मंझार ॥

सीता जी का गाना

बसी है मेरे हृदय में मानुकूल राम की सूरत ।
बिसर गई सुध सभी जा देखी शोभाधाम की सूरत ॥१॥

यह अद्भुत गुण भरी सूरत, मेरे नेत्रों में फिरती है।
समाई सारी रग रग में मेरे पति राम की सूरत ॥२॥
रूप क्या सद्गुणों का सौन्दर्य है, त्रिलोकी का जिसमें।
कि ब्रह्मा से मलिन हो जाय, कोटी काम की सूरत ॥३॥
देवगण नाचते हैं मगन होकर, प्रेम से जिनके।
पुरुषीजन तू हसे फिरते, छवि श्री राम की सूरत ॥४॥
तेरी तो हस्ती क्या है, सुरपति मस्तक को ले जावें।
बिसारूंगी नहीं मन से, मैं अपने स्वामी की सूरत ॥५॥
'शुक्ल' अज्ञान में फँसकर, फिरें भवचक्र में प्राणी।
नरों का क्या खबर, होती कहाँ आराम की सूरत ॥६॥

दोहा

दुष्ट अश्व को चाहिए, कांटेदार लगाम।
मूढ़ बात सर नीच से, नरमी का क्या काम॥

हृदय आँख दोनों के अन्धे, बपर बपर क्या लाई है।
मानिनि भांड दुर्भाग्य की किसने यह तर्ज सिखाई है॥
मर्यादीक बस पीठ दिखा, यह पाप जनक व्याख्यान न कर।
आभूषण वस्त्र फूंक सभी निर्लज्ज कहीं जाकर के मर॥
आभूषण वस्त्र फूंक सभी तेरे इसको पटनार थमा रावण।
तुम पुत्री सम जो पुत्री तेरे इसको पटनार थमा रावण।
यह हीरे पन्ने जवाहरात के, आभूषण पहना रावण॥
इन सबको महलों देवरमण बागों की सैर करा रावण।
एक रामचन्द्र से अन्य मनुष्य, सब पिता भ्रात मर रावण॥
यह स्वर्णमयी लंका मुझको मरघट मानिन्द दिखाती है।
श्री राम चरण रज वन में मेरा हृदय कमल खिलाती है॥
यह क्षत्रिय का कर्तव्य नहीं तू मुझे चुराकर लाया है।
निष्कारण अब नीच सती का, और सताने आया है॥

दोहा

सती शील भुजंगमणि, शेर मूछ ऋषि शाप।
आयु तक देते नहीं, जब तक न कछु संताप॥

शुद्ध देव गुरु और धर्म शास्त्र के, जो भाषी विपरीत चले।
तो समझ लेना कि उसके, पड़ने वाले हैं सब फोड़ किले॥
श्रेष्ठों को यही सताते हैं अपमान जिन्हों के पुण्य हुए।
फिर नीच गति जा पड़ते हैं शुभ ज्ञान ध्यान से शून्य हुए॥

दोहा

काम लगा करके सुना सीता का व्याख्यान।
कुछ तेजी में आन के, बोला लोभ अजान॥
करुणा आती है मुझे, देख सौम्य मुख दीन।
नहीं तो कर देता अभी टुकड़े तेरे तीन॥

दुष्ट शब्द कहना यह सब बुद्धिमानी से बाहर है।
सब तीन खंड में तेज मेरा बाकी दुनियाँ सब कायर है॥
कुछ दोष नहीं इसमें तेरा क्योंकि शिक्षा अब ऐसी है।
और जैसी थी संगति तुमको चतुराई भी तुमको वैसी है॥
इसलिए मुझे कुछ दर्द नहीं जो भी कुछ मर्जी सो कहले।
अवशेष और दुःख रोने का बाकी कुछ है सो भी रोले॥
कई भाग्यहीन अच्छी वस्तु के प्राप्त होने पर रोते हैं।
और दुष्ट शब्द कहने से अपना रहा सहा भी खोते हैं॥
हीरे और पत्थर में तुमको रंचक ना पहचान रही।
यह सुने वचन तब कोई तो कहता मेरी क्या शान रही॥
अब छोड़ो पिछला ध्यान सिया अब भी मन को समझाओ तुम।
जो भी कुछ तुम्हारे खुशी से साथ आज सुनाओ तुम॥

दोहा

ऐसा कह दशकन्धर ने, लिया मौन कुछ धार।
सीता ने फिर इस तरह, दई उसे फटकार॥
धन्य तुझे शिक्षा मिली, धन्य लिया गुरु ज्ञान।
धन्य तेरी यह शूरता, मात किया हैवान॥

धन्य तेरी यह जीभ श्वान के, मानिन्द भौंक रहा है।
गपड़ सपड़ कर मान बड़ाई, अपनी ठोक रहा है।
अति आश्चर्य इतर लगाना खर को भी शौक रहा है।
किस कारण यह जान, काल के मुख में झौंक रहा है॥

दौड़

पछतावा है त्रिखंडी, मगर तू है पाखंडी,
याद रख वचन हमारा।
इस लंका में राम लखन का बजेगा तेग दुधारा॥

सीता का गाना (रावण के प्रति)

किन्हीं कुगुरु कुसंगत से यही तालीम पाई है।
चुरा कर और की नारी लीफ से तुम दबाई है॥१॥
करेगा क्या मेरे टुकड़े तू अपने ही करायेगा।
चन्द दिन में ही लंका की देख शामी सफाई है॥२॥
तेरी ऋद्धि को काटन में कद गी काम भारी का।
मुझे क्या धौंस अबला को यहाँ आकर दिखाई है॥३॥
मैं उस केहरी की नारी हूं जिन्हों की तेग जग जाहिर।
देवर यह सिर उड़ाने का जिसा संग अनुज भाई है॥४॥
दिखाता भय क्या मरने का, मैं खुद मरना ही चाहती हूं।
करो उपकार मेरे पर यह लो गर्दन झुकाई है॥५॥

गधों को भी सु याते हैं कोइ क्या इत्र फुलवारी ।
उन्हों के वास्ते कुदरत ने, इक कुरड़ी बनाई है ॥१॥
पवन पुड़वा इशारे सब, लिये हैं बुद्धिमानों के ।
गधे सूअर व मूर्ख को, भक्त सोटे से भाई है ॥२॥

दोहा

रावण को ये वचन थे जैसे तीक्ष्ण शूल ।
किन्तु रागात्मा भ्रमर, काट सके ना फूल ॥
बस बस बस अब चुप रहो, लम्बा करके हाथ ।
बड़े आशा में भान के, बोल उठे नरनाथ ॥
आशायें तेरी सभी, व्योमकुसुमवत् जान ।
क्या शक्ति उनकी यहां, कांपे सकल जहान ॥

कांपे सकल जहान सिवा तुम आप समझ जावोगी ।
अब आयु पर्यन्त राम के, दर्शन नहीं पावोगी ॥
देख रहा मैं हाल सभी क्या अटक बिलमायोगी ।
सता सता इस भँवरे को अभि कामिन पछतावोगी ॥

दोहा

जले को और जलाते, दुखी को और सताते ।
क्या छूट पुरुष सकती हो बन्दे के फन्दे से
अब क्या सहज निकल सकती हो ॥

गाना (रावण का)

सुख गये भाग्य तेरे क्यों, आग ठोकर लगाती है ।
तरसती है जिसे दुनियाँ उसे तू क्यों ना चाहती है ॥१॥
तेरा यह निष्ठुर भाषण तो मुझे फूलों बराबर है ।
मगर वहशत तन का कर मुझे, तू क्यों दिखाती है ॥२॥

बात वो ही करी तूने बराती ऊँट बनने से।
यहाँ तो जन मुझे पौसे, मुझे तू क्यों डराती है ॥३॥
किया है नियम उसका जो, मुझे दिल से नहीं भावे।
इसलिए दीन बन बहता, मुझे तू क्यों सताती है ॥४॥
तेरे रोने के पानी से कभी मैं बह नहीं सकता।
प्रेम उनके सभी पिघला, उसे तू क्यों दोहराती है ॥५॥
जरा सोचें जरा मनमें, समय कुछ धीर देते हैं।
मुझा बैठा खुशी को मैं, संग दिल क्यों बनाती है ॥६॥

दोहा

जनक सुता तैयार थी, कुछ कहने को और।
रावण लंका को चला, उदय कर्म का जोर ॥

प्रकरण मंदोदरी

था भरा मूप का बड़ा हुआ, कुछ काम पाम नहीं भाता था।
दिन रैन मन्दोदरी रानी के भी, महल तलक नहीं जाता था ॥
मन्दोदरी ने एक समय, चपला दासी बुलवाई है।
एकान्त पास बैठा उसको यों कोमल गिरा सुनाई है ॥

दोहा

अय चपला तुम तो जरा मेरे दिल का राज।
किस कारण आवे नहीं महलों में महाराज ॥

कई दिवस बीते महलों में, महाराज कभी नहीं आये हैं।
तरस रहे हैं नैन युगल नहीं दर्श पिया के पाये हैं ॥
क्या है उसका हाल भला, जो नई नार ले लाये हैं।
और महलों में अब तक उसको, क्यों नहीं लाना चाहे हैं ॥

दोहा

जैसा तुमको ज्ञान है वैसा मुझको ज्ञात ।
मगर एक अफवाह जरा, सुनी आज की रात ॥

दशरथ नृप की कुलवधू जानकी, रामचन्द्र की नारी है ।
दण्डकारण्य में देख अकेली, दशकन्धर अपहारी है ।
हम देवरी माथ तजे ना सत को जनक दुलारी है ।
इस कारण महारानी जी आये नहीं महल मंझारी है ॥

दौड़

डर बड़ी समझाते हैं बाग नित्य प्रति जाते हैं,
बात यह ठीक बड़ी है ।
प्रेम तमाशा लगा जिन्दों के, सुध बुध कहाँ रही है ॥

दोहा (मन्दोदरी)

अच्छा तुम जाओ अभी महाराज के पास ।
महल बुलाने की करो प्रीतम से अरदास ॥

गाना रानी का (दासी के प्रति)

जा पसी जा अभी देर लाना नहीं
साम महलों में लेकर के आना बहन ।

इन्हीं बातों में सारी उमर जो गई
अपना दुखड़ा ये किसको सुनाऊं बहन ॥१॥

हाय गजब ए सितम कैसा अंधेर है
पर नारी चुरा करके लाना बहन ।

रा रो तन का मह लोठी नमद सामने
इसका दुख भी जरा न दिखाना बहन ॥२॥

(दासी)

तो मैं जल्दी से जाकरके महाराज को,
राणी साहिबा बुलाकर के लाऊं अभी।
जैसी आज्ञा है वैसी मैं पालन करूं
चाहे खाने सलक को भी खाऊं कमी ॥३॥
आना जाना तो उनके ही स्वाधीन है,
मैं तो आने की बातें बताऊं सभी।
कहीं देरी यदि मुझको लग भी गई,
सजा कष्टी न तुमसे मैं पाऊं कभी ॥४॥

दोहा

ऐसा कह दासी चली, करने को यह काज।
पहुँची बंगले में जहां बैठे रहे महाराज ॥

मन में अति उचाट लगा, शय्या पर पड़े हुए हैं।
ध्यान प्रथम हो पायों में और नेत्र चढ़े हुए हैं ॥
मुरझा रहा बदन मस्तक, पर बल कुछ पड़े हुए हैं।
कुछ ऐसे कि रोगग्रस्त कुछ मानो सड़े हुए हैं ॥

दौड़

देख दासी घबराई, आज आपत्ति आई
कह क्या सोच रही है, पराधीन स्वप्न।
सुख नाहीं, सत्य यह बात कही है।

दोहा

अनुमान नजर यह आ रहे यदि बोली इस बार।
गुस्से में गुस्सा चढ़े, जैसें शीशा उतार ॥

दुखातुर शठ और तीसरा जो गुस्से में भरा हुआ।
दस अन्धों में अन्धा चौथा पंचम हो जो लड़ा हुआ ॥

सब शिक्षक रागी के शत्रु बुद्धिमानों का कहना है।
इसलिये इसे कुछ कह करके, क्यों कष्ट मौत का सहना है॥

दोहा

यही सोच वहाँ से चली पहुँची राणी पास।
मन्दोदरी कहने लगी चेहरा देख उदास॥

(मन्दोदरी का गाना)

अरी क्यों क्यों दासी क्या हालत है तेरी,
छवि तन की सब मुर्झाई हुई है।
खिलखिलाती हुई तू गई थी यहाँ से
बता क्या किसी की सताई हुई है॥१॥
बता कहाँ प्रीतम पता क्या तू लाई
उदासी क्यों चेहरे पर छाई हुई है।
हो करके निर्भय कहो सब कहानी
सुना सुनने की दिल में समाई हुई है॥२॥

दोहा (चपला)

महारानी के हुक्म से गई मैं थी जिस काज।
बंगले में थे पलंग पर पड़े हुए महाराज॥

(चपला का गाना)

बताऊँ मैं क्या तुमको वहाँ की कहानी
खबर किस मर्ज के सताये हुए हैं॥१॥
ना सेवक ही कोई देखा पास उनके,
सभी सब बाहर भगाये हुए हैं॥२॥
बिना नीर मछली तड़फती है जैसे
कहीं अपने मन को फँसाये हुए हैं॥३॥

कहाँ मेरी शक्ति करूं उनसे बातें
चरम दोनों मस्तक चढ़ाये हुए हैं ॥७॥

दोहा

दासी के जिस दम सुने मन्दोदरी ने बैन ।
यान बैठ पति पास आ, लगी इस तरह कहन ॥
तल्लीन आप किस ध्यान में, हुए पति महाराज ।
मुझको भी बतलाइये दुःख का कारण आज ॥

दुःख का कारण कहो आपके, मन में कौन फिकर है ।
दिल में अति उचाट उदासी कैसी चेहरे पर है ॥
हाल आपका देख मेरे इस दिल में नहीं सबर है ।
पल पल में शय्या पर पलटे लाते इधर उधर हैं ॥

दौड़

हीन क्षमि हुई तुम्हारी कौन दुःख ऐसा भारी,
भेद सब ही बतलाइये अर्धांगी से
प्राणनाथ ना बात छिपानी चाहिए ॥

]

दोहा

प्राण प्रिया मैं क्या कहूं, अपने दुःख की बात ।
पराधीन तन मन हुआ, नींद नहीं दिन रात ॥

नींद नहीं दिन रात हो सके, तो यह दुःख मिटादे ।
दशरथ सुत राम अभी जा सीता को समझादे ॥
यही राग बस जनक सुता से, प्रेम औषधि लादे ।
या इस तन से छुटा जीव माता परभव पहुँचादे ॥

दौड़

तुम बनो सहायक मेरी, करो मत इसमें देरी
तुम्हें यदि प्रेम हमारा। प्रथम करो यह काम,
नहीं बस यहां से करो किनारा॥

दोहा

है है है महाराज ये, फेर ना लेना नाम।
तीन खण्ड के नाथ बन, क्या करते हो काम॥

हे नाथ आप कुछ सोच करो क्या नीच कर्म चित लाते हो।
है निर्मल कुल ये कीर्ति धवल से, बट्टा आज लगाते हो॥
यहाँ एक एक से बढ़ करके, रानी है आपके कमी नहीं।
जो परनारी से राग करे उसकी जड़ जग में जमी नहीं॥
पाताल लंक छुट गई हाथ से जिस दिन से यह लाये हो।
नित्य शूर्पणखा रोती फिरती उसका ना हित कर पाये हो॥
खरदूषण जीवन हमारा, लेकर जिनसे रण में हारे।
यदि आ पहुंचे ये लंका में कभी ना टरेंगे फिर टारे॥
क्या लाभ उठाया बतलाइये, सुन्दर तन का क्या हाल हुआ।
सूर्य की तरह चमकता था वह काला आज निढाल हुआ॥
परनारी विष बस पिया जिसने अपने घर लाई है।
क्या राजपाट ऋद्धि सम्पत्ति निश्चय सब उसने खोई है॥

दोहा (रावण)

वाह वाह वाह बस पंडिता रहने दे उपदेश।
कोई अच्छी बात थी लाते ग्रन्थ विशेष॥

दोहा (मन्दोदरी)

मानुभाव यह आपको, दिया नहीं उपदेश।
इसमें तो इसम नहीं नीति का लवलेश॥

हे नाथ श्याम घर सुन लीजे, इक बात और बतलाती हूँ ।
अविनय न करीं आपकी हो कहती कहती रुक जाती हूँ ॥
जिस देश या घर क्या नगरों में सत्पुरुष सताये जाते हों ।
वहाँ मांस मद्य चोरी यारी, पतिव्रता नार सताते हों ॥
जिस जगह शील का लेश नहीं, उस जगह दरिद्रता वास करे ।
जहाँ मुनि सताये जाते हों तो कुल का सत्यानाश करे ॥
कामाग्नि यदि शान्त न हो तो राजकुमारी और बरो ।
हे नाथ हमारे कहने से तुम, इस व्याधि को दूर करो ॥

दोहा (रावण)

बस बस बस मत हट परे, रसना करले बन्द ।
ऐसे बचन विरोध का, यहाँ कौन सम्बन्ध ॥

हम चलते हैं पूर्व को तो यह पश्चिम का जाती है ।
हम कहते हैं तू ऐसे कर, यह उल्टे गीत सुनाती है ॥
बस तू अपने रस्ते लग क्यों मुझे सताने आई है ।
गुदी पीछे मति जिसकी वह मझे बताने आई है ॥

दोहा (मन्दोदरी)

बार बार कहती पिया पछताओगे फेर ।
एक नार के वास्ते, कटें शूरमे ढेर ॥

हे नाथ जरा सी कांजी रस पदार्थ पय का मारा करे ।
सिक्के की संगति से सोना, क्या गौरव की धारा करे ।
बिगड़े गति पुष्प विचारों से पर सब कुसंगति से बिगड़े ।
मन्त्रों में ऐसा लिखा हुआ, जगवास अनीति करे बिगड़े ॥

दोहा (रावण)

समझ लिया हमने सभी, आज विनय दई तार ।
गुरुणी बन कर आगई करने को प्रचार ॥

चाहे सर्वस्व हा नष्ट मेरा, मुझको इस बात का ध्यान नहीं।
इक प्राण प्यारी सीता बिन इस तन में बाकी जान नहीं॥
खरदूषण की बात ही क्या चाहे सारा जग मारा जावे।
यह प्राण जायें तो जाय मगर, नहीं जनक सुता जाने पावे॥
जब सुर सुन्दर आदि विद्याधर रावण से मिलकर आये थे।
वह समय याद होगा तुमको मैंने सब मार भगाये थे।
वैदेही सा एक ही है वे कितनी राजकुमारी थीं।
और सहस्रांशु इन्द्र नरेश की कैसी गति कर डाली थी॥

दोहा

क्या मेरा वह कर सकें दुखिया मन के मीत।
अष्टापद के सामने कौन विचारी चीत॥

बड़े-बड़े रण जीत हम चुके, मगर सिंह वह बन्दर हैं।
वानरों का नाच नचाने में हम भी तो गुरु कलन्दर हैं॥
क्यों समय नष्ट करती ब्याशाह सब कुछ निस्सार ही बकती है।
हृदय में जिसने वास किया अब निकल नहीं वह सकती है॥

दोहा

जो इच्छा मुझको कहा हो सो सो धिक्कार।
पुण्य हमेशा जीव का रहे नहीं इकसार॥
अनुमान हमारे में स्वामी वह समय वही था बीत गया।
सब राजा का जो जीत गया वह पुण्य आपका जीत गया।
यह काम तुम्हारा कुछ नीति के, अन्दर बहुता बाहिर था।
और पुण्योदय में सर्व जगत् दृष्टि गोचर में बाहर था॥

दोहा

इसमें तो प्रीतम कहीं नीति का नहीं अंश।
लज छिप कैसे जहाँ नहीं करो का पंश॥

किस कुल की यह बधू सिया, और किसकी राजदुलारी है।
राज्य महल के सभी सुखों पर, मारी ठोकर मारी है॥
पिता पिता वचन पूरा करने को, आपत्ति सिर धारी है।
है नाथ हृदय में सोच करो, यह वसी पुरुष की नारी है॥

दोहा

मातु परिश्रम को चढ़े भूले अपनी राह।
सीता सत को ना तजे पड़े लंक पर आह॥

किस लिये लंक में अब प्रीतम आकर लगाना चाहते हो।
क्यों गौरव हीन वंश को करके, दुर्गति बैंच लगाते हो॥
जिस जगह उपद्रव होते हैं, समझो कि वहां का पुण्य घटे।
वह देश दुखी हो जाता है जिस जगह पिया व्यभिचार बढ़े॥

दोहा

सुन करके व्याख्यान ये जल बल हो गया शेर।
भृकुटि सहित निकाल कर, बोला जैसे शेर॥
तू है कायर की सुता याद रही जिम श्वान।
अब यदि कुछ आगे कहा छेड़ें खेंच जवान॥

छेड़ें रसना खींच किसलिये, तू मरना चाहती है।
चपर-चपर चला रही जीभ सिर पर चढ़ती आती है॥
क्या चरित्र फैलाया और, हमको समझा चाहती है।
किस लिये अभी राजु मरी तू जला रही जाती है॥

दौड़

पेच क्या चला रही है दुखी को सता रही है।
भाई क्या प्रेम दिखाने मारू चाबुक चार,
अब ——— ——— प ठिकाने॥

और मैं आती हूं यहाँ पर मगर मस्तक ठिनकता है।
पता नहीं आज होनी ने यह क्या शस्त्र सम्भाला है ॥४॥

दोहा

इधर चली मन्दोदरी देवरमण उद्यान ॥
उधर सिया दो कर रही, अपने दुःख का गान ॥

आज सुनाऊँ कैसे अपना किस को मे हाल।
कहाँ पिता माई कहाँ मामंडल भाई।
आज विपदा के माही मेरे कोई नहीं नाल ?
कहां प्रीतम प्यारे कहा देवर हमारे
आज सम्बन्धी सारे कोइ पूछे ना हाल ॥२॥
कहना सासु का ना माना अपने हठ का ही तामा,
आज यह देश बिराना फिरते शत्रु के माल ॥ ३ ॥
पहले छूटी राजधानी भूमि बस बन की छानी।
अब की कहूं क्या कहानी बन गई बिल्कुल मुहाल ॥४॥
परोक्ष शोक मिटावे अपना गुण दिखला दे।
मुझको कारिज से छुड़ावे नहीं तो देदूँगी आज ॥५॥
रक्षक शोक कहाता अपना नाम कहाता।
मुझको क्यों ना जलाता काल बासिम को मात ॥६॥
शुक्ल ध्यान कवि का शासन शुभ है रवि का।
छोड़ ख्याल सभी का, जपू परमेष्ठी माल ॥७॥

दोहा

मूल मन्त्र सत्य शील जिस, हृदय लिया जमाय।
उस व्यक्ति से मनुष्य क्या देवनपाल डराय ॥

इधर लगी यह जाप जपन उस तरफ मन्दोदरी आ पहुँची।
बात परस्पर करने की, नीति शुभ अन्तर में सोची॥

जब दृष्टि पड़ी मुखमण्डल पर, दाँतों में अंगुली दबाती है।
क्या कहूँ उपमा दुनियाँ में कोई मुझे नजर नहीं आती है॥
यदि है तो कुछ, चन्द्रमा की सो भी यहाँ लज्जा लाती है।
मासांत्याग है मक्कारी का यह सम चौरस कहाती है॥
उसमें तो कुछ भी सुगन्ध नहीं इसमें शुभ सुवास आती है।
वह कुछ नरों का अधिपति है, यह जगदम्बा कहलाती है॥
वह गौरव पर चढ़े एक रात ही, फिर नित्य घटु घटता है।
यह सदा प्रकाशित रहती है, उल्टा नित्य प्रति गुण बढ़ता है॥

फिर उसे ग्रहण भी लगता है, दिन में शक्ति रवि मन्द करे।
पर इसका तेज एकसा, नित्य दिल में सब के आनन्द करे॥

है निश्चय वह भी एक रत्न, किन्तु उसमें कुछ स्याही है।
यह स्फटिक रत्नमयी हृदय वाली देती दिखलाई है॥
वह कुमुदिनियों को सुखदाई, तो अम्ब पंकज को दुखदाई है।
मैं मान लिया आकृति से सीता सबको सुखदाई है॥
धर्म रूप अनमोल मनुष्य तन वैदेही ने पाया है।
यह अति दुष्कर निर्भर पति का इक चन्द्र विमान बनाया है॥
यह सम्यग्धारी शील रत्न क्या सब रत्नों की आगर है।
इसलिए साफ जाहिर चन्द्रमा इसके नहीं बराबर है॥
उसमें हां अति स्वेतता है यह लिए गुलाब की लाली है।
वह ज्ञान रहित एक जड़ वस्तु यह चेतन ज्ञान उजाली है॥
उसका कुछ आदि अन्त नहीं यह शान्त कभी हो जावेगी।
वह भ्रमण करेगा इसी तरह, यह मोक्षधाम को जावेगी॥

दोहा

रोना आता है मुझे, कहूँ क्या उसे उचार।
आई हूं किस काम को, मुझको है धिक्कार॥

क्या अच्छा होता इसके, चरणों में अपना सिर धरती ।
इस धर्म रूप देवी की सेवा, कर आत्मा निर्मल करती ॥
हा फूट गई किस्मत मेरी, जो इसे सताने आई हूँ ।
क्या पता मुझे किस खोटी गति का बन्ध लगाने आई हूँ ॥
इस तरफ यह मरने को बैठी, तैयार उधर यह मरने को ।
इसलिए कोई तजवीज करू जो भी कुछ आई करने को ॥
समझाऊँ इसे यदि समझ गई, फिर तो सब कुछ बन सकता है ।
कम से कम उत्तर देने को, व्यवहार मार्ग बन सकता है ।

दोहा

निश्चय ऐसा कर गई रानी सीता पास ।
मिष्ट वचन कहने लगी, मन्द मंद कुछ भाष ॥
अहोभाग्य मेरे बहन तेरे भी अहोभाग्य ।
बस परस्पर आज यह, तेरा मेरा राग ॥

पटरानी की पद राज मिलेगा तुमको खुशी सुनाती हूँ ।
दिन रात करूंगी मैं सेवा दासी बनकर यह चाहती हूँ ॥
जितनी हम हैं रानी, सब तेरी दासी कहलावेंगी ।
कर जोड़ सामने खड़ी रहें, जो भी हो हुक्म बजावेंगी ॥
अहोभाग्य तेरा सीता, दशकन्धर, जैसा पति मिला ।
यह तीन लोक का नाथ अंक में स्वयंमयी सब काट किला ॥
क्या वर्णू शोभा महलों की सारे रत्नों से जड़े हुए ।
और तीन खंड के सभी भूप सेवक चरणों के बने हुए ॥
जो ऋद्धि सिद्धि सभी विराजे पुण्य सितारा चढ़ा हुआ ।
धर्राती है दुनियाँ सारी यह तेज सुलक्षण पड़ा हुआ ॥
यह सूक्ष्म कटि देख रावण की अमर शेर शर्माता है ।
सुर नर कुबेर भी देख महाराज को लज्जा आता है ॥

बस रूप तेज को देख इर्षा रवि शशि को आती है।
और नेत्र कटीलों की शोभा, मृगों का मान गलाती है॥
नेत्रों में स्वभाविक सुर्मों रंग जैसा कपोत की गर्दन में
मतवाली छवि मिलती है, यह भाव अद्वितीय नर तन में
फिर भी सरल स्वभावी ऐसे हैं जो भी मर्जी कुछ करवालो
त्रिलोकी है पर मान नहीं, चाहे चरणों में सिर धरवालो
यह लो कुछ खाना खालो, फिर चलेंगी दानों महलों में।
यह राजपाट सब कुछ तेरा नित्य रहो मदन आवासों में

छन्द

मन्दोदरी ने टहलनी को कुछ इशारा कर दिया॥
थाल भर पकवान का दासी ने आकर धर दिया।
सब तरह के मिष्ट और, नमकीन भूरपूर थे॥
फल फूल सर्वाद्रिक वहाँ पहले से ही तैयार थे।
मौन बैठी थी सिया पाँचों पदों में ध्यान था॥
उसके लिए यह बाग क्या इक शोक का स्थान था।
सीता सती को बात ये तलवार सी लगने लगी॥
चुप कर कहा मन्दोदरी सीता को यों कहने लगी।

दोहा

रहो सिया रस रंग में भोगो सुख भरपूर।
तू सबकी सरदार है मैं चरणों की धूर॥
पद्मिनाम पर भर मारी जो द्रव्य काल अनुसार चले।
धन्य धन्य घड़ी धन्य भाग्य सिया तुमको यह पूर्ण सुख मिले॥
अब ताजा पिस्ता बादाम, ज़रा ऊपर का मुख लगाओ तो।
पीकर विनती कर मेरी फल फूल मिठाई खाया तो॥

दोहा

कायर जन व दिल गिरें, औरों की ले ओट।
शीलवान दृढ़ शूरमा करें सत्यों में चोट॥
अनुचित इस बर्ताव का, सुनना भी महापाप।
गर्ज तर्ज ओछी सिया, रह न सकी चुपचाप॥
हट पीछे को कृतिया दिखा रही क्या जाल।
कुलसातिका यहाँ तेरी, गलेमा बिल्कुल दाल॥

गले ना तेरी दाल किसलिये बातें बना रही है।
जली हुई को क्यों आकर अब वृथा जला रही है॥
मानिन्द विष्टा सम्मुख मेरे जो कुछ दिखा रही है।
क्यों दुर्गति का बन्ध पापिनी अपने लगा रही है॥

दौड़

मिलाई कुदरत ने जोड़ी, तू अपनी रावण जोड़ी।
भाव था पहले आया यही तर्ज का भय मादन
तैने भी राग सुनाया॥

(सीता का गाना)

बड़ी निर्लज्ज तू मे, आज सारी बेच खाई है।
रागान्धी तू अमान्धे की क्या कीर्ति सुनाई है॥१॥
चोर कामी है गौरव हीन जो रावण दुराचारी।
किया निहमाद का भाला मुझे लाया चुराई है॥[illegible]॥
मुझे मैं रोज करने को यहां आई न मिलने को।
मिलाऊ धूल में लंका करूँ सफाई है॥३॥
पीठ यहां से दिखा जल्दी, सूरत तेरी ना भाती है।
दमादम देखना यहाँ पर, अभी दंगा मचाई है॥४॥

दोहा

देख देख उस सखी का विस्मित हुए अपार ।
दशकन्धर आया तभी, उसी बाग मंझार ॥

सीता के सुन वचन मन्दोदरी लज्जित होकर बैठ गई ।
पशु रागी ने मानों निज दृष्टि सूर्य से खींच लई ॥
कर पाँच पदों में ध्यान सिया ने मौन वृत्ति मन धारी है ।
यह ध्यान देख दशकन्धर ने, फिर ऐसे बात उचारी है ॥

दोहा

अब दृष्टि ऊँची करो, छोड़ो आर्तध्यान ।
क्या सोचा फिर आपने सत्य करो व्याख्यान ॥

अय सीता किसलिये मुझे तू सता सता कर मार रही ।
यह मेरा रक्त बरसता है जिसको तू आँसू डार रही ॥
घाव लगा कर हृदय में क्यों ऊपर नमक लगाती है ।
कर शान्त हृदय औषधि यही क्यों नहीं किंचित मुस्काती है ॥
यह देख मन्दोदरी रानी भी तेरी दासी है बनी हुई ।
और कैसा प्रेम दिखाया इसने फिर भी तू है तनी हुई ॥
एक यही इच्छा मेरी हँसने का दृश्य दिखा दे तू ।
हृदय की तपन बुझे ऐसा कोई शीतल वचन सुनादे तू ॥
कर दासी और मैं दास तेरा बस और बता क्या चाहती है ।
सारांश मान इन बातों का फिर क्यों नहीं भोजन पाती है ॥
और बता क्या कहूँ आसरा इन प्राणों का तू ही तो है ।
राजपाट क्या महल आप इन सबकी मालिक तू ही तो है ॥

दोहा

इस तौर का दीनता पापी हो लाचार ।
वचन तीर मम भूप पर बरसन लगे अपार ॥

ऐ मूढ़ कमलिनि दुनिया में सूर्य के दर्शन चाहती है।
पर जुगनू चाहे हजार चढ़े फिर भी नहीं दर्श दिखाती है॥
और देख पुरुष के दर्शन को, लज्जावन्ती मुरझाती है।
यह लज्जावन्ती परपुरुषों की, छाया से लज्जा खाती है॥
जिस समय चढ़ेंगे राम रवि, लंका रजनी में आकर के।
उस समय कमलिनी आँख मेरी खुल जावेंगी स्वामी पा कर के॥
वे प्रबलसिंह हैं रामलखन, तू कायर दुर्बुद्धि स्वर है।
क्या मान करे ये लंका तुमको होने वाली यम घर है॥
अनीति तुम्हारे कुल में ये प्रत्यक्ष आज दिखलाती है।
जो बहन तुम्हारी शूर्पणखा वह पति दूसरा चाहती है॥
व्याधि जो उसको लगी हुई सो ही तुमको बीमारी है।
क्या नुस्खा वैद्य सभी धर न कट जाये मर्ज तुम्हारी है॥
क्या ठीक कूट की शादी में, करदेव ने शङ्ख बजाया है।
आपस में ध्वनि रूप दामों ने मिलकर खूब सराहया है॥
यह देख इशारा रानी ने भी, सुरसांगीत उचारा है।
कौवों ने बांधा अलंकार सब आकर राग सुधारा है॥
यह सभी तुम्हारे पर घटता, आपस में सोच समझ लेवो।
जो काल बुलाता है आगे, तैयार चबीना कर लेवो॥
आज नहीं तो कुछ दिन में, यह सिर भी कटने वाला है।
फिर सोचो एक चिता में किस किस का सिर जुकने वाला है॥

क्रुद्ध रावण

दोहा

सुना काट करता हुआ, सीता का व्याख्यान।
रावण को भी चढ़ गया, गुस्सा बे प्रमाण॥

पर शीलवान का मस्तक भी कुछ आगे का सा होता है।
और तुम्हारा असली चन्दन का हैजस शक्ति* को खोता है॥
दशकंधर ने लिया खैंच शस्त्र और हाथों पर तोला।
मय दिखलाता हुआ त्रिया को लंकापति ऐसे बोला॥

दोहा

बस बस बस अब चुप रहो, बोलो वचन सम्भाल।
दुष्ट शब्द कह कर वृथा बजा रही क्यों गाल॥

अब याद रह तू इस फन्दे से निश्चय निकल नहीं सकती।
क्या खाली गाल बजाती है तू मुझको भिगल नहीं सकती॥
हम जितनी करते नरमाई तू उतनी सिर पर चढ़ती है।
हम हृदय मे हित चाहते हैं तू उलटी और अकड़ती है॥
यदि अबके अनुचित कहा तो निश्चय धड़ से शीश उड़ा दूंगा।
जो आगा करके बैठी है मिट्टी में उसे मिला दूंगा॥
बस बहुत सुनी मैंने तेरी अब जल्दी मान वचन मेरा।
नहीं तो काल बली ने अब तेरे सिर पर लाया डेरा॥

दोहा

कहन कहन भूप ने शस्त्र लीना हाथ।
मन्दोदरी तब यूं लगी कहन जोड़ कर हाथ॥

(मन्दोदरी का गाना)

त्रिखंडी नाथ या ही आप से आशा न करें।
निपट का प्रबल शक्ति दिखाया न करें॥१॥
यह पतिव्रता नारी आप सा जग में कोई
धरमी हुआ न इन्हें दूर हटाया न करें॥२॥

---

* नूर बदन

दोऊ कर जोर के नम्र विनती यही है मेरी,
कभी निर्दोषों पै तलवार चढ़ाया न करें ॥३॥
पति विरहिनी पतिव्रता विदेशिनी दुखिया
शस्त्र अबला को दिखा पाप कमाया न करें ॥४॥
क्षत्रिय का धर्म ही नहीं स्त्री पर वध करने का,
"शुक्ल" कर्मों से बुरा पाप कमाया न करें ॥५॥

दोहा (सीता)

समझ लिया मैंने सभी, है तू प्राणी नीच।
फँसे चोरपन न्याय से शस्त्र दिखाया खींच॥
ज्ञान शून्य तू हो रहा, बुद्धि महा मलीन।
प्रकट बीरता हो गई, अब ढोंगी मति हीन॥

धिक्कार तेरी शूरमताई, किस पै तलवार चढ़ाई है।
मगिनी माता की कुदरत न, जोड़ी क्या खूब बनाई है॥
यह अन्य पुरुष का ले भागे, यह परनारी से रोकता है।
गीदड़ छिपकर लेके शिकार और मूँछें बहुत मरोड़ता है॥
कायर पिंजर में फँसी शेरनी, को तलवार दिखाता है।
क्या यही शौर्य शक्ति तुझ में, जिस पर गाल बजाता है॥
इस मेरी अमर आत्मा को तलवार काट नहीं सकती है।
देवेन्द्र कुछ नहीं कर सकता क्या तुच्छ तुम्हारी शक्ति है॥
इस कलपौत की लंका पर, थूकी भी ठोकर धरती हूँ।
यह शक्ति एक शील की है जिससे उन्माद यहाती हूँ॥
सर्वज्ञ देव ने धर्म बड़ी पै सिर देना बतलाया है।
और धन्य घड़ी धन्य भाग्य, आज यह समय अपूर्व पाया है॥
उपकार आपका मानूंगी मुझको परमपद पहुँचा रावण।
तलवार को हाथ में तेरे है सीया पै शीघ्र चला रावण॥

पहले इसे रक्त पिला मेरा, फिर खून आपका पीवेगी ।
जब तक दुनिया में जैन धर्म बस कीर्ति मेरी जीवेगी ॥
फिर रक्तपात मेरा शोभन सच्चा इतिहास कहायेगा ।
यह बने सहायक सतियों का मम हृदय कमल खिल जायेगा ।
अब छुटा मुझे दुख से रावण, हेतु बन पहुँचूं स्वर्गों में ।
जहाँ अवधि ज्ञान से देखूंगी तू दुख भोगेगा नरकों में ॥
यह रवि जैसा अस्ताचल को तू भी अब चलने वाला है ।
क्या नाम कर इस राज्य का सब कुछ धूल में मिलने वाला है ॥
सच्ची सतवंती कुलवंती लिये धर्म के जान गमाती है ।
यदि नल कुबेर भी चल आवें उनको भी ठोकर खाती है ॥

दोहा

मान मार रावण खड़ा दिल में करे विचार ।
मरने को तैयार है पड़े किस तरह पार ॥

अधिक और कुछ कहा इसे तो अपने प्राण गवांवेगी ।
इसलिये समय देना चाहिये अपने मन को समझावेगी ॥
यह आग सहज कम होवेगा क्योंकि पिछला मोह लागा है ।
यह मन अन्तिम गिर जायेगा जो इसके तन का राजा है ॥

—✻✻✻—

नम्र रावण

दोहा

फिर आशा वस भय सिया गुस्सा दूर निवार ।
तुम तो नम हो गई जैसे क्षार अनार ॥

जिस कारण तुमने भय माना यह सब ऊपर की बातें हैं ।
यदि दुखा कष्ट इन बातों से तो क्षमा आपसे चाहते हैं ॥

नरम गर्म वचनों से तुमको बार बार समझाता हूं।
इसका भी तो एक कारण है, सो तुमको आण सुनाता हूं॥

दोहा

मैं एक समय मुनिराज से, लई प्रतिज्ञा धार।
जो मुझको चाहे नहीं त्यागी वो पर नार॥

जो हृदय से नहीं चाहे, उस पर नारी का त्याग मुझे।
बस केवल नियम रुकावट करने वाला है मैं कहूं तुझे॥
इस बात पे आप विचार करें कुछ समय और भी देते हैं।
इस पत्थर दिल को मोम बना, हम तेरे हित की कहते हैं॥

दोहा (कवि)

अस्ताचल भानु गया, सांझ में अंधेरा
दासी मन को कर गया, चलते यह उपदेरा॥

—०✽०—

सीता को परिसह

सुनो सभी तुम दासियों, जरा लगा कर कान।
यदि समझाई तुम ने सिया, पावो की सम्मान॥

अयि त्रिजटा सब में चतुर, अनुभवी वर्क व्यवहार है तू।
यह काम अवश्य करना होगा क्योंकि सबकी सरदार है तू॥
जैसे भी हो सके सिया को अपने पंजो में लाया।
मरमाई या गरमाई से भय महाभयानक दिखलाओ॥
सब यन्त्र मन्त्र टूटे टटे सिद्ध मन्त्र कोई चलाओ तुम।
मैं आज्ञा तुम को देता हूं, सीता का रूप सवाया तुम॥

इस काम में आप सफल होंगी तो मन चिन्तन मम पावोगी।
और दासीपन भी करूं दूर, स्वतन्त्र आनन्द उड़ावोगी॥

दोहा

समझा कर सब बात यह पहुँचा महल मंझार।
दासी भी करने लगी, अब अपना उपचार॥

कोई मन मोम की तरह बनी कोई तेजी लगी दिखाने को।
कोई लगी भूलनी सी नचने कोई मन्त्र लगी पढ़ाने को॥
कोई दाँत फाड़ फट फट हँसती, लगी कोई उपहास बढ़ाने को।
यन्त्र मंत्र में लगी कोई और कोई विषय जगाने को॥

दोहा

मूल मन्त्र सम्यक्शीलता जिस पर हो हथियार।
उस पर कुछ चलता नहीं करलो यत्न हजार॥

अज्ञानी कायर भर्मी भय इनका अधिक मानते हैं।
यह दुनिया से नहीं भय लाते जो जिनवाणी को जानते हैं॥
कर पाँच पदों में ध्यान सिया निज कर्मों का निन्दा(?)ती है।
श्री राम के प्रेम की लहर उठे तब मस्तक पर कर मारती है॥

दोहा

जनक सुता का इस समय दुःख मेरु आकार॥
कर्मों का यूं कर रही सीता निजी विचार॥

गाना (सीता)

सभी जन कर्मों भार्मी कि जब तकदीर फिरती है।
न धीरज उस का दाना यह जब बेपीर फिरती है॥१॥
पूरा था विश्व भर का मृत्यु भी तो दूर रहती है॥
मगर ना काम के सिर पर भी क्या शमशीर फिरती है॥२॥

कोई कहता हमें कि, तुम हमारे संग में चल हो।
किन्तु हृदय हमारे, बात य क्यों तीर चुभती है ॥३॥
कर्म बेशक सताते हैं मगर सन्तोष है इतना।
यह चेतन आत्मा मेरी प्रबल मशहूर फिरती है ॥४॥
कर्म मैंने किये पैदा, इन्हें अब ताड़ना भी है।
'शुक्ल' सीता कर्म का, करती चकनाचूर फिरती ॥५॥

दोहा

सीता के सम्राम की सुनी विभीषण बात।
सत्यवादी पहुंचा वहीं होते ही प्रभात ॥
था ज्ञान विभीषण को सभी, है यह सीता नार।
फिर भी यूं कहने लगा वचन अति सुखकार ॥
कहो बहिन तुम कौन हो कैसा आर्त ध्यान।
कौन यहां लाया तुम्हें करो सभी व्याख्यान ॥

किस की हो कुलवधू और, किसकी तुम राज दुलारी हो।
और अतुल कष्ट क्या पड़ा आप पर, कौन भूप की नारी हो ॥
तुम साफ साफ कह दो सब ही इसमें क्या बात शर्म की है।
कुछ बनूं सहायक मैं तेरा तू मेरी बहिन धर्म की है ॥

दोहा

अमृत भरते जब सुने, सत्य पुरुष के बैन।
जो भी कुछ धीरज हुआ लगी इस तरह कहन ॥
क्या कहूं मैं कौन हूं क्या बतलाऊं हाल।
कौन सहायक यहां मेरा जो काटे दुःखजाल ॥

क्या बतलाऊं अपना भाई, तुमको मैं कौन कहां की हूं।
जब थी राम तो मैं थी किन्तु अब यहां की हूं न वहां की हूं ॥

परिवर्तनशील संसार सभी, सर्वज्ञ देव फरमाया है ।
जो भी कुछ पूर्व कर्म किया, मैंने उसका फल पाया है ॥
मैं जनक भूप की पुत्री हूं भामण्डल मेरा भाई है ।
दशरथ भूप की कुलवधू नाम सिया मात विदेहा माई है ॥
लक्ष्मण जी देवर मेरे श्री रामचन्द्र का ब्याही हूं ।
वनवास में साथ रघुपति की मैं सेवा करने आई हूं ॥

दोहा

दण्डकारण्य के गिरी में निर्भय ठहरे आन ।
आगे भी सुन जो जरा, इधर लगा कर कान ॥

जहां करते करते भ्रमण दूर, जा निकले लक्ष्मण उस वन में ।
थी वंश पुञ्ज में लटक रही, तलवार देख हुए खुश मन में ॥
बट वृक्ष गहन द्रुम छाया थी जहां नजर नहीं कुछ आता था ।
परीक्षा कारण बंशजाल में खड्ग अनुज ने बाहाया था ॥

दोहा

छिपा था वहां साधता शूर्पणखा का लाल ।
सिर नीचे था लटकता पांव बंधे थे बट डाल ॥

वहां बंश जाल के सहित कटा शम्बुक का सिर पड़ा नजर ।
खेद किया लक्ष्मण जी ने निर्दोष मरा कोई राजकुंवर ॥
आ सीता सहित लक्ष्मण जी ने श्री राम को आकर बतलाया ।
जब सुना हाल करुणा सागर को लक्ष्मण पर गुस्सा आया ॥

दोहा

रघुदिनेश कुल मुकुट ने दी लक्ष्मण को फटकार ।
क्रोध प्रकट करते हुए, बोले कर्मावतार ॥

बिना विचारे किया काम तुमने अति ही नादानी का ।
निरपराधी जिसे मारा … का शीश उतारा प्राणी का ॥

भेद प्रकट किया श्री राम ने, और कहो क्या करना था।
धारण बन गये श्री लक्ष्मण भी मरने वाले ने मरना था॥

दोहा

ऐसी बातें कर रहे, वे वह दोनों वीर।
शूर्पणखा आई इधर, वंशजाल के तीर॥

यह तो मुझको भी ज्ञान नहीं, क्या किया यहां पर आ करके।
पर देख मनुज के चरण चिन्ह गई पास हमारे आकर के॥
यह रूप देख श्री राम का वश आई काम राग में लीन हुई।
सब प्रेम भूल गई पुत्र का, जब बुद्धि महा मलीन हुई॥

दोहा

जो भी कुछ उसने कहा, मन घड़ सभी असत्य।
सुनते ही श्री राम जी, समझे जो था तथ्य॥
बाली विद्याधर कोई ले गया मुझे चुराय।
देख रूप मोहित हुआ, और दूसरा आय॥

दोनों विद्याधर मरे परस्पर, इसी रूप पै लड़ करके।
अतिरिक्त मेरे संसार में और नहीं कोई भी यहां करके॥
फिर करी प्रार्थना विवाह करन की, राम लखन को चाह करके।
स्वीकार किया नहीं दोनों ने, फटकार दई धमका करके॥

दोहा

पूरी ना उसकी हुई, मन की चाही आश।
गुस्से में भर कर गई, खरदूषण के पास॥

खरदूषण त्रिशिरा आदिक, दल बल ले रण में आये थे।
इस तरफ अनुज भी धनुष बाण, ले कर में सम्मुख धाये थे॥

फिर कहा राम ने कष्ट पड़े तो भाई मुझे बुला लेना ।
संकेत शब्द सिंहनाद मेरे, कानों तक जरा पहुँचा देना ॥

दोहा

शूर्पणखा ने बात सब, कही रावण को आन ।
जाल बिछाया इन्होंने, किया सभी मन जान ॥

संग्राम घोर छिप करके कहीं, रावण ने था सिंहनाद किया ।
उसी समय चल दिये लखन को कहकर सहाई राम पिया ॥
इस दुष्ट दुराचारी ने फिर, खेला शिकार मुझ अबला का ।
कुदरत ही सर्वस हर लेगी ऐसे दुर्भागी कंगला का ॥

दोहा

धर्म बिना यहाँ कौन है, मेरा संकट मांय ।
बात न कोई पूछता जो देता दुख आय ॥

जिस जगह दुखी को दुख मिलता, वह देश दुखी हो जाता है ।
करुणा दिल में न रहे तो प्राणी जन्म जन्म दुख पाता है ॥
ईर्ष्या रूपी जहाँ पवन चले और द्वेष पावक जहाँ जगती है ।
वहाँ की प्रजायें सुख तो क्या खाने से भी तर मरती है ॥
समवेदना सत्य एकता और जहाँ प्रेम का नाम निशान नहीं ।
सद्ज्ञान धर्म प्रचार बिना जहाँ करते हो कुछ काम नहीं ॥
जो धर्म समाज का करते हों उनकी इज्जत चाहते न हों ।
वह नष्ट भ्रष्ट हो जाते जो औरों को अपनाते ना हों ॥
जो स्वार्थ में होकर अन्धे अन्याय रात दिन करते हैं ।
वह स्वार्थी अपने सुख पर, मरकर अंत नरक दुख भरते हैं ॥
कहन करने में है फरक लेना देना सब खोटा है ।
वहाँ पर कहिए सुख प्रेम कहाँ, जहाँ पेट भरन में टोटा है ॥

गुरुजन में भक्ति ना हो, वह श्रेष्ठों की पहिचान नहीं।
भारी भारी बातें करते हों पर भारी बात समान नहीं॥
विश्वास न जिनको आपस में सन्तोष कान मर्यादा नहीं।
मूणाङ्ग स्वयं अन्याय करे होता सब कुछ बर्बाद नहीं॥

दोहा

मस्तक आज यह साक में कटती सारी बात।
आने वाली है यहाँ, महा दुखों की रात॥

मैं नारी नहीं नागिनी हूँ, रावण की मौत निशानी हूँ।
था यों कहिये कुम्भकर्णों के पीसन वाली घानी हूँ॥
जैसे भी होगा वैसे मैं अपना धर्म बचाऊँ गी।
यदी अग्निम यह तो होगा ही, इस तन की बलि चढ़ाऊँ गी॥
यहाँ तुमने तो कुछ पूछा भी, और कौन पूछने वाला है।
अब निश्चय मुझको हुआ अंक स पुरुष हसने वाला है॥
पूछा तो हमने बतलाया, और श्रेष्ठ पुरुष जाना तुमको।
इक धर्म सहायक है सबका, यह भी विश्वास हुआ मुझको॥

दोहा

और विभीषण ने सुना सीता का व्याख्यान।
मीठे स्वर से इस तरह, बोला खोल जबान॥

गाना

कर्म रेखा है अमिटे कैसे मिटाय कोई।
भाग्य बाक स बढ़ें, भाग के जावे कोई॥१॥
सर्वस्व लगा जिसके लिये गौरव स जावे घर में।
भाग उस घर में यश कैसे टिकाये कोई॥२॥

शय्या फूलों की थी कल सुख के साधन थे अतुल।
आज बस संकट तड़फ, कष्ट मिटावे कोई ॥३॥
जो जगदम्बा महारानी थी कल आज वह दुख में फंसी।
धैर्य बंधाने के लिये पास न आवे कोई ॥४॥
पुण्य अपकृत्य में "शुक्ल" भौंरे चुरावें सब ही।
कर्म का मारा व्यथा, किसको सुनावे कोई ॥५॥

दोहा

पुरा किया करतार ने, आया तुम्हें चुराय।
अच्छा मैं जाकर अभी देऊंगा समझाय॥
धन्य तेरे मां बाप को धन्य तुम्हें सौ बार।
होना भी यह चाहिये, धर्म तत्व जग सार॥

जो यथातथ्य पतिव्रत धर्म, तूने महारानी पाला है।
शील रत्न जैसा दुनियाँ में और ना कोई उजाला है॥
पति के हित राजमहल छोड़ा वन में जा कष्ट सहे भारी।
तीन खण्ड की ऋद्धि पर भी तूने है ठोकर मारी॥
भयानक सिंह के पंजे में फंस करके भी निर्भय रहना।
बिना पता पति से विरह हुआ और आपत्ति सिर पर सहना।
यहाँ दुख समूह में पड़कर भी तुमने समता रस पिया है।
पूरण होंगी सब आशाएं जो भी दृढ़ निश्चय किया है॥
हे जनक सुता अब धीर धरो क्यों इतनी व्याकुल होती हो।
हृदय से सहायक बनूं तेरा अब क्यों अपना तन खोती हो॥
मन अर्पण करें धर्म पै जिसके दिल में यही समाई है।
फिर उसको कौन असाध्य चीज इस दुनिया में बतलाई है॥
सदा कष्ट सहा हम काम धरा आखिरी पर ही फलते हैं।
— [illegible]क अपेक्षा करते पर दुनिया से नहीं डरते हैं॥

अब थोड़ा कष्ट रहा बाकी अपने मन का सन्ताप हरो।
सबका वेष बदल लो शरत्क्षा और पांच पर्गों का जाप करो॥
पहरे पर जो हैं तेरे यहां, उन सबको समझा जाता हूं।
कोई ना कष्ट तुम्हें देगा सुमति पर बन्हें लगाता हूं॥

छन्द

विश्वास दे वहां से चला, दासी खड़ी सिर नाय के।
प्रेम से सबको विभीषण ने कहा समझाय के॥

दोहा

त्रिजटा आदि सभी छोटी बड़ी विशेष।
लागे करना श्रम वह जैसा द् उपदेश॥

तुम भी सोचो अपने मन में, प्रथम तो यह परनारी है।
फिर सती धर्म के लिये मही श्रुति पर ठोकर मारी है॥
यदि आज नहीं तो कल यहां पर मरणादा होने वाला है।
जो सीता को दुःख देवेगा उसका होना मुंह काला है॥
कर्तव्य सभी का मुख्य यही दुखिया को सुख देना चाहिये।
फिर देखो कैसी सती हमें यह भी तो गुण लेना चाहिये॥
बस यही हमारा कहना है तुम लगो सिया की सेवा में।
आराम दूर कर लोगी तो यम हाथ रहेगा सेवा में॥
दशकन्धर की आज्ञा को भी निश्चय पालन करना चाहिये।
पर योग्य अयोग्य कार्य का तो ध्यान सदा धरना चाहिये॥
नीति की रक्षा करने में प्राणों तक दे देना चाहिये।
अन्याय अधर्म काम में कोई भाग नहीं लेना चाहिये॥
महाराजों की यही औषधि है बस हाँ जी हाँ जी कर देना।
और समय देख इन बातों का कुम बातों में घर भर देना॥

मव माया मिथ निज भ्रम लगो बस यही हमारा कहना है।
परमव संग शोभम धर्म चले बाकी सब यहां पर रहना है॥

दोहा

बात विभीषण की सभी, हृदय गई समाय।
अमल यही होने लगा कुमति दई भगाय॥
क्षमा याचने को गई सब ही सीता पास।
जनक सुता निज कर्म को बोली ऐसे भाष॥

(सीताजी का गाना)

जा जा निर्दयी कर्म भवक्कार्यों पै बस आजमाया न कर।
जन्म से दुखिया सदा, हम पै बाया चलाया न कर॥
दुःख शोक के बादल बरस रहे हम आजादी को तरस रहे।
किसी अन्य का दोष नहीं है कर्म दुखियों को और दुखाया न कर।
जनकसीता के हम फाक में फँसी दुर्गम निर्जन बन में बैंसी॥
निर्दोष दुखियों को निठुर तेग की धार दिखाया न कर॥
अब यं और बुरे दिन आये हैं श्रीराम ने आहे भुलाये हैं।
आहार है रंजो गम ही सदा, जी जलों का अधिक जलाया न कर॥
सुख दुःख का रस्ता मूल नहीं सदा स्वप्नमात्र फल फूल नहीं।
बस क्षमा ही कर अब कर्म अरी विकराल स्वरूप दिखाया न कर॥

विभीषण की शिक्षा

दोहा

वीर विभीषण बस दिया पहुँचा लंका जाय।
रावण को कहने लगा एंसे मस्तक नाय॥
कीर्ति पताका कुल मणि मुकुट अब मार्इ रघुवीर।
मम निवेदन आपसे करने आया वीर॥

आज तलक यह वंश हमारा, भाई शुद्ध कहाता है।
इक दाग लगाया भगिनी ने, तू बड़ा आज लगाता है॥
हो तीन खण्ड के नाथ आप, कोई भी तेरे समान नहीं।
यह गौरव नष्ट भ्रष्ट हो रहा, क्या इस पर आया ध्यान नहीं॥
क्यों बड़ापन को धूर मिलाया सीता मार चुरा करके।
राम धर्म वृक्ष को जड़ काटी, यह खोटा कर्म कमा करके॥
सुख सम्पत्ति रूपी वृक्ष लिये, पैनी परमार कुल्हाड़ी है।
यह नारी नहीं नागिनी या समझें विष बुझी कटारी है॥
जो भी कुछ तेरी इच्छा है वह कभी नहीं फल लायेगी।
गौरव राज्य कोप शक्ति क्या सब इक धूल बनावेगी॥
यह महा पवित्र महिला है नहीं हवा तलक आने देगी।
न्यौछावर कर देगी तन को, नहीं गौरव को जाने देगी॥

दोहा

भानु परिचम को चढ़े भूमि आपनी राह।
सीता तजे ना शील को देवे प्राण गँवाय॥

कायरी माझी की नहीं पुत्री यह जनक सुता कहायी है।
कुलवधू श्री दशरथ नृप की, श्री रामचन्द्र की नारी है॥
पाताल लंक का छीन लिया खरदूषण और दल को मारा।
हैं महाबली श्री राम लखन संग वीर विराध योद्धा भारा॥
यह किष्किन्धा में आ पहुँचे यहाँ आने में कुछ देर नहीं।
प्रभात हुई तो भानु चढ़ने में विलम्ब कुछ फेर नहीं॥
जिसकी नारी यहाँ बैठी है उनको बतलाइये चैन कहाँ।
सूर्य वंशी कहलाते हैं, ऐसे अपमान का सहन कहाँ॥

दोहा

अच्छा है कुम्भसन के सिर पर सारा भार।
यही विनती आपके चरण समक्ष में भूर॥

इस एक मार के पीछे क्यों शत्रु की शक्ति बढ़ा रहे।
सुग्रीव भी उनके साथ मिला, क्यों अपनी ताकत घटा रहे॥
अन्तिम यह मम निवेदन है कि सीता को वापस कर दो।
यदि आप नहीं जाते तो यह, सब मार मेरे सिर पर धर दो।

दोहा

सहसा तेजी आ गई सुन कर यह व्याख्यान।
दशकन्धर कहने लगा मस्तक त्यौरी तान॥
बस बस बस अब मौन हो करो जरा आराम।
जनक सुता वापिस करो फेर न लेना नाम॥

जितना समय लिया मेरा सब तूने निष्फल खोया है।
किन बातों में यह बात कही जो सारा समी कुछ रोया है॥
क्या अच्छा होता कहीं शूद्र वैश्य के यहां जन्म लेता।
कोई उठा कष्ट तुम तो मेरी आन के यहां शरण रहता॥

दोहा

कत्राणी का दूध भी खोया सब मादाम।
गगाओं में डरने लगा डाकर सिंह महान॥

प्रथम तो यह बात मही वस्तु नहीं छोड़ा करते हैं।
तन धन चाहे न्यौछावर हो नहीं बात को मोड़ा करते हैं।
और सब माया प्रपंच सभी होती नीति महाराजों की।
फिर बात तीसरी जो अच्छी वस्तु होती सिरताजों की॥

दोहा

रत्न मिला चिंतामणि पुण्ययोग से आन।
इसे त्याग कर क्या करो धन जाऊं अमजान ॥

भाग नहीं तो कल सिया, अपने मन को समझावेगी।
क्या शक्ति होवेगी सबका की, कब तक निज पाँव जमावेगी।
जो वहम तुम्हारा लक्ष्मण का, सो भी निर्मूल निकम्मा है ॥
सब तीन खण्ड की डा रक्खी, इस रावण ने परिकम्मा है ॥

दोहा

भाग नहीं संसार में, दिखलावे दो हाथ।
दशकन्धर के नाम से थरथर कांपे गात ॥

मैं बड़े-बड़े दल मोड़े क्या यह, रंक यहाँ कर सकते हैं।
हाँ इतनी इन्हें स्वतन्त्रता यहाँ आकर के मर सकते हैं ॥
ना सेना कोई विमान पास ना दारू गोला शस्त्र है।
मस्तों का तो यहाँ नाम कहाँ मामूली ममता वस्त्र है ॥
फिर क्या शक्ति सुग्रीव की है जो इनके संग मिल जावेगा।
यदि मिला भी गया तो भी क्या है, यह भी निज प्राण गवावेगा
जो रण की बातें सहें शूरमे यही जागीरी पावेंगे।
यदि तुम जैसे कायर जीवें, तो भी क्या भूख उड़ावेंगे।
अब याद रहे ऐसी बातें मेरे संग फेर नहीं करना ॥
जो होगा देखा जावेगा, तू हृदय फिकर नहीं धरना ॥
यह जानकी जानकी साथिन है इसमें ना फरक जरा होगा।
जावेगी जनक सुता तब जब रावण का नाम मरा होगा ॥

दोहा (विभीषण)

मैंने कर्त्तव्य पालन किया भाग तेरा प्यास।
कहते हैं अनुमान सब आ पहुँचा अवसान ॥

विभीषण का गाना

समझले अब भी नहीं, सिर धुन के पछतायेगा तू।
म एहा पापिन को सदा कर, नरक में जायेगा तू ॥१॥
स्वल्प आयु के लिये बदनाम क्यों होने लगा।
मनुष्य तन खोकर कुगति में, ठोकरें खायेगा तू ॥२॥
धूल में गौरव मिलावा, आज खोटे कर्म से।
संसार सागर का सदा, महमान कहलायेगा तू ॥३॥
चक्री तीर्थंकर व गणधर, काल ने खाये सभी।
राज लक्ष्मी छोड़ लंका यमपुरी पायेगा तू ॥४॥
जैसी करनी वैसी भरनी दृष्टान्त यह प्रसिद्ध है।
जैसा बोया बीज तूने, वैसा फल पायेगा तू ॥५॥
हैं तेरे यदि कर्म खोटे तो "शुक्ल" फिर क्या करे।
इस कर्म खोटे का फल वे शीश कटवायेगा तू ॥६॥

दोहा (रावण)

क्यों मेरा शत्रु बना भाई होकर ढीठ।
मैं तेरी सुनता नहीं दिखा यहाँ से पीठ ॥

दिखा यहाँ से पीठ जल्द क्यों मुझको सता रहा है।
बना लघु सक आप पाठ हमको यहीं पढ़ा रहा है ॥
मिला-मिला करके समास विग्रह बना रहा है।
एक नहीं मानूं तेरी क्यों बातें बना रहा है ॥

दौड़

एसा मुझको बतलाइये आप बस चले आइये।
नहीं सुनना चाहता हूं यदि नहीं तुम जाते तो मैं
आप चला जाता हूं।

दोहा

दशकन्धर फ़ौरन उठा हुआ चलने को तैयार।
रोक बिभीषण ने लिया लम्बी भुजा पसार॥
रंग ढंग सब देख कर, हुआ मुझे विश्वास।
दोनों ने अब लंका पर, किया ध्यान कर वास॥

जो मर्जी सो करें आप, शिक्षाप्रद वचन हमारा है।
मर्जी रक्खें मेरें सीता को जैसा ख्याल तुम्हारा है॥
मन में सोच विचार करो, अन्तिम यह नम्र निवेदन है।
अब चलते हैं इस लिये कहा, कि आपस में संवेदन है॥

दोहा

सत्य पुरुष वहाँ से चला पहुँचा निज स्थान।
रावण ने त्रिजटा को कहा इस तरह आन॥
सीता को अब त्रिजटा करवाओ नित सैर।
प्रकृति के सम्मुख लगें, मन कर्म सब लहर॥

सब केलि गृहे क्या अन्तरोद्यान, वह रत्नों के घर दिखलाओ।
जिस तरह सिया का दिल पलटे वह दृश्य मनोहर दिखलाओ॥
आदर्श जहाँ आकर्षक हों, ऐसे धामों पर ले जाओ।
मरता है सबको एक रोज बुद्धि का परिचय दे आओ॥

दोहा

स्वीकार वचन करके चली पहुँची सीता पास।
जनक सुता के सामने किया प्रेम से भाष॥
जनक सुता तेरा हुआ अकुल हरा शरीर।
दिल में दुःख मेरे बड़े देख तुम्हारी पीर॥

इसलिये चलो कुछ सैर कराऊं, स्वास्थ्य ठीक हो जावेगा।
जलवायु के परिवर्तन से, कुछ सून भी दौरा पायेगा॥
ऐसे नित प्रति करने कारण दुबलापन नहीं रहने का।
मन की प्रसन्नता होने से, नेत्रों से जल नहीं बहने का॥

दोहा

प्रात और सायं समय, रहो नित्य तैयार।
देखो क्या क्या दृश्य है, लंका द्वीप मंझार॥

कहीं केलि गृहे कहीं अन्तरोवक भवनों में हीरे जड़े हुए।
नन्दन वन सम जैसा अद्भुत फल फूल भी से भरे हुए॥
कहीं जल झरनों म गिरता है, और हंसों का कुछ पार नहीं।
कायल पंचम स्वर बोल रही मुर्गों की फिर कतार कहीं॥
चहुं ओर मे है शोभाशाली शुभ दृश्य बाग का बना हुआ।
सब ऋतुओं के फल फूल खिले हैं बाल सामने तना हुआ॥
भय संसकर कहीं बालक जन दिल अपना बहलाते हैं।
अमित शांति सान्त्य पाकर, सुखमय स्वास्थ्य बढ़ाते हैं॥
कोई घूम रहा उद्यान बैठ कोई विधा अध्ययन में लगा हुआ।
और अपना ग्याम पकाने को कोई फिरे बाग में मगा हुआ॥
देख ऐस जनता इनको मन फूली नहीं समाती है।
पर वैदेही भीष्म बिना कुछ भी नहीं सुनना चाहती है॥
क्या सारा वृत्तान्त कहूं दासी समझ कर हार गई।
और अपनी सब आशाओं के, औजार वहीं पर डार गई॥

दोहा

हंस सरोवर ना तजे तजे न मणि भुजंग।
सती तजे ना शील को तज देवे निज अंग॥

उच्च भाव लख सती के, त्रिजटा हुई हैरान ।
अपने दुष्कर्तव्य पर आंसू लगी बहान ॥

चरणों में मस्तक डाल दिया, रो रो कर क्षमा मांगती है ।
शुभ कर्मोदय से प्राणी की, यों शोभन दशा जागती है ॥
स्पर्श लोहे का हेम करे, पर निज दर्जा नहीं देता है ।
पर महापुरुष महा पतितों को भी अपने सम कर लेता है ॥
बाकी दुनिया में यही एक, परतन्त्रता बीमारी है ।
इस रहस्य को जिसने समझ लिया, निर्वाण का वह अधिकारी है ॥
इस संकट में हे जनक सुता तू मुझको तारन आई है ।
सर्वस्व समर्पण सेवा में करदू मन यही समाई है ॥
अब तो रावण का बातों से मुझको पर मरना होगा ।
अन्याय में जो कोई लीन होवे तो अन्तिम सिर धुनना होगा ॥
व्यवहार में दासी रावण की निश्चय में आपकी बन ही चुकी ।
अय जनक सुता क्या बतलाऊं, बस आपके प्रेम में सन ही चुकी ॥

दोहा

नमस्कार कर त्रिजटा, पहुँची रावण पास ।
चतुराई से भाव फिर, लगी करन प्रकाश ॥
तड़ित केशकुल मणि मुकुट दुखी जन के सिरताज ।
हुक्म आपका सब तरह, बजा दिया महाराज ॥

किन्तु अभी तो इन फूलों में, महक का नामो निशान नहीं ।
यदि ब्याह दाह किया सीता का आपकी इसमें शान नहीं ॥
नाम सैर का सुनते ही प्राणों को तजना चाहती है ।
जिस दिन से आये तब दिन से ना पीती ना कुछ खाती है ॥
मेरी तो अरज यही चरणों में अभी ना कुछ कहना चाहिये ।
जो भी कुछ बोले जनक सुता शांति से सब सहना चाहिये ॥

रहस्य समझ कर रावण ने, कुछ समय के लिये मन मोड़ लिया।
यहां मूल मन्त्र में जगदम्बा ने अपने मन को जोड़ लिया ॥
रावण निज आवास गया था शोक धुनी में जला हुआ।
और इधर विभीषण भाई भी अपने विचार में लगा हुआ ॥

दोहा

अय होनी तूने किया कैसा समय तलाश।
बड़ हुये इस पुण्य पर, सहसा किया निवास।

छन्द

क्या था क्या होने लगा क्या दैव उठाया धनुष है।
इसमें बचा संसार में कहो कौनसा वह मनुष्य है॥
धात परदारा के कारण, होवे ज्ञानी ने कहा।
रावण के मरने का यही, तैयार नक्शा हो रहा॥
मैंने तो अपनी ओर से थे बीज छेदन कर दिये।
होनी हमारी ने यही विष, वृक्ष सम्मुख धर दिये॥
जिसका सहायक पुण्य और, आयु कर्म का जोर है।
क्या पं वन्दों से सुरपति मारें मनुष्य किस तौर है॥
इस तरफ यह जन्या हुआ, और बात कुछ सुलझा नहीं।
तैयार हैं उन तरफ भी रात्रु न आ जावे कहीं॥
पानी से पहले पाल बाँधों ये बड़ों का कहन है,
उद्यम ही मनका सार है बाकी सभी कुछ भरम है।
इस अब कर्तव्य मम मन्त्रीश को बुलवाय दू,
सारे सभासद मेलकर प्रबन्ध सब करवाय दू।

विभीषण मन्त्री विचार

दोहा

वीर विभीषण ने लिया मन्त्री बड़ा बुलाय ।
सत्यवादी अति प्रेम से यूं बोला समझाय ॥
अय मन्त्री क्या अभी तलक रही सुमेरी आय ।
होनी ने चहुं ओर से लंका घेरी आय ॥

पुण्य रवि लंका का मन्त्री, जल्दी छिपने वाला है ।
मुख रूप चन्द्रमा का देखो अब राहु ग्रसने वाला है ॥
आलस निद्रा दूर करो, और सोचो अपनी हस्ति को ।
अब गौरव हरने वाला है, राघव इस हम बरमतो का ॥

दोहा

पतिव्रता सीता सती रामचन्द्र की नार ।
ज्ञात सभी कुछ है तुम्हें फिर क्या कहूं उचार ॥

क्या साथा बतलाया तुमने क्योंकि मन्त्रीश कहाते हैं ।
सब भार तुम्हारे सिर पर ये किस बात में गौरव चाहते हैं ॥
क्या कर्तव्य आपका है, और किसकी जुम्मेवारी है ।
फिर क्या फल निकलेगा इसका इस समय जो कर्तव्य जारी है ॥

दोहा

पाताल लंक श्रीराम ने अपनी लई बनाय ।
वीर विराध सुग्रीव भी बन गये सेवक आय ॥

प्रसन्न आज सुग्रीव नरेश्वर पद राम का करता है ।
और पवन पुत्र श्री हनुमान उनके चरणों में पड़ता है ॥
और बाकी सब जितने राजा रावण पर दाँत पीसते हैं ।
मति भंग हुए दशकन्धर की, या अपनी तान खींचते हैं ॥

दोहा

कभी नहीं मैंने करी समझाने में लाज ।
रावण को सीता बिना, और नहीं कुछ काज ॥

इसलिये बुलाया मैंने यहाँ सम्मति आपकी लेने को ।
और दशकन्धर का यह हाल क्या मन नहीं चाहता कहने को ।
तुम बुद्धिमान और स्याने हो नीतिज्ञ चतुर मर्दाने हो ।
अब समझाओ क्या करना है क्योंकि तुम अनुभवी दाने हो ॥

दोहा

जो कुछ भाषा आपने, सभी यथार्थ ठीक ।
सीता रावण के लिये है कांटों की चोट ॥

यह एक वंश का नाश करे पर यह सर्वस्व हरायेगी ।
जो मरने में कुछ बने सहायक सीता सिद्ध हो जायेगी ॥
यदि महाराजा से करें निवेदन इतना हममें साहस कहाँ ।
पर हृदय से मैं चाहता हूँ, यह व्याधि मेरी जाय यहाँ ॥

दोहा

जिस दिन से लाये सिया खुशी ना देखे भूप ।
अब हर समय जिस तरह, बना इस तरह रूप ॥

अब किस वीर दशकन्धर के, यह नारी नहीं नागिनी है ।
या या कहिये महाराजा की विपती यह एक शाकिनी है ॥
और स्वप्नरमी का साया भी सम्भावित से आ सकता है ।
जो भाग नशे में चूर हुआ शिक्षा कैसे पा सकता है ॥
हाँ युद्धस्थल में शूर वीर निश्चय महाराज कहाते हैं ।
जो पद विलासिता में वह भागी शीघ्र नष्ट हो जाते हैं ॥
सुग्रीव पवन क्या हनुमान इनके चरणों में पड़ते थे ।
[illegible] पर भी जंग जुड़ा पहिले अपना सिर आगे करते थे ॥

खरदूषण का सहस्रांशु से हनुमान ने बन्ध कटाया था।
और नाग फांस से भंगमी सुत ने, रावण को छुटवाया था॥
अतएव सभी यह डील रहा कि, वानों शक्ति टूटेंगी।
और विरुद्ध हमारे हो करके लंका के ऊपर फूटेंगी॥

दोहा

सबसे श्रेष्ठ उपाय यह सीता को दें भेज।
नहीं तो कुछ संशय नहीं, बनें रक्त की सेज॥

सभासदों को युक्ता अभी से नियत शीघ्र कुछ कर लेवें।
या करवा दें सीता वापिस या युद्ध सभी को कर देवें॥
हैं सूर्यवंशी राम लखन सर्वस्व तलक लाने वाले।
हैं दलबल सबल विमान सहित समम्भो यहा पर आने वाले॥

दोहा

बात बड़ मंत्रीश की हृदय में गई समाय।
सभासदों को बुलायकर, करने लगे; उपाय॥

अन्त में सबने नियत किया कि इन्तजाम सारा करदो।
और मरती लाखा सेना की उटी सतोर्य सीधी करदो॥
सन्धि के सब मार्ग रोको कुछ भेजो फौज समुद्र पर।
सारे पद्यमरीक धना भय माना और सरहदी पर॥
अब लंकापुरी पर आराती का कोट शीघ्र करना चाहिये।
और यत्नमुला पहिर पर हो बारू गोला भरना चाहिये॥
गुप्तचरों को फैलादो कोई अन्य न अन्दर आ पावे।
है सदी कपि पति ललिया काई भेद न यहा से ले जावे॥
फिर सीता को वापिस करने की, करो विनती राजा से।
कितनी शक्ति शत्रु की है, यह भी देखो अन्याजा से॥

जब तक ना रण प्रारम्भ हुआ, तब तक झगड़ा मिट सकता है।
मिथिलेश कुमारी लिये बिना श्री राम नहीं हट सकता है ॥

दोहा

निश्चय किये प्रस्ताव जो सबको दिये सुनाय।
अब निज निज कर्तव्य पर, लगे सभी जन जाय ॥

अब लगा सभी दारू गोला सामान इकट्ठा होने को।
और मुख्य मुख्य स्थानों पर, सब योग्य सामग्री होने को ॥
क्या हाथी घोड़े विकट गाड़ियाँ संग्रामी रथों का पार नहीं।
हैं संग्रामी विमान गगन में, चहुँ ओर विस्तार कहीं ॥

दोहा

तय्यारी होन लगी लंका में इस तौर।
अब सब ध्यान करो जरा किष्किन्धा की ओर ॥
पल पल छिन छिन राम का बीत वर्ष समान।
सुग्रीव लगा निज काम में कर्तव्य भूल महान् ॥
राम अति व्याकुल हुए आर्तवन्त उदास।
लक्ष्मण को कहने लगे बैठाकर निज पास ॥

—०×०—

राम लक्ष्मण विचार

राम—जिसकी आशा पर यहां बैठा लक्ष्मण वीर।
सीता की सुध बिन लिये अब दिल का नहीं धीर ॥

जिसकी आशा पर आ हमने यहां डेरा डाला है।
सुग्रीव लगा अपने सुख में कर्तव्य नहीं कुछ पाला है ॥
सुखिया साथ दुखिया जागे प्रत्यक्ष आज हम पर बीती।
काम कार युत हो बैठा कपि पति ने क्या लखी नीति ॥

दोहा

और यदि देरी हुई, सिया तजेगी प्राण।
निष्फल सब प्रयत्न हों, करो जरा कुछ ध्यान॥
सुने वचन श्री राम के, हृदय गये समाय।
झट्ट उठ कर अनुज ने बोले मस्तक नाय॥
गर्माई की हाकिमी नर्मी का व्यापार।
इससे जो उल्टा चले पड़े किस तरह पार॥

इस समय हमारी नरमाई, गौरव का नाश करायेगी।
जो रहे भरोसे औरों के तो सीता हमें ना पायेगी॥
बस आज्ञा आपकी चाहता था देखो क्या कर दिखलाता हूँ।
तलवार के आगे धर सबको सीता का पता लगाता हूँ॥

दोहा

इसी समय लक्ष्मण चले, तुर्त निवाकर माथ।
रक्त नयन डोरे लिये धनुषबाण लिये हाथ॥

सूर्यहास तलवार बगल में लक्ष्मण के शोभाती है।
प्रबल सिंह के मस्तक पर, लाली की चमक दिखाती है॥
शूरवीर सहसा पहुँचा यहाँ सुग्रीव सभा भी लगी हुई।
और नेत्रों की ज्योति भी थी मानिन्द मशाल के जगी हुई॥

दोहा

काल रूप लक्ष्मण पड़ा नजर सामने आय।
वानरपति कंपित हुआ गिरा चरण में आय॥

सबके मन हो गये खड़े और दिल अन्दर से धड़क रहा।
गुस्से में चेहरा लाल अनुज का दक्षिण भुजबल फड़क रहा॥

मौन चित्रवत खड़े सभी मुँह से नहीं बोल निकलता है।
समय देख नरमाई से, कपि पति यों गिरा उचरता है॥

दोहा

सिंहासन पे विराजिये हे प्रभु दीन दयाल।
सेवक हाजिर चरण में आप क्यों आये चाल॥

हे नाथ आपके गुण गाऊं, यह जिह्वा नहीं मेरे मुख में।
है धन्य पिता और माता को, जिसने तुम धारे हो कुख में॥
आज्ञा जो सेवक लायक हो कृपया पहले सो बतलाइये।
स्वामिन कुछ मम भी पान करो पुण्यरूप चरण अन्दर लाइये।

दोहा (लक्ष्मण)

कहने में कुछ और है करने में कुछ और।
आकृति में और है मन में है कुछ और॥

मन में है कुछ और, सभी यह धूर्तों के लक्षण हैं।
किन्तु निश्चय समझ, मनुज के कार्यों के भक्षण हैं॥
काम पड़े पर करें मित्रता निकले पर दुश्मन है।
कष्ट आपको कौन यहाँ बैठे आनन्द अमन है॥

दौड़

मित्र वानर हैं किसके, काम काढ़ा और खिसके,
सुखा में भूल रहा।
सहसगति के पास पहुँचा तू गा क्या भूल रहा है॥

गाना लक्ष्मण जी का (बहरतवील)

तरी मातों न भाल में काला हम
अब भी चाहो सफाई जिताता रहा।

तूने वृथा हमारा समय खो दिया, मुझे नैनों से आँसू
बहाता रहा ॥१
मारा वृथा ही सहसगति राम ने, यह बिचारा दुखी
करवाता रहा।
तेरी युक्ति में कोई कसर ना रही फुसफसी जैसी
बातें मढ़ाता रहा ॥२॥
अब नहीं तुमको कोई भी चाहना रही,
जो खटकता था काँटा वो जाता रहा ॥२॥
अब तू तावे चरम बनकर बैठा यहाँ, हमको बातों
का शरबत चटाता रहा ॥३॥
क्यों तू विश्वास देकर आया यहाँ बगुला भक्ति से
हमको फँसाता रहा।
क्या शर्म तुमको अब तक भी आई नही
खाना पीना ही हमको सुनाता रहा ॥४॥
क्या तूने यह समझा कि मेरे बिना बस पता
हमको सीता का पाता नहीं।
तुम यहाँ बैठ अपना मजा पीजिये, कृतघ्नों का
लक्ष्मण भी चाहता नहीं ॥५॥

दोहा

सुने वचन जब लखन के, घबराया सुग्रीव।
गिरा चरण कर जोड़ कर, बोला नम कर ग्रीव॥
नम्र निवेदन क्षमा कर, सुनलें आप हजूर।
जो मर्जी फिर कीजिये निकले यदि कसूर॥

निकले यदि कसूर मेरा तो शीश अलग कर देना।
सेवा में हाजिर हुआ नहीं, यह भी कारण सुन लेना॥

प्राण जो आपका है प्रभु, पर्यन्त नहीं दे सकता हूँ।
हाँ सिया सुधि के बाद आप, दोगे सो ही ले सकता हूँ॥
जब तक सीता ना पायेगी, तब तक मुझको आराम नहीं।
हूँ इसी बात में लगा हुआ, कोई और दूसरा काम नहीं॥

दोहा

सुनी बात सुग्रीव की खुशी हुए सुखकन्द।
मिष्ट वचन से यूं लगे कहने दशरथ नन्द॥
तू मेरी दक्षिण भुजा, हनुमासिनी फरजन्द।
बांई भुजा मेरी समझ, वीर सुमित्रानन्द॥

तेरा ही यह काम मित्र, सब तूने ही तो करना है।
यदि कहीं पर पड़ा काम, वहां पर तूने ही लड़ना है॥
अन्तिम ताज सुयश का भी तो, तेरे ही सिर धरना है।
कौन फिकर उसको जिसको भी जिमयाणी का शरना है॥

दौड़

ध्यान आप स्वयं है तुमको फिकर फिर कौन है मुझको।
काम जल्दी करना है, सीता हरने वाले के गले पर शस्त्र धरना है॥

दोहा

कृपा आपकी चाहिए, मुझ पर कृपानिधान।
सीता की सुध के लिए, करूं अभी सामान॥

श्री हनुमान का मुखड़ा लख क्योंकि वो बुद्धि वाला है।
यह शूर वीर अनुभवी योग्य इसका कुछ ढंग निराला है॥
एक एक दो ग्यारह हम और, आपकी सिर पर साया है।
अविछिन्न देव का रास्ता लेकर, बीड़ा आज उठाया है॥

—###—

कुछ हालत थी कमजोरी की, तन पर थे बेढब घाव पड़े।
महाकष्ट देख उस व्यक्ति को, रहे पूछ हाल यों पास खड़े॥

दोहा

अय भाई तू कौन है क्या है तेरा नाम।
क्या हालत तेरी यहाँ गिरा किस तरह आन॥

गिरा किस तरह आन छवि तन की मुरझाय रही है।
और लगे घाव किस तरह, कमर तेरी बल खाय रही है॥
तृषा तुमको लगी हुई मुख, जिह्वा बता रही है।
होता है मालूम तुम्हे, क्षुधा भी सता रही है।॥

दौड़

सभी वृत्तान्त सुनाओ, भय ना कुछ मन में लाओ, योग्य सेवा बतलाओ, यहीं सोच को भाव सभी बेखटके हाल सुनाओ।

दोहा

हे स्वामिन् सुन लीजिये मेरी व्यथा तमाम,।
अर्कजटी का पुत्र हूं, रत्नजटी मम नाम॥

जनक सुता को लंकपति हरके लंकामें ले जाता था।
उस तरफ सैर करता करता, मैं भी विमान से आता था॥
रावण के विमान बीच, आवाज रुदन की भारी थी।
दशरथ नृप की कुलवधू सिया' वह रामचन्द्र की नारी थी॥

हा लक्ष्मण देवर तुम्हीं, सुनना मेरी पुकार।
दुष्ट मुझे ले जा रहा सुनो राम भरतार॥

इस तरह सिया चिल्लाती थी दुखिया की कोई सहाय करो।
कभी कहती थी हे जनक पिता तुम ही मेरा सन्ताप हरो॥
सीता के रुदन भयानक से पत्थर का कलेजा छनता था।
कभी हा कार के सहित वीर, भामंडल नाम निकलता था॥

दोहा

मार्तंडक का नाश सुन, मुझे आगया जोश।
क्योंकि मेरा मित्र था, रह न सका सन्तोष॥

बहिन मित्र मार्तंडक की, सीता मेरी भी भगिनी है।
और बात मुझे यह पहले था, यहाँ पेश न मेरी चलनी है॥
क्षत्रापन का धर्म नहीं इस हालत में देखूँ दारा।
इसलिए बाद शस्त्र में, जा रावण के सम्मुख ललकारा॥

दोहा

हुआ परस्पर व्योम में, देर तक संग्राम।
रावण ने विमान फिर, तोड़ा मेरा तमाम॥

इ मास फेर बंपर हो कर, मैं गिरा गिरि पर आ करके
फिर होनहार साई मुझको इस कन्दरा में लिपटा करके॥
मुझ अपने दुःख का ख्याल नहीं, यदि है तो ख्याल सिया का है।
धिक्कार मेरी यह जिम्मगामी इस जीने का फल लिया क्या है॥

दोहा

उसी समय सुग्रीव ने लिया विमान बैठाय।
रत्नजटी को पथ्य और, औषधि दई पिलाय॥
रत्नजटी को फिर दिए, शुद्ध वस्त्र पहनाय।
धन्यवाद उस वीर को देते हैं हर्षाय॥

सुग्रीव कहे हे रत्नजटी तुमने सुयोग्य कर्तव्य किया।
मम दुःख हमारा मिटा दिया, श्रीराम को भी जीवन्य दिया॥
दिन रात जिन लिए फिरते थे तूने सा सफलीभूत किया।
दुष्कर था यह जो काम हमें, मित्र तूने सब सुख किया॥

चलो मित्र यह पता सुरी का रामचन्द्र को देवेंगे।
मिले पूर्ण सुयश तुमको, हम भरा खुशाली खेलेंगे॥

दोहा

शशी कला विमान की पहुंचे रघुवर पास।
साथ सिया कपिपति ने, किया बचन प्रकाश॥

महाराज सिया का रत्नजटी से हाल सभी सुन सुन लीजे।
फिर आगे क्या करना चाहिए, सो भी हमको आज्ञा दीजे॥
अब है नाहर के पंजे में सीता अब भी मन ध्यान धरो।
पहले सुनको सब बात शांत रहिके, फिर सोच के काम करो॥

दोहा

आदित्य नगर से आगये, उधर बीर हनुमान।
वानरपति करने लगे, स्वागत अरु सम्मान॥
रत्नजटी को राम ने, लिया हृदय से लगाय।
लगे प्रेम से पूछने, अपने पास बिठाय॥
कष्ट उठा करके कहो रत्नजटी वृत्तान्त।
सीता का और स्वयं का आदि अन्त पर्यन्त॥
कथन सिया का क्या कहूँ जलता हृदय तमाम।
यही शब्द थी कह रही हा लक्ष्मण हा राम॥

लंकपति हर सीता को ईशान कोण में जाता था।
और कम्बू द्वीप गिरि ऊपर मैं भी उत्तर से आता था॥
जब सुना रुदन वैदेही का मैं रावण के सम्मुख धाया।
इस तरफ उठाया मैं शस्त्र उस तरफ बाण उसने उठाया॥

सिया शुद्धि ने राम लखन का, हृदय कमल खिलाया है।
फिर पास बुला श्रीराम ने यों सुग्रीव को वचन सुनाया है॥

दोहा

अब भाई सुग्रीव अब आलस्य देवो निकाल।
असली नकशा लंक का दिखलाओ तत्काल॥
हाँ स्वामिन् देखें सभी नकशा आप जरूर।
किन्तु कार्य सिद्धि, यहाँ होनी नहीं हजूर॥

होनी नहीं हजूर क्योंकि, वह अतुल बली नाहर है।
तीन खंड में पुण्य प्रबलता, आज जिसका ज़ाहिर है॥
सहस्र एक साधी विद्या, और नीति का माहिर है।
लगे कांपने सब दुनियाँ जब निकले वा बाहिर है॥

दौड़

वीर बली कुम्भकर्ण है, भुजा जिसकी दक्षिण है, विभीषण शूरा
नामी है स्वामिन् रावण की उसको भुजा समझता वामी।

दोहा

इन्द्रजीत है सुत बड़ा, मेघवाहन लघु मान।
जिनके तेज प्रताप से कांपे सकल जहान॥

शक्ति रावण की देखने में यहाँ सारी उमर बिताई है।
सब तीन खंड की परिक्रमा उसके संग मैंने लाई है॥
और सहस्रांशु नृप का घमंड रावण ने सभी उतारा था।
और इन्द्रभूप इन्द्र समान को भी निज कैद में डारा था॥

दोहा

शक्ति तोड़ी वरुण की जो था बड़ा मरोर।
मधुकभूप भरथन गिर मार्ये सेष पिरोर॥

नृप सुरसुन्दर भी नाथ उन्हीं के ही, दम में दम भरता है।
और नल कुबेर सुत दुर्लंघपुर का उनकी सेवा करता है॥
सुर संगीत का नव नरेश, जामाता है जिसका लंकपति।
तीन खण्ड में आज अद्वितीय, रावण की है पुख्ता रति॥

दोहा

अष्ट महा से शक्तियें हैं दशकन्धर के पास।
बाकी भी सब समझलो, हैं रावण के दास॥

रावण की सेना की शक्ति, निज मुख से क्या वर्णूं मैं।
हां हनुमान सुग्रीव इधर हाजिर हम आपके चरणों में॥
सुन देखा नगर पसार सभी योद्धाओं का फक चेहरा है।
दशकन्धर के भय का इन सब के हृदयों पर डेरा है॥

दोहा

कायरता सुग्रीव की देख सुमित्रा लाल।
शूरवीर बांका बली बोल उठा तत्काल॥
वाह जी वाह क्या कर रहे गीदड़ के गुणगान।
चोरों ने भी क्या कभी, मारा है मैदान॥

मारा है मैदान कहा चोरों ने बतलाये साहिब।
आप न चलिये संग वहाँ निर्भय हो जाइये साहिब।
निगल न जाये दशकन्धर पुर, में छिप जाइये साहिब।
करपात्र की भरती हमको भी ना चाहिये साहिब॥

दौड़

बात क्या कही अनोखी प्रशंसा करी गधों की अकेला मैं जाऊँगा।
पहले मारा हूँ रावण के, फिर सीता लाऊँगा।

गाना (लक्ष्मण जी का)

चलाई तेग मेड़ों पर, न देखा शूरमा अब तक ।
मस्ट शेरे बबर की में, कभी आया नहीं अब तक ॥१॥
करोड़ा करोड़ सारेगण, चमक अब तक दिखाते हैं ।
रवि ने अपनी किरणों का वहाँ फैंका नहीं जब तक ॥२॥
रंगा रण में जिस्म, बना था कसर दुश्मनों का ।
मगर तब तक कि माहर ने सुनी माता नहीं जब तक ॥३॥
जो माता चोर मकर की शकुन कब तक मनायेगी ।
चन्हों का सिर उड़ाने का मिला मौका नहीं जब तक ॥४॥
जरूरत थी सिया सुध की, शुक्र लाचार बैठा था ।
तड़फता था मैं जिस दिन को, मिला मौका न था अब तक ॥५॥

दोहा

युद्ध करने को भीर था, बीर सुमित्रानन्द ।
श्रीराम ने हटा दिया, खामोशी का बाण ॥
गर्म नर्म दामों मिले काम तुरन्त हो जाय ।
नर्मी से सुग्रीव को बोले यों रघुराय ॥
तुम दोनों मेरी भुजा, बायीं दक्षिण जान ।
भरत तुल्य तू है मुझे, सुन सुग्रीव सुजान ॥

मत फिकर करो अपने मन में तुम मेरे धर्म के भ्राता हो ।
किस मुख से मैं गुणगान करूं तुमतो मुझको सुखदाता हो ।
आभारी हूँ मबका ही मैं तुमने महाकष्ट उठाया है ।
दुष्कर था हमको सीता का सब आपने पता लगाया है ॥

दोहा

यहाँ आने से भरत को, दिया हमीने राज ।
ऐसे ही तुम भी, रहो किष्किन्धा सब काज ॥

जनक सुता को ले आने की, शक्ति हम में काफी है।
पर आशा करे सो निष्फल अपूरा भी जिनवाणी भाखी है॥
आमद हम नहीं करते हैं, लंका में तुम्हें ले जाने का।
रखता है साहस एक लक्ष्मण रावण का शीश उड़ाने का॥

दोहा

चार पलक में कहीं मारा है मैदान।
सम्मुख का मकदूर नहीं, मर्गे बचाकर जान॥

सुन गया राज का माल सभी जिस दिन से सिया चुराई है।
गगन में ध्यासन कुल की, मर्यादा धूल मिलाई है॥
कहा पर के उगत ही मिट्टी का पता न पाता है।
अब इन्हा लक्ष्मण वीर लंक में क्या करके दिखलाता है॥

गाना

तर्ज—चुरा कर ले गया कोई

सभी हम गल्तियें रावण की, मिट्टी में मिला देंगे।
धरणी की ना है शक्ति क्या स्वर्ग का भी हिला देंगे॥१॥
जो मन में ठान ठानी है वही करके हटेंगे हम
समर की धूर में रावण का सर धड़ से उड़ावेंगे॥२॥
लक्ष्मणावन के आगे चलेगी पूर सब शक्ति।
पचासन में सबका कलेजा हम हिला देंगे।३॥
'शुक्ल' गरज्या भी जिनका हमें परवाह किसकी है।
सिया को चन्द ही दिन में यहाँ लाकर दिखावेंगे॥४॥

दोहा

इतना जब सुग्रीव ने हैं बिल्कुल तैयार।
हाथ जोड़ कहने लगा, एम [illegible] उचार॥

हे नाथ बिना कारण हमको, ऐसे क्यों वञ्चित करते हैं।
हम जनक सुता को लाने, में पीछे पांव न धरते हैं॥
जहाँ गिरे पसीना प्रभु आपका अपना रक्त बहावेंगे।
हम चुके आपके दास, दासपन का कर्त्तव्य निभावेंगे॥

oo—oo

सम्मतियें

पवन पुत्र तुम भी कहो अपने दिल का ख्याल।
फिर जितने बैठ यहाँ पूछें सबसे हाल॥
नाथ कही कपिराज ने सभी यथार्थ बात।
निश्चय ही दशकन्धर के, अतुल ताकतें साथ॥

किन्तु जो पाकर के गौरव अन्याय के ऊपर तुलते हैं।
तो अगड़ बमर के उस व्यक्ति पर, मोची पत्र तुलते हैं॥
जो काम नीच भी नहीं करते, वह काम किया दशकन्धर ने॥
तो समझ लेवो अब कूच किया, लंका से पुण्य सिकन्दर ने॥

दोहा

चन्द्रोदर को मार के लर लई लंक पाताल।
क्या नीति यहीं कहीं करो जरा कुछ ख्याल॥

क्योंकि रावण का निज बहनोई की, खातिर थी मंजूर नमी।
यह तो कुछ बात पुरानी है यह नया पोल खुल गया अभी॥
सम्मति हमारी तो यह है इस शक्ति को कमजोर करा।
क्या समय अनुपम मिला हुआ और सीता का संताप हरा॥

दोहा

मनुष्य जन्म पाकर यदि करे न कुछ विचार।
तो समझो नर जन्म को खोते सभी निस्सार॥

विद्युत वीर अरु गन्धमादन, योद्धा नल नील विराज रहे ।
अंगद मेघस्वीत वीर रघुवर के सम्मुख राज रहे ॥

दोहा

यथायोग्य कहने लगे, सम्मति पवन कुमार ॥
शक्ति रावण की बड़ी समझ यही विचार ॥
वीर विराध कहने लगे, सुनो सभी कर गौर ।
असली क्षत्रिय समय पर, दिखलाते हैं जौहर ॥

गाना

मारे कुल हो ईंट का उत्तर तो, अब होगा पत्थर से ।
हमें कुछ भय नहीं रावण के, किसी तलवार अस्त्र से ॥
अन्य अन्याय शक्ति से, कभी क्या क्षत्री डरते हैं ।
निकलते हैं वह पहले ही, बांध कर सिर कफन पर से ॥२॥
हमें निश्चय सही वह दिन भी इक दिन आने वाला है ।
उसको परभव पहुँचावेंगे, मार उसके ही पत्थर से ॥३॥
पुण्य अपूर्व अब उसका हुआ सीता चुराने से ।
उड़ेगी धूम सम शक्ति, अधर्मा वायु अस्त्र से ॥४॥
मान में ही रहे अन्धे, नजर आता नहीं कुछ भी ।
ठीक मस्तक बना देंगे, सिर्फ हम एक नश्तर से ॥५॥
"शुरू अब हुए संध्य पर, करेंगे वह दिया हमने ।
यदि चलना है ! जिसने सब सजा हथियार बख्तर से ॥६॥

दोहा

वीर विराध के, कथन से फैला एकदम जोश ।
क्षत्रिय वीरों को लगा आने अद्भुत जोश ॥

सम्मति परस्पर टकराई, कुछ देर तलक यह हाल रहा ।
बाकी तो सब कुछ निश्चय हुआ, इक रावण का ही ख्याल रहा ॥

जामवंत यों उठ बोले, ऐसा योद्धा होना चाहिये।
जो शक्ति रोक रावण की, और इसमिमान होना चाहिये॥

दोहा

जामवन्त की राय में मिल गई सबकी राय।
अंजनी सुत फिर राम से, यों बोला मुस्काय॥
बहुत काम तो हो गया, निश्चय से प्रभु ठीक।
एक कसर को मेट कर, ठोकें इनकी पीठ॥

वह कसर कौनसी है स्वामिन् श्री जामवन्त बतलाते हैं।
इस बात को आप भी समझ गये कुछ परीक्षा लेना चाहते हैं॥
प्रायः है भी ठीक क्योंकि, सबके हृदय में खटका है।
यदि आप इसे पूरा करदें तो लंक उथल का तड़का है॥

दोहा

इतना कह बजरंग जी, बैठ गये निज ठौर।
जामवन्त उठ सामने बोला हो कर जोड़॥
दास आपके बन चुके, हे प्रभु दीन दयाल।
मत इनके मिल कर सभी देवें आप निकाल॥

यह सुना मुनिजन ज्ञानी से जो कोटि शिला उठायेगा।
वही मारे दशकंधर को और वासुदेव कहलायेगा॥
जब कोटि शिला उठाने से सब वहम निर्मल हो जायेगा।
तैयार लंक में जाने को एक से एक आगे पायेगा॥
वो शिला अतिश्या भी कहलाती है मागधी भाषा में।
या यूं समझें ये वासुदेव की ही रहती है आशा में॥
काल अनादि से ऐसी यह परम्परा चली आती है।
वासुदेव के बिना और कोई शक्ति नहीं हिलाती है॥

दस करोड़ा-करोड़ सागरोपम में नौ बार हिलाई जाती है।
इस के अतिरिक्त महिमा यही शिला कहलाती है।
प्रथम शिखर, दूसरा सिर तक, तीसरा ग्रीवा तक आता है॥
चौथा स्कंध पंचम छाती, हृदय तक छटा पहुँचाता है।
पसली सप्तम कटी अष्टम नवां नीचे कुछ रहता है॥
परीक्षा की यही कसौटी है इतिहास यह निश्चय कहता है।

दोहा

वज्रमयी यह है शिला सत्य असत्यिकत नाम।
इसे उठायेगा वही रावण से बलवान॥
सुरा हाकर सहसा उठा, वीर सुमित्रानंद।
बोला यों भी राम से, बांधव वीर बुलन्द॥
कोटि शिला क्या चीज है! तोड़ गिरि तमाम।
वज्रस्थी का पुत्र हूँ लक्ष्मण मेरा नाम॥

आज्ञा दीजे भ्रात तनक भी, फेंक शिला को दूंगा।
यहाँ अभी यह भ्रम तुम्हारा आज सभी हर लूंगा॥
कितनी शक्ति है रावण के, मुख कल में देखूंगा।
पहले खोज मिटा रावण का फिर जगदम्बा लूंगा॥

दौड़

चलो अब देर न लावा वृथा क्यों समय गिवाया।
मुझ पल-पल भारी है, क्योंकि ऊपर दुष्टों की चक्रवी
सीता पर भारी है!

दोहा

आज्ञा पा श्रीराम की बैठ तुरत विमान।
पहुँच जहां पर थी शिला सहित वीर हनुमान॥

मूल मंत्र का ले शरणा जब हाथ शिला के लाया है।
जैसे मुद्गर ऐसे भरमय ने, शिला को यहां उठाया है॥
फिर लगी पुष्प वृष्टि होने, सुर जय जय शब्द सुनाये हैं।
फिर बैठ विमान में सुग्री सहित किष्किन्धा नगरी आये हैं॥

दोहा

इसी समय सुग्रीव ने किया खास दरबार।
लंका चढ़ने के लिये होने लगा विचार॥

गण नायक कोई बना कोई, सेनापति पद पर नियत किया।
निज निज सेना तैयार करो सुग्रीव ने सबको हुक्म दिया॥
और जंगी भरती खोल दई, दारू गोलों का पार नहीं।
जंगी बेड़े जंगी जहाज, अद्भुत है वायुयान कहीं॥

—०००—

दूत हनुमान

दोहा

वृद्ध मन्त्री कहने लगा, दूत भेजो मित्रराय।
सीता को यदि वापिस करें झगड़ा सब मिट जाय॥
दूत भी ऐसा चाहिये करे भूत का काम।
एक बार के जाने से करदे काम तमाम॥

पहले जनक सुता को यहाँ की खबर सुनाया जा करके।
फिर दे उपदेश विशाल सब तरह रावण को समझा करके।
यदि नर्मी से ना काम बने तो करे फेर कुछ सख्ती करके।
अन्तिम जंगी ऐलान सुना आवे कुछ जौहर दिखा करके॥
बाजार गली कूचा-कूचा ज्ञाता हो सब बाजारों का।
जगदम्बा जहाँ हो विराजमान ले नकशा सभी मिनारों का॥
शूरवीर योद्धा बांका जाने से ना घबराता हो।
फिर जबरदस्ती का काम नहीं हृदय से करना चाहता हो॥

दोहा

श्रेष्ठ पुरुष है लंका में एक विभीषण वीर।
न्याय धर्म गम्भीर है शूरवीर रणधीर॥

यदि काम बनाना चाहो तो उसके द्वारा बन सकता है।
और रावण को भी समझा कर, सन्मार्ग पर ला सकता है॥
हो वीर प्रथम परिचय वाला जिसका प्रभाव भी पड़ता है।
फिर सभी हुई लंका वासी विद्या से ना डरता हो।

दोहा

वृद्ध मन्त्री की सम्मति लई सभी ने मान।
उसी समय सुग्रीव जी, बोले खोल जबान॥
कर सकते हैं काम सब, पूरे यह हनुमान।
क्योंकि हैं ये अनुभवी शूरवीर बलधाम॥

ऐलान जंग का देने को तो हर एक व्यक्ति जा सकता है।
पर इन बातों पर विजय एक बजरंगबली पा सकता है॥
भनेज जमाई रावण का सब राली इसने जाफत है।
बाजार गली कूचे तो क्या ये महलों तक के वाकिफ हैं॥
फिर विभीषण जी से हनुमत जी का मेल-जोल भी खासा है।
जो कहा इसे चौकस दिखायेगा करके यह आशा है॥
इसलिये कहा बजरंगबली, यह काम तुम्हारे लायक है।
वास्तव में देखा जाय तो इस दल का तू ही तो नायक है॥

दोहा

जी हाँ बिलकुल ठीक है यों बोले सब वीर।
समय भाप का देख कर, कहने लगे रघुवीर॥

दोहा (राम)—पवन पुत्र हनुमान जी शूरवीर गम्भीर।
सब योद्धाओं की नजर, है तुम पर बलवीर॥

हे सच्चे पुरुषार्थी योद्धा यह असली काम बताया तुम ।
जो डाली नींव समर की तो, यह भी तकलीफ उठावो तुम ॥
उपकार जिसे कहती दुनियाँ, उसके समक्ष अवतार हो तुम ।
यह भार तुम्हारे सिर पर है, क्योंकि सबके सरदार हो तुम ॥
चाहे नींव कहो जड़मूल कहो इस दल के स्तम्भ तुम्हीं तो हो ।
या बन्ध छुड़ाया रावण का, बजरंगबली तुम वही तो हो ॥
काम सभी यह आप बिना, कोई और नहीं कर सकता है ।
जो काम किया हरार्कपर में, अब वीर तू ही कर सकता है ॥

दोहा

मिष्ट वचन श्रीराम के, सुने वीर हनुमान ।
हाथ जोड़ श्रीराम के, गिरा चरण में आन ॥

दोहा (हनुमान)

हे रघुवर कुलपति मुकुट जगभूषण जगनाथ ।
नम्र निवेदन दास का, सुन लीजे महाराज ॥

यहाँ बड़े-बड़े योद्धा बैठे, मैं जिनकी संख्या बाला हूँ ।
इनके आगे कोई चीज नहीं, क्योंकि फिर भी मैं बाला हूँ ॥
श्रीराज गवाक्ष सरभज गवय, बैठे हैं वीर बली भारी ।
यह जामवन्त अंगद सुग्रीव जो जरा धरा कंपा देवे सारी ॥
यह गंधमादन द्विविद गवाक्ष नल नील बड़े रण बांके हैं ।
महा तेज दल इन योद्धों का, हृदय फटते दुर्जन के हैं ।
फिर हैं सबके सब अनुभवी, इनके समक्ष मैं बच्चा हूँ ॥
यह काम हाथ में लेते हुवे दिल में होता मैं कच्चा हूँ ।

दोहा

आपने सबको छोड़ कर, दिया मुझे यह दान ।
तो फिर मुझसे भी प्रभु है सब कुछ प्रमाण ॥

अहो भाग्य मेरे स्वामिन् यह अवसर आज नसीब हुवा।
शक्ति अनुसार करूं पूरा जो भी कुछ उपयोग हुवा॥
मूल मंत्र का ले शरणा, जिस समय लंक में जाऊंगा।
और चिरस्मरणीय आप बिना मारे नहीं वापस आऊंगा॥
आज्ञा हो यदि आपकी यहां जगदम्बा को ले आने की।
तो मेरे आगे दुर्जन की, वहां पेश नहीं कुछ जाने की॥
सीता तो क्या और भी कुछ बदले में ले आऊंगा।
पेशान जंग का तो स्वामिन्, चलते चलते दे आऊंगा॥

दोहा

सुने राम ने जिस समय हनुमान के बैन।
मिष्ट वचन से रघुपति ! कहने इस तरह बैन॥

है निश्चय जो कुछ कहा आप पूर्ण करके दिखलावोगे।
और मान सभी के मर्दन कर, सीता को भी ले आवोगे॥
किन्तु अभी करो इतना, जो भी कुछ यहाँ पर निश्चय हुआ।
फिर बाद में जो मर्जी करना, जैसा तेरा चित्त विच हुआ॥
क्योंकि अधिकार है शत्रु का, क्या पता वहाँ कैसे बीते।
हम आवें हैं कुछ देर नहीं कह देना पास सिया जी के॥
चन्द दिनों का कष्ट और है धैर्य उनको दे आना।
विमान भी है तैयार आप, करके वापिस जल्दी आना॥

दोहा

जो कुछ आज्ञा आपकी प्रभु मुझे स्वीकार।
अभी ही पहुँच लंक में मुझे न लगती वार।

पर एक ख्याल कुछ और, अभी जो मेरे मन में आया है।
कि आज तलक वैदेही का मैंने दर्शन नहीं पाया है॥

है क्यादरण कि जला दूध का फूंक छाछ को खाता है ।
इस कारण से अगर्दवा को विश्वास मेरा कब आता है ॥
क्योंकि वह सती महान् सती, विश्वास न मुझ पर लायेगी ।
यह जगह वसली के वस्ती अपने मन में घबरायेगी ॥
इसलिये निशानी दे दीजे अपनी जो उन्हें दिखा देऊं ।
कुछ धीर बंधा कर सीता से भी तुम्हें निशानी ला देऊं ॥

गाना

(तर्ज—एहमी)

निश्चय दिखाने के लिये विपता मेरी काफी है ।
सुना देना उन्हें वृतांत मेरा काफी है ।
निश्चय वहाँ बैठी हो आकाशीयों मन कर ।
यह सुना देना वहाँ असली मेरी छाती है ॥
नित्य विरह रूपी उसे दाह सताती होगी ।
नाम संदल ही मेरा उसकी दवा काफी है ॥
ऐसी निशानी कहीं गुम भी नहीं होने की ।
उसके हृदय ने मेरी खैंच नकल राखी है ॥
यह भी ना समझे कहीं कि मुझे भुला बैठे हैं ।
भला पानी से भी क्या शीतलता कहीं जाती है ॥
आराम ना पाऊंगा कभी तुमको छुड़ाने वाला ।
सफर को तह करके, कथा उसकी पढ़ी जाती है ॥
फिक्र सब त्याग सभी करतो निश्चय मन में ।
थोड़े दिनों का ही तुम्हें कष्ट रहा बाकी है ॥
कभी ये ना समझे सिया कि मैं ही मुसीबत में हूँ ।
'शुक्ल' विपता म मेरी कागज में लिखो जाती है ॥

(हनुमान गाना तर्ज)

ठीक है सब आपका कहना, मुझे प्रमाण है भगवन् ।
निशानी के बिना देगी, न हर्गिज ध्यान वो भगवन् ॥
वो समझेगी मनुष्य कोई, रावण ने ही भेजा है ।
सुनाऊ गा मैं क्या उसको न आप नाम वो भगवन ॥
जो मर्जी सो कहूं लेकिन न निश्चय उनको आयेगा ।
क्योंकि उनको नहीं बिल्कुल मेरी पहचान है भगवन् ॥
निशानी के बिना जाना मेरा निष्फल सा होवेगा ।
करू गा बात मैं कैसे, ये मन हैरान है भगवन ॥
प्रथम तो कठिन होगा पास में जाना ही सीता के ।
बिना फिर चिन्ह के माने क्या वो नादान है भगवन् ॥
"शुक्ल" वहां पर भी रहने का समय मुझको मिला थोड़ा ।
बिना किसी चिन्ह के मेरा वहाँ नहीं मान है भगवन ॥

दोहा

नामांकित निज मुद्रिका, रघुवर दई निकाल ।
ये मुद्रिका दीजिये, कहो अंजनी लाल ॥

(श्रीराम का गाना)

यह लो अंगूठी लो पास अपने, रक्खो इसको सम्भाल करके ।
लौट कर आना जल्द यहाँ पर, कायम कोई मिशाल करके ॥
यदि हो मुश्किल सिया से मिलना वो लेना कोई ख्याल करके ।
तमाशा जहां मिले नम हो ये देना होर मिसाल करके ॥
यह पत्र भी साथ लेते जाना, लिखा है सब कुछ विशाल करके ।
सिया के दिल का तसल्ली देना सभी निराशा का टाल करके ॥
आया जल्दी या खोवी होगी तम की रंजो मलाल करके ।

प्रसन्नकीर्ति ने झट पट, निज तन पर बख्तर धारा है।
हो गयी बिगुल रण छुटने की, धौंसे पर डंका मारा है॥
जब आन परस्पर अनी मिली तो चमका खड्ग दुधारा भी॥
कभी अग्निबाण अभी पुष्प बाण कभी बरछा सांग कटारा भी।
बजरत्न घन और हथोड़ों की चोटों को ला जाता है।
इसी तरह हनुमान भी, रण में आगे बढ़ता जाता है॥

दोहा

देख तेज हनुमान का घबरा गये तमाम।
प्रसन्नकीर्ति से आ गया फिर होने संग्राम॥
मामूली नहीं चीज था महेन्द्र सुत शूर।
लड़ते लड़ते परस्पर, हो गये दोनों चूर॥

यह हाल देख कर पावन पुत्र के जोश बदन में आया है।
कुछ यह भी ख्याल हुआ मन में क्या काम तू करने आया है॥
यदि मारा मैंने मामे को तो माता अति दुःख पावेगी।
भाई मेरा तूने मारा हर समय यह ताना लावेगी॥

दोहा

नाग फांस में बांध कर, करूं फेर प्रणाम।
भेद लाल आगे चलू पहुंचू लंका धाम॥

कर ऐसा विचार वज्र संभाली रथ पर मर्दीक दिया।
सब पुरजा २ अलग २ रथ न भी अपना छोड़ दिया।
पवन पुत्र ने नाग फांस में प्रसन्न कीर्ति बांधा है।
फिर अपना आप बताने का भी दिल में किया इरादा है॥

दोहा

हनुमान का लीजिये मामा जी प्रणाम।
एसा कह बजरंग ने ठाड़ बंध तमाम॥

जब लगा पता कि हनुमत है तो, खुशी का ना कोई पार रहा।
महेन्द्र नृप हनुमान को ऐसा अतिशय प्यार रहा॥
भेद सिया का आदि अन्त पर्यन्त, सभी बतलाया है।
श्री रामचन्द्र का बना सहायक, आगे को चल आया है॥

दोहा

जय जिनेन्द्र कर चल दिए, उसी समय हनुमान।
प्रसिद्ध दधिमुख द्वीप पर, पहुँचा जाय विमान।
साधु दो शुभ ध्यान में बैठे हो कर लीन।
कुछ दूरी पर ध्यान में, राज कुमारी तीन

कर नमस्कार मुनियों को पहुँचे जहाँ पर राजदुलारी थी।
तो दीर्घ शस्त्र ज्वाला ने कुछ यहाँ अपनी लाट निकाली थी॥
जलाशय से ले पानी हनुमान ने आग बुझाई है।
और अवस्था क्या मुनि राजों की आपत्ती दूर भगाई है॥

दोहा

कष्ट सहे स्थिर योग से, सिद्धि होय तत्काल।
खुश हो राजकुमारियों, बोली शीश टाल॥
बिना काल तरुवर फला है प्रभु दीन दयाल।
और हमारा ध्यान क, आप ने टाला काल॥

हम तो क्या इस ज्वाला में ये महापुरुष भी जल जाते।
यदि एक मुहूर्त भर भी यहाँ, उपकारी आप नहीं आते॥
कारण हम अग्नि लगने के, मुनिगन का पाप हमें चढ़ता।
तन धन और धर्म सभी जाता, यह जीव पता क्या कहाँ पड़ता॥

दोहा (हनुमान)

नाम पता सब आपका, देवो हमें बताय।
कैसे तुम कारण बनी सो भी दो समझाय॥

"शुक्ल" परम सुख मिलेगा। तुमको
दुखी के दिल को खुश हाल करके।

हनुमान जी का गाना

यदि है कृपा तुम्हारी मुझ पर
तो ताज लंका गिरा के आऊँ,
ना भूले दुनियाँ कभी भी जिसको।
मैं धब्बा ऐसा लगा के आऊँ ॥
यदि हो आज्ञा महलों ऊपर
रहना अपना टिका के आऊँ
सिया तो क्या मैं उसकी पुत्री।
उसी के सम्मुख उठा के आऊँ ॥
होगा सम्मुख योद्धा ना कोई
तो उसको निश्चय सुला के आऊँ
यदि समय कुछ अधिक मिले तो।
मैं फूट मेवा चखा के आऊँ ॥
सच्चाई है दुनियाँ में चीज कोई तो
उनके दिल को हिला के आऊँ
सिया के चरणों में हाथ जोड़ कर
मैं अपनी मस्तक झुका के आऊँ ॥
'शुक्ल मैं परमेष्ठि शरणा लेकर
कवच का तन पर सजा के आऊँ
अचूक अवसर मिला है मुझको
भक्त का परिचय दिखा के आऊँ ॥

जब लगा पता कि हनुमत है तो, खुशी का ना कोई पार रहा।
महेन्द्र नृप हनुमान को देता अतिशय प्यार रहा॥
भेद सिया का आदि अन्त पर्यन्त, सभी बतलाया है।
श्री रामचन्द्र का बना सहायक, आगे को चल धाया है॥

दोहा

जय जिनेन्द्र कर चल दिए, उसी समय हनुमान।
प्रसिद्ध दधिमुख द्वीप पर, पहुँचा जाय विमान।
साधु दो शुभ ध्यान में बैठे हो कर लीन।
कुछ दूरी पर ध्यान में, राज कुमारी तीन

कर नमस्कार मुनियों को पहुँचे जहाँ पर राजकुमारी थी।
दो दीर्घ शस्त्र ज्वाला ने कुछ यहाँ अपनी झाट निकाली थी॥
जलाशय से ला पानी, हनुमान ने आग बुझाई है।
और अवस्था क्या मुनि राजों की आपत्ती दूर भगाई है॥

दोहा

कष्ट सहे स्थिर योग से, सिद्धि होत तत्काल।
खुश हो राजकुमारियाँ बोली शीश टाल॥
बिना काल तरुवर फला है प्रभु दीन दयाल।
और हमारा मान के, आप ने टाला काल॥

हम तो क्या इस ज्वाला में ये महापुरुष भी जल जाते।
यदि एक मुहूर्त भर भी यहाँ उपकारी आप नहीं आते॥
कारण हम अग्नि लगन के, मुनिजन का पाप हमें चढ़ता।
तन धन और धर्म सभी जाता यह जीव पता क्या कहाँ पड़ता॥

दोहा (हनुमान)

नाम पता सब आपका देवो हमें बताय।
कैसे तुम अरण्य वसी, सो भी दो समझाय॥

इतनी जल्दी क्यों करते हो, किस काम को आप सिधारे हैं ॥
जो सेवा हो सो बतलाईये, तुम जग दुःख भंजन हारे हो ।
कर्त्तव्य से जाने जाते हो, भीतिम शिक्षा के प्यार हो ॥

दोहा (हनुमान)

नगरी है आदित्य पुर, पवनजय नृप तात ।
नाम मेरा हनुमान है, सती अंजना मात ॥

श्रीरामचन्द्र रघुकुल दिनेश किष्किन्धा आज विराजत हैं ।
उदार चित्त गम्भीर वीर, दुखियों का दुःख निवारते हैं ॥
किष्किन्धा में आन राम ने, साहसगति का मारा है ।
सूर्य वंशी अवधेश श्री, दशरथ का राजदुलारा है ॥

दोहा

रामचन्द्र की नार थी सीता सती विशेष ।
उसे चुरा कर ले गया लंका में लंकेश ॥

इसलिये लंका में जाता हूं, सन्ताप सिया का देने का ।
फिर वहां जंग भी होवेगा, उस शत्रु का सिर लेने को ॥
यह गन्धर्व नृप को कह देना तुम राम के पास चले जाओ ।
इस लिये तुम्हें समझाता हूं कि फिर पीछे ना पछताओ ॥

दोहा

कथा सुनाई वीर ने फिर चला दिया विमान ।
राजकुमारी भी गई निज नगरी सुखमान ॥

।न सुन कर प्रशंसा गन्धर्व नृप मन हर्षाया है ।
चल विमान संग सेना लेकर किष्किन्धा में आया है ॥
। न शीघ्र उधर, विमान लंका की ओर बढ़ा ।
गये पास तो कोट, भाराली विद्या का चहुं ओर खड़ा ॥

— o✿o —

भाशाकी कहती जरा, सुनो लगाकर कान ।
अन्दर जाने दीजिये, हम यहाँ के मेहमान ॥

यह हुक्म नहीं दशकन्धर का तुम राका रिस्तेदारों को ।
किस लिये तंग करती मदना, हममें राहगीर बिचारा को ॥
उपहास्य में होता है झगड़ा, बुद्धिमानों का कहना है ।
हट एक तरफ को जाने दे कुछ दो दिन हमें रहना है ॥

दोहा (देवी)

मूढमति तू किस लिए, करता है तकरार ।
जाना तुझ को ना मिले चाहे कर चाहे हजार ॥

कौक भरी से बस रिस्तेदारी, रामों की हाली है ।
मन फटा हुआ नहीं मिल सकता, जैसे पय टटा मोती है ॥
जान बचा कर भाग नहीं, अब काक शीश पर आता है ।
पक्ष लिये पराये तू हुआ क्यों अपनी जान गंवाता है ॥

दोहा (हनुमान)

बाहरी बात क्या सुन तू , दिखा रही है जोश ।
खैर हमारे कथन से, अब होजा खामोश ॥

कितनी ही तुझ में शक्ति हो फिर भी अबला कहलाती है ।
यहाँ क्षत्रिय मर्दों के आगे, पेश न तेरी जाती है ॥
नियम कुदरती जात नार की पुरुष वश को ममती है ।
फिर मेरा दर्जा पंचम, और तेरा दर्जा एक कमती है ॥

दोहा (देवी)

अच्छा तो फिर करन को आया है उपदेश ।
तो फिर तेरे बाल म, पकडूं आकर केश ॥

आशाली

दोहा

लगाई घूम विमान की ऊपर चले तमाम ।
राम का था नाम जपा महावीर का काम ॥

फिर आया ईशान की ओर बढ़े, यहां आशाली का डेरा था ।
थी आकृति दरवाज़े की, पर तम तम घोर अन्धेरा था ॥
सिवा पुरुष के और कोई नहीं शख्स यहां जा सकता है ।
सब दारू गोला आशाली के सम्मुख नहीं डट सकता है ॥

दोहा

बड़भागी उस समय के खड़े सामने आय ।
तब देवी हनुमान से यों बोली मुस्काय ॥
भाग्य हीन तुमको यहां लाई मौत बुलाय ।
अब भी कहती हूँ, तुम्हें भागो जान बचाय ॥

हृदय मंत्र दोनों के अन्ध चले किधर को आये हो ।
नादान आशाली ज्वाला में किस कारण जलना चाहते हो ॥
तू मौत पराई क्यों मरता जग का झूठा नाता है ।
यह काम नहीं बनता यहां पर, जो काम तू करना चाहता है ॥

दौड़

पीठ यहां से दिखलाओ चले अपने घर जाओ ।
हुक्म ये दशकन्धर का अन्य देव आवों को जाना
मिले नहीं अन्दर का ।

दोहा

आशाली के सुन वचन मुस्काया बजरंग ।
उत्तर में कहने लगे होकर एक निसंग ॥

माशाली काली जरा, सुनो लगाकर कान ।
अन्दर जाने दीजिये, हम यहां के मेहमान ॥

यह हुक्म नहीं दशकन्धर का तुम राका रिश्तेदारों को ।
किस लिए तंग करती अबला, हमसे राहगीर विचारों को ॥
उपहास्य में होता है झगड़ा, बुद्धिमानों का कहना है ।
हट एक तरफ को जाने दे कुछ दो दिन हमें रहना है ॥

दोहा (देवी)

मूढमति तू किस लिए करता है तकरार ।
जाना तुझ को ना मिले चाहे कर चाहे हजार ॥

सीख मरी से वह रिश्तेदारी, रामों की होती है ।
मन फटा हुआ नहीं मिल सकता जैसे पय टटा मोती है ॥
जान बचा कर भाग यहीं, अब काल शीश पर आता है ।
यहां किस पराये तू हुआ क्यों अपनी जान गंवाता है ॥

दोहा (हनुमान)

बाहरी बाह क्या सूम तू, दिखा रही है जोश ।
सैर हमारे कथन से, अब होगा खामोश ॥

कितनी ही तुझ में शक्ति हो, फिर भी अबला कहलाती है ।
यहां क्षत्रिय मर्दानें के आगे, पेश न तेरी जाती है ॥
नियम कुदरती जात नार की पुरुष अंग को नमती है ।
फिर मेरा दर्जा पंचम और तेरा दर्जा एक कमती है ॥

दोहा (देवी)

अच्छा तो फिर करम को आया है उपदेश ।
तो फिर तेरे काल ने पकड़ आकर केश ॥

अच्छा अब सावधान होना जल्दी परभव में जाने को।
इस सुन्दर तन की आशाली से जल्दी भस्म बनाने को॥
ऐसा कह कर आशाली ने लम्बी डाट निकाली है॥
इस तरफ बीर बजरङ्गी ने, भी अपनी गदा सम्भाली है।

दोहा

आशाली आई जिस समय पवन पुत्र के पास।
गदा पकड़ शरणा किया मूल मन्त्र का ख्यास॥

नवकार मंत्र से आशाली क्या, देवन पति डरते हैं।
पर बिन निश्चय और साधन के,बिन पूर्ण फल नहीं पाते हैं॥
फिर मारी गदा घुमा के, प्रस्थान किया आशाली ने॥
झट देख रवि को पीठ दिखाई जैसे रजनी काली ने॥

दोहा

बादल से जैसे रवि ऐसे निकला बीर।
लंक कोट के पास फिर पहुँचा वो रणधीर॥

बिमान वहीं को ठार दिया, भूमिचर वसे बनाया है।
यह हाल देख कर बज्रमुखा शस्त्र ले सम्मुख आया है॥
अति क्रोध में चेहरा लाल हुआ और शस्त्र कर में तोला है।
निज मस्तक पर बल तीन डाल, हनुमान से ऐसे बोला है॥

बज्रमुखा

दोहा (बज्रमुखा)

भाग्यहीन तुम किस तरह फंसे मौत मुख आन।
बिना सींग और पूंछ के, क्या तुम पशु समान॥

क्या लिखा हुआ दरवाजे पर, मह तुम्हें मजार नहीं आता है।
क्या खेलक साने का स्वभाव, या मोतिया बिन्द सताता है॥
आज्ञा नहीं यहाँ पर अन्य राष्ट्र वालों को अन्दर जाने की।
और किसने शिक्षा दी तुमको यह निष्फल प्राण गंवाने की॥

दोहा (हनुमान)

जिह्वा का वश में करो दांत होंट को भींच।
अनुचित जो कुछ भी कहा, खेंचू रसना खींच॥

गाना (हनुमान जी का)

उछलता है क्यों मेंढक सा तुझे परभव पहुंचा दूंगा।
जो बोला दुर्वचन कोई स्वाद उसका चखा दूंगा॥
रोकता है तू रावण के, जो आये रिश्तेदारों को।
अलग हठ एक पासे को नहीं सरकस चखा दूंगा॥
कभी रास्ता कहो सिंहों का स्यालों ने भी रोका है।
समझ अपना तू हित चुप में नहीं यहाँ पर सुला दूंगा॥
यदि रहना है इस वन में तो, माफी माँग लो इसकी।
करी तूने जो अविनय, यह सभी दिल से भुला दूंगा॥

दोहा (पवनमुखा)

खीस दिखाता है मुझे, मौतें आज निकाल।
अब निश्चय कूदने लगा तव सिर पर काल॥

गाना (पवनमुखा का)

आज सारी रसम रिश्ते की यहाँ पर हम बजा देंगे।
हमेशा के लिये साना तेरा बिस्तर लगा देंगे॥
यदि स्नान करना है तो जल्दी शौक से कीजे।
तुम्हारे रक्त की धारा से, हम तुमको नहला देंगे॥

बीज प्रेमी खिलायेंगे, लगे ना भूख इस भव में।
प्यास भी दूर जायेगी, नीर ऐसा पिला देंगे॥
अहो धन्य भाग्य हैं मेरे, करूं मेहमान की सेवा।
स्वयं यम पीक जायेगी, पान ऐसा चबा देंगे॥

दोहा (हनुमान)

सेवा करवाने के लिये हम भी हैं तैय्यार।
अब तू जल्दी संभाले अपने सब हथियार॥

सोचा था मैंने क्यों गरीब के, नाहक प्राण गमाने हैं।
पर तेरे खोटे कर्मों ने ही, तुझको नाच नचाने हैं॥
मरने से पहले मुझको एक बात और भी बतला जा।
नियम यहाँ कुछ पहले भी हैं, या कहसे सभी सुनाता जा॥

दोहा (वज्रमुख)

क्यों मरने के समय अब गाता आल पताल।
बातें घड़ने से कभी टल नहीं सकता काल॥

पर ध्यान लगा अब जल्दी से तेरा विचार पूरा कर दूं।
फिर समय नहीं मिलना जबकि, तलवार तेरे गल पर धर दूं॥
कोई शक्तिशाली सम्मुख हो, नीति की वहाँ जरूरत है।
पर रावण के आगे सब नृप मानिन्द पत्थर की मूरत है॥
दीपक की तब तक चाहना है जब तक ना सूरज रोशन हो।
पंखे की वहाँ जरूरत क्या जहाँ पर सर्दी का मौसम हो॥
तीन खण्ड में ध्यान दिखाने वाला कोई नज़र नहीं।
जो मर्जी सो करे पुण्य दशकंधर के में कसर नहीं॥

दोहा (हनुमान)

वाह वाह वाह तो फिर हमें मिला खूब अवकाश।
पहले तुमको मार कर, करें लंक का नाश॥

यह लज्जा मुझको आती है, किस पर तलवार उठाऊं मैं।
जो काम करने यहां आया हूँ, सो भी तुमको समझाऊं मैं॥
हूँ दूत राम का रावण को, संदेशा देने जाता हूँ।
नहीं दूत को रोका करते हैं, फिर भी तुमको समझाता हूँ॥

दोहा (वज्रमुख)

हमको तो आज्ञा यही, दूत होवे चाहे भूत।
रामा दल के मनुष्य को समझो सभी अछूत॥
अच्छा तो अब सम्हल कर, हो जाओ तैयार।
मोक्ष में रहना नहीं, करलो पहले वार।
वज्रमुख ने वीर पर, मौके दई तलवार।
धक्का दे बजरंग ने, दिया धरन पर डार॥

फिर पीछे सम्भल खड़ा हो जा क्योंकि अब वार हमारा है।
आगे फिर जल्दी जाना है पहले कर ढेर तुम्हारा है॥
वज्रमुख ने फिर उठ करके, अपनी सांग घुमाई है।
पवन पुत्र ने झट उसे अपनी तलवार सुमाई है॥

दोहा

कड़कड़ाहट से चपला ज्यों गिरे अम्बर से आय।
ऐसे महराती वीर की, यही खड़ग गल जाय॥

रक्त फुव्वारा उठा व्योम में, वज्रमुख का मारा किया।
पड़ा जिस्म रणभूमि में, आतम ने परभव वास किया॥
मरा अधिपति समझ चमू में हाहाकार मचा भारी।
जनक मृत्यु सुन कर पुत्री ने, मन में ताप किया भारी॥

दोहा

वज्र मुख की कन्या का लंका सुन्दरी नाम।
शूरवीर रणधीर भी शस्त्र कला की धाम॥

नश्वर तन पे लगा शीघ्र, एक दम से हमला जोश किया ।
पलायित सेना रोकी सहसा पांव युद्ध में रोप दिया ॥
अंगरक्षक थे चारों बड़े बलशाली शूरवीर यशधारी थे ।
पवन पुत्र थे भीम मित्रवर करते मार करारी थे ॥

दोहा

लंका सुन्दरी ये हाल लख, अरुण वर्ण कर नैन ।
समशेर हाथ में तान कर बोली ऐसे बैन ॥

भागा जाय बचाकर अब क्यों व्यर्थ में जान गंवाते हो ।
जिसने मारा जनक क्यों नहीं उस सामने आते हो ॥
ना वीर काम ये इन बातों पर बाण खूब बरसाते हैं ।
लंका सुन्दरी के अस्त्र और, बाण अनल उगलाते हैं ॥

दोहा

सह न सके उस मार को घबराये बड़े वीर ।
हटा कदम निज मित्रों का देखा हनुमत वीर ॥

गर्ज उठे ले गुर्ज हाथ में क्रोध बदन भर आया है ।
सुर बड़ा बलशाली बब्बर शेर सम रण भू को कम्पाया है ॥
बरसाये शिलीमुख अमित वेग से मानो मानस झड़ी लगी ।
असह्य तेज लख पवन पुत्र का सेना में फिर पड़ी भगी ॥

दोहा

हाल देख ये सुन्दरी सम्मुख हुई तत्काल ।
बोली सम्भल अब आईये आई मैं बन काल ॥
पवन पुत्र मन सोचते, अबला मार कहलाय ।
शिरोल्लंघन यदि मैं किया तो दागी कुल हो जाय ॥

सच्चे शूरवीर क्षत्रिय ना अबला पर हाथ उठाते हैं।
प्राणों पर अपने खेल जांय, फिर भी ना शस्त्र चलाते हैं॥
पर शस्त्र कला अद्भुत इसकी भति हस्त लाघव दिखलाती है।
प्रचण्ड तेज लख इसका पवनी, भी मन में शरमाती है॥
खचर अस्त्र शस्त्र छोड़े ना असर वीर पर करते हैं।
क्योंकि बजरंगबली मन में ही कन्या को वरते हैं॥
सूरवीर स्तम्भ हुवा कुमरी का आश्चर्य में चकित हुई।
विद्या स्तम्भ हुई सारी गहरी विचार वस वक्त हुई॥

दोहा

विचार क्रोध को सुन्दरी देखे नयन पसार।
देख रूप हनुवीर का गया बाण दिल पार॥
ज्यों मन्मथ निज रूप, धर लङ्का शरासन बान।
कन्या शस्त्र त्याग कर, गिरी चरण में आन॥

फिर क्या था रण भूमि में, प्रेम का दरिया बहने लगा।
अमय रहो मन में सुन्दरी, यो मधर वीर तब कहने लगा॥
हाय मार अम्म मर मैनों, कन्या वचन सुनाती है।
जादू क्या कर दिया आपने पेश न मेरी जाती है।

दोहा

लंका सुन्दरी हो गई हनुमत के अनुकूल।
भेद भाव सब ही दिया बने शूल के फूल॥

हनुमान विभीषण

सिद्ध प्रभु का जाप जाप, परमेष्ठि ध्यान लगाय।
पवन पुत्र फिर चल दिये आगे पांव बढ़ाय॥

फिर पास विभीषण के पहुँचे, झट शीश झुका प्रणाम किया।
मिले विभीषण प्रेम भाव से, हनुमत को सम्मान दिया॥
सेवक जन सेवा करते, सब आगे पीछे फिरते हैं।
और वीर विभीषण हनुमान को, ऐसे गिरा उचरते हैं॥

दोहा (विभीषण)

बहुत दिनों में आपके, दर्शन पाये आज।
कहो कुशल हैं सब तरह पवनतनय महाराज॥

कुछ पता आपने आने से पहले हम पर भिजवाना था।
हम मिलते स्वयं रास्ते में सम्मान से आपको लाना था॥
यहाँ आने में जो कष्ट हुआ तुमको सो हम पर धब्बा है।
आराम आप कीजे क्योंकि, तय किया सो रास्ता लम्बा है॥

दोहा (हनुमान)

प्रेम आपका ही हमें लाया यहाँ पर खींच।
किन्तु भ्रम अब लंक में होन लगे अति नीच॥

इसलिये जहाँ पर न्याय नहीं, वहाँ प्रेम नहीं रखना चाहिये।
जिस बात में सन्मुख हानि है, उससे पीछे हटना चाहिये॥
अब अन्तिम प्रणाम समझ लो आप को करने आये हैं।
कल्याण आपका हो जिसमें सो धर्म चरण में लाये हैं॥
बस ठीक भरी सेवक अब तुमसे प्रेम हमारा टूटेगा।
और पाप का बढ़ा भरा हुआ लंका का सारा फूटेगा॥
प्रेम हमारा आपसे है कुछ अर्ज गुजारने आये हैं।
मर्जी माना या न मानो, निज कर्तव्य पालने आये हैं॥

दोहा

पिछली बातों का जरा रख दीजे सरकार।
वर्तमान क्या हो रहा इस पर करो विचार॥

क्या आपने सोचा पवनसुत, और क्या रावण को समझाया।
या यहीं किया कि चोट, आशाली का खाकर पहरा आया॥
निश्चय क्या ख्याल आपका है, सब साफ साफ बतला दीजे।
संक्षेप रूप से बतला कर, फिर जल्दी हमें विदा कीजे॥

दोहा (विभीषण)

पवन पुत्र क्या कह रहे, रूखी-रूखी बात।
प्रेम हमारा जिस तरह, शीतलता जल साथ॥

जो भी कुछ आपको कष्ट हुआ मैं क्षमा उसी की चाहता हूँ।
अब रावण का भी हाल सुनो, सारांश तुम्हें समझाता हूँ॥
मेरा विचार भी सुन लीजे हृदय मे हूँ सत्य का पक्षी।
वह आहार कभी पचता नहीं, जिसमें लाई जावे मक्खी॥

दोहा

मोर खुशी में नाचता फिर फिर चारों ओर।
किन्तु चरण निज देख कर, रोता है उस ठौर॥

बस ये ही हाल हमारा है युक्ति से सोच सुनाते हैं।
कुछ पेश नहीं चलती रावण आगे हम निष्फल होते हैं॥
उधर सती का दुख भी तो हमसे न सहारा जाता है।
इधर बड़े भाई का भी,मा प्रेम बिसारा जाता है।
जो दिल में दुख उबाल उठें सो मुझ से कहा न जाता है।
यह उलट पेच इक आन फंसा, इसका हल मुझ न पाता है॥
और अधिक क्या बतलाऊँ, इस जीने से घबराता हूँ।
अनुमान मगर जो आते हैं सो नहीं रखना चाहता हूँ॥

दोहा (हनुमान)

ताप नहीं कुछ आपका हुआ मुझे सब ज्ञात।
जरा ध्यान लाकर सुनो कहता हूँ दो बात॥

जैसा प्र म तुम्हारे को रावण का वैसा हमको है।
तन-मन से सेवा की हमने, यह ज्ञात सभी कुछ तुमको है॥
जिस काम को नीच भी नहीं करते वह काम किया दशकंधर ने
वो कुछ किया अब लंका से, समझा कि पुण्य सिकन्दर ने॥

दोहा

दम्भी अन्यायी अधम निन्दक और अज्ञान।
इतनों की संगत सदा तजते बुद्धिमान॥

तजो देश फलहीन तजो राजा जो कि अन्यायी है।
तज देना चाहिए धर्म भ्रष्ट को चाहे सगा भाई है॥
तजो अकर्मी त्रुटी भूसती फिरे वृथा वह बाम तजो।
जहां रहने में हो कलहमय पंस सुख शय्या धाम तजो॥
जहां मन सुर में अन्तर हो वहां पांव नहीं धरना चाहिये।
और बुद्धिमान शत्रु अच्छा मूर्ख मित्र तजना चाहिये॥
रहना उसपे जो गुण जाने न जाने गुण तो क्या रहना है।
हीरे की जौहरी परख करे मूरख ने पत्थर कहना है॥

तुम अपना सोच विचार करो क्यों मोह में डूबे जाते हो।
क्यूं ज्ञान बूझ तुम भी उसके संग जहर इलाहल खाते हो॥
यदि पक्ष करोगे झूठा तो अन्तिम तुम भी पछताओगे।
और ज्ञान मान इज्जत खोकर, बस मन मसले रह जाओगे॥
बस यही हमारा कहना है तुम अपना आप बचा लेना।
सबमें अच्छा जहां तक होवे रावण को भी समझा देना॥
अब ख्याल हमारा सीता से मिल कर रावण पै जाना है।
समझायेंगे यदि समझ नहीं अन्तिम ऐलान सुनाना है॥

दोहा

प्रथम आपको कह चुका, अपने दिल की बात ।
इस सत्कर्म में भ्रात का, कमी न दूंगा साथ ॥

है विचार मेरा यहां तक, सीता वापिस करवाने का ।
पर पेश नहीं जाती क्योंकि, वो है बेशर्म जमाने का ॥
जो होना सो तो होगा ही तुम वैदेही से मिल आओ ।
हम पता निशान बताते हैं, और आप अकेले ही जाओ ॥

दोहा

यहां से उत्तर की तरफ, देव रमण उद्यान ।
उसी बाग के मध्य है, तरुअशोक महान् ॥

उस वृक्ष तले उस महासती, सीता माता का आसन है ।
तन मन से ध्याना रूद्ध हुई, मुख नमोकार का भाषण है ॥
कभी ऐसी हालत होती है नयनों से नीर बरसता है ।
सन्देशा राम का सुनने को उसका मन बड़ा तरसता है ।
तुम जाओ अभी चले जाओ सन्तोष सिया को दे आना ।
श्री रामचन्द्र का संदेशा और क्षेम कुशल सब कह आना ॥
इक्कीस दिवस होगये आज जिस दिन से सीता आई है ।
खाना पीना क्या बूंद एक, जल की नहीं मुख में पाई है ॥

दोहा

निज सेवक बल से किया हनुमत ने संकेत ।
फिर परमेष्ठी को जपा अविचल रखी टेक ॥

कर जय जिनेन्द्र विभीषण को हनुमान यहां से चल आये ।
जब देवरमण के पास गये तो पहरेदार नजर आये ॥
फिर सोचा कि ये देख मुझे, कोलाहल सभी मचायेंगे ।
मेरा भी समय नष्ट होगा ये भी निज प्राण गमायेंगे ॥

दोहा

यदि फाटक रास्ते गया, होगा विघ्न जरूर।
सीता के फिर मिलन में, आया है भरपूर॥

अच्छा है गगन आकाशी द्वारा ही अपना सब काम करूं।
जहां रत्नाशोक वहां जाकर, वैदेही को प्रणाम करूं॥
उसी समय बन कर खेचर, अशोक वृक्ष पर जा बैठा।
ना दृष्टि वहां जा सकती थी ऐसे टहने पर जा लेटा॥
सीता को पंच परमेष्ठी का यश एक वहां शरणा देखा।
सब अंग कृष्ण से दुखसे बे नयनों में जल झरना देखा॥

—००—

जगदम्बा दर्शन

दोहा

कर्म विपाक का कर रही थी उस समय विचार।
नेत्रों में थी बह रही मानो जल की धार॥

करतल पर कर धर बैठी थी आंखें दोनों थी मिची हुई।
गति उदासीन थी माता की तन की तप से नस खिंची हुई॥
पर चिह्न कुदरती शीलवान के, कभी नहीं मिट सकते हैं।
गुण वैदेही के उस मुरझाये तन में कब छिप सकते हैं॥

दोहा

महासती के दर्श कर, सुखी हुए हनुमान।
मन वच काया से किया दिल ही दिल गुणगान॥
पहला ही अवसर मुझे, किये दर्श यहां आन।
धन्य राम धन्य है सिया धन्य ज्ञान शुभ ध्यान।

श्री रामचन्द्र की आशा में, निज तन को नहीं गमाया है ॥
इक्कीस दिवस हो गये, आज तक अन्न-पान नहीं पाया है।
इस तीन खण्ड की, अवनि पर सूती की ठोकर मारी है ॥
और शील रत्न की खान अद्वितीय आज एक यह नारी है।
इस वैदेही के दशकन्धर निज कर से कभी ना मोड़ेगा ॥
मेरा तो निश्चय ऐसा है, आयु पर्यन्त न छोड़ेगा।
आज्ञा नहीं श्री रघुपति की, किन्तु इसका ले चलते ही ॥
रावण पाछे और लंक पति, सब रह जावे कर मलते ही।

दोहा

हनुमान यों वृक्ष पर, बैठे करें विचार।
सीता वाली शोक में ऐसे गिरा उचार ॥
अब सीता किस की यहाँ बैठी आशा धार।
समय पड़े पर कौन हो, किसी का मददगार ॥

सीता जी का गाना

अब मात तेरी लाडली पर, जो मुसीबत आज है।
कैसे बतावे हाल तुम को सब तरह मोहताज है ॥
प्राणों से प्यारी थी तुम्हें तुमने बिसराया क्यों मुझे।
अब तन पे जिससे मुझे, कैसे मिले वो साज है।
पति का कथन माना नहीं, अपना मैं हठ ठाना सही ॥
अंजाम कुछ जाना नहीं, अब किसपे मुझको नाज है।
हे नाथ तुम भी हो लघ्य वहं छोड़ मुझको कर दफा ॥
किससे कहूँ अपनी व्यथा, रखे जा मेरी लाज है।
क्या खबर प्रीतम है कहाँ, दिया साथ जिसने था यहाँ ॥
बन बैठी मैं बेदम यहाँ, वहाँ अवध सुख समाज है।

किससे कहूँ अब क्या करूँ घोट घोट दम अपना मरूँ ॥
या और कुछ आशा करूँ, कहाँ मम पति महाराज है।

दोहा

कहे आपत्ति शीघ्र अब, यह शरीर दे छोड़।
प्रेम कहे अभी ठहर जा अपने मन को मोड़ ॥
फिरते होंगे ढूंढते कहाँ मुझे रघुनाथ।
यहाँ पर सौ सौ वर्ष सम कटे एक दिन रात ॥

निष्ठुर वचन मेरे देशकंधर, कब तक सहता जायेगा।
फिर अपरयश एक दिन मेरी इज्जत पर हमला आयेगा ॥
कुसुम व्योमवत रामचन्द्र की आशा निष्फल करना है।
फिर इस हालत में सिवा मौत के, और मुझे क्या शरणा है ॥

— ✿ —

सीता जी का विलाप

किस तरह माहताब हा, यहाँ आज मैं मरने लगी।
अब प्रेम भव से अलग हट, मैं तम जुदा करने लगी ॥
देश घर जन सब बिगाना अपना यहाँ कोई नहीं।
अनित्य बासा तन का अब मैं प्रेम कम करने लगी ॥
पांच सौ मुनिवर पिले पानी में धर्म के वास्ते।
उन्हीं के शासन में हूँ मैं मरने से कब डरने लगी ॥
तू है भाल के लेख देखा कर्म देखा है अटल।
ना टले अरिहन्त से फिर मैं तो कब बचने लगी ॥

दोहा

देख सिया के हाल को पुलित अंजनी लाल।
उसी समय से मुद्रिका गई तल का डाल ॥

जा पड़ी सिया के पास मुद्रिका, नाम राम का खुदा हुआ।
जब नजर पड़ी जगदम्बा की, तो इकदम दुख सब जुदा हुआ॥
चमक निराली चेहरे पर, क्या खुशी ने डेरा डाला है।
मानिन्द पुष्प के खिला हुआ, मस्तक खुश रंगत वाला है॥

दोहा

मन में छाई प्रसन्नता, करने लगी विचार।
अंगूठी रख सामने बोली गिरा उचार॥

सीता जी का विचारना

लंका में आई क्योंकर, भगवान् की अंगूठी।
क्या प्रेम नाहिं हमसे, स्वामिन् की ए अंगूठी॥
वे राम जिनकी संगत, सुरगण भी चाहते हैं।
उनसे विमुख हुई क्यों श्रीमान् की अंगूठी॥
भयभीत काल जिनसे, उनको है किसने जीता।
सुरपति भी रख सके ना इस शान की अंगूठी॥
पक्षी भी फांद सागर आये यहां असम्भव।
हैरान कर रही है, गुणधाम की अंगूठी॥
आशीर्वाद तुम को दूंगी "शुक्ल" बतादे।
लाया है कौन यहां पर, कुल भानु की अंगूठी॥

दोहा

प्रसन्नता लख सिया की त्रिजटा के मन उल्लास।
कहने को वृत्तान्त यहां, पहुँची रावण पास॥

दोहा (त्रिजटा)

जय विजय हो महाराज की दिन दिन बढ़े इकबाल।
यदि हुक्म हो तो मेरा कहूँ बाग का हाल॥

गद्यवार्ता

रावण—आओ त्रिजटा आओ आज तो तेरा चेहरा बड़ा प्रसन्न नजर आता है। क्या तुम्हारा हाथ भी कुछ तरी में होना चाहता है।

त्रिजटा—जी हां महाराज! आज खुशखबरी सुनाकर इनाम पर अधिकार जमाने आई हूं।

रावण—तो सुनाओ।

त्रिजटा—महाराज यह अर्ज है कि अब तक सीता को रुदन के सिवाय और कुछ नहीं सूझता था परन्तु आज उसका चेहरा बड़ा प्रसन्न है। बस मैं तो इस बात को देखकर भागी जैसा समझा वैसा आपको आ सुनाया। अब आप मालिक हैं।

रावण—बहुत अच्छा किया! त्रिजटा अब तुम सीता के पास जाओ और मैं महारानी साहिबा को भेजता हूं और मैं भी आता हूं। घबराना नहीं।

[दासी का जाना तथा रावण का प्रवास महल में आना]

मन्दोदरी—पधारिये महाराज आज तो आप अत्यन्त प्रसन्न नजर आते हैं।

रावण—हां महारानी साहिबा! त्रिजटा सूचना देकर गई है कि सीता आज अति प्रसन्न है। सो मेरे विचार में तुम पहले जाओ। सीता को समझा कर महलों में ले आओ अब उसने पिछला प्रेम छोड़ दिया होगा। अन्त में इसके सिवाय और करती ही क्या?

मन्दोदरी—मुझे तो सीता के सामने जाने में शर्म आती है।

रावण—तुझे तो शर्म आती है। यह नहीं कहती कि सौकन मेरी छाती जलाती है।

मन्दोदरी—और छाती तो एक दिन जलनी ही है। यदि आप कहते हैं तो मैं जाती हूँ, परन्तु मेरा निश्चय तो यही है कि लाख इन्द्र भी आकर समझाये तो सीता अपने धर्म को नहीं त्यागेगी।

(सीता के पास जाना)

मन्दोदरी—सीता तेरा दुःख मेरे से नहीं देखा जाता।

सीता—तो मेरे दुःख मिटाने के लिये क्या उपाय सोचा ?

मन्दोदरी—क्या स्पष्ट कह दूं।

सीता—जो तू कहने को आई है सो तो कहना ही है। स्पष्ट कहो चाह स्पष्ट कर।

मन्दोदरी—बस मेरा तो यही विचार है। कि अब तू पिछला प्रेम छोड़ दे और दशकंधर से प्रेम जोड़ ले।

सीता तेजी से—बस बस खबरदार—अरी दुतिका मेरे सामने से फौरन हट जा। बातें तो क्या मैं तेरी सूरत भी नहीं देखना चाहती।

शेर

हट दुराचारिणी यहाँ से, किसको यह बहकाने लगी।
जैसा सिखाया मांस ने वैसा ही तू गाने लगी॥
धिक्कार तेरे मातु पितु को, और तुझको धिक्कार है।
मक्कार खर जैसा पति वैसी ही तू मक्कार है॥

दोहा

शर्मसार मन्दोदरी सुन सीता की बात।
मुंह छिपाय यहां से भगी, जा पहुँची एकान्त॥

दोहा (सीता)

प्रीतम की यहाँ मुद्रिका गिरी, किस तरह आज ।
दिल धैर्य धरता नहीं, बने किस तरह काज ॥

जो कारण दिल है समझ रहा, वह जिह्वा नहीं कह सकती है ।
यदि प्राणपति को कष्ट हुआ तो, यह मेरी कमबख्ती है ॥
क्या पक्षी कोई यहां आया, जो गिरी यहाँ पर आकर के ।
क्या देव कोई या विद्याधर, कहीं छिप गया इसे गिरा कर के ॥

गाना (सीता जी का)

मैंने कैसा किया कर्म भारी दिल में हो रही है बेकरारी ।
कैसे मुद्रिका राम की आई, लाया कोई इसे क्या चुराई ॥
दिल में ये ही है आश्चर्य भारी ।

राम लक्ष्मण जैसे शूरे सब तरह निज शक्ति में पूरे ।
रहते सदा बीच हुशियारी ॥
किया छल या किसी ने है मारा, शायद प्रीतम मेरे को है मारा ।
मुझी अभागी से तभी न्यारी ॥
हाय कर्म तू और सताले चाहे जितना तू मुझको रुलाले ।
मैं तो दुखी हूँ कर्मों की मारी ॥
अब तो जी में मेर यही आवे, जान तन से निकल क्यों न जावे ।
और कहूं क्या मुसीबत की मारी ॥
क्या खबर कहां प्रीतम प्यारे कौन दिल के भ्रम को निवारे ।
मानूं उसका मैं एहसान भारी ॥

शेर

आशा थी जो दिल में वह सब काफूर बन गई ।
दोष किसका इसमें जब कर्मों से तन गई ॥

हम मुक्ता करने को भी, ना कोई सामान है।
तो खेंचने को हाथ और मेरी जबान है॥
वैर विरोध त्याग दिल को, शान्त करती हूँ।
शील की रक्षा लिये भगवान मैं मरती हूँ॥

दोहा

दृश्य भयानक देख कर, मन डरे हनुमान।
सम्मुख होकर कहने लगे माता सुनो बयान॥

दोहा (हनुमान जी का)

धरो मात जरा दिल धीर धरो।
अब मरने का ना विचार करो॥

श्रीराम का भजा आया हूँ और ये मुद्रिका मैं ही लाया हूँ।
अंजना रानी का जाया हूँ माता मुझ पर इतबार करो॥
पवन भूप का पुत्र हूँ माता, श्रीराम का सेवक कहलाता।
तुमरे दर्शन से हुई साता अब मात जगत उद्धार करो॥
श्री रामचन्द्र जी महाराजा किष्किन्धा में डेरा लाया।
वहाँ से मैं चलकर आया अब मुझ पर कुछ उपकार करो॥
दल बल सेना है किष्किन्धा, सुध लेने को आया बंदा।
निश्चय करलो हे जगदम्बा मम सोच दूर एक बार करो॥
सुग्रीवादिक नृप आन मिले, सब ठाइन को गढ़ लंक किले।
रावण की शक्ति धूल मिले अपने दिल को होशियार करो॥
तुमने सती धर्म निभाया है दुनिया में यश फैलाया है।
तपस्या से तन को सुखाया है अब जनक सुता आहार करो॥

दोहा

मापण ये बजरंग का मोहा दिल दरम्यान।
जनक सुता हनुमान से, बोली मधुर जबान॥

दोहा (सीता)

आज तलक देखा नहीं तुमको मैंने भ्रात ।
किन्तु महासती अंजना, सुनी जगत विख्यात ॥

रंग ढंग से यही नजर आता है तुम कोई सज्जन हो ।
यदि महासती के पुत्र हो तब तो तुम दुःख निकन्दन हो ॥
क्योंकि दुनिया में महापुरुष ही, दुखियों का दुःख हरते हैं ।
वह सब कुछ अपना अर्पण कर, औरों की खातिर मरते हैं ॥
अब रही बात निश्चय की या इसमें है कुछ संकोच मुझे ।
जो जला दूध का फूंक छाछ को खाता यह सब ज्ञात मुझे ॥
चालाक आदमी दूजों का, बातों से मन भर सकता है ।
और कारीगर मुद्री जैसी दूजी मुद्री कर सकता है ॥

दोहा

इस कारण है भ्राता जी मुझे नहीं विश्वास ।
और निशानी राम की बतलाओ कोई खास ॥

जिससे दिल को विश्वास मिले कि राम लखन को लाता है ।
प्रतिज्ञा पूरी हुए बिना मुझको नहीं अन्न जल भाता है ॥
सन्तापजनक श्रीराम लखन का यदि संदेशा सुना देगो ।
फिर तो मुझको एतराज नहीं बेशक अन्न पान करा देगो ॥

दोहा

इस लिखित श्रीराम का लेकर कर में लेख ।
जनक सुता से यह कहा लीजे माता देख ॥

श्री रामचन्द्र ने पत्र में लिख रक्खे सभी इशारे थे ।
थे गुप्त भेद पुन पुन के रत्न जो जो सीता को प्यारे थे ॥
उस लेख में था वह अमर भरा जो पढ़े धीरता आ जावे ।
जो मुरझी हुई थी सीता का मन कैसे नहीं खिल जावे ॥

जैसे बसंत में खिले फूल, या जैसे मेला जंगल में ।
और ग्रीष्म अन्त जैसे श्रावण, शुभ सखियां जैसे मंगल में ॥
सीता का ऐसे हाल भई जैसे कि लहर समुद्र में ।
उस हाल पे ऐसे मस्त हुई जैसे भाई भमरा संदल में ॥

दोहा

साच समझ निश्चय किया, अपने दिल मंझार ।
जनक सुता हनुमान से बोली गिरा उचार ॥

दोहा (सीता)

हां भाई मुझको हुआ, अब पूर्ण विश्वास ।
खबर मुझे दी राम की, धीर तुझे शाबाश ॥

हे सच्चे उपकारी भाई मैं कैसे गुण गाऊं तेरा ।
इस दुर्गम राह में आकर, तुमने ही कष्ट हरा मेरा ॥
अब इच्छा है प्रबल मेरी, श्रीराम के दर्शन चाहती हूं ।
जिस कारण दिल है धड़क रहा सो मैं भी तुम्हें बताती हूं ॥

दोहा

दुर्जन का यह डेरा है तुम हो चतुर सुजान ।
ऐसा न हो आपको कष्ट देवे कोई आन ॥

अब जल्द यहां से जाकर के, श्रीराम लखन को बतलाओ ।
क्योंकि मुझको भय लगता है, तुम न कहीं यहां रुके जाओ ॥
यह देना जो कुछ देर करी तो सिया न जीती पायोगे ।
मैं परभव में पहुंचूंगी यहां और तुम पीछे पछतायोगे ॥

दोहा

कर्मगति की चाल को माने सकल जहान ।
कभी पड़ाते मान यह कभी घटाते शान ॥

है महा नार उपकारी को कहती हूं आप चले जाओ ।
क्या जोर चले क्यों भागे, बेशक कोई हाथ मले जाओ ॥
यह महा दुःख मेरी जबान मेरा ही मान घटाती है ।
श्री रामचन्द्र के सेवक को, विश्राम न देना चाहती है ॥

दोहा (हनुमान)

जैसा सीता नाम है वैसा शीतल काम ।
श्री रामचन्द्र से भी अधिक, इनकी मधुर जबान ॥
जनक सुता के जब सुने अमृत झरते बैन ।
हाथ जोड़ बजरंग जी लगे इस तरह कहन ॥

तुम्हें धन्य मात हे जनक सुता उदार चित्त वाली तुम हो ।
तुम हो संकट मोचन हारी महाशक्ति सुमति वाली तुम हो ॥
तुम हो जगदम्बा महासती दुखियों का दुःख हरने वाली ।
क्या मात पिता क्या पति तेरा, सबको प्रसिद्ध करने वाली ॥

दोहा

सेवक की यह धर्म है, सुनो मात धर गौर ।
यदि हुक्म हो लंक में दिखलाऊं कुछ जोहर ॥

यदि आज्ञा हो तो मात तुम्हें श्रीराम पे अभी पहुंचा देऊं ।
आज्ञा हो तो दशकन्धर पापी का शीश उड़ा देऊं ॥
निर्भय होकर हे जगदम्बा तुम अपने मुख से फरमाओ ।
या हाथ बताऊं लंका में सेवक की शक्ति अजमाओ ॥

दोहा

कर सफल हो जा वत्स निर्भय आप निशंक ।
पर तुम्हें काम धीर सज का भाषा ए बजरंग ॥

चल्, आपके साथ वीर, इस हालत में ये ठीक नहीं।
जो बाइ अकेला रावण से, तो तरी मारी पीठ नहीं॥
बस मेरी यही सम्मति है, तुम जल्दी किष्किन्धा जावो।
दल बल समेत श्रीराम लखन को शीघ्र वीर लंका लावो॥

दोहा (हनुमान)

जो फरमाया आपने वही मुझे स्वीकार।
मगर दीन की अर्ज पर, करना जरा विचार॥

प्रथम तो फिक्र तजो माता दूजे कुछ भाव जल पान करो।
तीजे कुछ आप निशानी दो चौथे फिर आज्ञा दान करो॥
अब देवरमण उद्यान देख कर किष्किन्धा में जाता हूं।
दल बल समेत श्रीराम लखन को, शीघ्र लंक में लाता हूं॥

दोहा

प्रतिज्ञा पूर्ण हुई, किया सती ने आहार।
फेर दिया हनुमान को चूड़ामणि उतार॥

दोहा (सीता)

ला हनुमान चूड़ामणि रखो अपने पास।
प्रीतम प्यारे स मेरी करना ये अरदास॥

हाथ जोड़कर कह देना तुमरे दर्शन की प्यासी हूं।
क्यों आपने मुझको भुला दिया मैं तो चरणों की दासी हूं॥
अब कृपा करो इस हालत पर, क्योंकि तुम दुःख निकन्दन हो।
रघुकुल दिनेश कारो क्लेश दशरथ के आप सुनन्दन हो॥
लक्ष्मण देवर को कह देना तुम पर ही तो विश्वास मेरा।
और सिर्फ आपके नामों पर, चलता है श्वासोच्छ्वास मेरा॥

रौरव नरक से भी बढ़कर, यह वेपरमय स्थान मुझे।
यदि हुई देर साकार जिसमें करना होगा स्मशान मुझे ॥

दोहा (हनुमान)

माता अब विश्वास कर, हुवा सकल दुख दूर।
लंकपति की लंक में, पड़न वाली धूर ॥

मानिन्द घटा के राम लखन लंका पर आने वाले हैं।
बिजली समान धर धनुष बाण, वर्षा बरसाने वाले हैं ॥
जैसे नभ में बादल समूह ऐसे ही विमान छा देंगे।
रावण की सारी शक्ति को, पल भर में धूर मिला देंगे ॥

हनुमान जी का गाना

तेरा चमकेगा तेज सितारा सती।
तैंने पतिव्रत धर्म निभाया है और कष्ट अतुल उठाया है।
इसका तेरा ही है आधार सती ॥
तने धर्म पर जान कुर्बान करी प्रिय रावण के हुइ तेज छुरी।
होगा दुष्ट का अब संहार सती ॥
श्रीराम लखन अब आवेंगे गढ़ लंका का धूर बनावेंगे।
यहाँ का पुण्य खत्म हुवा सारा सती ॥
तन सतिया का धर्म प्रमाण किया मन्त्र शील भवन में वास किया
समझा सब कुछ भार असार सती ॥
न तू दूर हुवा मिथ्यात्व करा नमस्कार मन्त्र का जाप करो।
श्री जिन धर का सा सहारा सती ॥
अब किष्किन्धा को जाता हूँ बस आज्ञा आप से चाहता हूँ
लेवा अब प्रणाम हमारा सती ॥
हम मग गात हैं बलवान करो और लक्ष्मण का कुछ पार नहीं
पाया 'शुक्ल' याम सुखकारा सती ॥

दोहा (सीता)

बार बार रघुराय से, कही मेरी अरदास।
कह देना श्रीराम को, अब मत करो निराश॥

दोहा (हनुमान)

माता मत घबराइये, दिल में धारो धीर।
चन्द दिनों में आपकी हर लेगें सब पीर॥

जो कहा आपने आदि अन्त, पर्यन्त सभी मैं कह दूँगा।
मुझको यहाँ कुछ भी कष्ट नहीं, यदि होगा तो सब सह लूँगा॥
अब आने में कुछ देर नहीं श्रीराम का यहाँ समझ माता।
लो नमस्कार मैं जाता हूँ श्री वीतराग का मन भाता॥

दोहा

नमस्कार कर चलने को हनुमत हुआ तैयार।
जल भर नयनों में सिया मोती गिरा उभार॥

सीता जी का गाना

जाओ जाओ जी हनुमत जाओ जल्दी राम लखन को लाओ।
प्रीतम बिन यह नयन तरसते दर्श बिना दिन रैन बरसते।
सब जाकर हाल सुनाओ॥१॥
प्रेम के पुंज दया के सागर, रघुकुल दीपक करुणा सागर।
अब न मुझे तरसाओ॥२॥
मैं दुखियारी कर्मों की मारी सदा न दुख करी तुम्हारी।
ख्याल न दिल में लाओ॥३॥
सावधान हो करके जाना प्रीतम को सब अर्ज सुनाना।
अब आनन्द घन बरसाओ॥४॥

दोहा

सीता को सन्तोष दे, चले वीर हनुमान।
लगे देखने घूमकर देवरमण उद्यान ॥

कभी खाते हैं सन्तरा कभी बदाम की डाल झुकाते हैं।
कभी लेवें तोड़ अनार, रक्त फूलों पर हाथ जमाते हैं ॥
फिर पहुँचे वीर अंगूरों के, गुच्छों पर हाथ चलाने को।
यह हाल देख उस तरफ, बाग का माली लगा चिल्लाने को ॥

—※※※—

माली और हनुमान

दोहा (माली)

अरे २ क्या करत भयो रहयो अंगूर उजाड़।
मानत नहीं ढीठ तू, आकर देऊँ सुधार ॥

आकर देऊँ सुधार तोये मरनो पसन्द आया है।
बिना हुक्म तू देवरमण में कैसे घुस आया है ॥
देऊँ खोपरी तोड़ फेर जो मुख अंगूर पायो है।
यह सरकारी बाग मुफ्त तू, किसको बहकायो है ॥

दौड़

आज तू कैद परेगा जेल में कष्ट भरेगा हुक्म नहीं यहाँ आने
को आन फंस्यो फन्दे मेरे अब नहीं सुखा जाने को।

माली का गाना

अरे ढीठ श्याम मैं क्यों खड़ा।
किस तरह घुस गया जब कि पहरा लड़ा ॥
ताड़ना फल न दूंगा मैं हरगिज कभी

निकल वाटिका से तू, बाहर अभी।
नहीं तो लगे बांस अब कड़कड़ा ॥
हुक्म रावण का हमको बड़ा सख्त है,
तू तो सुनता नहीं, फिर रहा मस्त है।
बेइजाजत तू क्यों बाग में आ बड़ा ॥१॥
तेरे सिर पर समझ, मौत मंडला गई,
परमव जाने की, तेरी समर आ गई।
मैं था मसुप गफलत में, सोया पड़ा ॥२॥

दोहा

बड़ बड़ करता इस तरह, पहुँचा हनुमत पास।
निडर वीर लखे रहे, हुए ना जरा उदास ॥

यह हाल देख खामोशी का माली गुस्से में लाल हुआ।
नयनों में डोरे रक्त खिंचे और भृकुटि सहित विशाल हुआ ॥
आकृति देख यह माली की अंजनी लाल मुस्कराते हैं।
और प्रेम भाव से माली को यों शीतल वचन सुनाते हैं ॥

दोहा (हनुमान)

बागबान् कहो क्या तुम्हें हो रहा कम्पन वाय।
मस्तक में कुछ फर्क या गर्मी रही सताय ॥

आओ बैठो यहाँ शान्ति से और हमको हाल बताओ मम।
जो रोग औषधि सब देंगे, क्योंकि फिर आयेंगे कब कब ॥
यह रोग तो है प्रसिद्ध मुख आकृति से दर्शाता है।
यह रोग क्रोध रूपी अग्नि का मुख आँखों से बरसाता है ॥

दोहा

हनुमान के वचन सुन हो गया लाल अंगार।
दांत पीस और शस्त्र ले बोला गिरा पुकार ॥

दोहा (माली)

अरे ढीठ तू चमन से रहा मलोला उड़ाय।
मुट्ठी सा यह सर तेरे, देऊँ धरन गिराय॥

जो बाग उजाड़ गेरो तूने इसको अब स्वाद चखाऊँगो।
और जकड़ के रस्सों से ताहे रावण के पास ले जाऊं गो।
काल तेरे सिर पर छाया, जो हमें बीमार बनावत है।
यार कहीं को आन हुआ और हमको धौंस दिखावत है।

दोहा

माली का वाक्य सुन कांपे पवन कुमार।
कुछ देरी में आन कर बोले गिरा उचार॥

दोहा (हनुमान)

किस कारण अनुचित रहा अपनी जबां चलाय।
क्या तेरे सिर पर रहा आज शनिश्चर छाय॥

केवल यही विचार मेरा कि, किस पै हाथ उठाऊं मैं।
हुआ आज दशकन्धर का जिस को शक्ति दिखलाऊं मैं॥
सन्तापन का धर्म नहीं तुझ रंक का खून बहाऊं मैं।
किन्तु अनुचित भाषण का थोड़ा सा स्वाद चखाऊं मैं॥

दोहा

माली की दाढ़ी पकड़ दिये तमाचे चार।
वो रोकर पीछे हट मचा गया हा हा कार॥

रुदन सुना जब माली का मालिन भी दौड़ी आई है।
बच्चे-बच्ची मजदूरों ने कोलाहल अधिक मचाई है॥
यह हाल देख सब बाग के, चार रक्षक दौड़े आये हैं।
मारो पकड़ो यह भाग न जावे, मिलकर शोर मचाए हैं॥

दोहा

देख हाल ये पवन सुत मन में करे विचार।
हम सबके हित के लिये, बोले गिरा उचार॥
मूढ़ सभी क्यों बन गये, भगो बचाकर प्राण।
नहीं द्वेष तुम से कोई कहा हमारा मान॥

क्यों हमसे रार बढ़ाते हो निज-निज स्थान प्रस्थान करो।
मात-पिता की सेवा करना, और बच्चों से प्यार करो।
निज शक्ति कुल को देखे बिन, क्यों मौत पराइ मरते हो।
अनमोल समय न मिले फेर, क्यों व्यर्थ ही कर से खोते हो॥

दोहा

सुन कर हनुमत के वचन रक्षकराय रिसाय।
शस्त्र लेकर हाथों में, बोला कदम बढ़ाय॥
अब पछताये क्या होत है जब चिड़ियां चुग गई खेत
माफी माली से मांग लो अपनी रक्षा हेत॥

ना छूट सके यूं बातों से अब तेरा हलवा बनायेंगे।
और मार-मार तुझ को दुग्ध छट्टी का याद करायेंगे॥
ऐसा सुन अञ्जनीसुत का क्रोध बदन भर आया है।
विकराल बदन और गर्ज-तर्ज कर थप्पड़ एक जमाया है॥
पड़त बज्र सम चपेटिका प्रधान धरणि पर जाय पड़ा।
प्रचंड तेज लख अंजनीसुत का, सबके दिल में खौफ भरा॥
पकड़ टांग से एक दूजे पे गेंद समान गिराते हैं।
य मार करारी देख सभी जा सभा में बात सुनाते हैं॥

दोहा

भाग-दौड़ माली गये रावण के दरबार।
सभी दुहत्थड़ मार कर, करने लगे पुकार॥

ध्यान सिया का हृदय में दशकन्धर आय बैठा था।
सब यथायोग्य बैठे वायें, सिंहासन पुत्र कनिष्ठा था॥
जब दृष्टि उठाकर देखा तो माली सन्मुख रोते हैं।
भय ध्यान हटा कुछ सीता से, इस तरह मुखातिब होते हैं।

दोहा (रावण)

क्यों रोते भय मालियो कहो कष्ट का हाल।
किसने मारा है तुम्हें सूख रहे क्यों गाल॥

दोहा (माली)

बुरा हमन को हाल हुआ, सुनो श्री महाराज।
काल बचाया के भाग से, बची जान यह आज॥

बची जान प जान, आपके पास दौड़ आये हैं।
बस यही कि देवमरण में रहने को मरपाये हैं॥
तोड़ गेरो सब बाग फूल, अंगूर सभी खाये हैं।
बाल पुत्रो कोई चोर, बाग में हम सब घबराये हैं॥

दौड़

पता ना क्या बलाय है, किसी से डरत नाय है।
हमन को कहे गाली बमु प्रयाग से मार दिये हम तो
गरीब हैं माली।

दोहा

अक्षय कुंवर मुत की तरफ, देखा नजर उठाय।
विनीत पुत्र मद्रपद उठा मांगा मस्तक नाय॥

दोहा (अक्षय)

चाहता था मैं भी यही ठीक किया उपकार।
देख आज बाग में कौन है वह संसार॥

कवच शस्त्र धारण कर जाऊं, संग में सैन्य ले आता हूं ।
कौन घुसा ये आन बाग में, अभी पकड़ कर लाता हूं ॥
शीश झुकाया पिता को आ टुकड़ी को हुक्म सुनाया है ।
अस्त्रों-शस्त्रों से सजधज करके, देवरमण में आया है ॥

दोहा

निरशंक यहीं पे घूमते, अमित बली हनुमान ।
देख अकेला वीर को, बोला अक्षय घर मान ॥

दोहा (अक्षय-हनुमान)

बिना आज्ञा इस बाग में घुसा किस तरह आन ।
कारण जल्दी से कहो नहीं काढलूं प्राण ॥

यदि प्राण प्यारे हैं तो सच-सच सब बातें बतलाओ ।
नहीं तो इस तलवार को सिर देकर के परभव को जाओ ॥
हाथ जोड़ कर क्षमा माग माली को शीश निवा जाओ ।
फिर मांगो माफी सब जन से यदि जान बचानी निज चाहो ॥

दोहा (हनुमान)

वाह-वाह-वाह क्या खूब तू भजा रहा है गाल ।
जैसा रावण आप तुम वैसे जन्मे लाल ॥

दोहा

ई परस्पर इस तरह, दोनों की तकरार ।
दोनों योद्धों ने लिये, कर में शस्त्र धार ॥

अक्षय कुमार की बिगुल बजी झट, मारा मार मची भारी ।
अब चले वीर के बाण सरासर, समा करते संहारी ॥
पता लगे ना चाप का कब मारा कब कर में बान लिया ।
यों छाया मारा श्याम बाणों से अंधेरा सा तान दिया ॥

जिधर गये बजरंगी बाण, सब सेना धष्ट कर डारी है।
ये हाल देख घबराई सेना भगी पड़ी अति भारी है॥
ये हाल खला जब अक्षय कुंवर ने, धनुष बाण उठाया है।
पर पेश गई न वीर के सम्मुख, सरासन अपना टिकाया है॥
जब अक्षय कुंवर निज खड्ग तान हनुमान के सम्मुख आन खड़ा
और इधर वीर बजरंगी का भट पर दाहिना हाथ पड़ा॥
अक्षय कुंवर ने खड्ग थाम कर, अंजनीलाल पर झोंक दिया।
पर पवनपुत्र ने वार बचा निज वज्र उस पर ठोक दिया॥

दोहा

अक्षय कुमार धरनी गिरा, मच गया हा हा कार।
कुछ बचे आदमी सैन्य के, दौड़े करत पुकार॥

दोहा (दूत रावण को)

वज्रपात प्रभु हो गया परलोक सिधारे कुमार।
इन्द्रजीत को सुनते ही आया जोश अपार॥

दोहा

सुन मूर्छित लघु भ्रात को इन्द्रजीत रणधीर।
उमक उठा सारा बदन माँगी आज्ञा बलवीर॥

यों आज्ञा बलवीर देखू पा बला ये क्या आई है।
यदि निकला कोई अन्य मनुष्य, उसकी शामत आई है॥
तीन लोक में सुजपल की शक्ति में दिखलाई है।
आज यह कर्त्तव्य करन की, यहाँ किसमें जुरंत आई है॥

दौड़

किये का दण्ड पायगा भाग कर कहाँ जायेगा।
सिर्फ आज्ञा चाहता हूं, बाँध जकड़ कर उसी दुष्ट
का अभी यहाँ लाता हूं।

दोहा (रावण)

हाँ बेटा जावो अभी, देखरमण उद्यान।
पकड़ उसे लाकर धरो मेरे सम्मुख आन॥

इन्द्रजीत-हनुमान

दोहा

कवच पहन तन पर लिये सब हथियार सजाय।
इन्द्रजीत उस बाग में पहुँचा जल्दी जाय॥

जब नजर मिली बजरंगी से, तो दोनों वीर मुस्काये हैं।
दोनों के भुजदण्ड फड़क उठे शस्त्रों पर हाथ जमाये हैं॥
अब अक्षयकुमार को देखा तो, नयनों में सुर्खी आई है।
तब क्रोधातुर हो इन्द्रजीत ने येम बात चलाई है॥

दोहा (इन्द्रजीत)

अय मूर्ख तू किस लिये, फंसा मौत मुख आन।
इकलौता हो लाल तू साथा नहीं नादान॥

क्यों प्रह्लाद का वंश आज निर्वंश करन की ठानी है।
अब संकट से नहीं छुट जा सकता ये अपनी जिन्दगानी है॥
अक्षयकुमार और वज्रमुख दोनों को तूने मारा है।
अब मात्र जरा अपने मन में कैसे होगा छुटकारा है॥
यदि ख्याल हो तेरा भागन का, सो भी आशा निष्फल होगी।
नादान नहीं कुछ भी सोचा परिवार बनेगा सब शोगी॥
बस एक यही रास्ता तुमको, पहनो कर में जंजीर अभी।
चल सैर करो कारागार की, परस्तर शस्त्र दो डाल सभी॥

शेर (हनुमान)

संहार इस वन का मैंने, दोनों का ही कर दिया ।
ठोकर से गेह शान रावण का ये दिल में भर लिया ॥
आसमान तेरे बाप का जंजीर पहनेगा नहीं ।
कंगना विजय का हाथ में सज कर दिखा देगा नहीं ॥
आदत ये तेरे बाप की है, दुम दबाकर भागना ।
हम सूरमों का काम है, शत्रु के सम्मुख गाजना ॥
मुश्किल बताता जंग में, धोखे में रह जाना नहीं ।
इस मौत रूप वेग में तू देख बह जाना नहीं ॥
कहना तेरा ये ठीक मैं, वन जना का एक ही खास हूं ।
बस सिंहनी का सिंह, तुम सब के लिये मैं काल हूं ॥
सिंहनी के सिंह ही, होते अतुल बलवान हैं ।
मानिन्द गधी के जन दिये, मन्दोदरी ने श्वान हैं ॥

शेर (इन्द्रजीत)

शेखियां तेरी सभी यह, धूल में मिल जायेंगी ।
पहुंचेगा तू परभव में, और बातें यहीं रह जायेंगी ॥

शेर (हनुमान)

शक्ति है कितनी मुझ में यह मज पता देगा ।
आ सामने तुमको वजूदा सब बता देगा ॥

दोहा

सुनी काट करती हुई, हनुमान की बात ।
इन्द्रजीत का क्रोध से लगा कांपने गात ॥

जुट गये वीर रण में दानों दोनों ही थे गम्भीर बली ।
बाणों की वर्षा बंद हुई फिर दानों की तलवार चली ॥

कभी नभ में कभी भूतल पर, आप अपना जोर लगाते हैं।
ना वो हारा ना यो हारा, दोनों ही लज्जा खाते हैं॥

दोहा

देख तेज हनुमान का, इन्द्रजीत हैरान।
यज्ञबली के सामने, रहा आज सब मान॥

इन्द्रजीत मन सोच रहा, ये तो बिल्कुल ही आफत है।
हनुमान भी यही विचार रहा, किसको ये बैठा आफत है॥
रावण से भी बातें दो करके, किष्किन्धा को जाना है।
दे रामचन्द्र को सभी खबर सीता का कष्ट मिटाना है॥

दोहा (हनुमान)

चेहरे पर क्यों किस लिये गई उदासी छाय।
अपने दिल के भाव सब देवो जल्द बताय॥

क्या मुझको रिश्तेदार समझ, तुमने नहीं चोट लगाई है।
या दशकंधर के पास चला यदि दिल में नहीं समाई है॥
मैंने तो समझा था लंका, वालों में कुछ दानाई है।
पर यहां अक्ल के लाने में सबके ही सिफर समाई है॥

दोहा (हनुमान)

क्यों मेंढक सा उछल कर, रहा जबान चलाय।
स्वयं आप घबरा गये समझ रहे चिल्लाय॥

अभी तो मैंने केवल तेरी शक्ति ही आजमाई है।
ले सम्भल खड़ा हो जा जल्दी अब तेरी शामत आई है॥
जब मौत शृगाल की आती है तो ग्राम सामने आता है।
था अब तक रिश्तेदार किन्तु, अब तो शत्रु कहलाता है॥

दोहा

इतना कह बजरंग पर, नाग फांस दिया डार ।
बैठा कर विमान में पहुंचा लंक मंझार ॥

आ पेश किया दशकंधर के, सम्मुख हनुमान बैठाया है ।
तब इन्द्रजीत की पीठ ठोक, दशकंधर अति हर्षाया है ॥
दरबार पेम भरपूर हुवा, कई देख २ खुश होते हैं ।
कई बुद्धिमान् अन्याय समझ, अंजाम सोच कर रोते हैं ॥
वीर विभीषण भी अपने, सिंहासन पर थे विराज रहे ।
कुछ अन्तर से थे भानुकर्ण, योद्धा भी वहाँ विराज रहे ॥
देख २ निज गौरव को, दशकंधर जी खुश होते हैं ।
फिर पवन पुत्र से लंकपति इस तरह मुखातिब होते हैं ॥

रावण-हनुमान

(हनुमान जी व रावण का सवाद)

रावण—कहो पवनपुत्र तुमने यह क्या किया ?

हनुमान—जी हाँ जब तक आत्मा की मोक्ष नहीं हो जाती तब तक यह संसार में कुछ न कुछ अभयकर्म करता ही रहता है । इसलिये आपकी इच्छानुसार जो कुछ आपको अच्छा लगा सो आपने किया । जो कुछ मेरा कर्तव्य था सो मैंने कर दिया ।

रावण—क्या तेरा यही कर्तव्य था, कि चोरी से देवरमण में घुसना बागवानों को सताना नागफांस में फंसकर यमराज के हाथ में अपनी जान देना ।

हनुमान—आपकी बात बिल्कुल ठीक है किन्तु मेरे साथ सम्बन्ध नहीं बैठता। यदि आप हृदय में विचार कर देखेंगे तो आपके ऊपर ही घटती नजर आयगी।

रावण—अरे हनुमान तेरी समझ पर क्या पत्थर पड़ गया है। मैं तो भानेज जवांई समझ कर प्रेम से कुछ पूछना चाहता हूँ और तुम मेरे से विपरीत ही चलते हो। और यह गन्दी बात हमारे ऊपर डालते हो।

हनुमान—वाह वाह क्या कहने हैं। आपको एक राम नहीं और सब गहने हैं। अजी भानेज जमाई के वास्ते तो आपके प्रेम की ही सीमा न रही अहा हा देखो तो सही ऐसा आभूषण कोई प्रेम के बिना किसी को पहिना सकता है। हरगिज नहीं और इसका नाम भी क्या है। (नागपाश और जिस बात को आप अपने वास्ते गन्दा समझते हैं। उसे प्रेम भाव ही तो मेरे ऊपर लगा रहे हैं।

रावण—अरे यह तो तेरे खोटे कर्मों का फल है।

हनुमान—वाह यह खूब रही मानो खसम करे शाहिता चट्टी भरे। दुष्ट काम करने वाले आप और इसका फल भोगने वाला मैं! भला ऐसा घोर अन्याय हो वहाँ का राज्य और सुख सम्पत्ति क्यों ना नष्ट हो या किसी कवि ने क्या ही उत्तम पद कहा है कि—

बिगरे पय कांजी की छींट परे, कपात कुघात पर बिगरे।
बिगरे तपपुञ्ज कपाय चढ़ पद ऊँच कुसंगति ते बिगरे॥
बिगरे कुल जात कलंक लगे नृपराज अनीति करे बिगरे।
बिगरे हित मित्र जहां छल है गुण धर्म कृपामति न बिगरे॥

रावण—अनीति मैंने की या तून।

हनुमान—सोचो मैंने की या कि तुमने।

रावण—सोचने की क्या बात है। यह तो प्रत्यक्ष सामने नजर आती है। और अब भी आँखों में धूल डालना चाहता है।

हनुमान—क्यों बहकाइये मैंने क्या करी!

रावण—अरे दुष्ट तूने आराम्रोद्यान क्यों ढाया।

हनुमान—तुमने जो लगाया क्या किसी बुद्धकर्तव्य का कर था

रावण—देख अभाग को लगाम लगा।

शेर

औकात अपनी देख कर, बातें बनाना चाहिये।
जैसा पचे मोसम उदर में, वैसा खाना चाहिये॥

हनुमान—हां, मुँहजोर टट्टू का कांटेदार लगाम की आव रखता है।

शेर

क्षत्रिय का जो चित्त वह झलकारता मैदान में
चोर की औकात क्या, बातें करे जो सामने॥

रावण— अच्छा तैंने अक्षमुक्ता को क्यों मारा।

हनुमान—उसने मुझको क्यों रोका।

रावण—अपना कर्तव्य पालन करने के लिए।

हनुमान—उसका क्या कर्तव्य था।

रावण—अन्य राष्ट्र वाले को अन्दर नहीं आने देना।

हनुमान—यदि दूत होतो?

रावण—दूत को नहीं रोकना।

हनुमान—बस मैं आपके कथनानुसार निर्दोष होगया।

रावण—क्या तू दूत है?

हनुमान—और क्या भूत हूं।

रावण—किसका दूत बन कर आया है ?

हनुमान—वाह आप किस अन्धेरी कोठरी में बैठ हैं। आपके पास पत्र आ चुका है, सारी दुनियाँ में प्रसिद्ध हो चुका, यदि आपको भी फिर पता नहीं तो बताये देता हूँ-मैं दूत हूँ अयोध्या पति श्री रामचन्द्र जी महाराज का।

रावण—वाह खूब सुनाई। जंगली भीलों का दूत बन के आया है। खैर इस बात को तो फिर बतावेंगे परन्तु यह बतलाओ कि देवरमण में बिना आज्ञा क्यों घुसा।

हनुमान—देवरमण कहाँ है।

रावण—तुमको खबर नहीं।

हनुमान—किस बात की।

रावण—अरे जहाँ मोटे-मोटे अक्षरों में लिखा हुआ है क्या तुमको यह भी नजर नहीं आया।

हनुमान—अच्छा तो देवरमण शब्द चाहें मर्जी लिखदें चाह चोर पल्ली भी क्यों न हो तो क्या उसी का नाम देवरमण हो जाता है।

रावण—अरे जहाँ तैने मालियों को मारा अक्षकुमार को मौत के घाट उतारा जहाँ मेघनाद ने तुमको नागफाँस में बांधा क्या वो चोर पल्ली है।

हनुमान—चोर पल्ली नहीं तो और क्या है।

रावण—भला कैसे चोर पल्ली है।

हनुमान—अजी जहाँ पराई हुई वस्तु छिपाई जाय और भले पुरुष को भी अन्दर न आने दिया जाय।

रावण—क्या छिपाया।

हनुमान—जिस काम का नीच भी नहीं करते उस नीच काम से भी नीच काम को आपने किया। श्री रामचन्द्र जी की

रावण – मालियों ने तेरा क्या बिगाड़ा था ?

हनुमान—हां उन्होंने अनुचित शब्द कहे यह जवान चलाई और मैंने दो थप्पड़ व ठोकर लगाई।

रावण—उनकी आज्ञा बिना देवरमण में क्यों घुसा और फल क्यों खाये ?

हनुमान—फिर वही बात। अजी मैं तो चोरपल्ली में गया था अपना मुंह ढूंढने के लिये सो मेरा कार्य सिद्ध हो गया और मैं लंका को चोरपल्ली यहां के निवासियों को चोर और आपको सबका सरदार समझता हूं।

रावण शेर—

अब अधिक जो कुछ कहा तो सर उड़ा दूंगा।
तेरे जिस्म से जीव का नाता छुड़ा दूंगा॥

हनुमान शेर—

शेखियां तेरी ये, मिट्टी में मिलाऊंगा।
लात ठोकर से गिरा मस्तक का लाऊंगा॥

इन्द्रजीत—पिताजी आप किस पागल से मगजपची कर रहे हैं महाराज ! भूत का इलाज हमेशा जूत होता है। आप तो शान्ति के समुद्र हैं। परन्तु इस अधाम्य शब्दों को मैं सहन नहीं कर सकता।

[खड्ग खैंच कर]

शेर—

अनुचित शब्द कहने से पहले सिर उड़ा देता।
लाश में भुस भर के, रास्ते पर डाल देता॥
बस मैं आगे और कुछ कानों से सुन सकता नहीं।
सिर उड़ाये बिन मैं, इस शत्रु को रह सकता नहीं॥

इन्द्रजीत-विभीषण

विभीषण जी—बस-बस बेशर्म कुपात्र—तू कहाँ से कुल कलङ्क पैदा होगया। तू भाई रावण का हितकारी पुत्र नहीं किन्तु शत्रु है। भला तेरा बीच में बोलने का क्या अधिकार था। अय मूढ़! तूने आज असंख्य पीढ़ियों से और असंख्य समय से चली आती हुई राजनीति का भंग किया है। अब यदि अपना भला चाहता है तो चुपचाप वापिस यहाँ से उसी जगह बैठ जाओ। मैं इस अन्याय को नहीं देखना चाहता। यदि एक कदम भी आगे बढ़ाया तो अपनी तलवार से तेरा सिर उड़ा दूंगा। जब तक मैं जीता हूँ, जहाँ तक मेरी शक्ति है तब तक अपने भाई त्रिखण्डेश्वर श्री दशकन्धर के गौरव को नीचा न होने दूँगा। दूत का कर्तव्य है कि अपने स्वामी की आज्ञा नर्म या कठोर जैसी मर्जी वैसे कठोर शब्दों में सुना सकता है और सुनना हमारा कर्तव्य है।

रावण—ठीक, विभीषण का कहना ठीक है और तुम गलती पर हो। राजनीति में दूत अवध्य है। और यह भी सोचना चाहिये कि जिसको जैसी संगति होती है वैसे ही उसमें संस्कार पड़ जाते हैं। किसी ने यह सत्य कहा है—

दोहा

जैसी सोबत बैठते वैसे ही गुण लीन।
कदली सीप भुजंग मुख एक बूंद गुण तीन॥

जैसे जंगली मनुष्य राम लक्ष्मण हैं वैसा ही यह दूत है। एक और यह भी सोचने की बात है कि जब उनकी स्त्री पर हमारा अधिकार है। क्या बेचारे गालियों से भी गये। यदि तो

निर्बल और शक्तिशालियों की परीक्षा की कसौटी है। यह स्वाभाविक बात है कि निर्बल गालियाँ ही निकाला करते हैं और बुद्धिमान सह लेते हैं। इसलिये तुम अपने दोष को स्वीकार करते हुए उल्टे पैरों अपने सिंहासन पर बैठ जाओ।

इन्द्रजीत—पिताजी आपकी आज्ञा मुझे स्वीकार है परन्तु यह याद रखें कि चचा साहिब ने इस समय शत्रु की सहायता की है और मेरा सिर झुकाने में नीति समझी है। आपने भी शत्रु की सहायता करने वाले की प्रशंसा की है लेकिन समय आने पर आपको प्रत्यक्ष दिखला दूँगा कि देखलो शत्रु की सहायता पर पूर्ण तुले हुए हैं। ऊपर से ये तुम्हारे भाई हैं! और प्रेम दिखलाते हैं किन्तु निश्चय ये शत्रु हैं। आप भी इनके साथ मिल कर नीति-नीति पुकारते हैं। पिता जी शक्ति ही नीति है, कहावत भी प्रसिद्ध है कि "जिसकी लाठी उसी का सिर" शत्रु और कपट को जहां पावे वहीं मसल देना चाहिये। बस यही सर्वोत्कृष्ट नीति है। शक्तिशाली अपना काम कर जाते हैं और निर्बल नीति-नीति करते मर जाते हैं। अच्छा हमें क्या! जैसी मर्जी वैसा करें जब आपके सामने कोई कठिन समस्या आवेगी स्वयं पता लग जायेगा।

[मेघनाद का अपने स्थान पर बैठ जाना]

रावण—क्यों हनुमान जी तुम घबरा रहे हो या किसी विचार में लग रहे हो।

हनुमान—जी नहीं, घबराना किससे है। कुछ आप लोगों का तमाशा देख रहा था और कुछ विचार भी कर रहा था।

रावण-हनुमान

रावण—क्या विचार कर रहे थे।

हनुमान—जी हाँ एक दृष्टान्त पर मेरा ध्यान चला गया था। उसको आप ही के ऊपर घटा रहा था।

रावण—फिर घटा है या नहीं ?

हनुमान—जी हाँ बिल्कुल ठीक बावन तोले पाव रत्ती।

रावण—क्या दृष्टान्त है हम भी सुनें।

हनुमान—महाराज एक पर्वत के समीप मिरासी लोग रहा करते थे पवरीला क्षेत्र विशाल था। अन्नादिक की उत्पत्ति कम होती थी। वहाँ के राजा ने सोचा कि इन रंक मिरासियों से क्या कर लेना है मानो एक स्वतन्त्र मिरासियों की रियासत ही बन गई थी। प्राय ये लोग कलह प्रिय होते हैं एक दूसरे के घर मुहल्लों पर अधिकार जमा लेते थे। कई पीढ़ियों तक इनकी यही दशा रही, उसके बाद एक मिरासी के तीन पुत्र पैदा होगये। जिनमें बड़ा पुत्र महाकाय्य बलवान कलह प्रिय, आचार-विचार भ्रष्ट कुमार्ग था, दूसरा अपने भाई के अनुकूल चलने वाला जिसको भले बुरे की पहिचान न थी भद्र और शूरवीर था तीसरा पवित्रात्मा, सत्यवादी न्यायी सदाचारी था। बड़े पुत्र ने अपने बड़ों से छिनी हुई रियासत घर-मुहल्ला जो कुछ भी था उसे अपनी शक्ति व प्रभाव से वापिस छीन लिया तथा आसपास के मिरासियों पर अधिकार जमा कर मानो एक स्वतन्त्र राजा बन बैठा और आनन्द से रहने लगा। इधर-उधर किसी की पुत्रियों को राजकुमारियों को अपहरण कर लेना किसी को सताना

उसका कुकर्तव्य था, परन्तु शक्तिशाली था इसलिये सब लोग डरते थे। इस अन्यायी का सामना करते झिझकते थे। एक दिन मेघ राजा अपनी रानी को साथ लेकर भ्रमण करता हुआ उसी पहाड़ के समीप आ निकला। मिरासी राजा की नजर मेघ राजा की पतिव्रता पर पड़ी और अपहरण कर लाया। धर्मात्मा राजा ने अपना दूत भेजा लेकिन नीति से अनभिज्ञ मिरासियों ने दूत का भी अपमान किया। यह देख दूत ने जाकर अपने स्वामी से सब वृत्तान्त कह दिया तथा उस न्यायी राजा ने कुछ योद्धाओं को भेज कर मिरासियों को अन्याय करने का स्वाद चखाया, कुछ भाग गये, कुछ कैद कर लिये और अपनी रानी को साथ ले गया। सो मैं भी यही विचार कर रहा था कि देखो बुद्धिहीन शठों ने अपना सर्वस्व मारा करा लिया।

रावण—अच्छा तो यह दृष्टान्त हमारे ऊपर घटाया है।

हनुमान—मैंने क्या जबरदस्ती घटाया है यह तो स्वयं ही घट गया।

रावण—तो हम मिरासी हैं।

हनुमान—आप जो मर्जी मानें, मैंने तो उनकी तरह बतलाया है।

रावण—अरे तुम्ह कहो तरह कहो, भांति कहो, इसमें भेद ही क्या है।

हनुमान—नहीं तो मा सही, इसमें भेद की जरूरत ही क्या है।

रावण—मुझको क्रोध बहुत आता है। किन्तु क्या करूं तू दूत है।

हनुमान—नहीं तो।

रावण—नहीं तो तेरे टुकड़े-टुकड़े कर डालता।

हनुमान अच्छा मैं रामदल में सैनिक बन कर दूसरे रूप में

आपसे जंग करने के लिए आऊंगा उस समय यह क्रोध मेरे ऊपर निकाल लेना, किन्तु यह याद रखना कि मेरे सामने आने से पहले ही किसी योद्धा की झपट में आकर परभव को सिधार न जाना।

शेर (रावण)

सूरमा मैंने छोड़ा, संसार में कोड़ा नहीं।
नीचा दिखाये बिन किसी को आज तक मोड़ा नहीं॥
आयेगी शक्ति कौनसी पर, मीत मेरे सामने।
नाम ही रावण का सुन योद्धा लगें सब काँपने॥

शेर (हनुमान)

बात जो राजा की हो, सो बात चलनी चाहिये।
ठोकरें खाने से पहले ही, संभल जाना चाहिये॥
शेखियां सारी य रण भूमि में देखी जायेंगी।
वीर लक्ष्मण के अगाड़ी, धूल में मिल जायेंगी॥
शेर की मूछों पै हाथ डालना हाथ क्या छूट जायेगा।
कच्चे चित्र की तरह, दुनिया से तू मिट जायेगा॥

रावण (भानुकरण)—विभीषण देखो, रामचन्द्र जंगली भील होते हुए भी चालाक और धूर्त कितना है। जिसने हमारी छत्र छाया में रहने वाले हमारे सेवक हनुमान को भी कैसे फन्दे में फँसाया है पता नहीं क्या जादू डाला है। जिसके प्रभाव से अपने कुल का गौरव और हमारा प्रेम तो क्या जिसने अपने शरीर की भी सुध-बुध भुला दी। और रामचन्द्र शिकारी की तरह आप तो नहीं आया किन्तु हनुमान को कुत्तों की तरह मुझ जैसे सिंह के सामने भेज दिया। अब इसने तो बिना सोचे समझे अज्ञानता से अनुचित काम किया

परन्तु यदि मैं भी इसको प्रत्युत्तर में सजा दूं तो मेरा और इसका अन्तर ही क्या रह जायेगा। किन्तु नहीं हमारी शोभा और गौरव हनुमान के ऊपर अनुग्रह करने में ही है।

कुम्भकर्ण—निस्सन्देह महाराज आपको ऐसा ही सोचना चाहिये। [क्षमा वीरस्य भूषणम्] अर्थात् दूसरों पर कृपा करना, मिष्ट वचन बोलना विचार कर काम करना ही बड़ों का भूषण है तथा (उदारचित्तानां वसुधैव कुटुम्बकम्) अर्थात् उदार हृदय वाले पुरुष का समस्त संसार ही निज का कुटुम्ब है। फिर हनुमान तो हमारे पुत्रवत् है। यदि इसका जो भी कुछ अपमान हुआ वह हमारा ही तो हुआ।

शेर

भूले को समझाना यही कर्त्तव्य है इन्सान का।
करना नहीं अपमान घर आए हुए मेहमान का॥

विभीषण—भानुकरण जी का कथन सुनहरी अक्षरों में लिखने लायक है तथा मेरी जबान इन अनमोल शब्दों का आशय प्रकट करने में असमर्थ है। अब इतना ही कहना चाहता हूँ कि महाराज का और हनुमान जी का परस्पर प्रेमपूर्वक वार्तालाप होना चाहिये।

शेर

जिसको नजर आता स्वयं मार्ग वही बतलायेगा।
जो आप ही उल्टा चल रहा औरों को क्या समझायेगा॥
कर्त्तव्य अब अपना निभाने मनुष्य का य धर्म है।
नहीं तो उसे जाना पशु, या यों कहा बशर्म है॥

इसलिए हमारी दासों से प्रार्थना है कि प्रेम पूर्वक वार्तालाप हो और हनुमान जी ! आप से हम विरोध क्षमा करते हैं।

हनुमान—आपका कथन मुझे स्वीकार है किन्तु ईंट का उत्तर तो मैं पत्थर से ही दूंगा। क्योंकि—

शेर

चाकर हूँ मैं श्रीराम का, उनका सिपाही हूँ।
भाई भले का समझ ले बद का कसाई हूँ॥

जिसको अपने गौरव की जरूरत हो वह दूसरों का गौरव बढ़ाने की कोशिश करे।

शेर

शिक्षा पाई गुरुदेव से मैं पहल कर सकता नहीं।
जो होगा अपराधी कभी मैं, उससे टल सकता नहीं॥
सत्य का पक्षी हूँ मैं प्रतिपक्षी हूँ अन्याय का।
लोप खोटे कर्म का सेवक हू श्री जिनराय का॥

रावण—ठीक, पवन कुमार मनुष्य का ऐसा ही होना चाहिए। अब जरा शान्ति से मुझे उसके ऊपर विचार करें।

हनुमान—जी हां ध्यान से सुनूंगा।

रावण—अच्छा प्रथम लंका और अयोध्या की तुलना करके देखो कि कितना अन्तर है

हनुमान—किस बात का।

रावण—जल वायु का, स्वाभाविक दृश्यों का रूप का, शक्ति का पुरुष प्रताप का, मेरा और रामचन्द्र का इत्यादि सब प्रकार का।

हनुमान—जी हाँ ऐसे तो पृथ्वी और आकाश में जितना अन्तर है। अयोध्या पुरी जैसे स्वर्ग, लंका जैसे नर्क रामचन्द्र जैसे सुरेन्द्र आप जैसे असुरेन्द्र इत्यादि सब प्रकार का।

रावण—मैंने समझ लिया कि तू हवा के घोड़े पर सवार है,
हनुमान—जो मर्जी कहो यह आपके अख्त्यार है।
रावण—मैं क्या करूं अब काल तेरे सिर पर तैयार है।
हनुमान—जी हाँ काल तो सबके ऊपर आयेगा, कोई शुभ नाम और कोई अशुभ नाम फैलाकर मर जायेगा।

रावण कथन (क० द०)

होश में आन कर बात कर तू जरा।
वीर पृथ्वी के मुझको सलामी करें॥
तेरा गौरव मेरे संग बढ़ जायगा॥
रामचन्द्र की क्यों तुम गुलामी करें। (१)
यह तो स्वयं ठोकरें खाते बन में फिरें॥
ऐसे मीखों से तुम क्यों कलामी करें।
"शुक्ल" कर तू गा युधिष्ठिर राम की॥
तो अमर क्यों न अपनी आरामी करें। (२)

हनुमान (ब द०)

यह कहना उन्हें जो हों अज्ञानी जन,
मर सूखे हैं सारे हृदय चस्म क जख्म।
सिक्का हल जायगा सारा पल में तेरा
इस लंका में तेरी न होगी रसम।
जिन्दगी तेरी समझ खत्म हो गई
रामचन्द्र के रण में तू होगा भसम।
तुख्म होवे ना लंका में हरगिज तेरा
साफ कहता हूँ खाकर मैं तेरी कसम।

जर्द चेहरा हुआ देख गममें तरा
हिम चुकी है तुम्हारी सब मक्खो मसम।
"शुक्ल" थोड़े दिनों में तेरे जिस्म की
बस उठा देंगे झांसी में गाके मजम।

शेर (रावण)

सोच अपने मन में अब तू, क्या था और क्या हो गया।
जो साथ मेरे था तेरा गौरव वो, सारा खो गया॥

कहाँ तो सुग्रीव और हनुमान को दुनियाँ राजा रावण की मूछों का बाल कहती थी। किन्तु आज तुम उस नीच जंगली मीच राम शिकारी के कुत्ते बने हो शर्म शर्म शर्म।

हनुमान—बस फिर क्या जब मूछें ही कट गई तो फिर रहा ही क्या? नाक किन्तु मूछों का ख्याल मर्दों को होता है, नामर्द की मूछें कटे चाहे रहीं उसे क्या शर्म।

रावण—देख जैसे तुम्हारे बड़े और तुम भी अब तक हमारे सेवक रहे और हम तुम्हारी सहायता करते रहे। इसी तरह अपने बड़ों की परम्परा को छोड़ना धर्म नहीं।

दोहा (हनुमान)

कब सेवक थे हम तेरे कब स्वामी था तू।
स्वामीपन की आप में जरा नहीं है बू॥

जब वरुण भूप ने कैद किये खरदूषण को क्या नहीं पता।
कुछ पेश गई ना आपकी वहाँ, तब बुलवाया था मेरा पिता॥
खरदूषण को छुड़वा करके, आधीन वरुण करवाया था।
क्या वह दिन भी अब भूल गये, शत्रु से तुम्हें बचाया था॥

फिर एक बार मैं आया था, जिस समय आप पर भीड़ पड़ी।
उस समय तुम्हारे चहुँ ओर, दुर्धम की थी संगीनें खड़ी॥
जब आपके लगे घसीटने को यहाँ वरुण नृप के सुत दल में।
तब मैंने आकर छुड़वाया था, तुमको शत्रु के दंगल में॥

दोहा

शुभ कर्तव्यों पर जरा, रखना चाहिये ध्यान।
गौरव निज पहचान कर, तजो निरस अभिमान॥

आज तीन बातों को लेकर, हुआ मेरा यहाँ आना है।
प्रथम सीता की खबर लेना, दोयम तुमको समझाना है॥
यदि आप नहीं समझें तो फिर जंगी ऐलान सुनाना है।
और नाग फांस के बंधने का यश्ना लेकर भी जाना है॥

अब सोचो आप जरा मन में, किस गौरव पर थे खड़े हुए।
और तीन खंड में सब राजों के, मस्तक पर थे चढ़े हुए॥
किन्तु आज सब दुनियाँ की, दृष्टि से आप हैं गिरे हुए।
हैं बड़े बड़े शक्तिशाली राजों के, दिल भी फिरे हुए॥

बस यही हमारा कहना है जगदम्बा को वापिस कर दो।
जिस बात से प्रेम घटा सब का फिर भी उसको वैसा कर लो॥
वह पुण्य समाप्त अब हुआ आपका सीता माता के हरन में।
हम सब का भी मन फटा एक बस, यही अनीति करने से॥
जिस शक्ति का अभिमान तुम्हें यह सभी धरी रह जायेगी।
अब तक तो कुछ भी नहीं बिगड़ा फिर बात हाथ नहीं आयेगी।
यह समय हाथ से निकल गया तो फिर पीछे पछताओगे।
लक्ष्मण आगे रणभूमि में, तुम अपने प्राण गंमाओगे॥

दोहा (रावण)

बस बस बस मैं सुन लिया, सब तेरा उपदेश।
अधिक और आगे कहा, तो होगा बहुत क्लेश॥

जब तक दम में दम मेरा, तो जानकी जान की साथिन है।
जैसे तू नाग फांस में यूं सीता में बंधा मेरा मन है॥
मैं सुर सुन्दर से जीत लिये फिर कौन बिचारा लछमण है।
इक रामचन्द्र क्या सारा दल, तलवार मेरी का भक्षण है॥

शेर (हनुमान)

फिर कहता हूँ समझ ले बरबाद क्यों होने लगा।
एक नारी के लिये सर्वस्व, क्यों खोने लगा॥

शेर (रावण)

सीता विरह का रावण भी, सुनना जरा चाहता नहीं।
प्राण प्यारी के बिना अब जल मुझे भाता नहीं॥
सीता सा मेरी जान है, जो जान है सीता वही।
[illegible] पानी से क्या शीतलता जाती है कहीं॥

गाना (हनुमान का रावण को समझाना)

अब भूपति मत जुल्म पर बांधे कमर,
आखिरी अच्छा नहीं होगा समर।
दिल दुखाना धर्मियों का है गुनाह,
अन्याय से ना सुख मिले इसमें सुना॥
इसलिये रख प्राणी मात्र की कदर,
एक डंड से, सभी को हाँक मत।
ज्ञान सम्यक से सदा, कुछ सत्यासत्य
फिर न्याय और अन्याय की, कुछ रख खबर॥

कर्त्तव्य अपने का जरा पहचान तू,—
पाके तुच्छ वैभव न कर अभिमान तू।
क्या मनुष्य तन पाया है भरने को जठर॥ १
व्यवहार रखना शुद्ध, गौरव है यही,
चन्द दिन की जिन्दगी, सब की कही।
अन्त सब लेवेंगे, परभव की डगर॥ २
चक्री तीर्थ कर, व गणधर बल बसे
अन्त सुरपति ने भी अपने कर घसे।
आज ढूंढे भी नहीं आते नजर,
धर्म करने का मिला मनुष्यतन।
पाके अत्युत्कर्ष कोमा नीच घन।
सांच मत सरवर व प्रज की मखर।
आया कहीं से काल कर जाना भी है
फिर शुभाशुभ कर्मफल पाना भी है।
इसलिये शुभ ध्यान अपना शुरू कर।

शेर [रावण]

बंद कर उपदेश का बस क्यों डिठाई है गही।
राम के जा मी सहायक मौत उन की आगई।

शेर [हनुमान]

ठीक यह दिल में समझ, मौत तेरी आगई।
पता अब किसकी चले जब हानी सिर पर आगई॥

रावण वार्ता—बस-बस अब ज्यादा बक-बक मत कर यदि कुछ दिन दुनिया में रहना है तो जान बचाने की फिकर कर।

(हनुमान जी का प्रदर्शना में आकर नागफांस तोड़ डालना और एलान सुनाना)

हनुमान जी—अहो लंकेश—श्री रामचन्द्र महाराज तुमको यह हुक्म देते हैं कि या तो सीता को अर्घ-पूज कर वापिस करदो नहीं तो जंग के लिए तैयार हो जाओ। और जीने की आशा छोड़ कर परभव में जाने की तैयारी करो। फेर मत कहना कि रामचन्द्र जी ने तुमको बिना खबर ही आकर दबा लिया।

शेर

भाला न देना किसी को, यह क्षत्रियों का धर्म है।
शरण आये की करें, प्रतिपालना ये कर्म है॥
जिस बात पर मूछा फिरे तुमको मिटा देगें।
धरणी तो क्या चीज, हम स्वर्ग को भी हिला देगें॥

रावण—बेटा मेघनाद इस दुष्ट को अभी पकड़ कर मेरे सामने मुँह काला करदो और गधे पर बैठाकर मारी के रास्ते से निकाल दो।

दोहा

सुनते ही इस बात को कोप उठे बजरँग।
फटके बिजली की तरह होकर रँग बिरँग॥

मस्तक पर ठोकर लगाकर के, रावण का ताज गिराया है।
फिर गगन गति कर गये, कलेजा सबका ही दहलाया है॥
निज अंगरक्षकों से आन मिले जहाँ पर भी था संकेत किया।
प्रसन्न वदन हो चले शीघ्र वा, किष्किन्धा प्रवेश किया॥

दोहा

बाशिन्दे सब लंक के, जल बल हो गये खाक।
रावण ऐसा कट गया कोपका न रहा ताक॥
दशकन्धर का जब गिरा ताज धरणी पर आय।
एक दम सारे सूरमे, दौड़े शोर मचाय।

पकड़ो पकड़ो इस दुरात्मा को टुकड़े टुकड़े इसके कर दो।
इस बात का तो क्या कहना है, यदि पकड़ यहाँ सम्मुख धरदो ॥
देख देख इस वेइज्जती को, सब लंका वाले रोते हैं।
कर सके कौन रक्षा उसकी जिसके फूटे दिन होते हैं ॥

रावण—बेटा इन्द्रजीत ! शर्म शर्म शर्म ।

इन्द्र—किसको ।

रावण—तुमको ।

मेघनाद—क्यों ।

रावण—अरे हमारे अपमान को तो खड़ा खड़ा देखता रहा । तुमसे एक बंदर न पकड़ा गया ।

मेघनाद—अजी मेरा तो रोम-रोम खुश होगया । आपके साथ ऐसा ही होना चाहिये था । और चाचा साहब का कहना मानो करो बस जल्दी ही बेड़ा पार हो जायेगा । फिर ताज तो क्या आपका सिर भी गिर जायेगा ।

भानुकर्ण—बेटा इन्द्रजीत शान्ति करो, तुम्हारा कहना ठीक है परन्तु उस समय तो बात ही और थी ।
यदि दूत को मार ही देते तो हमेशा के लिए कलंकित हो जाते ।

इन्द्रजीत—हैं—अब तो बड़े निष्कलंक हो रहे हो । सीता को लाते तभी दोनों को समाप्त कर आते तो क्यों मुआ रीछ हाथी क्यों पाताल लंका का राज्य जाता । और क्यों सुग्रीव-हनुमान राम के पक्ष में होकर आज य दुर्दशा करते परन्तु यहाँ हमारी मानता ही कौन है यहाँ तो उनकी ही चलती है जो सत्यानाश करने वाले हैं' यहाँ दुनिया शोर करती है। वहां अन्याय किया इतना और कह देवी । बस इतना ही अन्तर था या और कुछ—

शेर

कैद से लाया था मैं, शत्रु को पकड़ कर यहाँ।
हाथ से मौका गया अनमोल, अब मिलना कहाँ॥
दुःख बड़ा यों काल के मुख से, गया दुर्जन निकल।
पवन पुत्र कर गया, हम सबकी बुद्धि को विकल॥

रावण—बेटा इस विचार को अब छोड़दो। और हम उसको एक पशु समझते हैं। जैसे पशु बंधन से घबरा कर रस्सों को तोड़ देता है और नुकसान भी कर देता है बस यही हाल हनुमान का हुआ फिर हम विचार करें तो किस बात का।

विभीषण—जी हाँ सम्भव है। ऐसा ही हुआ होगा क्योंकि जिस समय आपने काला मुँह करने को कहा बस यह शब्द उससे सहा नहीं गया और गगन गति करते समय आपके बाग में आग लग गयी बस बात तो यह है, इस बात को यहीं छोड़देना चाहिए। और जिस कारण से अशान्ति हुई है उस कारण को दूर करने का कोई नियत समय कर दीजिये जिसमें शान्ति करने का कोई उपाय सोचा जाय।

रावण—शान्ति का उपाय सोचा जाय। क्या किसी की अपेक्षा है। हमें सोचने की कोई जरूरत नहीं यदि होगी तो राम चन्द्र को होगी वह सोचें या न सोचें हमें क्या? प्रथम तो राम चन्द्र में शक्ति ही नहीं कि लंका की ओर एक भी कदम उठावें, यदि उठावेगा तो अपने प्राण गवांवेगा। यदि सुग्रीव भी उसका साथ देगा तो वह अपने प्राण और तीन सौ योजन का वानर द्वीप हाथ से गवांयेगा। हमारे तो सब तरह पौ बारह हैं। (सभा की ओर देखकर) क्यों जी क्या बात ठीक है। (विभीषण के अतिरिक्त सब) हाँ ठीक है। बिल्कुल ठीक है।

रावण—बस मेरी यही आज्ञा है कि सबको अपने राष्ट्र की रक्षा के लिए हर समय तैयार रहना चाहिए और प्रेम से एक जयकारा बुलाकर सभा का विसर्जन करना चाहिए (बोलो राजा रावण की जय)

[पटाक्षेप]

राम-हनुमान

दोहा

रामचन्द्र के पास अब आ पहुँचा हनुमान
झूम झाम चहुँ ओर से आ पहुँचे इन्सान ॥
सीता का चूड़ामणि दिया राम के हाथ ।
आदि अंत पर्यंत अब लगा कहन सब बात ॥

मूला जैसे मोजन पर त्रिषातुर जैसे पानी पर ।
मतिज्ञा पर जैसे मंत्रजन। या सम्यग्जीव जिनवाणी पर ॥
वीणा पर जैसे सर्प मस्त, औषधि मस्त जैसे रागी ।
गमता सुनने म मस्त हुई शुभ ध्यान मस्त जैसे यागी ॥

दोहा (हनुमान)

जिस कारण लंका गया, हुआ सिद्ध सब काज ।
आ जो कुछ कौतक हुआ सुना सभी महाराज ॥

चहुँ ओर काट आशाली का था, पहले उसको तोड़ दिया ।
फिर रोका वज्रमुख ने तो उसका भी सिर फोड़ दिया ॥
फिर पहुँचा पास विभीषण के, जो मेरा बड़ा सहायक था ।
यह उनकी ही उपकार सभी, वरना मैं तो किस लायक था ॥

फिर गया व्योम से वेकरमय, अशोक वृक्ष पर जा बैठा ।
धीमखि पीठिका पर सीता, उस तरफ ही ध्यान लगा बैठा ॥
तब देख हाल जगदम्बा का, पत्थर का कलेजा धमता था ।
गिर गिर नयनों का जल वहाँ, पानी का झरना बनता था ॥
बैठी थी अपने आसन पर, ना खाती थी ना पीती थी ।
यदि जीती थी बस एक आपके, राम नाम पर जीती थी ॥
एक घड़ी-घड़ी पल-पल उनको वर्षों की तरह गुजरता था ।
दिल तो चाहता था मरने को, पर आपका प्रेम मुकरता था ॥
अन्तिम निराशा हो करके फिर, शर्द स्वास जब भरने लगी ।
तब मैंने मुद्रिका गेर दई देखा कि जब न मरने लगी ॥
फिर मैंने प्रणाम किया और आपका सब संदेशा कहा ।
जब दशा आपकी सुनी नीर नयनों से और विशेष बहा ॥
विश्वास दिलाकर मुश्किल से मैंने उनको समझाया था
इक्कीस दिवस के बाद मात को अन्न पान कराया था ॥
बार बार तुम चरणों में बस यही अर्ज गुजारी है ।
यदि जल्दी ना लिया पता तो आयु खतम हमारी है ॥
मेरी तो यही सम्मति है अब देरी का कुछ काम नहीं ।
जब सीता को है कष्ट महा, तो हम को भी आराम नहीं ॥
लंकपति का बढ़ते समय, जंगी पैगाम सुना आया ।
निज ठोकर से दशकन्धर के, मस्तक का ताज गिरा आया ॥

दोहा

सिया संदेशा राम ने सुना प्रेम के साथ ।
हृदय लगाया पवन सुत लम्बे करके हाथ ॥

जब लगी खबर सिया की सबको खुशी की ना सम्भाल रही ।
सुन दु:ख सिय का सब नारी आँखों से आँसू डाल रही ॥

अब शीघ्र लंक में जाने का सब योद्धाओं का मन चाहता है।
श्री रामचन्द्र को घड़ी-घड़ी, वर्षों की तरह दिखाता है॥

दोहा

इसी समय सुग्रीव ने, किया खास दरबार।
लंका पर अब चढ़न को हुए सभी तैयार॥
मुख्याधिकार सबने दिया, सुग्रीव नरेश के हाथ।
और सहायक संग में कर दिया वीर विराध॥

वानर दल के योद्धाओं के, मस्तक पर लाली दमक रही।
गम्भीर शूरमे सजे खड़े नंगी तलवारें चमक रहीं॥
बाकी राजे सब अपनी अपनी, सेना ले तैयार हुवे।
श्री रामचन्द्र के सेवक बनकर, सब के दिल एक सार हुवे।

दोहा

भामंडल मंडलपति बड़वानर नल नील।
जामवंत अंगद चढ़े कपि सुत मन्द सलील॥

श्री महेन्द्र महिमा अपार, और पवन पुत्र बजरंग चढ़े।
सज गए प्रबल महाबल यह दोनों ही थे दुर्दान्त बड़े॥
वीर विराध बलवंत महा, थे भूप सुसेणन उदार बड़ी।
कई विद्याधर कई भूचर थे सब दल बल का कुछ पार नहीं।
सज गये विमान आकाशी, और दारू गोला शुमार नहीं॥
संग्रामी रथ हाथी घोड़े हैं विकट गाड़ी विस्तार कहीं।
सब मारू बाजे बजा बजा, सभा का जोश दिखाते हैं।
चढ़ गया वीर रस योद्धों का हुंकार से धरा कंपाते हैं॥

दोहा

श्रीराम ने कर दिया लंका का प्रस्थान।
एक से एक शूरमा महा अधिक बलवान॥

रास्ता देकर क्या रावण से हम अपना नाश करा देवें ।
इस लंक में ऐसे योद्धे हैं, जो सारी धरा कंपा देवें ॥
सभी नृपु सब सेना लेकर लंका पर करी चढ़ाई है ।
जा कहो राम से वापिस, हो जाने में तेरी भलाई है ॥

दोहा

सुने कटु वचन दूत, सेतु भूप के बैन ।
विकराल रूप होकर लगा, दूत इस तरह कहन ॥

इसमें ही भला तुम्हारा है जा राम लखन के चरण परो ।
वरना तेरी कुछ खैर नहीं, मैदान में आकर चरण धरो ॥
ज्यूं खोज मिटाया खर दूषण का ऐसे तुम्हें मिटा देंगे ।
जिस लंकपति का भय तुमको इस धूल में उसे मिला देंगे ॥

दोहा

इतना कह कर दूत फिर, गया राम के पास ।
आदि अन्त पर्यन्त सब कथा सुनाई भाष ॥

चौपाई

उसी समय नल नील बुलाया ।
श्रीरामचन्द्र ने, हुक्म सुनाया ॥
जावो वीर मत देरी लगाओ ।
सतु भूप को बांध ले आवो ॥

दोहा

सतु समुद्र का भूप थे, अद्भुत शक्तिवान् ।
टापू एक समुद्र में थे उनका स्थान ॥

यन्त्रों की चहुँ तरफों म सुरंगें भी वहाँ बिछा रक्खी ।
जो आवे नस डुबा देवें, शक्ति भी वहाँ छिपा रक्खी ॥

सिया पत्थर के और कोई मा, बीज सफल हो सकती थी।
नल नील ने अनुभव से देखा, हृदय में स्वामी भक्ति थी॥

दोहा

भई माव तब स्वामी की करें हृदय स सेव।
गौरव दुनिया में बढ़े, क्म मव का स्वयमेव॥

साइन्सदान नल नील उस समय, इल्म के वो माहिर थे।
थे महाबली योद्धा बाँके, कर्त्तव्यशील जग जाहिर थे॥
कुछ सर्वस्व से पहिले लंका में लश्कर पहुंचाना था।
उस सामग्री का था अभाव जो जल्दी काम बनाता था॥
गर देर लगी पुल बन्धने में तो वाक्य भंग हो जायेगा।
माण तजे वहां सीता यहाँ यारों का दिल घबरायेगा॥
नल नील ने देखा दूर गिरि मे एक जलाशय घिरा हुआ।
पुष्प सहित उसमें पत्थर नौका के मानिन्द तिरा हुआ॥

दोहा

लिया नमूना नील ने पत्थर किया तलाश।
उसी नमूने का मिला गिरी समुद्र पास॥

इक इक रत्न सम शस्त्र से, पर्वत को तोड़ गिराया है।
गुप्त मार्का राम नाम पहिचान के लिये लगाया है॥
इसी नसल क पाषाणों में पुल सा एक तय्यार किया।
उदधि की खाड़ी पर था यह, फरश आर और पार किया॥

दोहा

श्रीराम इस कार्य को देख हुये हैरान।
सम्बोधन कर सभी स यूं बोले भगवान्॥

जितने भी यात्री हो मुझको, एक एक से अधिक प्यारा है।
विश्वास मुझे सम्मुख तुम्हारे रावण कौन बिचारा है॥
यह काम किया तुमने जादू का, पत्थरों को भी तिरा दिया।
नल नील की खोज अपूर्व है, सबके दिमाग को फिरा दिया॥

दोहा

कर जोड़े सन्मुख राम के बोले नल नील प्रवीण।
सिद्ध कार्य स्वामी का, रहे सत्य में लीन॥

हे नाथ आप की कृपा से, ये सारे पत्थर तरते हैं।
विश्वास प्रभु में है जिस का वह पार समोदधि करते हैं॥
पुण्य आपका हे स्वामी, यह पत्थर यहाँ पर आया है।
हे नाथ आपकी कृपा से, ये पुल तैयार कराया है॥
ये आपके नाम की बर्कत है श्रम और किसी का महत्व नहीं।
यह पुण्य प्रकृति आपकी है, श्रम और कोई यहाँ तत्त्व नहीं॥

दोहा

परीक्षा कारण ही गये पश्चात आप भगवान्।
समझ रहस्य पीछे चले गुप्त वीर हनुमान॥

श्रीराम ने एक शिला लेकर, पानी पर स्वयं टिकाई है।
उसी समय वह डूब गई तब शर्म राम को आई है॥
पीछे जब देखा हनुमत है, तो लागे बात छुपाने को।
आओ हनुमान किस तरफ चले क्या आये शीश मिटाने को॥

दोहा

प्रभु चलके यहाँ चले देखा मैं जिस यार।
पीछे मैं भी चल दिया मन्तव्य हो तैयार॥

वर यहां आप पाषाणों का क्यों, उदधि में मरवाते थे।
और आश्चर्य से इधर उधर, क्यों दृष्टि को डोलाते थे॥

हे नाथ आपकी शुभ प्रकृति काम सभी कुछ करती है।
और पुण्य योग से मिली हुई योद्धाओं की शुभ भक्ति है॥

दोहा

मुस्काय हनुमान को, यूं बोले श्रीराम।
भाई मुझमें तो नहीं कोई महत्त्व का काम॥

नल नील की ये सब महिमा है पत्थर को जिसने तरा दिया।
जिसको मुश्किल समझे ये वह काम आपने बना दिया॥
जन समूह एकत्रित हो श्रीराम के गुण सब गाते हैं।
योद्धों सहित नल नील के यूं, श्रीराम जी गुण प्रकटाते हैं॥
यह सब नल नील की साईंस है, इसमें शंका का काम नहीं।
इनने फेंका तो तरा नहीं तो महत्त्व का राम का नाम नहीं॥
भगवान् जिन्हों का फेंक देवें तो यह कैसे तर सकते हैं।
आप नहीं जिनको फेंकें वह कष्ट पार कर सकते हैं॥
महापुरुष गुण वर्णन करके, औरों को अपनाते हैं।
यों विनोद की बातें कर कर, दिल अपना बहलाते हैं॥
प्रेम पूर्वक जो प्राणी अपने, कर्त्तव्य निभाते हैं।
वो यहाँ पर गौरव सुख भोगें अन्त परम पद पाते हैं॥
स्वार्थी अपने नाम का ही टाइटिल चमकाना चाहते हैं।
वो सदा दुःखी गौरव खो करके, नीच गति को पाते हैं॥
'शुक्ल ध्यान परमार्थ साधन ज्ञान ध्यान में लीन सदा।
जीवन सफल उन्हों का होगा पाव दुःख न पास कदा॥

दोहा

फिर आज्ञा पा राम की चले वीर हुलसाय।
रणभूमि में आन कर, दिया मोरचा लाय॥

छिया मोरचा काम सनासन, गगन लगा धुंधारा ।
कहीं अग्निबाण कहीं धूम्रबाण, कहीं चमकता सांग कटारा ॥
किया धरणि को एक व्योम में, चलता खून फुवारा ।
देख तेज नल नील का सेतु समुद्र कोमल हारा ।

दौड़

घेर लिये दोनों राजे, जीत के बाजे बाजे पास श्रीराम के
लाये प्यार किया रघुकुल दिनेश ने ऐसे वचन सुनाए ।

दोहा (श्रीराम)

निष्कारण तुमने किया, निज गौरव का नाश ।
समझाये थे प्रथम ही दूत भेज कर पास ॥

फिर भी हम हित की कहते हैं तुम अपने पर आभार रखो ।
इसको कुछ भी नहीं चाहना है, एक भरत नृप की शरण गहो ।
यदि सहायता राघव की चाहो, तो मंगवा सकते हो ।
और जो भी दिल में ख्वाहिश सभी तुम पूरा करवा सकते हो ॥

दोहा (सेतु)

क्षमा करो सब दोष अब कृपा करो रघुनाथ ।
दास समझ कर प्रेम का, धरा शीश पर हाथ ॥

यह राज्य पाट सब आपका है हम तो चरणों के चाकर हैं ।
क्षत्रियों के कुल निकलंक हो रघुकुल में आप दिवाकर हैं ॥
जो भी कुछ आपकी आज्ञा है सो सिर मस्तक पर धारेंगे ।
यह सिर जाय तो जाय किन्तु हम वचन ना अपना हारेंगे ॥

दोहा

छोड़ बंध श्रीराम ने किया उन्हें स्वतन्त्र ।
प्रेम भाव उत्पन्न हुआ कहने लगे चारित्र ॥

सेतु समुद्र ने आसमय को निज-निज पुत्री का डोला दिया।
बन गये सहायक रामचन्द्र के, शस्त्र शस्त्र गोला दिया।
यहाँ एक रात विश्राम किया, फिर आगे को चल धाये हैं।
सेतु समुद्र के सहित सभी, सुवेल गिरि पर आये हैं।
सेतु समुद्र को आधीन किया, सुवेल भूप को खबर लगी॥
और सुना राम दल आ पहुँचा तो कोपानल प्रचण्ड जगी।
उसी समय रणतूर बजाकर, दल चल आगे ठेल दिया॥
उस तरफ सुसेन भूप ने भी आकर सीमा को घेर लिया।

—ooo—

सुवेल भूप

दोहा

युद्ध भयंकर छिड़ गया, लगा होन घमासाम।
गिरें धड़ाधड़ शूरमे रणक्षेत्र में आन॥

था दृश्य भयानक दल दल कायर धरणी गिर जाते थे।
श्री रामचन्द्र का तेज देख सब ही शत्रु भय खाते थे॥
झट भगी फौज यह हाल देख सुवेल भूप घबराया है।
उस वक्त सुग्रीव ने हल्ला कर, भूपति को आन दबाया है॥

दोहा

सोचा भूप सुवेल ने अब ना पार बसाय।
संधि का फिर उस समय, दिया निशान दिखाय॥

फिर क्या था उस रण भूमि में प्रेम परस्पर होन लगा।
श्रीरामचन्द्र का यश भूप के, वैर विरोध को खोन लगा॥
रघुकुल दिनेश की सब शर्तें सुवेल भूप ने मान लई।
तन मन से सेवा रामचन्द्र की, करना दिल में ठान लई।

हंसरथ भूप

दोहा

तीजे दिन वहां से चले, संग सुवेल उदार ।
हंस द्वीप में पहुँच कर, दई छावनी डार ॥

हंसरथ नृप दल बल भारी ले युद्ध करन सम्मुख आया ।
इस तरफ महाबल योद्धा भी अपनी सेना लेकर धाया ॥
ये दोनों रणधीर वीर दोनों, इस फन में माहिर थे ।
अतुल बली थे दोनों ही महाशूर वीर जग जाहिर थे ॥
फिर लगी बाण वर्षा होन जैसे श्रावण की लगी झड़ी ।
चल रहे दारू गोला तोपें और संगीने थी खड़ी खड़ी ॥
बादल समान नभ में विमान, थे खड़े खड़े कुछ पार नहीं ।
कहीं विकट गाडी की कक्षा दबा कर, फिरते थे राणक पार कहीं
तोमर शक्ति कुदाल मुशायिक परशु परिघा बरसाते थे ।
जैसे आंधी से फूल गिरे, यह स यों सिर गिर जाते थे ॥

दोहा

महाबल दल में घुस रहा, हो करके विकराल ।
पराजित होकर के भगा, हंसरथ भूपाल ॥

छिप गया दुर्ग में जाकर के, पहरा चहुँ ओर लगाया है ।
इधर राम दल ने भी जा सब दुर्ग को घेरा डाला है ॥
फिर समझ लिया कि मरमांई बिन बचने का अवकाश नहीं ।
जा सकूं सामने होकर के वो शक्ति मेरे पास नहीं ॥

दोहा

चक्कर भ्रमण करने लगी उड़ गये होश हवास ।
तृण मुख में लेकर गया रामचन्द्र के पास ॥

दोहा (हंस)

पराक्रम आमा का नहीं, आपका है श्रीराम।
शरणागत को शरण में, रख लीजे सुख धाम॥

कृपा सिन्धु कृपा विशाल, करके दुःख सारा दूर करो।
यह राजपाट सब आपका है विनती मेरी मंजूर करो।
जो भी कुछ आपकी आज्ञा है, तन मन से उसे निभाऊंगा।
जहां गिरे पसीना आपका, वहां मैं अपना रक्त बहाऊंगा॥

दोहा (राम)

माफ सभी हमने किया, जो तेरा अपराध।
सम्बेदन है तू मेरा जैसे वीर विराध॥

यदि जो भाई भुजा मेरी तो तू दक्षिण कहलाता है।
आनन्द से अपना राज करो, जैसे भी तुमको भाता है॥
मत फिक्र करो अपने मन में तुम भरत भूप की शरण परो।
कोई कष्ट पड़े तुम पर आकर, ता शीघ्र हम पै खबर करो॥

दोहा

आज्ञा जो श्रीराम की सरे भूप ने माम।
हंसरथ भूप का हागया याम्य पथ पर ध्याम॥

दोहा

यह सब खटका मेटकर, हुये सभी तैयार।
विमानों द्वारा हुवे—महा समुद्र पार॥

श्रीराम पास ही आ पहुंचे, यह खबर लंक में फैल गई।
और पुण्य सितारा देख राम का सबकी तबियत बदल गई॥
जैसे मीन राशि में शशि, आने पर जन घबराते हैं।
ऐसे ही सब लंका वाले भय रामचन्द्र से खाते हैं॥

आ गये राम आ गये राम, यह शोर लंक में होने लगा।
तब आँख खुली दशकंधर की तो निज शक्ति भी टोहने लगा॥
मारीच हस्त महसिल और, सारन आदि सब बुलवाये।
श्रीराम से युद्ध मचाने को, निज निज कर्त्तव्य सब पर लाए॥

रावण विचार

दोहा

उसी समय दशकंधर ने किया खास दरबार।
सिंहासन पर बैठकर, ऐसे कहा उचार॥
अब तक यही विचार था कि राम रहेगा दूर।
किन्तु आज सिर पर चढ़ा उसकी मौत जरूर॥

शृगाल की मौत जब आती है तब ग्राम सामने जाता है।
बस यही हाल है रामचंद्र का, पास लंक के आता है॥
सेतु समुद्र सुबल हंसरथ ये भूप और भरमाए हैं।
सो भी अपना मरण करन को संग राम के आए हैं॥
अब उपमरीक रहो सार, और इन्तजाम जल्दी कर दो।
जा रखो मारचा हंस द्वीप के, पास वहीं डेरा कर दो॥
बेटा इन्द्रजीत तुम भी सब अपनी सेना ले जाओ।
मुश्क बांधकर उन जंगली भीलों को यहां पर ले आओ॥
बस मूल नाश हो जाने से महावृक्ष स्वयं गिर जावेगा।
क्या वानरपति क्या हनुमान फिर किसी का पता न पावेगा।
अब देरी का कुछ काम नहीं, रणतूर बजा देना चाहिये।
जिस माल पे शत्रु दूर रहा यह माल गिरा देना चाहिये॥

दोहा

बिना विभीषण ने किया, सबने वचन प्रमाण ।
शिक्षा देने को अनुज, योग्य चतुर सुजाण ॥
हे भाई कुछ सोचकर, करना चाहिये काम ।
सोच किये मुख रूप है बिन सोचे मुख स्याम ॥

बिन सोच किये मुख स्याम, मान ले अब भी बात हमारी ।
सब दुनियां में भरत रही थी, नाम अखंड तुम्हारी ॥
किन्तु आप लाए जिस दिन से, सीता राजदुलारी ।
उसी रोज से भ्रात लंक में, लगी असाध्य बिमारी ॥

दौड़

श्री रघुपति के हाथ में गई सम
आज तलक के, मान लो अब भी कहना
यदि न माने तो लंका का, अब खुर खोज रहेगा ।

शेर

कुल को कलंकित कर दिया और शक्तियां सब खो दई ।
जो अवस्था चोर की, सो आज तेरी होगई ॥
किसको दिखावें मुख यह अपना, आज हम संसार में ।
क्या मूल इज्जत पायेंगे, जाकर किसी दरबार में ॥
क्षत्रिय है रघुवंशी कभी, लाखों से जा सकते नहीं ।
मैदान में उनसे कभी तुम जीत पा सकते नहीं ॥
श्रीराम के एक दूत ने या जोहर दिखलाया यहां ।
काट डाला अक्ष मारा, ताज था गेरा कहां ॥
लक्ष्मण के आगे समर में यह शीश भी गिर जायेगा ।
धूल में लंका मिलाकर के, सिया ले जायेगा ॥

तुम अपने गौरव पर रहो वह अपने रास्ते आयेगा।
बस आपकी को मेल हो झगड़ा सभी मिट जायेगा॥

दोहा

रिश्ता का और राग का, होता जग में बैर।
रावण को ले पैर से बढ़ा शीश तक जहर॥

पड़ गये तीन बल मस्तक पर, गुस्से में चेहरा लाल हुआ।
नयनों में सुर्खी आ पहुंची और रूप अति विकराल हुआ॥
इन्द्रजीत भी पास भरा गुस्से में, था बढ़ोश खड़ा।
रावण से पहले मेघनाद, यों आया सामने बोल पड़ा।

इन्द्रजीत–विभीषण

दोहा (इन्द्रजीत)

शुरमताई आपकी, देखी खूब हजूर।
अब तक तेरा ना हुआ, कमीनपना यह दूर॥

मारा हमारा करने में तैंने नहीं छोड़ी बाकी है।
अब समझ गये हैं शायद पिता भी सब तेरी चालाकी है॥
विश्वासघात करने वाला दिल भी अन्दर से काला है।
और अब तक तूने हम सबको बस धोखे में ही डाला है॥
यह झूठ कहा तूने आकर, दशरथ को मैंने मार दिया।
फिर हनुमान को भी तूने लंका का भेद बिचार दिया॥
तू भ्रात नहीं कोई शत्रु है जो पिता को तैंने तंग किया।
जो रंग लंका पर चढ़ा हुआ था तूने सभी बिरंग किया॥

दोहा (इन्द्रजीत)

राज गिराया पिता का लगी सभा भी आग।
शर्म तुम्हें आई नहीं, करवाते यह काम॥

फिर नागफांस में बंधे हुए, शत्रु को साफ निकाल दिया।
इस भरी सभा में तूने ही था मान हमारा गाल दिया॥
अब शत्रु सिर पर आन चढ़ा फिर भी तू हमको रोक रहा।
हां समझ गये तू मिला हुआ शत्रु की पीठ का ठोक रहा॥

शेर

अब तेरा प्रपंच कोई भी यहाँ चल सकता नहीं।
दोनों वक्त आया अरि हर्गिज निकल सकता नहीं॥
नाम इन्द्रजीत मेरा कौन सम्मुख आयगा।
राम क्या दल बल कोई जीता न यहाँ से जायेगा॥
यदि आपको है भय कोई जाकर कहीं छिप जाइये।
या पहन करके चूड़ियाँ अबला जरा बन जाइये॥
अब आपकी यहाँ दाल, मनमानी न गलने पायेगी।
राम की सेना का यह तलवार दलने जायेगी॥
नाश कर सकते नहीं कहने से तेरे अपना हम।
अपनी शक्ति से करूँ गा राम क्या सब दल खतम॥

शेर (विभीषण)

क्यों उछल कर कूदता अविनीत कल के छोकरे।
हाश गुम हो जायेंगे, जिस दम लगेगी ठोकरें॥
रंग दिखलायेंगी य बातें तेरी आला मजर।
हितकहु को जो माने अरि, तो पुत्र में उसके कसर॥
अनुचित शब्द कहने का यहाँ अधिकार क्या था बराम।
बड़ा उदय में आ गये हैं, अब हरे स्पष्ट कर्म॥

दोहा

पुत्र मेरा कुछ भी नहीं, रामचन्द्र से प्रेम।
तन मन धन से चाह रहा, आप सभी का क्षेम॥

गाना (विभीषण की का—बहरतवील)

आवे कैसे सीधा रास्ता नजर,
जबकि आँखों पै अपराधी चश्मा लगा।
कैसे विषयान्ध क्रोधान्ध मोहान्ध को,
जग में आता नजर न कोई अपना सगा॥
अब ये विपरीत बुद्धि तुम्हारी हुई,
जो कि उपदेश मेरा जरा न लगा।
जिसने दल दल में फंसने की ठाम की,
तो उसे मग पै ले जावे कैसे सखा॥

(इन्द्रजीत)

बस चचा साहिब अब जो कहा सो कहा,
आगे जाना जबां पै जिकर ये नहीं।
क्षत्रिय कुल में क्यों मे तू गीदड़ हुआ,
तेरा अबला के जितना जिगर भी नहीं॥
मुझ बबर सिंह का जो करे सामना,
ऐसा दुनिया में कोई बशर ही नहीं॥

विभीषण

बेशर्म अब तू अपनी चर्चा बन्द कर,
वृथा बक बक लगाई क्यों तूने यहां।
दूध के भी ना टूटे तेरे दांत है
यह अनुभव फेर तुझे है कहां॥

जिस पिता की तू शक्ति का मान करे,
इसको बाली ने नीचा दिखाया वहां।
छाया क्यों ना सिया को राम के सामने,
बहादुरपन उस समय घुस गया था कहां॥

इन्द्रजीत

इस समय उस समय क्या सभी काल ही,
तेरी चालाकी सार ही चलती रही।
देख कर के ये गौरव पिता का सभी
तेरी छाती हमेशा से जलती रही॥
बस तेरी शरारत के कारण सदा,
महा विपत्ति पिता पर है आती रही।
नाश करने में तैने न छोड़ी कसर,
यह तो किस्मत हमारी सम्भलती रही॥

विभीषण

तू अधर्मी कुसम्मी महा दुष्ट है
तुझे परमब का लोक्र लतर ही नहीं।
तैने गोली की गोली से घायल किया
मेरे हृदय में छोड़ी कसर ही नहीं।
कामी अन्धे के अन्धा तू पैदा हुआ
तेरी नजरों में कोई असर ही नहीं।
कील ठुकवाने को मेढ़क उछलता फिरे
पेट फट जायगा यह खबर ही नहीं।

शेर (विभीषण)

क्या सभ्यता यही सिखाई थी किसी के पीर ने।
तासीर बतलाई है या माता तेरी के क्षीर ने॥

क्या त्रिलोकी लंकेश भी भरी सभा में ऐसे अयोग्य शब्दों का चुपचाप बैठे सुन रहे हैं। क्यों भाई साहब क्या आप इसको रोक नहीं सकते ?

रावण—जो भी कुछ इन्द्रजीत ने कहा सो बिल्कुल ठीक कहा है। यदि सत्य पूछा जाय तो तेरे षड्यन्त्र का भण्डा फोड़ दिया है।

रा० भ० क्रोध

शेर

अब तेरा विश्वास मैं त्रिकाल ला सकता नहीं।
अपनी आदत से कभी तू बाज आ सकता नहीं॥
निश्चय में तू शत्रु मेरा प्यार से भाई बन रहा।
अब भेद सारा खुल गया जो भी तू ताना तन रहा॥

शेर (विभीषण)

समझते शत्रु मुझे, सब आपकी यह भूल है।
आग यही हालत रही तो लंक की भी धूल है॥
मरने दम तक भी फर्ज अपना बजा जाऊँगा मैं।
तू बली से बाज आ फिर बाज आजाऊँगा मैं॥

रावण (बहरतबील)

अब विश्वासघाती अलग हट जरा
तेरा उपदेश मुझको सुहाता नहीं।
क्योंकि पापी अधर्मी महा नीच है
अपने हित की अग्नि तू बुझाता नहीं॥

भेद् ऐसा सिया का तेरा काम था,
घरना संकट में कोई भी आता नहीं।
मीठा बन दैने काटी हमारी ही जड़,
तेरी बाजी किसी को यहाँ भाती नहीं॥

विभीषण

कर दो अब भी वहम दिल से ऐसा तक
वरना रो रो के आखिर को पछताओगे।
अपनी नारी को हरगिज ना छोड़ोगे यह,
सारी सेना को वृथा ही कटवाओगे।
भेजदो भेजदो भेजदो जानकी
मानो कहना हमारा तो सुख पाओगे।
पूजा न रतन अमूल्य को ला कर के तुम
खोटे कर्मों का खोटा ही फल पाओगे।

रावण

बशर्म निरंकुश तू बकता है क्या,
अब समझले तेरे धड़ पर सिर ही नहीं।
काट डालू गा शस्त्र से गर्दन तेरी
मेरी शक्ति की तुझको खबर ही नहीं।
निर्भय होकर के सन्मुख खड़ा मूढ़ तू
धमकी सहन का तेरा जिगर ही नहीं।
रामचन्द्र का तू पक्षपाती बना,
कृतघ्नी तेरे जैसा कोई नर ही नहीं।
तेरे आये उदय भाग्य खोटे अब
अब तेरे मरने में कुछ भी कसर ही नहीं।
भाग जायगा बच के यहाँ बशर्म।
क्या यह आता नजर मेरा खंजर नहीं॥

विभीषण

देता धमकी किस वास्ते तू अय बेधर्म,
जा अगाड़ी जरा अपनी शक्ति दिखा ।
काट सकता नहीं मेरा सिर तू कभी,
मेरी तलवार से अपना सिर तू बचा ।
अर कम्बख्त तू आँखों से परे हट परे
मेरे आगे न अपनी ये शेखी दिखा ।
होनी आई है क्यों तेरी काल ही
किस कुमति ने तुझे अब दिया है बहका ।
तेरे सिर की धरती पर पड़ेगी गरद,
क्या तू फिरता है दिल में बहादुर बना ।
छिपा चोरी से तूने सिया का हरण
तुझे कर्म बतायेंगे नाका चना ।

दोहा

सुनकर के व्याख्यान ये, हुआ दशानन लाल ।
चन्द्र-हास सम्मुख खड़ा शस्त्र लिया निकाल ॥

इधर विभिषण ने भी झट, अपनी शमशेर निकाली है ।
मैदान में दोनों कूद पड़े भयमों का रंग गुलाली है ।
यह झगड़ा देख परस्पर का, सब बुद्धिमान् घबराने लगे ॥
फिर कुम्भकर्ण खड़ उठे, बीच पड़ दोनों को समझाने लगे ।

कुम्भकर्ण का गाना —

सगे होकर के तुम भाई परस्पर जंग करते हो ।
उधर शत्रु खड़ा सिर पर, इधर आपस में झगड़ते हो ॥
रावण—मेरे भ्रातु कर्ण भ्राता, जरा चुप आप हो जाइये ।
बड़ा शत्रु विभीषण जैसा, ना कोई और बतलाईये ॥

भानु—भलो आपस म को कुछ है, चाहे शत्रु चाहे मित्र।
किन्तु औरों क तो तीनों ही, मिल कर खायें हम तितर॥

रावण—वहम यह दूर कर भाई, यदि इसको बचाओगे।
दगा मैदान में दगा, बच्च इससे न पाओगे॥

भानु-समझो दिल में यदि तलवार भाई पर चलाओगे।
तो बदनामी यहां लेकर, वहाँ नरक में जावोगे॥

रावण-समझता तो हूँ मैं भी आपने जा कुछ उचारा है।
लखा देलो तो कैसे, तानकर, कर में दुधारा है॥

भानु—अर्ज दोनों स है मेरी खास कर आपसे पहले।
जो कहना है विभीषण को, वही कहना मुझ कहले॥

विभीषण—किसी की अच्छी शिक्षा को, हृदय में धर नहीं सकता।
निशंक तुम छोड़ दो इसको मेरा कुछ कर नहीं सकता॥
सभा में आज भाई को, जो यू तलवार दिखलाई।
पुरुष कपूर अब इसका, हुआ यह समझता भाई॥

भानु—बड़े भाई की इज्जत का जरा अब ध्यान में धरलो।
अभी तलवार अपनी का विभीषण म्यान में करलो॥

विभीषण—सार यह आपका कहना, मैं सिर आंखों पै धरता हूं।
आप के कथन स लो, म्यान में तलवार करता हूं॥

दोहा

भानु-तजिलंकेश कुल मणि मुकुट अब भाई लंकेश।
सिंहासन पर बैठ कर, देवो कुछ आदेश॥

आज्ञा देवो योद्धाओं को अब देरी का कुछ काम नहीं।
जब तक शत्रु ललकार रहा तब तक हमको आराम नहीं॥

अब एक बात तुम हो जावो और द्वेष भाव को दूर करो।
रण तूर बजाकर जल्दी से, शत्रु का दल काफूर करो॥

शेर (रावण)

राम की शक्ति कुचलना खेल बायें हाथ का।
पर मज़ा पहुँचाऊंगा उन्हें बस अंतरा है राम का॥

दोहा

होन हार के बस पड़ा, दशकंधर लंकेश।
लघुभ्राता को जोश में, बोला वचन नरेश॥

अरे दुष्ट विभिषण यदि अपना भला चाहता है तो यह आदर्श नीच अपना मुख मुझे ना दिखा और तू जिस राम की सहायता के लिये तुला हुआ है। जा, उसी राम के पास चला जा तुझको देख देख कर मेरी आंखों से खून बरसता है। और तेरे अधिकार में जितनी सेना है उसको भी साथ लेजा मुझे उसकी जरूरत नहीं। क्योंकि जिस को तेरी संगति है वह मेरे शत्रु हैं। कृतघ्नी, विश्वासघाती स्वार्थी, इन्हों से कोई काम नहीं उठा सकता, इसलिये तू और तेरे सब मित्र तीस मुहूर्त के अन्दर लंका से निकल जाओ। नहीं तो सारे मौत के घाट उतारे जायेंगे। क्योंकि तुम मेरे गुप्त शत्रु हो।

शेर

गुप्त शत्रु से कोई जल्दी सम्भल सकता नहीं।
प्रत्यक्ष होकर के अरि, नुकसान कर सकता नहीं॥
फट गया जो दिल मेरा तुम से मिल सकता नहीं।
दाय तेरा अब यहाँ कोई भी चल सकता नहीं॥

छन्द (विभीषण)

और अब मैं क्या करूं जब काल सिर पर आगया ।
अज्ञान का पर्दा तेरी, बुद्धि के ऊपर छा गया ॥
रवास तब तक आशा में, कहायत ये छोड़ गा नहीं ।
चाहे समझ शत्रु परन्तु, मित्र रहूँगा जहाँ कहीं ॥
जब तक भी जीता हूँ मैं, कर्तव्य निभाता जाऊंगा ।
तू समझ चाहे ना समझ, मैं तो सुभाता जाऊंगा ॥

विभीषण प्रस्थान

दोहा

रहना उस संग चाहिये जो होवे अनुकूल ।
यदि इससे विपरीत हो पड़े वहां पर धूल ॥

तजना अच्छा गुणहीन देव, खोटा न आप जपना चाहिये ।
जिसमें न औहर वह कला तजो अन्याई नृप तजना चाहिये ॥
दुराचारिणी नार तजो यह मित्र तजो जो छल करता ।
उस दुष्ट का मुख ना देखो कभी जो नार सताये पतिव्रता ॥
जहाँ भला बुरे में अन्तर ना ऐसों का संग तजना चाहिए ।
उस कार्यों में जो हो अच्छा उसमें न भय करना चाहिये ॥
जो कह कर बात बदल जाये उसका विश्वास नहीं करना ।
जिसकी कुल जान पहिचान नहीं, उसके कुछ पास नहीं धरना
जो शत्रु समझे मित्र को उसके क्यों नाहक गल पड़ना ।
वहाँ बीज बास कर लाना है, फल देता कन्तर रकड़ना ॥
फट गया तेरा दिल मेरे से ना सूरत देखना चाहता है ।
ना नमस्कार हा धीर विभीषण भी लंका से जाता है ॥

दोहा

सम्मस गया सुन लीजिये होनहार बलवान।
लंका से अब चल दिया लघुभ्रात् पुरुषधान॥

चले विभीषण वीर भूति रघुवर चरणन में लाई।
तीस अक्षौहिणी चली फौज, संग देर न जरा लगाई॥
हाथी घोड़े रथ संग्रामी, गर्द गगन में छाई।
हंसद्वीप की तरफ विकट गाजी की कला दिखाई॥
राम का खबर गुप्तचर, भेद लंका का लेकर चरण भारीश निवाया।
रावण और विभीषण का सब, भेद खोल दर्शाया॥

दोहा (दूत)

सूर्यवंश कुल मणि मुकुट, हे स्वामिन जगदीश।
विजय आपकी समझलो होगी विस्वा बीस॥

अब सुनो हाल सब लंका का यहां भया फूल एक और खिला।
फट गया विभीषण रावण से यह यो एक कारण खूब मिला॥
मन में थी यही विभीषण के, सीता वापिस करवाने की।
बस इसी बात से बिगड़ गई, भाई से राजा रावण की॥
फिर लगा परस्पर युद्ध होने तब भानु कर्ण ने सुलझाया।
मुझको मत अपना मुख दिखला, यह दशकंधर ने फरमाया॥
यह वचन विभीषण सह न सका और अब जब वहां का छोड़ दिया
हे नाथ आपके चरणों में दिल प्रेम पूर्वक जोड़ लिया॥
तीस अक्षौहिणी फौज सहित यह चला इधर को आता है।
आगे मुझको कुछ पता नहीं, दिल में क्या ध्यान लगाता है॥
सहसा विश्वास नहीं करना क्योंकि शत्रु का भाई है।
जैसी हालत मैंने देखी वैसी हा आन सुनाई है॥

शेर (राम)

अय वीर योद्धा किस तरह, गुण मैं तेरा वर्णन करूं।
यह लो सुरी ने हार, वीरों का तुम्हें अर्पण करूं॥
जिस बुद्धि से लाया पता आश्चर्य वश पर हैं सभी।
देखोगे शीघ्र टूटता, गढ़ लंका के सारे अभी॥

दोहा

गोरम पाकर गुप्तचर, लगा करे निज काम।
खबर पड़ी श्रीराम ने, फैला दई तमाम॥

सभी जगह यह लगी खबर, हा बजने लगी बधाई है।
दशकन्धर के पाओं फूट पड़ी यह सुरी मभी दिल लाई है॥
तीस अक्षोहिणी फौज संग ले, वीर विभीषण आता है।
इस बात का सुन कर वानरपति, सुग्रीव का दिल दहलाता है॥

दोहा

उसी समय यहाँ से चला गया राम के पास।
होकर के भयभीत सा बोला ऐसे भाष॥

दोहा (सुग्रीव)

स्वामी मेरी विनती, पर कुछ कीजे गौर।
तीस अक्षोहिणी आरही, हंस द्वीप की ओर॥

हंस द्वीप की ओर गुप्तचर, खबी पता लाया है।
इसी बात को प्रभु आपने हर जगह पहुँचाया है॥
किन्तु कुटिल रावण की, नस नस में फरेब छाया है।
क्या पता यहाने मिलने क, चाला दन आया है॥

दौड़

आप विश्वास मत करना, विनती हृदय धरना, पुराना शत्रु मारा ।
दशरथ नृप की आया आ मारन मकी भरि तुम्हारा ॥

(सुग्रीव का गाना)

सुग्रीव–यदि मिलने की मर्जी थी तो सेना संग क्यों लाते ।
भेजते दूत या पाती कोई, या खबर दिखलाते ॥

श्रीराम–जो होगा ठीक ही होगा, सखा मत दिल में घबराते ।
यदि आया है लड़ने का तो, फिर तुमको भी क्या चाहिये ॥

सुग्रीव–ठीक है आपका कहना इसी कारण तो आया हूँ ।
किन्तु यह भी भ्रम रखते, तो जंगी बिगुल बजवाते ॥

श्रीराम–यदि निश्चय ही करना तो तुम्हें अख्त्यार है सब कुछ ।
भेद जो आप लाकर था, किसी खेचर का मिलवाइये ॥

दोहा (सुग्रीव)

आज्ञा आपकी चाहिये, देरी का क्या काम ।
भेजूं विद्याधर कोई लाय भेद तमाम ॥
विभीषण ने निज दूत एक, भेजा रघुवर पास ।
आकर सब कहने लगा जो था मतलब खास ॥

दोहा (दूत)

दण्ड मोचन श्रीराम जी, सज्जन पोषण हार ।
एक दास की विनती सुन लीजे सरकार ॥

यह अर्ज विभीषण वीर की है चरणों की सेवा चाहता हूँ ।
बस लज्जा आपके हाथ में है मैं शरण तुम्हारी आता हूँ ॥
बन्धन सिय का दे बैठा स्वतन्त्र तुम्हें बनाऊंगा ।
इसलिये निगाही भाई से मा बन्धन के बढ़ा लाऊंगा ॥

दोहा (राम)

वीर विभीषण से मेरा, है आन्तरिक प्रेम ।
कह देना यहाँ पर सभी, वर्त रहा है क्षेम ॥

रावण और विभीषण क्या, मैं भला सभी का चाहता हूँ ।
और सिवा एक वैदेही के, कुछ और न लेने आता हूँ ॥
आओ निश्शंक सिर मस्तक पर, तुम तो मेरे हमदर्दी हो ।
और फटे हुए दिल सीमन को, तुम ही एक अनुभवी दर्जी हो ॥
जैसा हूँ वैसा हाजिर हूँ शरणा तो श्री जिनवर का है ।
जिस काम के वास्ते आया हूं, वह काम तुम्ही का करना है ।
आओ मित्र यहाँ खुशी खुशी यह तम्बू डेरा आपका है ।
विश्वास तुम्हें मेरा मुझको तेरा डर किस बात का है ॥

दोहा

ले सन्देशा राम का, गया विभीषण पास ।
आदि अन्त पर्यन्त सब हाल सुनाया भाष ॥

जब सुने राम के वचन विभीषण की वर्षा सब दूर हुई ।
अनुकूल विभीषण यही बात सब सेना में मशहूर हुई ॥
सुग्रीव नरेश्वर के दिल में फिर भी विश्वास न आया है ।
और ठीक भेद सब लेने को विद्याधर यहाँ पठाया है ॥

दोहा

पास विभीषण के गया विद्याधर सुविशाल ।
भद भाव लेकर सभी आन कहा सभी हाल ॥

करके निश्चय मन में आ फिर, स्वागत का कार्य करने लगे ।
बस खुशी का कुछ भी पार नहीं यहाँ प्रेम के झरने झरने लगे ॥
दरबार राम का लगा हुआ यहाँ और थे योद्धे खड़े हुए ।
वे उपयोगी निज कर्तव्य पर, और मस्तर राम पर पड़े हुवे ॥

राम० विभी० मिलन

दोहा

आ पहुंचे विभीषण जी धूमधाम के साथ ।
रामचन्द्र आगे बढ़े, सन्मुख करके हाथ ॥

और विभीषण ने अपना मस्तक, चरणों में डाल दिया ।
औदार चित्त श्रीराम ने भी, उस पर सिर शुभ दिशास किया ॥
और नीर समप्रेम प्रेम का जल, नयनों में बहने लगा ।
विश्वास दिखाने लिये राम अपने मुख से यों कहने लगा ॥

दोहा (श्रीराम

तन दुबला कैसे हुआ क्यों सहा कलेश ।
शूरवीर धर्मज्ञ तुम कारण कौन विशेष ॥

कारण कौन मिला मित्र, तुमको दुर्बल होने का ।
जलवायु अनुकूल सभी और सब कष्ट खोने का ॥
मिला समागम खूब तुम्हें है धर्म बीज बोने का ।
श्री जिनवर का धर्म समागम मिला कर्म खाने का ॥

दौड़

तेरा सब पर सम मम है फेर इतना क्यों गम है ।
मानसी और शरीरी इनमें से है प्रिय मित्र है तुम्हें,
कौन वक्त गिरी ।

दोहा (विभीषण)

मैं तो हूँ प्रभु आपके चरण कमल का दास ।
सिवाय यहाँ के और ना मिला मुझे कहीं वास ॥

जिसको ना मिलती ठौर कहीं उसको संकेश बुलाते हो ।
नाथ अपना कौन आप जिससे ऐसा फरमाते हो ॥

भी जलवायु तो शुद्ध बड़ी थी, किन्तु अब सब बिगड़ गई।
और धर्म बीज बोने की भी, शक्ति इस धर से निकल गई॥
धर्म ठीक सर्वज्ञ देव का, कर्म मैल को धोता है।
पर भाग्यहीन के तो फिर भी, कर्मों का बन्धन होता है॥
कुल के गौरव को मैंने, निज दिल से नहीं भुलाया है।
बस यही मानसी दुःख मुझे, जिसने कमजोर बनाया है।
यदि घृणा है तो मुझको कुछ रावण के कर्तव्यों पर है॥
निश्चय उनसे कुछ बैर नहीं इस्तत मेरे दिल अन्दर है।

दोहा

सत्यवादी के वचन पर, रीझ गये रघुवीर।
दानवीर गम्भीर नर, यों बोले रणधीर॥

दा॥ (राम

सखा विभीषण कह चुके हम तुमको लंकेश।
ऐसा तू भाई मेरा जैसा भरत नरेश॥

यदि भरत है भाई भुजा ठीक तो, भुजा मेरी तू दक्षिण है।
जैसा मुझको सुग्रीव मित्र वैसा तू मित्र विभीषण है॥
और जनक सुता के सिवा लंक से और न कुछ ले जायेंगे।
सब राज लंक का निज कर से इस मित्र तुम्हें दे जायेंगे॥

गाना (श्री राम का)

हैने विपती समय में सहारा दिया।
सगे भाई का दुख न गंवारा गया॥
हैने सत्य धर्म को पाला है और दुनियाँ में नाम निकाला है।
हैमे हृदय से सई, हमारा किया॥

जब हनुमत लंक में आया था तैंने सीता का भेद बताया था।
इस पर आपने ये उपकार किया॥
तू जनक सुता का सहारा था, सारी लंका में तू ही हमारा था।
कैसे दुष्टों में तैंने गुजारा किया॥
तुम जैन धर्म के ज्ञाता हो, सच्चे पुरुष जगत विख्याता हो।
खोटे पुरुषों से, तूने किनारा किया॥

दोहा

रामचन्द्र के जब सुने अमृत झरते बैन।
विभीषण चरणों में गिर लगा इस तरह कहन॥

दोहा (विभीषण)

मैं तो इस लायक नहीं, जैसे कहते आप।
शरण पड़ा हूँ आपके, काटन निज संताप॥

यदि मैं इस लायक होता तो, जनक सुता क्यों दुःख पाती।
क्यों आडम्बर इतना बढ़ता, पर राड़ कभी की मिट जाती॥
जो होनहार की मर्जी है सो ही अब रङ्ग दिखायेगी।
जब तक दशकंधर का दम है, तब तक सीता ना आयेगी॥

दोहा

राम विभीषण का यहाँ, हुआ परस्पर मेल।
एक दूजे का चाह रह, कुशल और सब क्षेम॥

लंका पर चढ़ाई

दोहा

प्रथम दिवस जिस दम सजा सावधान हुये शूर।
बाजों का बाजी घड़ी खुशी मन भरपूर॥

दोहा

दशरथ भूपाल भी, गये राम के साथ
शस्त्रों से अति शोभते, रणवीरों के गात ॥

आठ दिवस रहे इलद्वीप, फिर आगे को प्रस्थान किया।
चढ़ रहा वीर रस योद्धों को, लंका पर सबने ध्यान दिया॥
दशकंधर की सीमा पर, आ श्री राम ने सेना डाल दई।
और तेजी से लक्ष्मण जी ने, फिर धनुष चढ़ाया टङ्कार दई॥

दोहा

लम्बी चौड़ी जगह थी, योजन बीस प्रमाण।
चक्रव्यूह सम सेना का, किया वहाँ संधान॥

मारू बाजा बजता है योद्धों को जोश दिलाने को।
टङ्कार शब्द हो रहे खूब शत्रु के दिल दहलाने को॥
घनघोर शब्द सुन सुन करके, लंका वाले घबराते हैं।
तब वीर दशानन इन्द्रजीत को, ऐसे हुक्म सुनाते हैं॥

—००—

राक्षस दल

दोहा (रावण)

बेटा इन्द्रजीत अब क्यों करते हो देर।
कर तैयारी फौज की, शत्रु को ले घेर॥

शत्रु का ले घेर स्वयं आ फंसे कर्म के मारे।
जिम पुरुषार्थ किये सिंह का मिले मृगगण सारे॥
समझ लिया बेटा मैंने प्रबल हैं भाग्य तुम्हारे।
करो मारा शत्रु का पस हो गये आज पौबारे॥

वार्ता—रावण—बेटा इन्द्रजीत अब अपने जौहर दिखाओ।

शेर (इन्द्रजीत)

आपकी कृपा से यदि मैं चाहूं तो, एक बाण से, अंधेर मचा दूं।
आए हुवे मध्याह्न में सूर्य को छिपा दूं॥
क्या राम, क्या सुग्रीव, सब परभव में पहुँचा दूं।
ऐक तीर से तूफान की, तस्वीर बना दूं॥

दोहा (रावण)

शाबाश मेरे सुत केहरि, इन्द्रजीत बलवंत।
जंगी बिगुल बजा अभी करो अरि का अंत॥

बड़ा हुक्म दशकन्धर का लगा बजन रणतूर।
बख्तर शस्त्र पहन कर, सजे हुवे सब शूर॥
सज गई विकट गाढी संग्रामी रथ पर भूप सवार हुवे।
हाथी घोड़ों का पार नहीं अद्भुत विमान तैयार हुवे॥
मारू बाजा बजा रहे, योद्धों का जोश दिखाने को।
कल्पान्त काल की तरह चला, रावण निज मूल नसाने को॥

दोहा

सहस्र अक्षौणी सेना को देख हर्ष दिलमाय।
रण भूमि में आन के, दिया मोर्चा लाय॥

योजन पचास में फौज खड़ी, रावण की चक्रव्यूह रचके।
सब अपने शस्त्र नचाते हैं कोई गदा चलाता रहा हंस के॥
इन्द्रजीत और भानुकर्ण थे, मेघवाहन दुर्दन्त बड़े।
मारीच सुन्द सारण आदि यह सभी वीर बलवंत खड़े॥
त्रिशूल मुशल की मधुपवाण शतघ्नी की बनावट होती है।
कहीं दरब खड्ग शस्त्र अपार, मुग्दर की सजावट होती है॥

फिर उधर पड़े रणक्षेत्र में असवीर दुसर्की आकर के।
तब लगा घोर संग्राम होन कई गिरे धरणी गश खाकर के॥
दुर्दान्त महायशवन्त शूरमा उधर से हस्त प्रहस्त चढ़े।
दोनों का मान मर्दन करने इस तरफ वीर नलनील बढ़े॥

अब लगा होने संग्राम घोर, कायर का हृदय फटता है।
मिट जाता है यह दुनिया से, जिस पर शस्त्र आ पड़ता है॥

संग्राम

दोहा

नल भूपति ने हस्त के मारा कस कर बाण।
शत्रु ने मैदान में दिये छोड़ झट प्राण॥

यह हाल देख के प्रहस्थ वीर के, तन में गुस्सा आया है।
तेजी से हल्ला खास किया नामर दल आन दबाया है॥
इस तरफ से नीलबली ने भी, सम्मुख अपना दल रुख किया॥
प्रहस्त सुभट के सन्मुख आ संग्रामी रथ का मेल किया।
जब आन परस्पर मेल हुआ तो युद्ध भयानक होने लगा॥
एक एक शूरमा हार शय्या पर मौत सदा की सोने लगा॥
फिर नील बली ने मारी एक, शत्रु को मांग घुमा करके।
जा लगी प्रहस्त के हृदय में झट गिरा मूर्च्छा खाकर के॥
फिर एक दम हल्ला बोल दिया रावण के दल में भगी पड़ी।
अब उसकी गिनती कौन करे जा खून से लाशें रंगी पड़ी॥
पराजय हुई दशकन्धर की ओर विजय राम ने पाई है।
अब रणक्षेत्र में दशकन्धर की फौज दूसरी आई है॥

दोहा

भूप और मारीच शुक, सारण और सिंहरथ ।
वीभत्स वज्रामा रवि मकरध्वज मरवरथ ॥

कम्पाक्ष और ज्वरभूप चढ़े, गम्भीर बली थे सिंहवमन ।
सम्भूप सकामा महाबली यह चढ़े वीर विद्य अतिमगन ॥
यह महाबली दशकन्धर के, योद्धे था रण में ललकारे ।
इस तरफ राम की सेना से बल शस्त्र तम पर धारे ॥

दोहा

मदन और अंकुश बली प्रथित और सन्ताप ।
पुष्पात्र सुविघ्न भट नन्दन दुरी और दाप ॥

सुदूर पर सजगया वीर योद्धा रणधीर बहादुर था ।
सन्ताप से था मारीच जुटा जो कि बलवीर उमाग र था ॥
मारीच वीर ने रण क्षेत्र में सन्ताप भूप को मार दिया ।
मन्दन बानर ने यहाँ पर राक्षस को धरणि पछाड़ दिया ॥
राक्षस वज्रामा ने विघ्न सुभट रण में घायल कर डाला है ।
तब दुरित वीर के एक बाण से परमव शुक सिधारा है ॥
सिंह वमन ने प्रतीप कपि पर, अमोघ बाण को छोड़ दिया ।
बस लगा उर खेत आकर के, दुनियाँ से नाता तोड़ दिया ॥
यह महाघोर संग्राम देखकर सूर्य अस्ताचल पहुँचा ।
योद्धों ने शस्त्र त्याग किये हो गई शाम ये दिल सोचा ॥
अप अपने डेरों में जाकर, सब योद्धों ने विश्राम किया ।
जो निकट किये थे मुर्दों पर, अप-अपना सबने काम किया ॥

दोहा

दिनकर जब प्रकट हुवा हुई निशा जब दूर ।
योद्धे सब तैयार थे बजन लगा रण तूर ॥

बजा बजा रण तूर चले शूर ला जोश समर में।
बख्तर तन पर पड़े हुवे, लटके तलवार कमर में॥
जीने की तज दई आशा, ना किया ध्यान कुछ घर में॥
रण क्षेत्र में कूद पड़े सब शस्त्र लेकर कर में॥

दौड़

लड़ें सब तने दुतर्फी सिर्फ थी देर हुक्म की, फैल संग्रामी
रण में सब सेना का कर आग दशकंधर कहे मगन में।

दोहा (रावण)

सुभट शूर मम वचन सब, लगा इधर का ध्यान।
जौहर दिखलायो आज तुम समर भूमि दरम्यान॥
समर भूमि दरम्यान आज बस खतम सभी का कर दो।
बाँध मुश्क दो भीलों की सम्मुख मेरे ला धर दो॥
क्षत्राणी का वीर समर में बता आज सब कर दो।
मार मार बाणों से सब, सेना का अंग बिगर दो॥

दौड़

जौहर जो-दिखलायगा, जागीर सो पायगा पीठ देगा जो-
रण में जीता छोड़ू नहीं उसे आखिर पहुँचे नरकन में।

दोहा

लंक पति के वचन सुन महा रोष मन लाय।
ललकारे सब शूरमा रण भूमि में आय॥

गाना

(तर्ज—आल्हा ऊदल)

रामचन्द्र की सेना पर जा धावे पर सभी अरीय।
दबड धक परिघा म मुग्दर, फरसी गदा का रह चलाय॥

जिधर मुके रणधीर शूरमा लाशों पर दें लाश बिछाय।
यह गति का दई रण खेत की, नदी खून की दई बहाय॥
बीर बहादुर चले जोश में सब को मार ही मार सुहाय।
जैसे पक्षी चले व्योम में ऐसे शीश उड़ें रण माय॥
दुर्जय मक्खी मुके जिधर का उधर देवे अन्धेर मचाय।
बेराक राक्षस बुड़ा था पर कोई सम्मुख आवे नाय॥
रामचन्द्र की सेना पर गई, राक्षस सेना गालिब आय।
सनसनन सोटा बाजे सनसनी बनावत रही मचाय॥
विकट गाड़ियें घूमें रण में जिनकी झपट सही ना जाय।
देख पराक्रम राक्षस दल के, राम की सेना गई घबराय॥
देख हाल सुग्रीव भरसक, धनुष बाण कर लिये सजाय।
खबर लगी यह हनुमान को, वानर पति चले रण माय।
झट आकर प्रणाम किया और बोला एस शीश नवाय॥

दोहा (हनुमान)

स्वामि आज्ञा दीजिये सेवक को एक वार।
रण भूमि में आज मैं करूँ कठिन तलवार॥

कौन बीर है रावण का जो मेरे सम्मुख आयेगा।
जब गरजूँगा रण में आकर शत्रु दल पीठ दिखायेगा॥
प्रथम अकेले ने लंका में अक्षकुमार का मारा था।
और भरी सभा में रावण का ठोकर से ताज उतारा था॥

दोहा (सुग्रीव)

महाबली बस है तुम्हें, तुम पर ही विश्वास।
आओ अब रण खेत में करो अरि का नाश॥

दोहा

या आज्ञा सुग्रीव की, चढ़े अंजनीलाल ।
रण भूमि में आ धसे, होकर के विकराल ॥

फिर क्या था श्रीराम फौज ने पांव समर में रोप दिया ।
और पवन पुत्र ने जोश दिखा कर, सहसा हल्ला बोल दिया ॥
जैसे शेर हस्तियों में, यों राक्षस दल को दलने लगा ।
या शूकर जैसे पानी को ऐसे रघुवीर मसलने लगा ॥
देख बली का तेग दशानन की सेना घबराई है ।
हो गये धराशि पर खाक, शूर कायरों ने पीठ दिखाई है ॥
ये देख हाल दुर्जय माली हनुमान के सम्मुख आया है ।
तब पवन पुत्र ने उस बूढ़े को, ऐसे बचन सुनाया है ॥

गाना (हनुमान

अरे बूढ़ बता तूने अकल कहा बेच खाई है ।
अवस्था वृद्ध है तलवार तैने क्यों उठाई है ॥
गई अब उम्र यह तेरी जो थी संग्राम करन की ।
पता अब काल का आकर के, क्यों धमकी दिखाई है ॥
बैठ करके किसी स्थानक में अब भजन कुछ कर ले ।
क्योंकि परभव में जाने की, तेरी यह उमर आई है ॥
किये संग्राम तैने उमर भर, अब तो धर्म कर ले ।
तरस खाकर 'शुक्ल' कहता तेरी इसमें भलाई है ॥

गाना (दुर्जय माली)

अरे तू छोकरे कल के, काल को क्यों सिखाता है ।
चार दिन सैर कर अपनी तू क्यों हस्ती मिटाता है ॥
दूध के भी नहीं टूटे दांत कितना अकड़ता है ।
तेजस्वियार का मूर्ख तू क्या यापन दिखाता है ॥

मेरे एक तीर से अवसान, सारे भूल जायेगा।
बरा तू सामने आ, क्यों खड़ा बातें बनाता है॥
समझ तू एक माता का "सुत" यह तरस आता है।
किन्तु मैं क्या करूँ अब काल ही तुमको मिटाता है॥

गाना (हनुमान व० त०)

अच्छा आजा तू अपना दिखाले जौहर,
क्योंकि फिर तेरे, मन की न मन में रहे।
रब तू सारे ही अरमां यहाँ आज से
कोई शक्ति, बकाया ना तन में रहे॥
तू तो मुर्दा है सुन, क्या मैं मारू तुम्हें,
मरना तेरा निशां ना समर में रहे।
मैंने समझाया था पर, तू समझा नहीं,
क्यों ना आनन्द से अपने घर में रहे॥

दोहा

पवन पुत्र के सुने वचन, आया क्रोध अपार।
हनुमत पर करने लगा कुद्ध वार पर वार॥

जैसे निरर्थ खर्च में मूर्ख, दौलत वृथा गंवाते हैं।
जब पास नहीं कुछ रह जाता तो फिर पीछे पछताते हैं॥
बस यही हाल हुआ धूर्ते का शस्त्र दिया सब खो बैठा।
फिर ऐसा दिल में भाव हुआ मैं जीने से कर धो बैठा॥

दोहा

आश्चर्य में पड़ गया बढ़ गय हाहा हुकारा।
हनुमत बध करने लगा मुख से वचन उचारा॥

दोहा (हनुमान)

क्यों माला अब किस लिये मुंह को रहे छुपाय।
यदि कुछ शक्ति और है, तो भी दो दिखलाय॥
अब यदि समाप्त कर बैठे तो घर जाकर आराम करो।
माला कर में लो पकड़, नित्य भी नमोकार का जाप करो॥
क्योंकि अब तो काल स्वयं, तुमको ले जाने वाला है।
तो किस कारण फिर शस्त्र से मुर्दे का खून बहाना है॥

दोहा

वज्रोदर बलवीर नृप था पहुंचा तत्काल।
हो सन्मुख हनुमान से बोला आंख निकाल॥
क्यों शठ युद्ध से इस तरह बातें रहा बनाय।
यदि कुछ शक्ति बदन में आज मुझे दिखलाय॥

वज्रोदर गाना

(बहरे तबील)

क्यों मेंढक सा टर्राता अय बेशर्म
तुमको जीता समर में ना छोड़ूंगा मैं।
आज मेरी प्रतिज्ञा, यही समझ ले
सबको करके खत्म मुंह का मोड़ूंगा मैं॥
पहले तुमको मिटा करके, मैं आगे यहां
मान सुग्रीव का आज तोड़ूंगा मैं।
बाकी जो ही रहे सब विजय है मेरी
शक्ति उनकी भी सारी निचोड़ूंगा मैं॥

दोहा (हनुमान)

वाह जी वाह क्या खूब य शक्ल दिखाई आय।
आ गल में मुर्दा पड़ा, तुमने दिया हटाय॥

हनुमान गाना

(बहर तवील)

मुझे माया का देकर, अभयदान हम,
आओ तुमको पहुँचायेंगे मुल्के अदम ।
आज अरमान दिल का सभी काढ़ले
क्योंकि कर दूंगा फिर तो तेरा दम खतम ।
राम सुग्रीव लछमण को देखेगा क्या
यहाँ ही कर देंगे साहिब, तुम्हारी भसम ।
दाना पानी अब तेरा खतम हो गया ।
सच्ची कहता हूँ, तुमको तुम्हारी कसम ॥

दोहा

पवन पुत्र के वचन सुन वज्रोदर झुंझलाय ।
वज्रबाण हनुमान पर, सहसा दिया चलाय ॥
पवन पुत्र ने काट वार को अपना बाण चलाया है ।
तज दिये प्राण वज्रोदर ने परभव डेरा जा लाया है ॥
यह हाल देख जम्बू माली नृप का नन्दन सन्मुख आया ।
पर एक वार से हनुमान ने उसको भी परभव पहुँचाया ॥

दोहा

दो योद्धा रण में गिरे मच गया हा हा कार ।
रावण दल में एक दम छाया त्रास अपार ॥
महोदर आदि वीर नृपति चढ़ आये चहुँ तरफ से ।
अंजनी लाल भू पर छिपा जैसे कोई पक्षी वर्षा से ॥
छवि में जैसे वज्रायामस यों राक्षस दल में शोभ रहा ।
जैसे भानु के चढ़ते ही तारागण का ना तेज रहा ॥

या यों समझो महा प्रबल सिंह, जैसे कि गर्ज रहा वन में।
त्यों अस्त्र शस्त्र घुमा २, करता कमाल रण के फन में॥
मुर्दों पर जीते गिरने लगे यह हाल हुआ रण क्षेत्रों में।
तब लगा बरसने रक्त देख, यह कुम्भकर्ण के नेत्रों में॥

दोहा

कुम्भकर्ण जिस दम चढ़ा, दहला गई जमीन।
लगा समर में घूमने जैसे विकट मशीन॥

राघव सेना अति घबराई उस वीर की शक्ति सह न सके।
एक सिवा कंजमालास युद्ध में सम्मुख कोई रह न सके॥
कल्पान्तकाल की तरह वीर ने रूप भयानक धारा है।
जिस तरफ झुका बस, उसी तरफ सब रुण्ड-मुण्ड कर डारा है॥
मुर्दों में जीते लगे छिपने कई अपने प्राण बचाने को।
यह हाल देख कई लगे सोचने रण में पीठ दिखाने को॥
सब छिन्न भिन्न होगई सेना सुग्रीव ने हाल निहारा है।
झट बिगुल बजाया योद्धों ने, बख्तर निज तन पर धारा है॥
चल दिए दधि मुख माहेन्द्र आप अपनी फौज सजा करके।
चौप मुकुन्द अंगद पंचम सज गये जोश में आकर के॥
सब चढ़े वीर दुर्दन्त बली, भामण्डल इसमें शामिल थे।
मिथिलेश किशोरी के भाई जो कि इस फन में कामिल थे॥

दोहा

छः योद्धे आकर भिड़े कुम्भकर्ण के साथ।
समर भयंकर वीर का दशकन्धर का भ्रात॥

जब लगा घोर संग्राम होन तो नदी रक्त की बहने लगी।
कल्पान्तकाल आगया आज यह जनता यों कहने लगी॥
लगी बाण वर्षा होने बहुते शरशय्या पर लेट गये।
या हटे सिपाही दोनों दल शूर निशंक रण मेट हुये॥

दोहा

कुम्भकर्ण ने तान कर, छोड़ा 'सम्मोहन बाण'।
निद्रागत सेना हुई, कपिपति का हुआ ध्यान ॥
प्रायमाद्यास्त्र को छोड़, भूप ने सेना तुरन्त उठाई है।
फिर कमकताम क्रोधातुर होकर, अपनी गदा घुमाई है ॥
बालक सम संग्रामी रथ, सब कुम्भकर्ण का चूर हुआ।
मुग्दर के नीचे कूद पड़ा क्योंकि योद्धा मजबूर हुआ ॥

दोहा

मुग्दर को भानुकर्ण, कपिपति ऊपर जाय।
गुस्से में भरपूर हो रथ पर दिया गुमाय ॥
संग्रामी रथ को उसी समय सुग्रीव नरेश ने तोड़ दिया।
दो वीर बराबर के दोनों फिर आपस में जंग जोड़ लिया ॥
विद्या की शिला बना करके, सुग्रीव नरेश ने छोड़ दई।
पर भानुकर्ण ने मुग्दर से वो माया सारी ताड़ दई ॥

दोहा

कुम्भकर्ण ने तान फिर, मारा अस्त्र रज बाण।
घोर अन्धेरा छागया उड़ी धूल आसमान ॥
यह हाल देख सुग्रीव ने, झट अस्त्राम्बु बाण चलाया है।
जिस रज से घोर अन्धेरा था, उसको झट शान्त बनाया है ॥
छोड़ दिया एक तड़ित बाण, सुग्रीव ने महारिसा करके।
जा लगा अरि के हृदय में झट गिरा मूर्छा खा करके ॥

दोहा

कुम्भकर्ण जिस दम गिरा होकर के बेहोश।
राक्षस सेना का हुआ ठण्डा सारा जोश ॥

लगी छुरी रघुसेन में, भरि गया मुर्झाय।
उत्साह चौगुना पड़ गया हरषा भोला जाय॥
पक्षीगण उड़ जाते हैं, जिस तरह वृक्ष गिर जाने से।
ऐसे ही भगी राक्षस सेना एक योद्धा के मुरझाने से॥
दुर्दशा देखकर सेना की दशकन्धर अति रिसाया है।
झट चढ़ा आप संग्रामी रथ मुख से रण तूर बजाया है॥

दोहा

तैयार पिता को देख कर, आया ज्येष्ठ कुमार।
विनय सहित मस्तक निवा कहा वचन सुलकार॥

दोहा (मेघनाद)

पिता आप किस पर चढ़े बख्तर शस्त्र धार।
शृगालों पर क्या शोभते आप सजा हथियार॥
आज्ञा मुझको दे दीजे देखो तो फिर क्या कर दूंगा।
जिस तरफ मुड़ूंगा उसी तरफ, लाशों पर लाशें धर दूंगा॥
कौन चीज सुग्रीव बिचारा भाज सभी को मारूंगा।
यह नित्य प्रति का जो झगड़ा है, बस सभी खतम कर डालूंगा॥

दोहा (रावण)

बेटा तुम पर ही मेरा है अन्तिम विश्वास।
जाओ अब रणक्षेत्र में करो अरि का नाश॥

रावण गाना

करो जंग बहादुर बेटा अब दुश्मन को मार दो।
अमोघ शस्त्र को धार, इनके सिर उतार दो॥
कहलाता इन्द्रजीत तूने जीता इन्द्र को।
क्या चीज राम की सेना है छिन में निपार दो॥

बढ़ने न पावे आगे को, ये सेना शत्रु की ।
लेकर के सेना अपनी, तुम आगे विस्तार दो ।
राष्ट्र अपने की रक्षा, अब सेवा तन मन से ।
परवाह न करना मरने की, यह निश्चय धार लो ॥

कुम्भकर्ण चाचा तुम्हारा, देखो मूर्छित है ।
शत्रु से इसका बदला तुम अपना ध्यार लो ॥

दोहा

स्वीकार वचन करके हुआ इन्द्रजीत तैयार ।
विद्युत जैसी तो हो गई सेना सब तैयार ॥

तीन ताल (इन्द्रजीत की तैयारी)

मेघनाद तैयार हुआ है, पहन अभेद्य भारी बख्तर ।
खिच गई पेटी सेनानायक की, संग चले हैं सब अफसर ॥

लंका से दल चला, मैदाने जंग पर ।
काली घटायें छाईं, ज्यूँ आसमान पर ॥

मुआयना करता सब सेना को देख रहा अफसर सब ।
सलवट हो ना किसी वर्दी में मेघनाद बोला हंसकर ॥

बाजा बजा है रण का, झंडा लगा दिया ।
रावण की जय मनाओ सब को सुना दिया ॥

वर्दी पहने और चमके बांध लिये सबने शस्त्र ।
वानर दल पर आज अपूर्व बरसाओ अस्त्र शस्त्र ॥

शक्ति नहीं है दुश्मन की मेरे सहे वार को ।
लगादे चोट डंका बाजा मल्हार को ॥

बिन जीते अब राम लक्ष्मण के वापिस नहीं लौटूं घर पर ।
पुण्य पाप का खेल जगत में काल खड़ा सब के सिर पर ॥

दोहा

इन्द्रजीत रण में चढ़ा, होकर के विकराल ।
सुर्खी छाई नयनों में, भृकुटी सहित विशाल ॥

इन्द्रजीत और मेघवाहन का रणभूमि में ललकार ।
विमान विकट गाड़ी सेना, भारी योद्धे संग बलवारे ॥
कल्पान्त काल की तरह देख वानर योद्धे घबराते हैं ।
तब इन्द्रजीत वानर सेना को ऐसे शब्द सुनाते हैं ॥

दोहा (इन्द्रजीत)

इधर कान भर कर सुनो वानर वीर तमाम ।
अब यहाँ से भागो सभी, पहुँचो निज निज धाम ॥

कहाँ गया सुग्रीव बली और पवन पुत्र हनुमान कहाँ ।
राम लक्ष्मण और भामण्डल सब का आ पहुँचा काल यहाँ ॥
फेंको डालो हथियार सभी, क्यों मौत पराई मरते हो ।
आ मिलो वाम-पक्षों से तुम किसलिये जुदाई करते हो ॥

दोहा

इन्द्रजीत का नाम सुन घबरा गये तमाम ।
जैसे हो भूकम्प से कंपित सारा धाम ॥

यह हाल देख सुग्रीव और, भामंडल दोनों वीर चढ़े ।
झट इन्द्रजीत और मेघवाहन के, सन्मुख आ रणधीर अड़े ॥
मेघवाहन से रणभूमि में भामंडल ललकारा है ।
और इन्द्रजीत के पास पहुँच, सुग्रीव ने वचन उचारा है ॥

गाना (सुग्रीव का)

क्यों अभिमान करता खड़ा हो सम्भल कर,
कदम अपना आगे, बढ़ाना सम्भल कर ।

यदि इच्छा लड़ने की, तेरी प्रबल है,
तो देरी क्यों करते हो, आओ सम्मुख कर ॥
जरा सोच लेना समर है ये बांका,
करो सैर परभव की, आओ सम्मुख कर ।
यदि वीर हो तो बढ़ो, अब अगाड़ी,
नहीं पैर पीछे, हटाओ सम्मुख कर ॥

गाना (इन्द्रजीत का)

तुम्हें आज सब युद्ध, दिखाऊँ सम्मुख कर ।
समर में सभी को, सिखाऊँ सम्मुख कर ॥
समझ लो सभी जान खतरे में अपनी ।
कि सिर सब का धड़ से उड़ाऊँ सम्मुख कर ॥
इस लंका पे चढ़ने का, तुमको नतीजा ।
सभी को समर में दिखाऊँ सम्मुख कर ॥
हुआ प्यारा जीने की, तैयार हो लो ।
परभव में सबको, पठाऊँ सम्मुख कर ॥

दोहा

आपस में यूं बढ़ गया, क्रोध दुतर्फी जान ।
रणभूमि में होन लगा महाघोर घमसान ॥

विकट वीर घमसान बहुत धरणी पर मार गिराये हैं ।
कभी अग्निबाण कभी पूं पषाण कभी सर्पबाण बरसाये हैं ॥
फिर सर्पबाण ने नाग फांस अस्त्र डाला भामंडल पर ।
यह जनक पुत्र का जा लिपटा जैसे अहि लिपटा चन्दन पर ॥

दोहा

रघुवर दल के पड़ गये महा संकट में प्राण ।
सज्जन गण सुन लीजिये होनहार बलवान ॥

इन्द्रजीत ने भी अपना अस्त्र सुग्रीव पै साध लिया ।
उस तरफ बंधा भामंडल, यहां सुग्रीव नरेश को बांध लिया ॥
यह हाल लखा लक्ष्मणजी ने क्रोध बदन में छाया है ।
अन्य सभों को गौण बना उस तरफ ही रथ बढ़ाया है ॥

दोहा

जा पहुँचे झटपट वहीं जहाँ थे दोनों वीर ।
रोक रथ दोऊ शूरों के, बोला अमित बली वीर ॥

क्यों व्यर्थ धूल मचाई है अब परभव को पहुंचाऊंगा ।
सुग्रीव और भामंडल के बंधन का स्वाद चखाऊंगा ॥
फिर क्या था वे वीर परस्पर, बाणों की वर्षा करने लगे ।
घनघोर युद्ध छिड़ गया वहां, अम्बर तल से ही गिरने लगे ॥
रक्त नदी बहती यहाँ नभ में रक्त फुव्वारे चलते हैं ।
जिस पर जा पड़े वीरों के बाण क्या पता कहां जा मिलते हैं ॥
थे अमित बली रावण सुत पर लक्ष्मण भी एक ही नाहर थे ।
थे कांपते जिनके नाम से नृप ऐसे दुनियां में जाहिर थे ॥
लग गये योध भी राम चमू के देख के योद्धा बलधारी ।
भिड़ गई सेना फिर से आपस में मारा मार मची भारी ॥
मुद्गरधारी शतघ्नी परिघा फरसा भाला खंजर भी खटकते हैं ।
घन वीरों के रण में आपस में, म्यान में धार सरकते हैं ॥

दोहा

अस्त्र शस्त्र कड़कते ज्यों हो विद्युत पात ।
देख तेग बस ग घ मानों शानो भात ॥
अमित बली हनुमंत है, शक इसमें कुछ नांय ।
शक्ति ना हर कोई सह सके नाम सुनत भग जांय ॥

उधर बली श्री हनुमान के, मार्गों से अम्बर छाया है।
इत मेघनाद और इन्द्रजीत क्या, रावण दल घबराया है॥
इतने में मूर्छा त्याग के रण में, मातुकर्ण भी आया है।
फिर तो क्या था रणभूमि में, कल्पान्त काल सा छाया है॥

दोहा

कुम्भकर्ण ने खाय कर मारी गदा घुमाय।
पवन पुत्र उस गदा से गिरे मूर्छा खाय॥
हो गये वीर तीनों बेबस फिर रावण सेना घबराई।
यह हाल देख वानर दल का रावण सेना अति गर्राई॥
पक्षी जैसे उड़ते नभ में यों वीरों के सिर उड़ते हैं।
यह हाल विभीषण देख, राम आगे यों गिरा उचरते हैं॥

—०००—

विभीषण-राम भयभीत

दोहा (विभीषण)

सेना हमारी हो गई, सभी प्रभु बेकार।
रावण के सुत भ्रात ने, किया बहुत संहार॥
भामंडल और सुग्रीव बली, दोनों बेबस कर डारे हैं।
योधे में गिरा बजरंगबली सब दल के हारा बिगारे हैं॥
मानिन्द शेर के गर्ज रहा, निर्भय हो अब दोनों दल में।
बस तो खाली कर देंगे, हमको योधों से अब पल में॥

दोहा

केवल इक अंगद बली, बिना रहे हैं काम।
जिनके पैरों पर खड़ी कुछ सेना सुख धाम॥

इसका अब शीघ्र विचार करो, नहीं तो पीछे पछतावोगे।
यदि ले गये लंक में तीनों को, तो कर मसले रह जावोगे॥
अब तो दुःख है सीता का फिर छोटा सा सन्ताप नहीं।
और बिना तीन योद्धों के बाकी इस दल में रह त्राक नहीं॥

गाना विभीषण

श्रीराम के प्रश्नोत्तर

यह खेल हाल दिल का, बिलकुल मजर नहीं।
इस दम हमारी सेना, कुछ जबर नहीं है॥
अंगद अकेला रण में कब तक डटा रहेगा।
हिलता है एक जगह पर, मेरा जिगर नहीं है।
राम—सुनकर वचन तुम्हारे, मन को सबर नहीं है।
बीतेगी आज कैसी, कुछ भी खबर नहीं है।
बजरंग पड़ा है मूर्छित, वो नागफांस में है॥
मेरा भी एक जगह पर, इस दम जिगर नहीं है।
विभी०—मुड़ता है जिस तरफ को या भानुकर्ण देखो।
जिसके मुकाबले हो, यम का गुजर नहीं है॥
राम—वराक अतुल बली है भानुकर्ण बहादुर।
लड़ता है काल बनकर इसमें कसर नहीं है॥
विभी०—यो इन्द्रजीत भाइ दोनों का आप देखें।
जौहर दिखा रहे हैं, कुछ भी तो डर नहीं है॥
राम—रावण के पुत्र दोनों वराक हैं वीर बांके।
आसान इनसे करना निश्चय समर नहीं है॥

दोहा

कुम्भकर्ण हनुमान का मुड़ कर लगा उड़ान।
अंगद ने अति क्रोध में कस कर मारा बाण॥

यह वार बचाया क्रुभकर्ण ने हनुमान की मूर्छा दूर हुई।
और अंजनी लाल फिर ललकारे, अंगद की मूर्छा दूर हुई॥
इतने में विभीषण आ पहुँचे श्रीराम की आज्ञा पा करके।
बस फिर क्या था वानर सेना, बढ़ गई जोश में आ करके॥

गाना

खड़ा जिस दम विभीषण तानकर कर में दुधारा।
मेघवाहन ने फिर सोचा कि, यह चाचा हमारा है॥१॥
ख्याल यह ज्येष्ठ भाई का कि टल जाना ही अच्छा है।
बड़े जिसमे पितासम् यह, बड़ा गुरुतम हमारा है॥२॥
मान भानुकर्ण के भी, यही लड़ना नहीं अच्छा है।
यदि आपस में मचावें जंग तो हर्जा हमारा है॥३॥

दोहा

उसी समय पीछे हटे, राक्षस वीर तमाम।
जैसा किया विचार था बना नहीं वो काम॥
सूर्य अस्ताचल पर्वत के, पास पहुँचने वाला था।
नागफांस ने यहां महा योद्धों को कष्ट में डाला था॥
किया बहुत उपाय राम ने नागफांस छुड़वाने का।
किन्तु प्रयत्न गया खाली सब योद्धों के छुड़वाने का॥

दोहा

रघुवर ने स्मरण किया महालोचन फिर देव।
उसी समय हाजिर हुआ देव आन स्वयमेव॥
था वचन दिया श्री रामचन्द्र का, जिस कारण सुर आया है।
और संकट दूर कराने का श्रीराम ने उसे बुलाया है॥
आपत्ति सब दूर भगें, शुभ पुण्य जिन्हों का चढ़ा हुआ।
दो हाथ जोड़कर खड़ा सामने, देव वचन का बंधा हुआ॥

गाना (रामचन्द्र व देवता का)

सेवा मुझे मताओ चरणों का दास आया।
जिस काम के लिए है, मुझको प्रभु बुलाया ॥१॥
साधार हो के हमने, तुमको यहां बुलाया।
दुःख दूर करना होगा, जिसने हमें सताया ॥२॥
मुख से जरा उचारें फिर देर भी हा क्या है।
मैं आपकी अमानत, इस वक्त देने आया ॥३॥
यह दो हमारे प्यारे सेना सभी के बहू।
दोनों पे राक्षसों ने, है नागफांस लाया ॥४॥
भराक विकट यह फंदा है काल को निशानी।
यह सुन तुमने सोचा, मुझको यहां बुलाया ॥५॥
यह गारुडी को विद्या देता हूं आज तुमको।
जहां पर रहे यह विद्या, हो दूर भाग माया ॥६॥

छन्द

गारुडी विद्या सुमित्रा लाल लक्ष्मण को दई।
सिंहनि नादा नाम विद्या, रामचन्द्र ने लई ॥
शत्रु विनाशक एक गदा दिया तन वदन लसु नाम है।
देकर के विद्या सभी या सुर गया निज धाम है ॥
गारुडी विद्या पै चढ़, लक्ष्मण जी यहां फिरने लगे।
नागफांसों के समूह, सब धरणी पै गिरने लगे ॥
महा कष्ट से दोनों भये, सुग्रीव भामण्डल बली।
सब दल के हृदय खिल गये जैसे कि फूलों की कली ॥

दोहा

वानर दल आनन्द में, टल गया संकट क्लेश।
जय जय शब्द होने लगा चारों ओर विशेष ॥

जब सुने सुरी के नक्कारे, रावण दल को अति कष्ट हुआ।
जिस सुरी में थे सब फूल रहे उस सुरी का साहस नष्ट हुआ॥
अस्ताचल पर सूर्य पहुँचा, सब शूर लगे विश्राम करन।
प्रातः काल के होते ही लग गये वीर संग्राम करन॥

दोहा

रण भूमि में जुट गये, हो कर के विकराल।
सुभट बहुत मरने लगे जिनका आया काल॥
जुट गये वीर दोनों दल में तब नदि खून की बहने लगी।
निज २ स्वामी और देश के, हित सेना शस्त्रों को सहने लगी॥
रावण सेना के पराक्रम से राघव सेना घबराई है।
छिन्न भिन्न हो गये वीर, कईयों ने पीठ दिखाई है॥

दोहा

देखा जब सुग्रीव ने सेना का यह हाल।
उसी समय झट कोप कर, चले जिस तरह काल॥
बड़े बड़े रणधीर शूरमा सहसा दल में कूद पड़े।
इस तरह बढ़ा श्रीराम का दल जैसे समुद्र की वेल बढ़े॥
जरा देर में रावण दल को छिन्न भिन्न कर डाला है॥
हो गये बहुत रण भेंट शूरमें, अन्तिम वैर चुकाया है।

दोहा

भंग देख निज सेना को चढ़े दशानन आप।
थर थर कांपे मेदिनी महा प्रबल प्रताप॥
आँधी आगे जैसे रुई या जैसे सिंह आगे बकरी।
ऐसे ही जब वानर दल की रावण ने पुगा वई चकरी॥
जिधर मुके रणधीर वीर, सब सफा उधर ही कर डारे।
कई भाग गये पर भाग गये, और कइयों ने शस्त्र डारे॥

दोहा

रावण का कर्तव्य यह, जब देखा रघुराय।
धर्मावर्तन मनुष्य को, कर में लिया सजाय॥
पता विभिषण को लगा, हुए राम तैयार।
राम आड़ सम्मुख हुआ, माथा गिरा उचार॥

दोहा (विभीषण)

आज्ञा मुझ को दीजिये, हे प्रभु दीना नाथ।
रण भूमि में आज मैं, दिखलाऊं दो हाथ॥
बाहर रण सारा बिखर गया मैं उनका पैर जमाऊंगा।
रावण के सम्मुख जाकर के, अपनी तलवार चलाऊंगा॥
अभी आपका रावण से लड़ने का समय नहीं आया है।
अब आज्ञा सेवक को दीजे, मेरे दिल यही समाया है॥

श्री रामजी का गाना—विभीषण के प्रति

यदि है इच्छा यही तुम्हारी, तो जाओ मित्र खुशी खुशी से।
भय मन लाना किसी का मन में सजाओ मस्तक खुशी २ से॥१॥
हमेशा होती है सत्य की जय, असत्य की न हुई न होगी।
हे पुरुष योद्धा लड़ाई करो, सजाओ शस्त्र खुशी खुशी से॥२॥
किन्तु य शिक्षा हमारी सुनना, ना भाई भाई से काट करना।
जो कर्म क्षत्रीय का सारी करना चलाओ अस्त्र खुशी २ से॥३॥
यह भी दिल में विचार करना ना पहले भाई पर वार करना।
यदि भाई सच्ची विचार करना, तो झुकाना मस्तक खुशी २ से॥४॥

विभीषण

जो पुष्प यहाँ तुम्हारे मुख से सजाऊं गलमें खुशी खुशी से।
य जंगी मस्तर है देर क्या है सजाऊं तन पे खुशी २ से॥५॥

दोहा (रावण)

प्यासी तेरे खून की य मेरी तलवार।
फेर यदि ऐसा कहा लेऊं शीश उतार ॥

रावण—तेरा कायरपना नीच जाता नहीं
मुझ को सारी उम्र ही सताता रहा।
मैंने भाइ समझ करके खाया तरस,
फिर भी टेढ़ी ही बातें बनाता रहा ॥
सीधे रास्ते से मूर्ख मुझे फेर कर,
हर समय उलटे रास्ते पर लाता रहा।
क्या है रिश्ता तेरा उनसे यह तो बता,
कर दो वापिस सिया ये सुनाता रहा ॥

विभीषण—होनी सिर पर ही आइ तो फिर क्या करें
तुम को हम तो हमेशा बचाते रहे।
तेने सन्धि के सार समय ला प्रिय,
मौके-मौके प हम वो गिनाते रहे ॥
चाह मुझ को कहा या किसी को कहा
तेरे खोटे कर्म ही सताते रहे।
कर दो वापिस सिया हम कहेंगे यही,
अब भी पहले भी तुमको सुनाते रहे।

रावण—अरे महा मूढ़ अच्छा ठहर जा
पहले करता हूँ जल्दी तेरा हम खत्म ॥
तू है कायर कमीना कुबुद्धि कुटिल
बेदया पथ सारे क्या तूने शर्म।
तुम को भाइ समझ कर बचाता रहा
नहीं तो बोलने से पहले ही करता खत्म ॥

जो गुण तुम में हैं दीनबंधो वर्णों से उनको कहूँ मैं कैसे।
सहारा चरणों का लेके स्वामी मैं जाऊं रण में छुरी २ से ॥६॥

रावण विभीषण जंग

दोहा

सब सेना को जोश दे, चला विभीषण बीर।
उधर सामने आ गया लंक पति रणधीर ॥
अब आन मोरचा लगा सामने, देख शूर हर्षाये हैं।
हाथी घोड़े संग्रामी रथ नभ में विमान अड़ाये हैं ॥
यथायोग्य स्थानों पे थे रक्षक योद्धा खड़े हुये।
फिर भाई से योद्धा रावण पर मस्तक पर बल पड़े हुए ॥

दोहा (रावण)

इस ओर सब सामग्री कहो विभीषण बीर।
आज काल के गाल में मौका तुम्हे अखीर ॥
जैसे पूर्व शिकारी जब आगे कुत्ते को धाते हैं।
बस यही हाल है रामलखन का तेरी बली चढ़ाते हैं ॥
किन्तु वे जब तक अपने, प्राणों का मल्ल मनावेंगे।
अन्तिम तो तलवार मेरी की धार तले वो आवेंगे ॥

दोहा

मौत पराई किस लिये मरता है तू बीर।
अन्तिम तर दुख की होगी मुझको पीर ॥
पूरा-पूरा तुम पर स्नेह क्योंकि तू मेरा भाई है।
जो कहाँ छिप गये राम लखन बस मौत उन्हों की आई है

तुम जाओ अपने तम्बू में, बस यही हमारा कहना है।
वानर सेना सब राम सलम, कोई जीता बाज न रहना है॥

दोहा (विभीषण)

जो कुछ कहना आपका, सिर मस्तक पर वीर।
एक बात सुन लीजिये, दिल में लाकर धीर॥

प्रेम आपका मुझ पर है, और ऐसा होना भी चाहिये।
पर दिल में जो है भ्रम मूल उसको भी खो देना चाहिये॥
श्रीराम आप ही आते थे मैंने ही उनको रोका है।
अपनी मर्जी से आया हूं ना किसी ने मुझ को भेजा है॥

दोहा

होंगी के आते नजर जाहिर सब आसार।
बस आप को चाहिये करना जरा विचार॥

गाना (विभीषण)

लद गई तेरी लंका की-अब सब तरी।
बात समझे ना रावण मेरी सरसरी॥

रामचन्द्र के, सीता इवाले करा।
शूरवीरों के माइक, भगाले करा॥
एक वानर ने ही, कायर लंका करी॥१॥

पता उनसे चलगी, ना तेरी जरा।
हो गया तेरी लंका में, अब घर घरा॥
हुए प्रकट अवतार, रघुवर हरी॥२॥

सैना लश्कर का भाई तू मत कर गुमां।
करके ही छोड़ेंगे, ना तेरा खातमा॥
अब ये दृष्ट आवेगी धरी, शक्ति धरी॥३॥

राम लक्ष्मण जब रण में धरेंगे कदम।
उनके हाथों से, आयेगा मुल्के अदम॥
सूर्य वंशी दिखा देंगे वे दर्द ॥४॥

दोहा

बीत गई सो तो गई, आगम का अख्त्यार।
वर्तमान पर ही सदा बुध जन करें विचार॥

बस यही हमारा कहना है, अब भी कुछ सोच विचार करो।
जो करम निवेदन आया हूं, हे भ्रात आप स्वीकार करो॥
समझे का एक बहाना है, तुम को समझाने आया हूं।
कल्याण जिस तरह हो सब का तजवीज बताने आया हूं॥

दोहा

जनक सुता वापिस करो भला इसी में जान।
नहीं तो अब क्या कसर क्या, होने में घमसान॥

लाखों के भाग्य गवायें हैं, रण-भूमि में लड़वा करके।
अब कर मलते रह जाओगे सब कुटुम्ब यहां कटवा करके॥
एक नार के कारण क्यों, सब देश का नाश कराते हो।
क्यों अपना आप गंवा करके, मरदों का वंश लगाते हो॥

दोहा

औदार चित्त होत सदा, नम्र भाव में लीन।
बुद्धिमान हो व्यर्थ ही, हरफन में प्रवीण॥

यदि आप न जाना चाहत तो सिया का मैं दे आता हूं।
विशाल हृदय कर बतलाओ बस आना आपकी चाहता हूं॥
इतनी सुनकर बात भ्रात की रावण लाल-पल अङ्गार हुआ।
तलवार काढ़ विकराल बना जैसे कि कुपित यमराज हुआ॥

दोहा (रावण)

प्यासी तेरे खून की ये मेरी तलवार ।
फेर यदि ऐसा कहा लेऊँ शीश उतार ॥

रावण—तेरा कायरपना नीच जाता नहीं
मुझ को सारी उम्र ही सताता रहा ।
मैंने भाई समझ करके खाया तरस
फिर भी टेढ़ी ही बातें बनाता रहा ॥
सीधे रास्ते से मूर्ख मुझे फेर कर,
हर समय उलटे रास्ते पर लाता रहा ।
क्या है रिश्ता तेरा उनसे यह तो बता
कर दो वापिस सिया ये सुनाता रहा ॥

विभीषण—होनी सिर पर ही आई तो फिर क्या करें
तुम को हम तो हमेशा बचाते रहे ।
तेने सन्धि के सारे समय खो दिये
मौके-मौके प हम तो चिताते रहे ॥
चाहे मुझ को कहा या किसी को कहा
तेरे खोटे कर्म ही सताते रहे ।
कर दो वापिस सिया हम कहेंगे यही,
अब भी पहले भी तुमको सुनाते रहे ।

रावण—अरे महा मूढ़ अच्छा ठहर जा
पहले करता हूँ जल्दी तेरा काम तमाम ॥
तू है कायर कमीना कुबुद्धि कुटिल
बेहया अब लाई कहाँ तूने शर्म ।
तुझ को भाई समझ कर बचाता रहा
नहीं तो पहले से पहले ही करता खतम ॥

पीछे देखूंगा भीलों की शक्ति को मैं
पहले पहुंचाऊं तुम को ही मुल्केअदम।
ओ कुलांगार कायर अधर्मी कुटिल
जरा आगे तो आ बेहया बेशर्म ॥

विभी०—मुझे मारेगा क्या अपनी खैर मना,
तुमको पहुंचाता हूँ आज मुल्केअदम।
तेरे जैसे अधर्मी पे करना रहम,
यह भी दुनियां में फैलाना खोटा कर्म ॥
कृतघ्नी, कुबुद्धि, अधम, बेशर्म
आज आया उदय तेरा खोटा कर्म ॥

दोहा

सुन-सुन रावण को चढ़ा क्रोध अति विकराल।
इधर विभीषण ने किये दोनों नेत्र लाल ॥

जुट गये वीर दोनों रण में तो लगी मेदिनी थर्राने।
आंधी सहित जैसे वर्षा में लग जाय बड़ी सर्राने ॥
हो गया रण स भीषण धड़ाधड़ शूर धरणि पर गिरते हैं।
दल-बल का कुछ पार नहीं विमान व्योम में फिरते हैं ॥

दोहा

युद्ध भयंकर छिड़ गया चलें सरासर बाण। —
महाकाल से बढ़ रहे, दोनों वीर बलवान् ॥

इन्द्रजीत और कुम्भकर्ण, आदि योद्धे भी कूद पड़े।
मेघवाहन और कुम्भकर्ण सुत महा बली पे आन लड़े ॥
सुग्रीवादिक बड़े २ सब रावण भ्रात के संग में थे।
इस कारण बाकी वानर योद्धा, महा काल के अंक में थे ॥

भयंकर रुद्र सा रूप धार कर, कुम्भकर्ण फिर धाया है।
जिस तरफ झुक रावण पोते, बस सफा मैदान बनाया है॥
खलबली पड़ी सब सेना में, ये राम लखन निहारा है।
वज्रावर्तक अरुणावर्तक शरासन कर में धारा है॥
अस्त्र शस्त्र तब पर धारे, झट रण भूमि में आवे हैं।
नल सखा और भूपों ने थे, सो वा भी संग उठ आये हैं॥
इधर नगर पड़ी सुग्रीवादिक की खलबली फौज में भारी है।
कुम्भ पड़े इधर ही रण आंके, राक्षस सेना घबराई है॥

दोहा

इन्द्रजीत के सामने, खड़े सुमित्रानन्द।
मेघनाद के भी हुआ, मन में परमानन्द॥
अनी मिली जब वीरों की, खड्ग हाथ में तान।
शस्त्र भेद कर कहत यूं इन्द्रजीत बलवान॥

आओ २ ये जंगली भीलो मैं राह तुम्हारी तकता था।
छिपे हुए थे अब तक दोनों, मेरा खड्ग तरसता था॥
अब लंकपुरी पर चढ़ने का परिश्रम तुम्हें दिखलाऊंगा।
ना बचकर जा सकते यहाँ से यमपुरी का मार्ग पठाऊंगा॥

दोहा

वचन अवज्ञा क सुने कोपे सुमित्रा लाल।
रूप भयानक धार क, गर्जे जैसे काल॥

आ मूढ़ अधर्मी अन्याई क्यों व्यर्थ में गाल बजाता है।
श्रीराम ने करुणा करी बहुत, पर काल ही तुझे बुलाता है॥
तुझको क्या परभव पहुँचायेगा नरभव जान यथा अपनी।
और साथ ही निज मारसी पिता को, जनता से आफत कटनी॥

दोहा

जन्मा नहीं किसी जननी ने, सहे मार मम आय ।
भागो काम बचा नहीं परभव तू पहुँचाय ॥

मेघनाद व लक्ष्मण जी का संवाद

(चाल क्वेटरी)

मेघनाद बोला दलबीर, मेरे अस्त्र हैं अकम्पीर ।
तुमको जीता छू न ज्यान देख हनू अब तेरे प्राण ॥
रक्खू कैसा तू रणधीर ॥ १ ॥

लक्ष्मण—क्या तू बोल रहा है अमीर, तेरी उल्टी है तकदीर ।
रघुकुल के हम वीर जवान खोवें तेरा नाम निशान ॥
पत्थर पर तू जान लकीर ॥ २ ॥

इन्द्रजीत—मेरे अस्त्र हैं गम्भीर, लाखों योद्धा डीने चीर ।
क्या तू करता तीरन्दाज, तुमे न जीता छोडूं आज ॥
अब मां कम्रू रहा शरीर ॥ ३ ॥

लक्ष्मण—मिल मां रावण से अखीर, देख लेवें तेरी तसवीर ।
उसे न दर्शन होंगे फेर, लिया काल ने तुमको घेर ॥
सम्मुख आ जाती है जंजीर ॥ ४ ॥

दोहा

विस्तार से क्या व्याख्या करें, समझो स्वयं सुजान ।
योद्धों का संक्षेप से परिणाम इस तरह जान ।

गाना

(तर्ज—आल्हा ऊदल)

कुम्भकर्ण संग राम जुट गया इन्द्रजीत संग लक्ष्मण आय ।
सिंह जगम महा बली राक्षस, नील ने उसको लिया दबाय ॥

दुर्मुख कपि घटोदर राक्षस इनकी जाड़ी अधिक सुहाय।
दुर्मुख निशाचर गर्जा वजा शम्भू मकस सिंहवत् आय॥
स्वयंभू और मन्न योद्धा की चलने लगी कठिन तलवार।
अंगद विराण स्कन्द निशाचर, करने लगे परस्पर वार॥
मम्र वानर और चन्द्र राक्षस जुट गये लाकर जोश अपार।
वीर विराध निरूपम योद्धा खूब चलाते सांग कटार॥
मारीच और सुग्रीव नरेश्वर दोनों में रण वीर अपार।
भीषण वानर शम्भु राक्षस दोनों कुद पड़े ललकार॥
मामंडल और केतु राजा दोनों विद्याधर बलधार।
पवनपुत्र और कुम्भकर्ण सुत बलि जिन में था अपरम्पार॥

कुन्द और धूमाक्ष भड़ गये जैसे फणिधर गुस्सा खाय।
घटाटोप अम्बर कर डारा शतघ्नी दमादम रही मचाय॥
चन्द्र रश्मि और शारदा योद्धे, दल में रहे अन्धेर मचाय।
पकी हुई खेती जैसे मतवीरों का दिया ढेर लगाय॥
इन्द्रजीत ने लक्ष्मण ऊपर मारा खैंच के तामस बाण।
बाण २ से काट गिराया लक्ष्मण शूरों का सुल्तान॥
नागफांस लक्ष्मण ने डाला इन्द्र जीत पर अस्त्र महान्।
रावण सुत फंस गया फंदे में छूट गये अस्त्र गिर गया मान॥

करके बन्द विकट गाड़ी में अपने दल में दिया पहुंचाय।
चन्द्रासर का इन्द्रजीत पै पहरा सख्त दिया लगवाय॥
रामचन्द्र ने नागफांस में कुम्भकर्ण का लिया फंसाय।
भामण्डल के हाथ वह भी उसी जगह पर दिया पहुंचाय॥

पवनपुत्र ने कुम्भकर्ण सुत अपने फन्दे लिया फंसाय।
वीर सुभट के पहरे में फिर, डेरे में उसे दिया पहुंचाय॥

दोहा

ये शूरे जब राम की पड़े कैद में जाय।
मेघवाहन आते जोश में, डटो सामने आय॥

पवनपुत्र बजरङ्गबली से आकर युद्ध मचाया है।
पर येश चली ना हनुमान सन्मुख, झन्दी नाम धराया है॥
फिर जिसके जो काबू में आया, उसी ने उसको दबोच लिया।
मक्खन बिन जिम दूध समझ, ऐसे सेना को फोक किया॥

दोहा

रावण ने पता जब चला निज सेना का हाल।
क्रोधातुर होकर किया रूप अति विकराल॥
सुत भाई पर बस हुए, लगी खबर जिस बार।
वचन तीर सम नृप के, हुए जिगर के पार॥
इतने में ही पहुंच गये वीर सुमित्रा लाल।
दोनों भ्रात यहीं खड़ रहे होकर के विकराल॥

रावण ने दाँत पीस भ्रात पर, कठोर त्रिशूल चलाया है।
सो लक्ष्मण वीर बहादुर ने रास्ते में काट गिराई है॥
फिर तो जैसे वैरवानल में घी सींचे ऐसा हाल हुआ।
अमोघ विजय शक्ति पर अन्तिम, दशकन्धर का ख्याल हुआ

दोहा

अमोघ विजय महा शक्ति पर, था पूरा विश्वास।
क्योंकि इस महा अस्त्र में देवी का था वास॥

धरणेन्द्रदत्त अमोघविजय शक्ति रावण ने हाथ लई।
इस तरफ खड़े थे वीर विभीषण के भी मौरे साथ कई॥

जिस समय घुमाई रावण ने तो हाहाकार मचा भारी।
रोको रोको सब कहते हैं शस्त्र ले कर में बलधारी॥

दोहा

देख प्रबल उस शक्ति को बहक गये रणधीर।
शस्त्र फेंकने से सिवा, करते क्या बलवीर॥

वह प्रलय कालकी बिजली के, मानिन्द चमक दिखलाने लगी।
कड़कड़ाट और तड़तड़ाट कर अपना रूप बढ़ाने लगी॥
नेत्र बन्द कर लिये क्योंकि, उस तेजी को न सहार सके।
अस्त्र शस्त्र छोड़े अपार, शक्ति ना कोई निवार सके॥
उड़ गये होस सारे दल के, ना पेश किसी की जाती है।
उस समय किसी योद्धा के, तन में रही ना शक्ति बाकी है॥
धीर विभीषण शांत खड़े जीने की आशा छोड़ दई।
अमोघ मन्त्र श्रीनमोकार की, तरफ आत्मा जोड़ दई॥

दोहा

परिणाम विभीषण ने किये निर्मल और विशेष।
सागारी संथारा किया तज संयोग अशेष॥

मित्रता

उदार चित्त न जब देखा, मित्र पर शक्ति आती है।
शरणागत का जो मर जाना, हृदय में लगती छाती है॥
सुनो मित्रगण दुनिया में मित्रों का हाल सुनाते हैं।
मित्र की मित्रता का देखो कैसे श्रीराम पुगाते हैं॥

दोहा

जिस दम देखा मित्र पर, आता कष्ट अपार ।
असमय का श्रीराम जी, बोले वचन उचार ॥

दोहा (श्रीराम)

ऐ भाई लक्ष्मण जरा, सुनना मेरी बात ।
प्राण बचाना मित्र का, आज तुम्हारे हाथ ॥

यह समय हाथ से निकल गया तो फिर पीछे पछतावोगे ।
कर्तव्यशील सत्पुरुष विभीषण, सा मित्र न पावोगे ॥
अमोघ विजय शक्ति से यदि, शरणागत मारा जायेगा ।
तो निश्चय करलो रामचन्द्र, सीता नहीं मुख दिखलायेगा ॥

गाना (श्रीराम का)

मित्र पे कष्ट आया अय वीर आज भारी ।
अब दूर तुम निवारो आपत्तिआज सारी ॥१॥
सर्वस्व को है त्यागा, जिस ने हमारी-खातिर ।
उसकी हो ऐसी हालत हमको ये दुःख अपारी ॥२॥
जिसने हमारे खातिर अपना कहू बढ़ाया ।
उसका हमारे ऊपर येहसान आज भारी ॥३॥
कर्तव्य बस यही है अब अपनी जिन्दगी का ।
मित्र के बदले बेशक लगजाये जां हमारी ॥४॥
दुखिया शरण में आकर, फिर भी रहा जो दुखिया ।
मिट्टी में जिन्दगी ये मिलजाये आज सारी ॥५॥
इसका उपाय अब तो, इसके सिवा न कोई ।
हृदय में आप मेलो शत्रु की ये कटारी ॥६॥

मेरे सखा की खातिर, डाली अड़ाई अपनी ।
परवाह न जान की कर, हृदय में लो ये धारी ।।७।।
मरना "शख्स जरूरी, दो दिन आ आगे पीछे ।
ना साथ तन चलेगा, नर हो या चाहे नारी ।।८।।

दोहा (लक्ष्मण)

जैसी आज्ञा आपकी करूं वही मैं काम ।
खूब विचारा आपने, हे स्वामी सुख धाम ।।

दोहा

जब तक जीता जगत में, सेवक लक्ष्मण वीर ।
तब तक तुम को क्या फिकर, भय भाई रणधीर ।।

हे भाई रणधीर अभी मैं आगे बढ़ जाऊंगा ।
अमोघ विजय शक्ति को अपने हृदय में लाऊंगा ।।
जो कुछ कहा अभी देखो पूरा कर दिखलाऊंगा ।
इस विपदा से आज आपका, मित्र बचा लाऊंगा ।।

दौड़

सोच अब दूर निवारो, आप मन निश्चय धारो,
अभी आगे बढ़ता हूं, जगह आपके मित्र की अपना
हृदय करता हूं ।

दोहा

उसी समय आगे बढ़े वीर सुमित्रा लाल
मित्र विभीषण का धरा अपने सिर पर काम ।।

रावण के सम्मुख लक्ष्मण ने निज सीना तुरत अड़ाया है ।
जिसको अपना कह चुके उस अपना ही कर दिखलाया है ।।

काल के सम्मुख आय खड़े, मित्र का बाग पुगाया है।
उस समय दशानन ने, लक्ष्मण को ऐसे वचन सुनाया है॥

दोहा (रावण)

क्यों लड़के तू किस लिये, फँसा काल के गाल।
जरा देर तो देखता रणभूमि का हाल॥

रणभूमि में आज सभी सर शय्या पर सोवोगे।
पानी की ना मिले बूँद, आँसुओं से मुख धोवोगे॥
देख देख अपनी हालत दोनों भइया रोवोगे।
तड़प तड़प कर आखों को, रणभूमि में खोवोगे॥

दौड़

प्रथम इसका मरने दो फेर इसका करने दो, बाद में तुम भी
मरना दशकन्धर बलबीर, संग नहीं जंग मुलाकात करना।

दोहा

शर्म तुम्हे आती नहीं, लाकी करते बात।
कैद हमारी में पड़े, तेरे सुत और भ्रात॥

तेरे सुत और भ्रात कुल मर, पापी मुश्किल भर में।
हँसि मारना बने रहे, तुम आज तलक निज घर में॥
क्यार जोर अकड़ता कैसे बांध के तेग कमर में।
आज सुमित्रा लालसिंह ने, पाला पड़ा समर में।

दौड़

लंका की धूलि उड़ाऊं समर में तुम्हे सुलाऊं,
प्रथम तू जोर लगा के लड़ा बाण आवी सम्मुख,
दशरथ नन्दन अजमाले।

दोहा

बोली गोली सम हुई, दशकन्धर के पार ।
फिर भी यों कहने लगा धैर्य मन में धार ॥
फिर कहता हूं तुझे, ओ लड़के नादान ।
क्यों मरता मतिमन्द तू, मौत मराई आन ॥

अमोघ विजय शक्ति का निश्चय पार न खाली जायेगा ।
यदि पहले ही मर गया, तमाशा फेर न देखन पायेगा ॥
सबसे बड़ा विभीषण शत्रु, पहले इसको ही मरने दो ।
जो लगी हुई तन में ज्वाला, यह शान्त जरा अब करने दो ॥
दुष्ट विभीषण जीता है तब तक मुझ को सन्तोष नहीं ।
क्योंकि सब भेद दिया इसने, बस किसी और का दोष नहीं ॥
इस से क्या आपका रिश्ता है मरने दो बे परवाही से ।
फिर आपकी बारी आवेगी मिल आओ अपने भाई से ॥

दोहा

रिश्ते दो हैं जगत में, एक प्रेम एक द्वेष ।
तेरा रिश्ता क्वार के, क्रूर इसे संक्लेश ॥

रिश्ता प्रथम विभीषण से, और दूसरा रिश्ता आप से है ।
फिर शरण हमारी आन पड़ा, बचकर तेरे संताप से है ॥
श्री रामचन्द्र ने बांह पकड़ी, हृदय से मित्र हमारा है ।
इसलिये सामने खड़ा करूं निष्फल प्रयास तुम्हारा है ॥

गाना (लक्ष्मणजी का)

सिया साथ इसका निभाना पड़ेगा ।
चाहे हमको सर्वस्व लगाना पड़ेगा ॥१॥
विभीषण को हम कह चुके अपना भाई ।
तो भाई पना कर दिखाना पड़ेगा ॥२॥

यदि भाई मित्र पे कोई भी विपदा।
तो खून हमको, अपना बहाना पड़ेगा ॥३॥
यह शक्ति दिखा करके, क्या फूलता है।
तुझे अपना ही तन मिटाना पड़ेगा ॥४॥
यह धड़ से गिरा सिर, तेरा ताज लेकर।
विभीषण के मस्तक सजाना पड़ेगा ॥५॥
सीता चुराने का भय चोर तुझ को।
समर में नतीजा, चखाना पड़ेगा ॥६॥
यह कहता हूँ निश्चय, समझ खास मुझ को।
तुझे अब तो, परभव में जाना पड़ेगा ॥७॥

दोहा (लक्ष्मण)

जाओ लंका लोट कर, सुनो हमारी बात।
यहाँ पर लगने की नहीं, लगा रहे जो घात ॥

कल तक का कुछ मिल या मुलना, खाना पीना सब कर आओ।
क्योंकि फिर तुमने, मरना है यह शास्त्र भी घर घर आओ ॥
अन्त समय यदि चाहोगे, सुत बांधव तुम्हें मिला देंगे।
सुखी स्तुरी फिर नींद हमेशा की हम तुम्हें सुला देंगे ॥

दोहा (रावण)

कर कर पाते जोश की रहा बकता वीर।
अन्तिम अंगली मीस की, जाय कहाँ तासीर ॥

ना संगति शोभ न मिली तुम्हें जंगल की धूल बढ़ाई है।
मन में गीदड़ हो चमकाय ना रूप शेर की लाई है॥
यह अजर अमर करना जिह्वा न, तुझ को अभी सुलाता हूं।
स मायधाम दा नींद हमेशा की में तुम्हें सुलाता हूं॥

दोहा

ऐसा कहकर भूप ने, शक्ति दई चलाय।
वानर दल के शूर में, सभी रहे घबराय॥

भिन्न-भिन्न शस्त्र सब शूरों ने शक्ति की ओर मुखाये हैं।
आंधी आग जैसे गुर्राये, शक्ति ने दूर भगाये हैं॥
अमोघ विजय का लक्ष्मण के, हृदय में तुरत समाई है।
मूर्छित हो गिरा धरणी में सहसा सुरति सभी बिसराई है॥

दोहा

सुनो मित्र गया जिस समय गिरा सुमित्रा लाल।
दशकन्धर माने लगा, नजर सभी का काल॥

हुआ विकल सब वानर दल निज आंसुओं से मुंह धोते हैं।
छा गई अंधेरी आंखों में सब वीर धीर को खोते हैं॥
सुग्रीव विभीषण भामण्डल सब ऊंचे स्वर से रोते हैं।
चढ़ गया ताप कई शूरों को, बीमार बने कई मोते हैं॥

राम-रावण

दोहा

देख हाल भट राम का, चढ़ा जोश विकराल।
संग्रामी रथ बैठकर, गर्जे जैसे काल॥

गर्जे जैसे काल खेंच लिया धनुष-बाण निज कर में।
टंकार शब्द घनघोर कड़क बिजली की ज्यों अम्बर में॥
रावण का समझकर दल जाकर श्रीराम समर में।
खटक रहा था शम्बूक पाला खड्‌ग अमोघ कमर में॥

बाकी तो हैं सब शूर भूर, दिन लगे कोई न पायगा।
जो पड़े कैद में सुख बान्धव, सो भी कष्ट दुख पावेगा॥

दोहा

रावण लंका में गया, दिल में खुशी अपार।
इधर लड़े श्रीराम जी, ऐसे रहे पुकार॥

गाना श्रीराम

(तर्ज—स्थानक में नरनार आया आयो)
दशकन्धर बलधार आया आयो।
रणभूमि में यार, आयो आयो॥ टेक॥
क्षत्रिय का यह धर्म नहीं है, पीठ दिखाना धर्म नहीं है।
है तुमको धिक्कार॥ १॥
भाग कहाँ जायगा पाजी सिर पड़ की अब लाऊं बाजी।
देऊँगा शीश उतार॥ २॥
परभव को मैं तुझे पठाऊं, सूर्यवंशी तब ही कहलाऊं।
आज नहीं तो कल मार॥ ३॥
कायर क्रूर, अधर्मी, अनारी भ्रात मेरे के शक्ति मारी।
अब मा करूं उधार॥ ४॥
तस्कर परत्र स सिया चुराई अब क्यों रण में पीठ दिखाई।
पायगा नरक द्वार॥ ५॥

—०—

मूर्छा

दोहा

दृष्टि से रावण छिपा जाना जब श्रीराम।
वापिस फिर रथ का किया आ पहुँचे निजधाम॥

जब देखा लक्ष्मण भाई को, झट गिरे मूर्छा खा करके।
सुग्रीवादिक ने शीतलता, कर मूर्छा दई हटा करके॥
भाई का सिर गोदी में रख, नयनों से नीर बहाने लगे।
श्रीराम का दुःख ना देख सका, भानु अस्ताचल जाने लगे॥

दोहा

रामचन्द्र को हो रहा, महा घोर सन्ताप।
गोदी में ले भ्रात को, किया बहुत विलाप॥
रो रो कर श्रीराम की लाल हुए जब नैन।
वीर सुमित्रा लाल को कहन लगे यों बैन॥

गाना (श्रीराम)

मेरे भाई लक्ष्मण वीर, मुख से बोलो तो सही। (ध्रुव)
शक्ति नहीं तो वचन से, वचन नहीं तो नैन।
नैन नहीं तो और कोई करो इशारा वीर॥ १॥
दिवस चन्द्र के तेज सम, बने सभी रणधीर।
एक तुम्हारे बिन सभी, खो बैठा दल धीर॥ २॥
दशकन्धर जीता गया, क्या तुमको यह रोष।
या शक्ति ने तेरे सभी किये हैं होश॥ ३॥
सभी शूरमें ये खड़े, तुम पैरों पर वीर।
कटक सभी है रो रहा बंधा इन्हें अब धीर॥ ४॥
भाई अब तेरे बिना, सीता लावे कौन।
कैसे हा अब मौन धारा कौन बंधावे धीर॥ ५॥
क्या मुझ पर गुस्से हुआ, वीर सुमित्रा लाल।
तरे बिन हम देखो भ्राता कैसे हो रहे अधीर॥ ६॥
शुभ सहायक ना बना यदि यह तेरा विचार।
ता मैं शत्रु क अभी मारू हृदय में तीर॥ ७॥

दोहा (स्वगत रावण)

मोह के वश श्रीराम जी, धनुष बाण ले हाथ।
शत्रु की करने चले, राम समर में घात॥
दुष्ट मुझे मारे बिना, मुझे नहीं आराम।
आता हूं अब ठहर जा पहुँचाऊँ पर धाम॥

देख मेरी शक्ति अपार, और अपनी शक्ति दिखा मुझे।
अब जीता कभी ना छोड़ू गा यह साफ २ मैं कहूं तुझे॥
तेरा शीश जुदा करके, लक्ष्मण को अभी दिखाता हूं।
जो रूठ गया प्यारा भाई, फिर जाकर उसे मनाता हूं॥

दोहा

उसी समय हनुमान ने रोके राम नरेश।
फिर आकर यों सामने बोले किष्कन्धेश॥
सूर्य अस्ताचल गया लंका में लंकेश।
आप किधर को चल दिये सोचो जरा नरेश॥

सूर्य अस्तांगत है श्री लक्ष्मण जी मत फिकर करो अपने दिल में।
रजनी में ही कोई उपाय करो फिर काम नहीं बनता दिन में॥
मन्त्र यन्त्र या औषधि से, शक्ति यदि बाहिर निकल जावे।
भानु के चढ़न से पहले ऐसा कोई यन्त्र मिल जावे॥

सुग्रीव का गाना

देव शक्ति को दूर हटाना प्रभु।
कोई ऐसा उपाय बताना प्रभु॥टेक॥
हम तन मन अपना लगायेंगे,
और लक्ष्मण का कष्ट मिटायेंगे।
सच्चे मित्र तब ही कहलायेंगे,
श्री जिनवर के गुनगाना प्रभु॥ १॥

सारी लंका की धूल उड़ावेंगे,
और सीता को जीत के लायेंगे।
ऐसा करके सेवक दिखलावेंगे,
अब आर्ति दूर नसाओ प्रभु ॥ ३ ॥
प्रात लक्ष्मण भली उठ जावेंगे,
जाकर रावण का शीश उड़ावेंगे।
विजय रण में स्वामी पावेंगे
इन बातों पर निश्चय लाओ प्रभु ॥ ४ ॥
अब सेना के कोट बनावेंगे,
और लक्ष्मण को मध्य छिपावेंगे।
सब रस मिल_यत्न [बनावेंगे,
तुम हृदय में धैर्य लाओ प्रभु ॥ ५ ॥
सब योग्य चिकित्सा जारी है
और पुरुषार्थ अति भारी है।
इस कारण अर्ज गुजारी है,
अब 'राधेश्याम' ध्यान राम ध्याओ प्रभु ॥ ६ ॥

दोहा (राम)

कष्ट महा मलय भई सुनों वीर सब बात।
प्यारे भाई के बिना अब नहीं शान्ति दिखात ॥
ऐसा कह श्रीराम जी होकर हाल निढाल।
लक्ष्मण से कहने लगे, उठा सुमित्रा लाल ॥

श्रीराम का गाना

जागो २ ऐ भ्राता लक्ष्मण करो न जग हंसाई।
आंखें खोलो मुख से बोलो प्राणों से प्यारे भाई।
मन नहीं बांधे धीर बीर मैं सह ना सकूं जुदाई ॥ १ ॥

एक तेरे सोने से कुल की मिटती है प्रभुताइ ।
अवध में शोक आनन्द लंक में विधि ने धूल उड़ाइ ॥ २ ॥
संग तुम्हारे प्राण तजू मैं, रण में मचे दुहाइ ।
यह सुनते ही प्राण तजेगी सीता जनक की जाइ ॥ ३ ॥
रघुकुल भूषण प्राण राम के सेव्या को सुखदाइ ।
जनक सुता नहीं आइ, अमीता लंक विभीषण पाई ॥ ४ ॥
"शुक्ल" भरोसे तेरे ही, लंका पै करी चढ़ाई ।
उठ रण साज तू मेरे प्राण की अच्छी नहीं रुलाई ॥ ५ ॥

दोहा (सुग्रीव)

धैय करके हे प्रभु सोचो कछु उपाय ।
जैसे तैसे हो सके विघ्न सभी टल जाय ॥

दोहा (राम)

क्या कह दू मैं इस समय अपने मुख से आप ।
भाई बिन मेरा हुआ मामा सर्वस्व नाश ॥

श्रीराम सुग्रीव का गाना
(श्रीराम पद्दरवधीका)

मैं कैसे कहूँ अपने दिल की व्यथा
मेरे सिर पर भारा कष्ट भारा पड़ा ।
उस तरफ लावी होगी सिया जानकी
इस तरफ मेरा भाई प्यारा पड़ा ॥ १ ॥
तब तक मेरा भी दिल ठिकाने नहीं
जब तक माता की आँखों का तारा पड़ा ।
मैंने सोचा इस काम के गाम में
शक्ति भागे भी हृदय हमारा बड़ा ॥ २ ॥

सुग्रीव—खोलो दिल में दिलासा निकालो फकत
प्यारे लक्ष्मण को जल्दी उठाओ प्रभु।
बीत जायेगा ऐसे तो सारा समय,
आप रो रो न हमको रुलाओ प्रभु ॥ ३ ॥
कोई इसकी कहीं पर बताओ दवा
उसको जल्दी यहाँ से मंगाओ प्रभु।
पास भाई के बैठो तजो सब फिकर,
विद्याधर योद्धे दूर कहीं पठाओ प्रभु ॥ ४ ॥

शेर [राम]

मन ही ठिकाने पर नहीं, फिर मैं करूँ तो क्या करूँ।
दिल तो चाहता है यही भाई से पहले मैं मरूँ ॥

दोहा

इतना कह फिर अनुज सिर, धरा राम ने हाथ।
मोह के वश फिर वचन से, यों बोले रघुनाथ ॥

श्रीराम का विलाप

उठो तुम रण योद्धा बलवान, सो लिये बहुत देर मरदान होकर
कैसे बर्छी आ लगी तेरे तन में वीर।
हाय लक्ष्मण नहीं बोलता मेरी उलट गई तकदीर ॥
आंखें खोल मुझे पहचान ॥ १ ॥
दशकंधर के अस्त्र ने किया वीर बेहोश।
सिया चाहे मत ना मिले, मुझे नहीं अफसोस ॥
बचावे कोई वीरम के प्राण ॥ २ ॥
आधी रैन होने लगी, लगी ना औषधि खास।
वानर सेना सब तेरी अवसर तकी उदास ॥
विपद में विपद पड़ी क्या आन ॥ ३ ॥

जब जाऊँगा अवध में पूछेगी मोहे मात ।
कहाँ वीर लक्ष्मण तेरा कौन कहूँ फिर बात ॥
कैसा लगा दुष्ट का बाण ॥ ४ ॥
खबर लगे जब भरत को तन करले विक्राल ।
सिर धुन धुन पागल बने, छिन में करेगा काल ॥
गंवा देगा सुन कर जान ॥५॥
औषधी कोई लगती नहीं, हुए वैद्य लाचार ।
वीर फाड़ से लगी शक्ति, करती दुःख अपार ॥६॥
हाय बिगड़ी रघुकुल शान ॥६॥

शेर

मारी सुखाई वन में और भाई गवाऊँगा यहाँ ।
वाक्य ना पूरा किया, क्या मुख दिखाऊँ गा कहो ॥

दोहा

मारी हरण माई मरण कष्ट रहा ये दूर ।
लंक मित्र को ना दए, यही दुःख भरपूर ॥
तम के खातिर धन तजो, तन को तज रख लाज ।
धर्म हेतु तीनों तजो, कहा श्रीजिनराज ॥

संयोगमूल दुःख दुनिया में सबका देख का कहना है ।
क्योंकि एक दिन होगा वियोग, ना पास किसी के रहना है ॥
यह जीव अकेला आया है, और आप अकेला जायेगा ।
एक सिवा शुभाशुभ कर्मों के और साथ ना कुछ भी आयगा ॥

दोहा

एक दिन होना था जुदा अवध पुरी का राज ।
माता पिता भाई बहिन और सब साज समाज ॥

दोहा (हनुमान)

वचन आप के तीर सम, हुए जिगर के पार।
जनक दुलारी के बिना जाना है धिक्कार॥

शूर वीर क्षत्रीय हो कर हम कैसे कदम हटायेंगे।
यह शस्त्र तन पे धारण कर क्या जग में मुख दिखलायेंगे॥
धरें लाश पर लाश समर में दशकन्धर को मारेंगे।
वचन आपका पूर्ण कर, सीता का काज सिधारेंगे॥

गाना (हनुमान जी का)

चाहे ये तन भी लग जावे तो लाना ही मुनासिब है।
बिना सीता के लंका से न जाना ही मुनासिब है॥१॥
वचन पूरा करो बेशक, तुम्हारा धर्म है राजन।
धर्म हम को भी अपना तो निभाना ही मुनासिब है॥२॥
करो यह काम पहले, मूर्छा हो दूर लक्ष्मण की।
सबेरे लंक पर गाजा, बजाना ही मुनासिब है॥३॥
सिया रावण के राक्षस सेना में अब दम ही क्या है।
स्वाद सीता के हरने का चखाना ही मुनासिब है॥४॥
किया अर्पण यह तन मन धन प्रभु सब आपकी खातिर।
हमें रावण को पुत्रापन दिखाना ही मुनासिब है॥५॥
कष्ट की आज की रात्री, रहो सब सुख हो कर के।
क्योंकि परिणाम शत्रु पर, न लाना ही मुनासिब है॥६॥

दोहा (सुग्रीव)

प्रयत्न सभी ऐसा करो हो आदित्य सवेरा।
मनुष्यमात्र तो चीज क्या करे न सुर प्रवेश॥

सात कोट घना करके, दरवाजे चार बनाता हूँ।
इद गिर्द यह इन्तजाम ऊपर विमान चढ़ाता हूँ॥

मध्य भाग में राम लखन, पहरा संगी तलवारों का ।
पहरा होगा दरवाजों पर भी महा योद्धा बलधारों का ॥

दोहा

शीघ्र वीर सुग्रीव ने किया सभी यह काम ।
मध्य भाग के लखन को बैठ गये श्रीराम ॥

सात कोट कर विद्या के, फिर वीर किये सब शीघ्र खड़े ।
दरवाजों पर वे अतुल बली विमान व्योम में सभी अड़े ॥
गव-गवाक्ष सुग्रीव हनुमत तारक स्कन्ध दधि मुख थे ।
अस्त्र शस्त्र सब सजा वीर, सातों पूर्व के सन्मुख थे ॥

दोहा

श्री महेन्द्र भासन कुरम, भक्त विहंग सुसैन ।
चन्द्ररश्मि उत्तर तरफ, तने खड़े थे पैन ॥

समररशीश दुर्धर मन्मथ जयविजय वीर संमव भारी ।
पश्चिम दरवाजे सावधान हो खड़े नील थे बलधारी ॥
वीर विराध राज भुवनजीत, नल मैंद विभीषण मार्तंड ।
नृप राम कुमार सब चुस्त खड़े कानों में शोभ रहे कुण्डल ॥

दोहा

योग्य स्थानों पर खड़े, वीर तान समसेर ।
मरहम की करने लगे वैद्य औषधि फेर ॥

दोहा

देख रमण उद्यान में, बैठी थी बेचैन ।
सीता को आ त्रिजटा लगी इस तरह कहन ॥
दुःख में दुःख देने के लिये आई तेरे पास ।
जनक किशोरी क्या कहूँ, अपने मुख से माप ॥

त्रिजटा सीता के प्रश्नोत्तर—(बहरतवील)

त्रि०—मेरा आता कलेजा है मुख की तरफ,
क्या कहूं जैसी मैंने है बाणी सुनी।
क्या खबर कैसी बीतेगी कल को बहन,
जैसी कर्मों में है आज लागी तनी ॥१॥
मेरी फटती है छाती यह रुकती जबां
जब से लंका में मैंने कहानी सुनी।
मेरे तनका तो हाल भगिनी ऐसा हुआ,
जैसे चिपटी हो लकड़ी को खाने घुनी ॥२॥

सीता—क्या सुनी तैने ऐसी कहानी बहिन,
कृपा करके यह जल्दी सुना तो सही।
कौन तेरे सिवा मेरा हितकार है
प्यारी रंजो अलम यह हटा तो सही ॥३॥
मेरा दिल बैठता जाता है आज तो,
इसका कारण मुझ तू बता तो सही।
सारा कांपे जिस्म आता चक्कर मुझे,
मेरे दिल की तपस को बुझा तो सही ॥४॥

त्रिजटा—तेरा पहिले ही जब कि, बुरा हाल है
क्या सुना करके बेमौत मार तुझे।
मैं कहूं तो कहूं क्या अय सीता बता
यह भी अन्याय दिल से बिसराऊं तुझे ॥५॥

सीता—तो फिर देरी क्यों करती हो जल्दी कहो
मेरे दिल को तसल्ली बंधा तो सही।
क्या तू लाई खबर आज के जंग की,
जैसी है वैसी मुझको बता तो सही ॥६॥

सीता—धीरज कैसे बंधे साथो दिल में जरा
ऐसी हालत में किसका सहारा लेऊं।
जब धर्म ही गया तो फिर जीऊंगी क्या,
कर लाल दम में यहां से किनारा लेऊं ॥३॥
बिना लक्ष्मण व बीन के श्रीराम जी,
इससे अच्छा मैं पहले पुकारा लेऊं।
कर दें एहसान मुझ पर जरा आज पे,
ला गले मार अपने कटारा लेऊं ॥४॥

त्रिजटा—हमने तो क्या कहा तू समझती है क्या
स्यानी होकर भरम क्या गमाई सिया।
तूने समझा कि निश्चय वे मर ही गये
हमने मूर्छा है उनका बताई सिया ॥५॥
पहले मरी समझ ही तो मारी गई
तुमको आकर ये अफवा सुनाई सिया।
तेरे दुःख से दुखी आज मैं हो रही,
कैसे तुमको मैं निश्चय दिलाऊं सिया ॥६॥

दोहा

मसराहट करती हुई एक विद्याधरी आय।
सीता ने उसकी तरफ देखा नयन उठाय ॥

आंखों से पानी बरस रहा और दुर्बलता अति तन पर थी।
यह हाल कथन नहीं हो सकता जो आर्ति उसके मन पर थी ॥
देख हाल ये जनक सुता का विद्याधरी अकुलानी है।
और प्रेम भाव से सीता को यम बोली वा वाणी है ॥

जिन राज भजो मम धीर धरो शुभ परमेष्टी का जाप करो।
दुखियों का दुख निवारक ये मंत्र इससे संताप हरो॥
धन्य तुम्हें मय सत्रायी, सत्रापन सब निभाया है।
और परम धर्म का मर्म सिया हृदय में खूब जमाया है॥

दोहा

संतोष जनक सुनकर वचन, धरो जरा मन धीर।
सर्द श्वास भर मैत्रों का, पूछ लिया सब नीर॥

सूर्योदय की करम प्रतीक्षा, चकवी के मानिन्द लगी।
और जगदम्बा की जयावल की और निरंतर दृष्टी लगी॥
और इधर दशानन लक्ष्मण को, शक्ति लाकर झूरा होता है।
धम किया ध्यान भाई पुत्रों का सिर धुन धुन के रोता है॥

—❀❀❀—

रावण पश्चात्ताप

दोहा

कर मल मल पछता रहा दशकंधर रणधीर।
हा वत्स वत्स कर रहा कभी कह हा वीर॥
हा भाई भानुकर्ण फंसा किस तरह आज।
तेरे बिन मेरा सभी बिगड़ गया ये साज॥

छन्द

हाय इन्द्रजीत पड़ा, कैद शत्रु की फंसा,
प्राण प्यारा मेघवाहन भाग फांसी में फंसा।
क्या पता तुम पर भारि जन कष्ट क्या क्या लायेंगे।
हाय मेरे वीर सुत, कैसे यह दुख उठायेंगे।

मौन करके मुझे न सताओ जरा ॥१॥
दिवस का जैसा शशि ऐसा है मस्तक आप का।
सहना सकती दुख स्वामी, आपके सन्ताप का॥
मेरे दिल को तसल्ली बंधाओ जरा ॥२॥
आंख मेरी फरकती है दाहिनी अच्छी नहीं।
बात मेरी मानते तुम भी कोई सच्ची नहीं॥
मेरे सुत क्यों मुझ को दिखाओ जरा ॥३॥
क्या दुःख आया उदय मेरा ही खोटा कर्म है।
आपकी आंखों में कैसे आ रहा कुछ भर्म है॥
मेरे प्रीतम जरा तो दिखाओ जरा ॥४॥

दोहा

अय रानी मैं क्या कहूं अपने दुख का हाल।
कैद अरि ने कर लिये, मेरे दोनों लाल॥

छन्द

देवर तेरा भानु कर्ण भी आज उनकी जेल है।
साथ में थोड़े का बिगड़ा सभी यह मेल है॥
आज तक ऐसी कभी बीती न मेरे साथ थी।
लाखों हजारों की अकेले ने करी मैं घात थी॥
अब मिला मुझको विभीषण, दुष्टने धोखा दिया।
मुझ का लगा बातों में शत्रु का उधर मौका दिया॥
नाग फांसी में फंसा, धाके से उनको ले गये।
अब लगा हमको पता तो हाथ मलते रह गये॥
क्या खबर कैसी करे सुत भ्रात के संग में अरि।
भाग्य खोट से मरे, या अभय या रजनी पड़ी॥

(मन्दोदरी का गाना—समझाना)

कही मानों हमारी हमारी बलम ॥टेक॥

शेर

सिया हर के कहो तुमने, क्या फल पाया है।
हम तो साफ कहेंगे कि, इज्जत को गंवाया है॥
समर में मरवा के, कइयों को रांड बनाया है।
घर बेघर भी हुये कईयों का मारा कराया है॥
होती पर मारी कहर कटारी बलम ॥१॥

शेर

कहाँ पै गई वह आपकी, शक्ति साहिब।
बैठ अबला की तरह क्यों आंसू बहाये साहिब॥
सुत बन्धु ना किसी, शक्ति से छुटाये साहिब।
अब भी मानो मैं कही, सिर को झुकाये साहिब॥
कर दो वापिस ये, जनक दुलारी बलम ॥२॥

दोहा (रावण)

तू है कायर की सुता सो कायर कहाँ जाय।
कायर सुत पैदा किये फंसे कैद में जाय॥

फंसे कैद में जाय बता, इसमें क्या दोष हमारा है।
शत्रु की जो करी प्रशंसा ये दुर्वचन तुम्हारा है॥
कायर सुत पैदा करत ही, तभी मही क्यों मारा है।
सीता लटक रही तुमको, ये मैंने ठीक विचारा है॥

रावण का गाना

सारा भेद मुझे अब पाया है
तेरे हृदय को जिसने जलाया ।।

जो मर्जी सो करें आप मैं तो निज धर्म निभाऊँगी ।
प्रज्वलित प्रतापी महाराज, नित्य आपके शकुन मनाऊँगी ॥
धीर वीर गंभीर धुरन्धर, आप सा कोई धीर नहीं ।
पर यह भी मन में समझ लेवो श्रीराम का पुण्य कमजोर नहीं ॥
फंस गये कैद में सब योद्धे, दिल मेरा बड़ा धड़कता है ।
रह गये अकेले आप मेरा, यह दाहिना अंग फड़कता है ॥
एक दूत राम का आकर के, यहाँ सब की शान बिगाड़ गया ।
और निर्भयता से देवरमण में अक्षकुमार को मार गया ॥

दोहा (रावण)

प्राण प्रिया तू किस लिये, होती है दिलगीर ।
जब तक जीता जगत में, दशकंधर रणधीर ॥

एक रात का कष्ट मुझे कल, सभी ठीक हो जावेगा ।
लक्ष्मण के मरने बाद सभी शत्रु दल पीठ दिखावेगा ॥
अमोघ विजय शस्त्र मैंने लक्ष्मण के हृदय मार दिया ।
बस इसी समय रण भूमि में, लक्ष्मण ने देह पसार दिया ॥
जब तक रजनी तब तक उसके श्वासों की आस मनावेंगे ।
सूर्य की किरनें नजर पड़ी परभव का शीघ्र सिधावेंगे ॥
प्रातः काल ही मय राणी वर पुत्र छुड़वा दूंगा ।
सारोंग प्राण बचा करके, तम्बू डेरे उठवा दूंगा ॥

रावण गाना (न० ८०)

मेरे प्राणों की प्यारी, तजो मत फिकर,
यहाँ पुरुषार्थ नहीं है किसी का नजर ।
कल को दिखला दूं, करके ये बातें सभी,
आज की रात का पर उसकी सबर ।१।

बीस लाखों को ही, संख्या को बढ़ा के मारा ।१।
राम और शिव का बैर सदा से है,
आप तो बीज हैं क्या असुरों को रुला के मारा ।२।
अन्त गति सो मति, ये भगवान ने भाषा,
पिया कुमति ने तुम्हे, आज मुला के मारा ।३।
एक देवर ही विभीषण थे रत्न लंका में,
उस धर्मी का भी निज तूने सता के मारा ।४।
बन गया उसके बिना, सब बाग सिंजा का
रहा बाकी जो सभी तूने कटाके मारा ।।५।।
अबके संख्या पे मुझे, विधवा बनाओगे,
कैसे दिल धीर धरू, पुत्रों को फंसा के मारा ।६।
मेरी नैया था डूबत, ध्यान भंवर में अटकी,
हुआ मेरा ये कुटुम्ब तुमने रुला के मारा ।।७।।

दोहा (रावण)

बुद्धिहीन क्यों कर रही अशकुन यहां अपार ।
यदि आगे कुछ भी कहा, लेऊं शीश उतार ।।

भाग्यहीन यह बता कौन मर गया जिसे तू रोती है ।
रोवेंगे राम मर गया लक्ष्मन तू क्यों वृथा तन खोती है ।।
बत्तीस लाखणी आप बने और बीस में हमें बताती है ।
रत्न विभीषण को कह कर क्यों छाती मेरी जलाती है ।।
बार बार कह दिया तेरे पुत्र हम सभी छुड़ावेंगे ।
शत्रु का करके नाश सवेरे, झगड़ा सभी मिटा देंगे ।।
रत्न जिसे कहती पहले उसको परभव पहुंचाऊंगा ।
क्योंकि उस पर हूँ जला हुआ यह हृदय शान्त बनाऊंगा ।।

गाना (रावण)

विभीषण दुष्ट ने ही भेद शत्रु को बताया है
मेरे पुत्रों व भाई को, इसी ने तो फंसाया है ।१।
भूम वन वन की फिरते छानते थे भील दोनों ही,
गुप्त सब भेद देकर के इसी ने तो बुलाया है ।२।
फौज सुसरों की लेकर के बहादुर बन गये ऐसे
ईमरत ही कमीनों में, मुझे भी जाम पाया है ।३।
यदि भानु न छिपता आज, तो करता खतम सबको
पुण्य उनके ने भय रात्री, आज उनको बचाया है ।४।
स्वाद छक्का पे चढ़ने का सवेरे ही चखा दूंगा,
आज कर्मों की चालों ने, ही पुत्रों को फंसाया है ।५।
करूं पटनार सीता का मैं पहले कर फना उनको,
'शुक्ल' परी ना शिक्षा न मेरे दिल को सताया है ।६।

गाना (मन्दोदरी)

अय प्रीतम न ऐसा ख्याल करो मती सीता तरफ न ध्यान करो
यह व्यभिचारी परनारी है दराकृपर दिल में ज्ञान करो ।१।
मैं दासी अर्ज ये करती हूँ हा स्वामी चरण में पड़ती हूँ
चरण रजमस्तक पर धरती हूँ हे नाथ न इतना मान करो ।२।
घर पर में हजारों हैं नारी मुझसी कई आपके पटरानी,
सब हैं आतुर सुन्दर स्यानी कर सबर जरा आराम करो ।३।
यह सीता है इक तेज छुरी कुल नाश करेगी है बड़ बुरी,
मरी सभ माता जा वाल पुरी इस तरफ न बिल्कुल ध्यान धरो ।४।
मैंने परख लिया उसको जाकर और हार गई मैं समझा कर,
तुम लाया उसे यहाँ पहुँचाकर ना झगड़ा घर दरम्यान करो ।५।

यह स्वप्न में भी नहीं चाहती है, तेरी सूरत उसे न भाती है,
कभी नाम ना सुनना चाहती है अब व्यर्थ ना हैरान करो ।६।
कब राम लङ्क धंस जायेंगे और तुमसे जङ्ग मचायेंगे,
मुझको भी अनाथ बनायेंगे लङ्का को ना विरान करो ।७
मेरी अन्तिम विनती मान पिया, मत मारा करेगी जान सिया
हठ ऐसा क्यों तुमने ठान लिया श्री राम की शक्ति प्रमाण करो ८
अब अशुभ ध्यान सब दूर हरो, और शुक्ल ध्यान भरपूर करो,
कुछ नेक नाम मशहूर करो जिन शिक्षा अमृत पान करो ।६।

रावण—अयि मूढ़ नारी तू क्या हठ करे,
तेरा उपदेश सुनना मैं चाहता नहीं ।
क्योंकि बातें ही तेरी है वृथा सभी
कभी शत्रु से मैं घबराता नहीं ।१।
चाहे राणी हजारों हैं घर में मेरे
सीता जैसी कोई एक राणी नहीं ।
रूप लावण्य में समता हो ना सके,
नक्शा उसका मेरे दिल से जाता नहीं ।२।
कभी मानेगी सीता समझ आप ही,
अब तो जाने की यहाँ से ना यो भी रही ।
तैने बातें बनाकर यह सारी कही
तेरे कहने पर विश्वास लाता नहीं ।३।
वो प्यारी सिया मेरे मन भा गई,
उदय पुण्य से मेरे हाथ आ गई ।
चाहे नागिन बुरी वह कारी सही
उसको वापिस तो मैं भी पहुँचाता नहीं ।४।

लाचार गई निज महलों में, पर दिल अन्दर से धड़क रहा ।
रावण शय्या पर पड़ा हुआ, मानिन्द मीन के तड़फ रहा ॥
उधर सभी वैद्यों ने, अब अपना जोर लगाया है ।
पर वीर सुमित्रा नन्दन को, आराम नहीं कुछ आया है ॥

औषधि

दोहा

विद्याधर प्रतिचन्द्र जी, आये दक्षिण द्वार ।
भामंडल को प्रेम से बोले गिरा उचार ॥
यदि प्रेम है आपका रामचन्द्र के साथ ।
तो हमें वहाँ पहुँचाय दो आज निभायें साथ ॥
कौन आप इसका पता देवें सभी बताय ।
निश्चय करके हम तुम्हें, देंगे दर्श कराय ॥
ठीक हमें तुम समझ लो रामचन्द्र के दास ।
बाकी फिर बतलायेंगे रघुनन्दन के पास ॥

शक्ति दूर हटाने की औषधि, बताने आया हूँ ।
कृपया जल्दी बतला देओ, उनके दुख से घबराया हूँ ॥
प्रात काल से पहले ही उनका, इलाज हो जावेगा ।
यदि देर हुई ज्यादह मेरा, आना निष्फल कहलावेगा ॥

दोहा

दिल में साफ विचार के, इन्तजाम के साथ ।
पास गये श्री राम के, तुरन्त निवाया माथ ॥
सूर्यवंशी कुल मणी मुकुट, हे स्वामी जगताज ।
वचननिवेदन पर जरा ध्यान धरें महाराज ॥

शक्तिहीन भैंसा वहाँ पड़ा मार्ग में आन।
दुखिया उठ सकता नहीं, आगे सुनो बयान॥

अज्ञानी जन उस भैंसे के, ऊपर से आने जाने लगे।
कई दुष्ट और बालक जन भी दुखिया का खून बहाने लगे।
अकाम निर्जरा होने से वायु कुमार जा देव हुआ॥
फिर अवधि ज्ञान से देखा है पर्याप्त जब स्वयमेव हुआ।

दोहा

निज मृत्यु का जब लखा, सुर ने सारा हाल।
सभी देश पर देव को, चढ़ा रोप विकराल॥

कोपातुर हो उसी समय, व्याधि सब जगह फैलाई है।
भयभीत हुए उस महा रोग से जनता अति घबराई है॥
द्रोण्य मेघ मामा कारण वश इसी राज्य में रहता था।
उस जगह व उसके आस-पास यह रोग नहीं कुछ करता था
मैंने फिर मातुल से पूछा किम कारण यहां रोग नहीं।
और आपके आस-पास मेरी, जनता पर भी कुछ शोक नहीं॥
द्रोणमेघ ने बतलाया, कि प्रियंगु जो मम राणी है।
यह रूप, जरा कुछ रहती थी जो धमन चतुर सयानी है।

छन्द

गर्भ के प्रभाव से राणी का, दुख सब हट गया।
जहां पाव राणी ने धरा उसका भी संकट कट गया॥
कन्या हुई पैदा गर्भ का काल जब पूरा हुआ।
था यों कहो पैदा सभी का पुण्य अंकूरा हुआ॥
इस तरह ही दश भर में भी मारा शोक था।
जिस जिस जगह कन्या फिरी यहां का मिटा सब रोग था॥

प्रतिचन्द का गाना

ये कथन मेरा प्रमाण करो, अब लक्ष्मण को आराम करो ॥टेक॥
कोई वीर चतुर अब भिजवाओ, स्नान का पानी मंगवाओ।
लक्ष्मण पर स्वामी छिड़काओ, अब देरी का न काम करो ॥१॥
देवी शक्ति नुकसान करे, कोई औषधि ना यहां काम करे।
अक्सीर यो इसका मान हरे
अब मन में मत आराम धरो ॥२॥

दोहा

प्रतिचन्द के वचन सुन, हर्षे अति रघुराय।
हनुमान अंगद सुभट, शीघ्र लिये बुलवाय॥

भामंडल से विराजमान योद्धा सकल बुलवाये हैं।
श्रीराम ने जल की महिमा का, सब भेद खोल बतलाये हैं॥
कर जोड़ सामने खड़े वीर, तन-मन से शीश झुका करके।
श्री रामचन्द्र तब लगे कहन, सब को ऐसे समझा करके॥

दोहा (श्रीराम)

भामंडल हनुमान जी, अंगद सुभट सकील।
बैठो अभी विमान में जरा न लाओ ढील॥

अर्ध रात्रि से ज्यादह रजनी का हिस्सा बीत गया।
इस लिये सभी योद्धाओं का और मेरा मन भयभीत हुआ॥
आज तलक तुम सेवक थे अब सभी धर्म के भाई हो।
अपने मुख से क्या कथन करूं बस तुम ही मेरे सहाई हो॥
जो-जो तुमने उपकार किये मुझ पर मैं नहीं कह सकता हूं।
यश हनुमान अंजनी लाल तेरे गुण नहीं कह सकता हूं॥
गम्भीर भंवर में नाव पड़ी, तुमने ही पार लगाना है।
यह घाव किया दशकन्धर ने सो आपने आज मिटाना है॥

दोहा (हनुमान)

दशकन्धर ने अनुज के, मारी शक्ति तान।
मूर्छित हो धरणी गिरा सब दल है हैरान॥

छंद

इस समय वैशल्या के, स्नान का जल चाहिये।
साथ पक्ष करके प्रथम, वह जल हमें दिलवाइये॥
जिन्दगानी लक्षण की उस जल बिना स्वामी नहीं।
पैदा करे यह औषधि उस सम कोइ हामी नहीं॥
प्रभात से पहले ही पहले, काम करना है सभी।
रह जायेंगे कर मसलते यदि भानु निकल आया कभी॥

दोहा

राम लखन का कष्ट सुन भर आये जल नैन।
समय सोच कर भरत जी लगे इस तरह कहन॥
चलो अभी क्या देर है द्रोण मेघ के पास।
जल्द सो क्या भेजूं अभी वैशल्या ही खास॥
भरत शीघ्र ही चलदिये लेकर सब को साथ।
द्रोण मेघ आया महल ऊपर पिछली रात॥

प्रथम जगाया द्रोण मेघ फिर सारी बात सुनाई है।
द्रोणमेघ ने उसी समय वैशल्या तुरत जगाई है॥
आदि अन्त पर्यन्त सभी लक्षण का भेद बताया है।
इस बात ने वैशल्या के भी हृदय का सूत्र सताया है॥
वैशल्या के संग चलने को सभी सखी तैयार हुई।
और मात पिता की आज्ञा से विमान में तुरत सवार हुई॥

दोहा

इसी समय मठ चल दिये पवन पुत्र बलधार।
अवध पुरी में भरत का आकर किया उतार॥

इस अन्तर में श्रीरामचन्द्र, मन में धीरज नहीं धरते हैं।
कभी बिना मीन ज्यों तड़फ रहे विमान प्रतीक्षा करते हैं॥
दुःख सागर में लीन और, आँखों से आँसू गिरते हैं।
मोह के वश श्रीरामचन्द्र फिर ऐसे गिरा उचरते हैं॥

श्रीराम का विलाप

रात भी आज तो विमान बनी जाती है।
भाई लक्ष्मण की सव्य हाय नहीं आती है।
हाय कर्मों ने मुझे, कैसे दशा के मारा।
आज अपनी ना व्यथा मुझसे कही जाती है॥१॥
उपकार तेरा मैं ना कभी भूलूँगा।
आज मुझ पर तू दया क्यों न जरा लाती है॥२॥
दुखिया की मदद कर नेक सहायक बन जा।
किस लिये आज तू तूफान बनी जाती है॥३॥
आज तक रैन भर अनुकूल रहा करती थी।
आज तू मुझ से क्यों विपरीत बनी जाती है॥४॥
तू ही दया करके फलक सूर्य को छिपा रखना।
क्योंकि अब रात तो प्रभात बनी जाती है॥५॥
अब तलक आये नहीं हनुमान भी औषधि लेकर।
क्या करें कोई मेरी किस्मत ही फिरी जाती है॥६॥
कहाँ आकर के दगा तूने दिया भय माई मुझ को।
और माता के हृदय की ये पक्षी जानी है॥७॥

सीम से दो हम बनें, अब तो अकेला ही रहा ।
कस को मैं भी ना रहूँ, साफ नजर आती है ॥८॥
माता और भ्राता लखर, सुनते ही प्राण तजेंगे ।
शुक्ल कर्मों से मेरी, पेश नहीं जाती है ॥९॥

दोहा

राम इस तरह हो रहे ऐसे आर्त अंत ।
आ पहुँचे उस तरफ से उदधि पर हनुमन्त ॥

छंद

उदधि पे आ बिमान की सहसा चमक जिस दम पड़ी ।
राम क्या सब राम सेना साथ सागर में पड़ी ॥
अति तेज उस बिमान का प्रतिबिम्ब जब जल में पड़ा ।
कुछ दुखी को धैर्य कहां, महाशोक सब दल में बढ़ा ॥
तेज कर विमान को, उस तरफ हनुमन्त ने बढ़ा ।
और आँसुओं का जल यहाँ इस कष्ट में सब के बहा ॥
राम के दुःख की कोई सीमा कही जाती नहीं ।
क्षण भर की वा बिपदा यहाँ वर्णन में आ सकती नहीं ॥

दोहा

सन सन करता आगया क्षण भर में विमान ।
वानर सेना को हुई दिल में खुशी महान् ॥

सूर्य प्रकाशी कमल जिस तरह देख रवि को खिलते हैं ।
या भानु को लख दम्पपति चकवा चकवी प्रेम से मिलते हैं ।
या यों कहिये कि मीन तड़पती का धल पर आ नीर मिला ।
या क्षुधातुर बच्चे का जैसे माता ने दिया क्षीर पिला ॥
दाह रोगी को जैसे शीतल बामना आपी होता है ।
या तृषातुर रोगी की जैसे, भारन सुखी सोता है ॥

देख सरोवर ठंड को तृपातुर आनन्द पाता है।
श्रीरामचन्द्र भी देख मान को मन में खुशी मनाता है॥

मूर्छा निवारण

दोहा

जय जय योद्धों ने किया हनुमान सिखाया साथ।
उतरी वैशल्या सती सिव सखियों के साथ॥
प्रणाम किया वैशल्या ने, श्रीराम को आय।
देर न कर पुत्री करो कहा राम समझाय॥
फेरा जिस दम सती ने हृदय पर निज हाथ।

शक्ति भागी निकल जिम रवि सामने रात॥
वज्र धारी के तीर से जिम धरणी से नीर निकलता है।
या जरा सावसी रखने से जैसे पग्र कांटा निकलता है॥
महा प्रबल सिंहनी के आगे हथिनी कैसे कब सकती है।
बस इसी तरह वैशल्या आगे, शक्ति कब डट सकती है॥
मानिन्द चोर के भगी सती दम पवन पुत्र ने पकड़ लई।
या बाज ने जैसे चिड़िया को ऐसे निज कर में जकड़ लई॥
दुःख जो था वो निकल गया फिर चेत अनुज को आया है।
अति नम्रता से शक्ति ने, हनुमान को वचन सुनाया है॥

दोहा (शक्ति)

प्रज्ञप्ति की बहिन हूं, महा शक्ति मम नाम।
दोप नहीं मेरा कोई करू बताया काम॥

रावण के आधीन करी धरणेन्द्र ने समझ करके।
दशकंधर ने लक्ष्मण ऊपर, मुझको छोड़ा गुस्सा करके॥

यदि भानु चढ़ने से पहले वैशल्या यहाँ नहीं आती ।
तो काम सिद्ध था रावण का लक्ष्मण की जान निकल जाती ॥
पुण्य प्रबल है रामचन्द्र का, लक्ष्मण की है उमर बड़ी ।
जो प्रातःकाल से पहले ही वैशल्या यहां पर नजर पड़ी ॥
इसका तेज प्रताप इस समय, मुझसे सहा नहीं जाता है ।
कृपा कर छोड़ देवो मुझको, क्योंकि हृदय घबराता है ॥

दोहा

फेर नहीं इन पर कभी करने की मैं वार ।
नमस्कार तुम चरणों में, करती बारंबार ॥

तेज प्रबल वैशल्या का यह मुझसे सहा न जाता है ।
थर थर कांपे गात मेरा कर्तव्य ही मुझे सताता है ॥
मेरा इसमें कुछ दोष नहीं क्योंकि सेवक की भांति हूं ।
यह नम्र निवेदन है मेरा स्वतन्त्र करो मैं जाती हूं ॥

दोहा

दीन वचन सुन वीर ने दई उसी दम छोड़ ।
दृष्टि से गायब हुई दौड़ गई मुख मोड़ ॥

बावना चोवा चन्दन का लक्ष्मण के तन पर लेप किया ।
कुछ वैशल्या ने फेर फेर कर, घाव हृदय का मेल दिया ॥
प्रेम भाव से वैशल्या लक्ष्मण के, दुख को खोने लगी ।
वानर दल में उत्साह सहित जयकार ध्वनी अब होने लगी ॥
कोई उछल उछल कर कूद रहा फूला न अंग समाता है ।
कोई दांत पीस रहा रावण पर, और क्रोध से धरा कंपाता है ॥
कई रामचन्द्र के पास पहुंच चरणों में शीश नवाते हैं ।
वीर मिल जल सुरा का भर झारी अति प्रेम से गान सुनाते हैं ॥

गाना (आनन्द मनाना)

आनन्द मंगलम् आर, गावो गावो ।
श्रीराम पै बलिहार आवो आवो ।टेर।

करुणामय वीर की खुशियाँ मनावा
आज विजय का नाद बजावो, बांटो लाखों इनाम ॥१॥
मगधम् की कृपा हुई भारी,
आई यहाँ पर राजकुमारी, मिलाया शक्ति प्रहार ॥२॥
सती धर्म दिखलाया आकर,
विशल्या ने शक्ति हटाकर सती पै जावो बलिहार ॥३॥
योग्य भावना निर्मल भावो,
न्याय पाल अन्याय मिटावो हो सत्यमय तैयार ॥४॥
रामचन्द्र की विजय है भारी
रावण ने कुमति मन धारी, अब लेंगे लंक दरबार ॥५॥
याद्वे कैद किये रावण के,
अब नहीं आजादी पावन के, हम दिल खुशी अपार ॥६॥
सीता सती का कष्ट मिटावा
लंका की अब धूल उड़ावो शत्रु का शीश उतार ॥७॥
चौहार फिर फिर राम लखन हैं
पूर्ण किये का यह यचन हैं, दुखी जन के आधार ॥८॥
तन मन धन म सेवा करना
धर्म यश परभव में सुर पद लो शुक्ल ध्यान शुभ धार ॥ ६ ॥

दोहा

आनन्द दिल में छा रहा मिट गया सकल कलेश ।
वानर दल के शूरमा उमाद परे विशेष ॥

सब क्लेश भगा वानर दल से, ज्यों भान्वोदय से तिमर भगे ।
गद् २ कंठ हो रहे राम थे, भ्रात के प्रेम से अति पगे ॥
बाजे खुशी के खूब बजाओ, हनुमत ने आदेश दिया ।
क्षण भर में राम के अंक में लक्ष्मण ने नेत्रों को खोल लिया ॥

दोहा

हर्षोदधि झट उमड़ पड़ा, दल में चारों ओर ।
अनुज वीर कहने लगा, उसी समय कर जोड़ ।
रंग ढंग सब खुशी का आता नजर अपार ।
नेत्रों से फिर किस लिये आप नीर रहे डार ॥

नेत्रों में पानी भरा हुआ भाई क्या कारण है इसका ।
और अभी क्लान्ति हुई क्षीण है कहो आपका भय किसका ॥
पहरा नंगी तलवारों का, किस कारण कोट लगाया है ।
अनुमान नजर आता सबने आंखों से नीर बहाया है ॥
यह राज कुमारी कौन कहां की कैसे यहां पर आई है ।
जयकार शब्द के सहित खुशी सबके चेहरे पर छाई है ॥
यह स्वप्न मुझे कोई आता है या साक्षात् ही देख रहा ।
और किस कारण हे भ्रात आपकी गोदी में हूं लेट रहा ॥

दोहा

सुने वचन जब भ्रात के, हर्षित राम अपार ।
कण्ठ भ्रात को लाय यूं, बोले कौशल्या कुमार ॥
शक्ति तुमको थी लगी, जब भय लक्ष्मण वीर ।
उसी समय धरणी गिरे, मूर्छित हो रणधीर ॥

हम आस तुम्हारे जीने की तजकर, मनमेष परमाते थे ।
बस कारण यही उदासी का जन तानों में भय खाते थे ॥

श्री प्राण मेघ की सुता सती ने शक्ति आन हटाई है।
हनुमत आदि जाय जाकर इस कारण यहां पर आई है॥

दोहा

है प्रत्यक्ष यह बात सब स्वप्न नहीं यह भ्रात।
गाज हमारी में रहा बीर आज की रात॥

आराम हुआ तुमको भाई इस कारण खुशी मनाते हैं।
जयकार शब्द की ध्वनि सहित सब जिनवर के गुन गाते हैं।
यह इसीलिये सब क्षेम बनें, पहरा नंगी तलवारों का।
और नजर तुम्हें आया सब कुछ यह हाल सिपहसालारों का॥
भय भाइ दशकंधर ने तो यहां महा विघ्न कर डारा था।
यह जन्म दूसरा हुआ तेरा कुछ बाकी पुण्य हमारा था॥
प्रत्युपकार नहीं है सकता हनुमंत आदि सब योद्धों का।
शक्ति नहीं मेरी जिह्वा में आराध्या का अनुमोद् क्या॥

दोहा

सु मुस्काकर फौरन उठे बीर सुमित्राललाम।
राम सरासन हाथ म यों बोले तत्काल॥

लक्ष्मण जी का गाना

अब तो रावण का शीश उड़ायेंगे हम।
कल की शक्ति का बदला चुकायेंगे हम॥
अब के रावण समर में जीता कभी ना जायेगा।
यदि गया तो अनुज दशरथ का सभ्य कहायेगा॥
उसके सारे ही दाव भुलायेंगे हम॥१॥
भाई का भाई वचन पूर्ण ही कर दिखलायेगा।
ताज रावण का बिभीषण के ही, शीश टिकायेगा॥
सीता माता को शीश झुकायेंगे हम॥२॥

लाला मैं माता सुमित्रा का तभी कहलाऊँगा।
सीता सहित श्रीराम को जब अवध में पहुँचाऊँगा॥
नहीं तो जीते अवध को न जायेंगे हम॥३

दोहा (राम)

भाई पहले कीजिये करने वाला काम।
फिर निश्चय तुम शत्रु का पहुँचाओ परधाम॥

कौशल्या से हे भ्राता तुम, पहले पाणी ग्रहण करो।
उपकार किया जिसने ऐसा उसका भी तो कुछ कहन करो॥
यह पति तुम्हें है मान चुकी, इस भव का राजदुलारी है।
गम्भीर सती यह माता सदा जिन स्वामी सभी निकारी है॥

दोहा

मौन राम के वचन सुन, हुए सुमित्रा लाल।
कौशल्या ने लखन को पहनाई वरमाल॥

सभी सहेलियों सहित वहाँ पर, कौशल्या का विवाह हुआ।
था पुण्य बड़ा श्रीराम लखन का दुख जिन्हों का सुदा हुआ॥
अति खुशी सहित लखन वहाँ पर, श्रीराम के दल में होने लगा।
यह खबर लगी जब रावण को तो सिर धुन २ के रोने लगा॥

रावण विचार

दोहा

उसी समय लंकेश ने, मंत्री लिए बुलाय।
ठंडा लेकर श्वास फिर, यों बोला अकुलाय॥
बतलाओ सब को सोचकर, अब क्या करूँ उपाय।
रामचन्द्र से जीव हो सुत बान्धव छुट जाय॥

मन में बड़ी उमंग थी भर गया लक्ष्मण वीर।
किन्तु आज आनन्द में है शत्रु रणधीर ॥

बाजे खुशी के बजते हैं और उत्सव का कुछ पार नहीं।
उड़ गये अकल के तोते सुनकर जिस को खबर क़रार नहीं ॥
अब लेने के पड़ गये देने मैं सभी चौकड़ी भूल गया।
और ब्याज की आशा आशा में मिल गाँठ का सारा मूल गया ॥
बतलाओ तजवीज कोई जिस तरह शूरमा छुट जावें।
और रामचन्द्र के भी तम्बू डेरे, यहाँ से सब उठ जावें ॥
बुद्धि अपनी का परिचय इस कड़े समय में दिखलाओ।
सब सोच विचार करो मिलकर मेरे मस्तक में बिठलाओ ॥

दोहा (दरबारी)

महाराज आपको प्रथम ही समझाया हर बार।
किन्तु निवेदन आपने किया नहीं स्वीकार ॥

जो बीत गई सो जाने दो अब भी कुछ सोच विचार करो।
सीता को वापिस भिजवा कर श्री रामचन्द्र से प्यार करो ॥
नार पैर की जूती है यदि एक नहीं तो और मिलें।
पुत्र हैं कोर कलेजे की आसान कहो किस तौर मिलें ॥
राजपाट और ऋद्धि क्या इस प्राणी को हर बार मिले।
जो तुम कहो न किये आपने फिर से वापिस राज किये ॥
सीता जैसी राजकुमारी और कई ला सकते हो।
पर जन्म जन्म में कुम्भकर्ण सा वीर नहीं पा सकते हो ॥
बड़-बड़ योद्धा समझो सब आज कैद में सड़ते हैं।
फिर किस शक्ति पर आप जरा बतलाइये यहां अकड़ते हैं ॥
अबके रण में क्या खबर आप किस हालत में आ पहुँचोगे।
फिर शत्रु लंका लूटेंगे यदि अब भी आप ना सोचोगे ॥

सीता को वापिस करने में, सुत भ्रात सभी छुट जावेंगे।
श्रीराम सिया को लेकर के, बस उसी समय सुख पावेंगे॥
है तेज प्रताप प्रचण्ड राम का, विजय नहीं पा सकते हो।
यदि अब के रण की ठानोगे तो वापिस नहीं आ सकते हो॥

दोहा (रावण)

शत्रु से कर विनती मिलते कायर क्रूर।
मिलते हैं तलवार से, मर्द दिलावर सूर॥

यह वही भुजा हैं सुर सुन्दर नैसों का मान घटाया था।
सहस्रांशु नृप भी हार गया नलकूबर ने झुकवाया था॥
दुर्लंघ्यपुर पति नल कुबेर, था कोट वहां आसाली का।
क्या हाल किया था बार कैद में मैंने इन्द्रमाली का॥
पुत्र रत्नप्रभवा का रत्न हूँ, आज भयंकर युद्ध मचाऊं।
दंड घमंड का देऊं लक्ष्मों को तेग प्रचंड से शीश उड़ाऊं॥
वामर दल का धूर जहर जहर में धूल में धूल मिलाऊं।
सुत भ्रात छुड़ाय के लाऊं तभी कैकसी क्षत्राणी का पुत्र कहाऊं॥

रावण का गाना

मेरी शक्ति का अब तक भी न दुश्मन भेद पाया है।
मिलू शत्रु से जाकर के, वाक्य किसने सिखाया है॥ १॥
मिला करती है भाई से बहिन या पुत्र माई से।
किन्तु क्षत्रिय का मिलना तेग की धारा से आया है॥ २॥
मात सुत भ्रात और बान्धव मिले यदि न मिले तो क्या।
कठिन सीता का मिलना है समझ मेरी में आया है॥ ३॥
देखकर रूप सीता का शर्म खाती है इन्द्राणी।
इसे वापिस करो कहते, तुम्हें किसने बहकाया है॥ ४॥

प्यारी जानकी बस नाम के ही, साथ जावेगी।
मेरे जख्मी जिगर पर नमक, क्यों तुमने लगाया है॥ ५॥
यदि अपना भला चाहो शुक्र, यह वचन मत कहना।
तुम्हारा दुष्ट मन्त्र यह नहीं मुझको सुहाया है॥ ६॥

दोहा

रोग असाध्य अब बन चुका समझ गये मन्त्रीश।
काल शीश पर आगया, इसके विश्वावीस॥

दोहा (मन्त्री)

जो मर्जी सो कीजिए, महाराज रणधीर।
सुत बान्धव जैसे छुटें, क्या नहीं बलवीर॥

रावण दूत

रावण ने श्री राम पै दीना दूत पठाय।
पहुँच दूत श्रीराम से, चरणा शीश झुकाय॥

दोहा (दूत)

सूर्यवंशी कुलमणी मुकुट वर बुद्धि बलवीर।
नमस्कार मम कीजिए, हे स्वामी रणधीर॥

दशकन्धर ने फरमाया है किस कारण रार बढ़ाते हो।
तुम एक नार के पीछे क्यों घृथा बल वीर कटाते हो॥
भामाथ विजय से बचा अनुज, भाई पर ख्याल तुम्हारा है
पर अभी सुदर्शन चक्र का तो बाकी वार हमारा है॥

दोहा

शम्बूक को तुमने हना हम हर लाये नार।
यहाँ तक तो हम तुम रहे, सब दांवों एकसार॥

किन्तु शम्बूक का पाप, सिया हरने से नहीं मर सकता है।
शम्बूक वापिस करने से ही सीता प्राप्त कर सकता है॥
लाल सुन्द का छीन लिया, यह भी अपराध आपका है।
अन्याय पे तुमको तुले हुवे न ध्यान किसी के सन्ताप का है॥
हम जितने होत नरम नरम उतने तुम सिरपर चढ़ते हो।
कर लिये कैद छल से योद्धे क्या इस पर आप अकड़ते हो॥
पर याद रहे मैं इन बातों से कभी नहीं घबराता हूँ।
क्या मारू मैं तुम मुर्दों को, यह फिर भी करुणा आता हूँ॥
यदि तुम्हें राज्य की इच्छा है सो भी मैं पूरी कर दूंगा।
शरणा गतमेरा आजाओ जितना दुख सारा हर लूंगा॥
अर्ध राज्य सब लंका का, तो भाग आज से करवा लो।
क्यों फिरते मन की भूल छामते ताज शीश पर चढ़वा लो॥
और एक सिया के बदले में निज पुत्री तुमको विवाहता हूं।
जितने तुमने अपराध किये, सब क्षमा मैं करना चाहता हूँ॥
यह बात नहीं स्वीकार सभी, तो तुम सा कोइ निर्भागय नहीं।
अनमोल समय यह बार बार फिर आपका आना हाथ नहीं॥

दोहा

सुत बान्धव सब छाड़ कर, करो बात प्रमाण।
जीत आपकी सब तरह करो हृदय में ज्ञान॥

दोहा (राम)

दिव्य दृष्टि म भूप मे खूब विचारी आज।
किन्तु यहाँ आये नहीं, लेने का हम राज॥

लंका तो क्या सब दुनियां क राज की कोइ अभिलाषा नहीं।
है स्वल्प दिनों का जीना पर, कुछ क भी प्यास की आस नहीं॥

दोहा

सुनकरके व्याख्यान ये, उठे सुमित्रा लाल।
अरुण वरण कर नैन दो, बोला जैसे काल ॥

दोहा (लक्ष्मण)

घर में बैठा स्वान की तरह रहा गुर्राय।
कल क्यों भागा था राम के आगे पूंछ दबाय ॥

मानु जितना चढ़ता उल्लू अन्धा होता जाता है।
बस यही हाल है रावण का निज गौरव खोना चाहता है ॥
सुन भ्रात कैद में पड़े सभी, बराम शर्म नहीं आता है।
ठीक मात रस्सी का जलने पर भी बल नहीं जाता है ॥
कब तक यहां छिप कर बैठोगे, यह कह देना दशकन्धर का।
अब रण में आकर अजमाइये, श्रीराम के पुण्य सिकन्दर को ॥
कायर क्रूर अधर्मी अपना कब तक भला मनायेगा।
अब तो परभव में निश्चय ही बस यमराज तुम्हें पठायेगा।

दोहा

उत्तर देन को हुआ दूत फर तैयार।
धक्का दे हनुमान ने किया कैम्प से बाहर ॥

आदि अंत परियंत बात जाकर रावण का बतलाई।
सुन तड़क भड़क के वचन दशानन की आत्मा कुछ घबराई ॥
उसी समय सामन्त मन्त्रियों से, सम्मति मिलाई है।
जनक सुता वापिस करने में सबने कही भलाई है ॥
सिया विरह की बातों ने दशकंधर पर आघात किया।
कुछ लक्ष्मण जी के शब्दों ने हृदय पर वज्रपात किया ॥
हा गये सोच में मग्न कोइ तरकीब नजर नहीं आई है।
कुछ देर बाद बहुरूपिणी विद्या पर निज दृष्टि जमाई है ॥

विद्या साधन

दोहा

साधू बन बहुरूपिणी, विद्या पूरे आस।
दशकन्धर ने कर लिया, अपने दिल में साहस॥

उसी समय कर लिया ध्यान जा बैठे औषधशाला में।
पढ़-पढ़ कर मन्त्र लगे जोड़ने, मग्न के सुरति माला में॥
मंदोदरी ने द्वारपाल यमदंड को पास बुला करके।
उपधाम तपस्या करवाओ, यह कहा खूब समझा करके॥

दोहा

उसी समय यमदंड ने दई डौंडी पिटवाय।
आठ दिवस तक का हुक्म, विद्या असिद्ध कराय॥

गुप्तचरों ने पास विभीषण के, यह बात पहुँचाई है।
सुन वानर दल में उसी समय सब जगह सनसनी छाई है॥
एक सिद्ध ही बस नहीं, फिर कैसे पार बसायेगी।
यदि सिद्ध हो गई विद्या तो फिर मौत सभी की आयेगी॥

दोहा

वानर दल के भाव से करें संग सब ध्यान।
रामचन्द्र के पास फिर, लगा मित्र समझान॥

परम प्रतापी सत्पुरुष, प्रियवादी सुखदान।
प्रतिपालक दुखी जनन के, सुना लगाकर कान॥
सुना लगाकर कान गुप्तचर, पता लंक से लाया है।
रावण ने बहुरूपिणी साधन का प्रारम्भ लगाया है॥
आठ दिवस तक करा तपस्या सब पर हुक्म चढ़ाया है।
कीजे शीघ्र उपाय कोई, नहीं काल सभी सिर आया है॥

दौड़

कोई रणधीर पढ़ाकर, ध्यान स देखो पसाकर, विघ्न ऐसा पड़ने स, विद्या सिद्ध न होय कभी, उसके उपाय करने से।

दोहा (राम)

सखा धीर मन में धरो, क्यों घबराये आप।
पापी के मारन के लिये, प्रबल उसी के पाप॥
कर्तव्य जिसका ठीक है, सिद्धि उसके होय।
किन्तु सिद्धा अपथ्य ही सदा हेम को जाय॥

प्रथम तो पक्ष चहाँ बांसों के, यदि लगें तो उनकी शामत है।
और सन्निपातयत रामरा को विद्या मिश्री के मानिन्द है॥
विप मिश्रीत पात्र में शुद्ध अमृत भी विष हो जाता है।
एक पुण्य मिश्रविन सब मंत्र यंत्र निष्फल कहलाता है॥
यदि मंत्र है ता दुनिया में मंत्र एक पुण्य सिकन्दर है।
सो विधि सहित सर्वज्ञ कथित शास्त्रों के देखा अन्दर है॥
प्रथम ता क्षुधातुर दु खिया धर्मी को भोजन देने से।
द्वितीय तृषातुर को जल, दे करके दुःख हर लेने स॥
पुण्य तीसरा पथाश्रय, विश्राम स्थान भी कहते हैं।
चौथ पट्टे चौकी आदि, जिनपे धर्मी सो रहते हैं॥
पंचम वस्त्र दान क्योंकि, यह तन की रक्षा करता है।
जा ये पाँचों शुभ दान करें सो पुण्य खजाना भरता है॥
मन की प्रवृत्ति का सज्जन सबके हित में बरताते हैं।
साधन है यह छटा मुनि सुव्रत स्वामी फरमाते हैं॥
साधन सप्तम धन्यक्षया सत्य वचन सदा हितकारी हो।
शुभ नाम कर परमात्म के, व्यवहार यथम सुखकारी हो॥
साधन अष्टम मंत्र का तन म मोद जाम्र दराते हैं।

लंकेश एक ही नाम नहीं, जब सहस्रों रूप बनावेगा।
अब जरा सोच कर बतलाइये फिर कैसे काबू आवेगा॥

दोहा

विघ्न डालना ध्यान में यह भी है अन्याय।
इसका भी फल है सखा सुनलो चित्त लगाय॥

निरपराधी शम्बूक का, लक्ष्मण ने शीश उड़ाया था।
सो भी भूलकर सूर्य हाँस खाडा, वहाँ पर अजमाया था॥
जो बिना विचारे काम किया यह उसका ही फल पाया है।
बिन भोग कर्म नहीं छूटत सर्वज्ञ देव बतलाया है॥
अब तीनों योग लगाकर, तुम रावण का ध्यान डिगावोगे।
यदि नहीं डिगा यह शूरवीर तो फिर पीछे पछतावोगे॥
बस और कहो क्या बतलाऊं, क्योंकि तुम आप ही स्याने हो।
जो मर्जी हो कर सकते हो, तुम आप ही अनुभवी दाने हो॥

दोहा

कपि पति ने यही किया निश्चय दिल दरम्यान।
ध्यान डिगाने के लिये, भेज अपने जवान॥

अङ्गद आदि भेष बदल जा घुस गये पौषध शाला में।
हो रहा ध्यान में मग्न भूप और बड़ा एक कर माला में॥
महा परिषह देने पर भी, जरा ध्यान से हिला नहीं।
चुप चाप मंत्र में लगे रहे उत्तर अङ्गद का मिला नहीं॥

दोहा

अङ्गद ने फिर रच दई अद्भुत माया घोर।
ध्यान डिगाने के लिये चाल उठ इस तौर॥

दोहा (अंगद)

रावण कपटी नीच नर तस्कर कायर क्रूर।
अंगद पास्हा मे हुई, धार तेरे सिर धूर॥

नेत्र खोल कर देख मपु सक मू द हुई क्यों पलकें।
तू आया था वन से चोरी कर, जनक सुता को छल के॥
पटरानी ले चला मन्दोदरी, सम्मुख देख पकड़ के।
शक्ति है तो दिखला तेरी, जाऊं आज मसल के॥

दौड़

कहाँ अब लाज छिपाई, शर्म तुमको नहीं आई।
डूब कर मर जाना था या कर रक्षा रानी की,
नहीं विवाह क्यों करवाना था।

दोहा

इतना कह कर ले चला, पकड़ सामने बांह।
रानी तब कहने लगी, ऐसे रुदन मचा॥

नकली मन्दोदरी का विलाप

छुड़ाओ मुझे भरतार जी कोई ले जाता बनाड़ी।
मैं मन्दोदरी हूँ तेरी रानी खींच के महलों से शत्रु ने स्वामी॥
करती हूँ रुदन अपार जी॥१॥
आपके होते हो मेरी यह हालत, कैसे पिया देखा तुम ये अदालत।
स्वामी अब सुना पुकार जी॥२॥
हा हा कार मैं कर २ हारी, कोई ना सुनता आहा मारी।
फूटे करम हमारे जी॥३॥
स्वामी तुमने तो मौन है धारा किसका लाऊं मैं आज सहारा।
रो रो के गई मैं हार जी॥४॥

अब आवो निज धाम, समय पर याद तुम्हें कर लू गा।
रणभूमि में लड़ने का, कल ही सामान करू गा॥
रूप अनुपम बना सभी शत्रु को फ़ौरन हरू गा।
चक्र सुदर्शन से मीत्रों की, गर्दन दूर करू गा॥

दौड़

पता महलों का लू गा, फिर स्नान करू गा, जरा कुछ भोजन
पाकर, याद करू गा तुम्हें उस समय रणभूमि में जाकर।

दोहा

आज्ञा ले विदा भयी, पहुँची निज स्थान।
खुशी-खुशी गया महल में, दशकन्धर बलवान॥
पूछ्ताछी पति देव से, क्षेम कुशल पटनार।
समझ लिया प्रपंच था सभी व्याम मंझार॥

व्यायाम किया दशकन्धर ने फिर तेल पाक मलवाया है।
करके मंजन स्नान फेर, भोजन रावण ने पाया है॥
देवरमण में जा पहुँचे, जहां बैठी जनक दुलारी है।
विनाश काल बुद्धि मलीन, रावण ने गिरा उचारी है॥

दोहा (रावण)

साफ कह मधुरप्रिये, विद्या मैंने त्याग।
अब भी सीता मान ले, मुझको सिर का ताज॥

सीता-रावण

दोहा (सीता)

प्रथम तो यह बात है, फकते कभी ना घांस।
यदि कभी फक भी गए होगा उनका नाश॥

सीता—तू कायर क्रूर कहाया।
रावण—मैं शूर सही।
सीता—पतिव्रता को सता ना जालिम।
होगा बुरा आखीर पर ॥ अथ रावण ॥ १ ॥
रावण—पटनार बनाऊँ तुमको।
सीता—बक बक ना कर।
रावण—तू पति मान ले मुझको।
सीता—परभव से डर।
रावण—राजी से नाराजी से पटनारी का चीर धर।
॥ अथ जनक ॥ २ ॥
सीता—किस गुरु से शिक्षा पाई थी।
रावण—कुछ और कहो।
सीता—तब बुद्धि भ्रष्ट हुई थी।
रावण—खामोश रहो।
सीता—कुल से नाश लगा कर लाना
धिक अन्यायी वीर पर ॥ अथ रावण ॥ ३ ॥
रावण—कुछ अक्ल नहीं है तुमको।
सीता—वाह! खूब कही।
रावण—क्या पास रही है मुझको।
सीता—बिलकुल है सही।
रावण—क्या शक्ति है रामचन्द्र वनवासी
भीख फकीर पर ॥ अथ जनक ॥ ४ ॥
सीता—सुत बान्धव कैद में उनकी।
रावण—तो डर क्या है।
सीता—सुर सेवा करते उनकी।

सीता—सती धर्म को छोड़ कभी, हरफ न लाऊं तौकीर पर ॥ अथ रावण ॥९॥

रावण—क्यों नर तन मुफ्त गंवाती ।
सीता यह फानी है ।
रावण क्यों दिल तू मेरा जलाती ।
सीता अज्ञानी है ।
रावण—ऐसे सुख तू, नहीं मिले होंगे बनवासी भीलपर ॥ अथ जमक० ॥ १० ॥

सीता— तूने कुल का दाग लगाया ।
रावण— कुछ फिकर नहीं ।
सीता क्यों बन्ध नरक का लाया ।
रावण मंजूर वही ।
सीता धिक्कार तुम्हे सौ बार और धिक्
माता पिता गुरु पीर पर ॥ अथ रावण ॥ ११ ॥

रावण— क्यों करती जवां दराजी ।
सीता— हा दुख पड़े ।
रावण — सा मिल तुम्हे भाजाजी ।
सीता या कर्म मेरे
रावण राज पाट तन तक वारू इस सुन्दर,
तेरे शरीर पर ॥ अथ जमक ॥१२॥

सीता — क्या कुत्ते भौंक रहा है ।
रावण — पाहरा रहा ।
सीता—तेरे मदन भाग कहाँ है ।
रावण—आमीरा यहा ।

सीता—ले जायेंगे मुझे लखन तेरी प्राणों को,
चीरकर ॥ अब रावण ॥१३॥

दोहा (रावण)

श्याम कुसुमवत बाण ये सब ही मिथ्या जाय ।
जो माया कर कहा तुम्हें देऊँ सभी दिखाय ॥

हम को आता ध्यान नहीं कुछ होता रोने धोने से ।
यदि होगा सुख तुमको तो बस अनुकूल हमारे होने से ॥
प्रातः काल ही राम लखन का तो परभव पहुँचा दूँगा ।
और तम्बू डेरे उठा सभी रातों को मार भगा दूँगा ॥
नियम टूटने के भय से अब तक यह समय निभाया है ।
अब इसकी भी परवाह नहीं बस दिल में यही समाया है ॥
पटरानी का ताज भला कल महलों में पहुँचाऊँगा ।
रानी से नारायी में मैं भगड़ा सभी मिटाऊँगा ॥

दोहा

बाण रूप सब वचन ये पड़े सिया के कान ।
मूर्छित हो धरणि गिरी वृक्ष से जैसे टाहन ॥

जरा देर में सम्भल फेर, उठ बैठी जनक दुलारी है ।
दुःख दुख सागर में लीन और नयनों से गिरता वारी है ॥
फिर शांति मन में दूर हटा, श्री जिन का ध्यान लगाया है ।
और दशकन्धर को पटरानी ने ऐसे वचन सुनाया है ॥

दोहा

दशकन्धर मत कीजिये ऐसा इतना कर काम ।
पटरानी हूं आन पर तज दूंगी प्राण ॥

राम लखन के श्वासों पर ही सीता की जिन्दगानी है ।
यदि रानी है तो जनक सुता श्री रामचन्द्र की रानी है ॥

बाकी दुनियां में मनुष्य मात्र, सब पिता और सम भाई है।
आप तो बाबे दादे क्या, प्रति पितामह के न्यायी है॥
राम लखन मर गये मुझे, अब ये निश्चय हो जावेगा।
तो सीता क भी उसी समय, एक प्राण न तन में पायेगा॥
बस इसी समय से खान पान का, त्याग अटल समझें मेरा।
निज पति पास में पहुंचू गी, दुर्गति में हो तेरा डेरा॥

दोहा

देख तेज आश्चर्य में, दशकन्धर बलधार।
अपने मन में कर रहा, ऐसे खड़ा विचार॥
प्रेम स्वाभाविक राम से जनक सुता का जान।
आशा करना व्यर्थ है, हुआ मुझे अब भान॥
पीपल झूरता फूल का फल को मागर चल।
जनक सुता बिन मं मुक्त, मुर पत्र का बैर॥

स्थल पर मीन तड़फती है पानी से प्रेम महान का।
किन्तु नहीं करता मीर ध्यान दुखिया का दुख मिटान को॥
बस इसको भी जो कुछ कहना पत्थर पर तीर चलाना है।
या यों कहिये कि मेरु गिरि को घर पै उठाकर लाना है॥
ज्यों वामन चाहे चढ़ गगन अपनी हंसी कराता है।
त्यों पानी से नवनीत ग्रहण का व्यर्थ प्रयास कहाता है॥
पत्थर पर कमल जमाने का उद्यम ही निष्फल जाता है।
बस यही हाल है जनक सुता का नजर सामने आता है॥

— —

शुद्ध विचार

दोहा

ठीक नहीं मैंने किया, हर लाया सिया नार।
कलंकित हुआ संसार में, पड़ी शीश पर छार॥

छंद

शिक्षा विभीषण वीर की मैंने कभी मानी नहीं।
महा क्रोध करता हुआ दिया की तनिक हमदर्दी नहीं॥
कुछ भी कलंकित कर लिया, कार्य भी कोई ना सरा।
भानुकर्ण मेरी भुजा, हा ! कैद शत्रु की परा॥
वापिस करो हर नार, दी मन्दोदरी ने सम्मति।
निश्चय न तोड़ेगी धर्म है अचल मेरुसम सती॥
ठीक सुत भाई वचन, मन्त्री गणों ने भी कहा।
पर उस समय बुद्धि मेरी क्या लाचार बैठी थी कहां॥
राम के मरने पर सीता शान्त रह सकती नहीं।
मारा उन्हें निश्चय तो यह जीती भी रह सकती नहीं॥
अब भयानक नियम जो सीता ने धारण है किया।
समझ लो सामान यह सब मरण के कारण किया॥
हाथ मलने के सिवा फिर हाथ कुछ ना आयेगा।
मोड़ दूं अब भी सिया तो यश मेरा रह जायेगा।

दोहा

अब ये निश्चय कर लिया मैंने दिल के साथ।
कल सेना कर सौंप दूं रामलखन के हाथ॥

संसार में मेरा यश होगा कुल का कलंक मिट जायेगा।
भाई बन्धु सब आन मिलें उनका वैर छूट जायगा॥

वृथा ही रक्त बहाया भाग, वृथा ही और बहाया है।
क्योंकि मैंने अब समझ लिया कुछ हाथ ना इसमें आना है ॥

मन की लहरें

दोहा

मन में ऐसा निश्चय कर, चला लंक की ओर।
होनहार आगे कहो चले किस तरह जोर ॥

मन चंचल की है विचित्र गति यह कई रंग दिखलाता है।
कभी दान वीर कभी शूरवीर कभी शुभ मति पर टिक जाता है ॥
कृपण हो मक्खी चूस कभी अमर कप्पी बन जाता है।
कामान्ध कभी मानांध कभी कुमती पर ध्यान जमाता है ॥
जल तरंग से भी ज्यादह मन की लहरें कहलाती हैं।
या वायु चलने पर जम राजी, कभी न स्थिरता लाती है ॥
तंदुलमच्छ की तरह जीव दुर्मन से दुर्गति जाते हैं।
और शुभ विचार करने से प्राणी स्वर्ग का बन्ध लगाते हैं ॥
हो मन कद कर्मों के, जिन में निश्चित तो छुट जाते हैं।
बिन भोग पर कर्म निकाचित कभी न छुटने पाते हैं ॥
जिन परिणामों से बन्ध पड़े, वो अन्त समय आ जाते हैं।
यदि उत्तम हैं तो मोक्ष गति नहीं तो पीछे पछताते हैं ॥

दोहा

चलते फिर किया इसी बात पर ध्यान।
राग यही गान लगा, फर मान के दान ॥
इस हालत में राम को दूँ सीता जाय।
तो फिर इस संसार में नाक मेरी कट जाय ॥

सारी दुनिया फेर मेरे इस सन्तापन पर थूकेगी ।
और देख २ अपमान मेरा यह नित्य प्रति काया सूखेगी ॥
बदनाम हुआ ना काम बना, दुनिया समझेगी हार गया ।
श्रीरामचन्द्र के भय से, रावण सीता आज सियार गया ।
गल गया मान सब रावण का जो सीता वापिस करता है ।
क्योंकि यह अब क्या करे बिचारा, लक्ष्मण जी से डरता है ॥
तो सिर सदाके मैं गन्दा इतिहास रूप बन जाऊँगा ।
और कायर भारी शठ जन की श्रेणी में संख्या पाऊँगा ॥

गाना

पकड़ में आना था मुझे, कुमति ने आकर के मारी ।
अपने गौरव को मारा मैंने, पिछाना भी नहीं ॥
अधिकार सच्चा है, सभी ने झूठ भगाड़े को कहा ।
अधिकार जिसने तज दिया समझ सभी कुछ तज रहा ॥
सीता को यदि वापिस करूं छूट जाय कर से डोर है ।
फिर मुझ ऐसे चरण निम, देख मुझरता मार है ॥
माया था जिस शक्ति पं अब वही दिखाना चाहिये ।
राम से पाकर विजय सीता को देना चाहिये ॥

दोहा

मान कहीं का तोड़ कर, फिर दूंगा सिया नार ।
मानुकिरण सम यश मेरा फैले सब संसार ॥

ऐसा ही करना ठीक समझ में सभी तरह से आता है ।
और बिना सोचे जो करे काम, सो फिर पीछे पछताता है ॥
प्रातः काल ही पकड़ राम लक्ष्मण दोनों को लाऊंगा ।
और सुत बान्धव सब यारों को भी कर स्वतन्त्र बनाऊंगा ॥

दोहा

शक्ति अपनी सभी को, पहले दू दिखलाय।
फिर देऊं सीता उन्हें, यश फैले जग मांय॥
बैठाई सजवीज ये, सोच सोच दिल मांय।
पहुँचा सायंकाल को, भूप महल में जाय॥

करके भोजन जलपान फेर था, शयन गृह आराम किया।
और प्रातःकाल होते ही नृपने रणभूमि का ध्यान किया॥
तदन्तर शस्त्र सजा भूप ने, वज्र हाथ उठाया है।
जब लगा देखने शीशे में तो चेहरा नजर ना आया है॥

अपशकुन

दोहा

फेर हाथ में ले उसे लगा भूप तलवार।
ना भी कर से छूट कर, गिरी धरणी मंझार॥

तलवार उठाई करमें तो मस्तक का मुकुट धरणी आया।
अपशकुन देख मन्दोदरी ने झट, मस्तक आन चरण लाया॥
दाहिना नेत्र फड़क रहा रानी का बामा रावण का।
तब किया इरादा रानी ने भी, अपना स्वप्न सुनावन का॥

दोहा

प्राण नाथ मेरा हृदय कांप रहा है आज।
सोच समझ कर कीजिये समर आज महाराज॥

यह भी है अपशकुन आज रण करने से हूँ रोक रही।
पर हम देख हालत स्वामी कुछ अच्छा ही मैं सोच रही॥

रावण—किस लिए आज नादान जान खोती है।
नहीं बात कभी स्वप्ने की सत्य होती है॥
कई बार गिरा कट ? के, शीश स्वप्ने में।
हो गई बात सब झूठ प्रात उठने में॥
बन जाय भिखारी, राजन पति स्वप्ने में।
फिर वही झोंपड़ी आवे नजर उठने में॥
नयनी कुछ स्वप्न मे दोहरी होती है।
नहीं बात कभी स्वप्ने की सत्य होती है॥

मन्दोदरी—दशकन्ध की रानी, पुरन्ध्र यहां स्वप्ने में।
लिया देख गढ़ हा गया, राज स्वप्ने में॥
जल गये सभी लग गई आग स्वप्ने में।
हो गई बात सब साच सुबह उठने में॥
सब बात स्वप्न शास्त्र की सच होती है।
जिस लिये पिया यह अर्द्धांगिनी रोती है॥३॥

रावण—यह वहम सभी देखा तुमने स्वप्ने में।
जो दिन की चिन्ता पड़े नजर स्वप्ने में॥
धन माल कभी सुख जाय, सभी स्वप्ने में।
तृषातुर पीता फिर नीर स्वप्ने में॥
भूखे को भोजन मिले खीर स्वप्ने में।
तू निरर्थक आंसुओं से मुख धोती है नहीं बात० ॥४॥

मन्दोदरी—जो क्षीर समुद्र स्वप्ने में, तिर जाता।
सो उसी जन्म में अक्षय मोक्ष सुख पाता॥
गज भानु शशि कोई, जिसे नजर है आता।
सो श्रेष्ठ पुरुष कोई यहां जन्म है पाता॥
यह बात धर्म शास्त्रों, में भी होती है
जिस लिये पिया० ॥५॥

रावण—वैराग्य पक्ष की, बात सभी यह प्यारी।
जिसका न चिन्ता होती कोई लगारी॥
किन्तु हम हैं क्षत्रिय, योद्धा बलधारी।
क्षत्राणी हो क्यों बनती कायर नारी॥
ना डर शूर जिस समय बिगुल होती है।
नहीं भाव कभी॥६॥

दोहा (मन्दोदरी)

शुभ सम्मति मा पर धरी कभी एक प्राणेश।
अब तो दासी की अर्ज मानो इक लवलेश॥

दोहा (रावण)

निश्चय मैं आया नहीं इन बातों से बाज।
किन्तु तुम्हारे कथन पर, किया समझ कुछ आज॥

सीता दिखलाकर पहिले फिर सीता उनको दे दूंगा।
यह कथन तुम्हारा पूरा करके, यश दुनियां में ले लूंगा॥
पाकर विजय बांध दोनों को आज यहां पर लाता हूं।
इस कारण ही प्राणप्रिये मैं रण भूमि में जाता हूं॥

दोहा (मन्दोदरी)

दुःख होता है मुझे, सुन तुम ऐसी बात।
वापिस ही देना उन्हें फिर लड़ने क्यों जात॥

आप लगारचित हो ये सूझी है मुझे।
जाओ लड़ने को हरगिज ना चाहती हूं मैं॥
मुंह को आता कलेजा मेरा एक दम।
अपशकुन हो रहे सब सुनाती हूं मैं॥१॥
आंख दाई फड़कती धड़कता है दिल।
कड़कि चूड़ियां न करकी दिखाती हूं मैं॥

आज जाओ न रण का कहा मान लो,
हा हा खाकर के सिर को झुकाती हूं मैं ॥२॥
रावण—कायर दुर्बल ही मानें, शकुन अपशकुन।
तेरी बातें न हर्गिज मानेंगे हम ॥
क्षत्री घर तो योद्धों का, रण क्षेत्र ही है।
चाहे हो जावे, बेशक यहीं हम खतम ॥३॥
हो के क्षत्राणी रावण की, पटनार तू।
बनती कायर जरा भी न आती शर्म ॥४॥
अब अधिक कुछ कहा गुस्सा आजायगा।
क्योंकि करना समर का हमारा कर्म ॥५॥

दोहा

एक भी मानी नार की समझाया हर बार।
उसी समय दशकन्धर ने सेना करी तैयार ॥
रण तूर बजा कर चला मान में सूर भूप हर्षाया है।
प्रबल प्रताप सबल दल लेकर, आन मोर्चा लाया है ॥
वानर दल भी यहां खड़ा हुआ उस तरफ प्रथम ही आ करके।
फिर तो क्या था रणभूमि में आड़ गये शूरमा आ करके ॥

राम व रावण प्रश्नोत्तर

राम रावण के दल में मचा धकमला।
खास भिड़े लड़ाई के फिर आ गले ॥
इधर राम हैं उधर रावण खड़।
खुशी हो करके रावण हँसा खिलखिला ॥१॥
राम—आज रावण तू आ मान मेरा सखुन
क्यों करता है अपना तू चूरोपकुन।
जब के रावण कहे राम न सिर हिला ॥२॥

करलो बढ़कर वार क्यों कि फिर, परभव को जावोगे।
जो कुछ करना करो भाज फिर समय नहीं पावोगे॥
करा क्यों तैयार जिन्हें, अपने संग ले जावोगे।
परभव जाते आप अकेले, क्या शामा पावोगे॥

दौड़

काष्ट चन्दन मंगवाओ, चिता पहले चिनवाओ, शस्त्र सब दूर गिराओ, यहां से टूट गया अब नाता, भागो जरा सम्भालो।

दोहा (रावण)

छोटा मुख बातें बड़ी रहा कलेजा फार।
अब यह घाव तभी मिटे, देऊं तुमको मार॥

शक्ति से बच गया इसी कारण क्या फूल रहा है।
परभव आज पठाऊं तुमको, क्या मन भूल रहा है॥
मेंढक सा क्यों उछल उछल, अब कायर कूद रहा है।
कसल-मसल कर आँख घुमा हृदय त्रिशूल रहा है॥

सवैया

दूध के दाँत न टूटे अभी, शठ शूर महान् से लाव न शंका।
कुम्भु समान न बालक मूर्ख, भाँव के संग बना रस पंका॥
जीवन मान गहो जग से तब आयु के पूर्ण हो गये अंका।
जान गये हम आज बजा तेरे सिर काल कराल का डंका॥

दौड़

विचारा जो था मन में पर दिया तूने दिल में यदि जीणा चाहते हो डार मगो हथियार नहीं अब परभव को पाते हो।

जैसे नट नाचे वासों पर, करता कमाल अपने फन में।
लक्ष्मण भी ऐसे नाच रहा, कर रहा कमाल रण के फन में॥

गाना लावणी शिकस्त

जुटे पुलश्ती समर में शूरे खांडा खनाखट खटक रहा है।
इधर जुटे ये वीर हैं दोनों उधर में मुण्ड कुण्ड फटक रहा है॥
लड़ाई अम्बर में ऐसे होती मानों कि मानव बरस रहे हैं।
भरम व्यापि वाले के मानिन्द, रक्त का शस्त्र तरस रहे हैं॥
रक्त फुव्वारा चले सरासर, जैसे बादल बरस रहा है।
लाखों शूर समर में हाथी का जीते सा ही हय रहा है॥

दोहा

रावण ने फिर ताम कर, मारा कठिन 'अनलास्त्र'।
व्यापी अग्नि दल राम के, यादु हुए अति त्रस्त॥

तत्ता हाल ये श्री लक्ष्मण ने 'पर्जन्यास्त्र' चलाया है।
मूसलाधार मेघधारा से वैश्वानर शान्त बनाया है॥
जब लगी धूमने रावण सेना राय ने 'पवनास्त्र' चलाया है।
घटाटोप जो छाये मेघ थे सबको साफ बनाया है॥
फिर रावण ने रिपु लख करके 'कर्मोन्मुक' अस्त्र धार लिया।
लागये व्याल सब रामादल पर प्राण रक्षा का दुस्वार किया॥
संत्रस्त हुई सारी सेना, ये लक्ष्मण जी ने निहारा है।
छोड़ा है तभी महा 'ताक्ष्यास्त्र' माया का दूर निवारा है॥

दोहा

देखे काश्यप पुत्र जब भग आहि जान बचाय।
देर तलक यों ही रहे, अस्त्र शस्त्र चलाय॥
फर धारण पर्वा लगे, करन सुमित्रा लाल।
समझ लिया दशकन्धर मन यह है मेरा काल॥

स्वल्प समय में रूप भूल का नजर पड़ा दशकन्धर का।
यह शक्ति का नहीं काम, काम लक्ष्मण के पुण्य सिकन्दर का॥

दोहा

रावण तब आश्चर्य से देख रहा मुह बाय।
'चक्र सुदर्शन' अस्त्र में कर में लिया उठाय॥

चक्र सुदर्शन को मुँह मलाकर, हाथ में खूब घुमाया है।
बिजली के मानिन्द तड़तड़ाट कर, काल रूप बन आया है॥
सुग्रीवादिक सब घबराये, जीने की आशा छोड़ दई।
ना दृष्टि सामने टिकती है, मीवा भी पीछे मोड़ लई॥
यह समय भयानक जैसा था वैसा यहाँ कहा न जाता है।
ये दृश्य देख दशकंधर, मन में फूला नहीं समाता है॥
जो अस्त्र-शस्त्र वानर योद्धे चक्र पर सभी चलाते हैं।
पर उसको ना पीछे हटा सके, बेशक जाकर टकराते हैं॥

दोहा

हा करके लाचार सब, मलते रह गये हाथ।
समझा होगी चक्र से अब लक्ष्मण की घात॥

भयभीत हुए सब ही दिल में श्रीराम का मन भी कांप गया।
मार्तण्ड सुग्रीवादिक, सब योद्धों का तन कांप गया॥
प्रभाव अस्त्र एक नमस्कार का ही अब बाकी शरणा है।
बस सिवाय अनादि मंत्र और किसन विपदा का हरना है॥

दोहा

पंच परमेष्ठी का मन में किया निश्चल ध्यान।
चक्र सुदर्शन अनुज के, पहुँचा सन्मुख आन॥

उस समय जो भय था वांछों का वर्णन में नहीं आ सकता है।
पर पार अनादि मन्त्र का भी साक्षी रूप आ सकता है॥

मिल शक्ति का जो मान करे और पुण्य को नहीं निहारते हैं।
पुण्य बिना शक्ति निष्फल भी जिनवर यही उचारते हैं॥

दोहा

चक्र सुदर्शन ज्वलन को दे प्रदक्षिणा तीन।
दशकन्धर भी उस तरफ, देख रहा यह सीन॥

चक्र सुदर्शन लक्ष्मण जी के, दक्षिण कर पर आ बैठा।
सब लक्ष्मीपति के हृदय पर, जैसे कोई क्षत्रिय लेटा॥
यह दृश्य देख वानर दल को बस खुशी का ना कुछ पार रहा।
उस तरफ दशानन पिछली बातों को दिल खूब विचार रहा॥

दोहा

याद मुझे अब आ गया, मुनिजन का व्याख्यान।
परनारी कारण यहीं जाने जान अरु प्राण॥

अधिकारी मन्त्री गण क्या सब ही ने मुझको समझाया।
क्या करूँ मेरी किस्मत उलटी कुछ सोच नहीं मन में आया॥
मुनिराज की बातों पर भी श्रद्धा मैंने करी नहीं।
अष्टांग ज्योतिषी की भी कोई बात हृदय में धरी नहीं॥

दोहा

भ्राता गिनी के कथन पर, किया न जरा विचार।
मर्म गर्म और प्रेम से समझाया हर बार॥

रावण का पश्चाताप लावणी शिकस्त

किस्मत ने धोखा दिया, आज के मौके।
अब आई मुझको अक्ल सभी कुछ खोके॥
रानी ने आखीर तक समझाया रो के।
खो दिये हाथ से जितने थे सब मौके॥

क्या करूं कैद में पड़े पड़ तमाम ।
जिस कारण लाया सीता कुछ बना नहीं वो काम ॥१॥
सुत भूख प्यास के, कैसे दुख सहेंगे ।
ना खबर पिता ने लई ये लाल कहेंगे ॥
सब यादों की, आंखों में अश्रु बहेंग ।
किस विध सुत शम्भव के अब प्राण रहेंगे ॥
मेरे लाल कहाँ आजादी के आराम ।
जिस कारण लाया सीता कुछ बना नहीं वो काम ॥२॥
किम जन्म की बैरन शूपणखा थी मेरी ।
तारीफ करी मुझ आगे सीता केरी ।
तू प्रलय काल की पापिनी बनी अंधेरी ॥
करवाया सब कुल नाश करी ना देरी ।
मेरी बहिन रुला दिया बंधा मेरा तमाम ॥
जिस कारण लाया सीता कुछ बना नहीं वो काम ॥३॥
यदि होती कुछ मालूम य होनी होगी ।
तो क्यों बनता मैं हाय इश्क का रोगी ॥
क्या हालत मन्दोदरी राणी की होगी ।
नहीं मानी सीख वो आज विपत्ति होगी ॥
हो गया हाय मैं मुल्कों में बदनाम ।
जिस कारण लाया सीता कुछ बना नहीं वह काम ॥ ४ ॥
अमाप विजय शक्ति भी गई निकल के ॥
बहुरूपिणी विद्या भाग गई सिर धुन के ।
अप चक्र सुदर्शन भी धरा में हो गया उनके ॥
फल दीख रहे राणी क नहीं स्वप्न के ।
है पुण्यवान बलाक लक्ष्मण और राम ॥
जिस कारण लाया सीता कुछ बना नहीं वह काम ॥५॥

दोहा

रावण ऐसे हो रहा सोच फ़िकर में लीन ।
दिवस शशि जैसे हुआ, चेहरा अतिमलीन ॥
दशकन्धर के हो रहा दिल में दुःख अपार ।
अवसर लख यों भूप से, बोला गिरा उचार ॥
लंक पति अब कर रहे कैसा आप विचार ।
और है शक्ति शेष कुछ, या हो गये लाचार ॥

अमोघ विजय का मार गया जाती जो दैवी शक्ति थी ।
तिलिस्म विद्या काफ़ूर हुई जिसकी भी तुमने भक्ति थी ॥
वज्रा वर्तन के आगे आ रूप थे वह सब चूर हुये ।
तेरे ही साधन किये हुए, तेरे ही वा अनुकूल हुए ॥
सुग्रीव और कुम्भकरण सब बेटे कैद हमारी हैं ।
जो दिया साथी भी हमारा, वह कहां पर गई तुम्हारी है ॥
ब्रह्मास्त्र अन्तिम शस्त्र था ना तेरे पास रहा ।
वह बता कौनसी शक्ति है बाकी जिसकी कर आस रहा ॥

राम रावण

दोहा

प्रियवादी गंभीर मन औदार चित्त सुख धाम ।
वचन बन्द कर अनुज का, यों बोले श्रीराम ॥

दोहा

अब भी सोच विचार ला, दशकन्धर मतधीर ।
जंग आपका हो चुका निश्चय आज अखीर ॥

निश्चय आज रणवीर रहा ना, तब जरा कुछ बाकी।
मगर आगई आज युद्ध के, अन्त समय की झांकी॥
वही श्रेष्ठ नर दुनिया में जो करता बात सुलह की।
कर लो संधी अब भी हम से छोड़ सभी चालाकी॥

दौड़

निःशंक रणधीर बहादुर, आप संसार की चादर, हमें अब देखो चादर, राजन पति गंभीर, धीर दिल में ना जरा गिला कर।

दोहा

तज प्रताप प्रचण्ड तप, फैल रहा जग माय।
स्याही सीता हरण की देवो हम मिटाय॥

तुम सीता को वापिस करदो फिर भी लाली रह जावेगी।
सब फौज हमारी प्रातःकाल ही, कूच का बिगुल बजावेगी।
यह लंक मुबारिक आप को हो हम और नहीं कुछ चाहते हैं॥
यदि आज्ञा हो तो शस्त्र छोड़ कर, पास आप के आते हैं।

दोहा

राम लजान वास्ते नहीं किया यह जंग।
एक सिया के वास्ते, सो भी होकर तंग॥

सुन वान्धव आपके जितने हैं, स्वतन्त्र सभी कर देंगे।
जो हानि यहाँ पर हुई सभी, हम मिलकर दानों भर लेंगे॥
तुम अपने यहाँ आनन्द करो हम पुरी अयोध्या जावेंगे।
यदि समय गंवाया एमा तो कर मलते रह जायेंगे॥

दोहा

रामचन्द्र के वचन सुन दिल में उठे तरंग।
अशुभ ध्यान में लीन था उड़ा जिस्म का रंग॥

मौम चित्र की तरह खड़ा, मुख से ना बोल निकलता है।
और सोच विचार अनेक करी पर रास्ता कोई ना मिलता है॥
इस समय विभीषण वीर वीर को, आकर यों समझाने लगे।
और देख हाल मोह के वश हो नयनों से नीर बहाने लगे॥

गाना विभीषण का समझाना

शिक्षा उर धारो अय भाई तुम्हें अन्त समय समझाता हूँ।
मोह के वश होकर आया हूँ, कुछ प्रेम के वचन सुनाता हूँ॥ १॥
तैने जोर बहुत सा लाया है, और विद्या बल दिखलाया है।
पर काम कोई ना आया है मैं दिल में अति घबराता हूँ॥ २॥
तेरा चक्र सुदर्शन खाली गया, और पुण्य तेरा रसयाला गया।
शुभ ध्यान बाग का माली गया अब तेरी खैर मनाता हूँ॥ ३॥
तेरे पुत्र भाई बांध लिये और भूप तेरे सब साथ लिये।
श्रीराम के हैं अपराध किये वह क्षमा सभी करवाता हूँ॥ ४॥
यदि भाई तू जीना चाहता है, तो राम शरण क्यों न आता है।
रघुनाथ प्रभु सुख दाता हैं तुम्हें सन्मार्ग बतलाता हूँ॥ ५॥
श्रीमान् वीर ना देर करो प्रभु रामचन्द्र की शरण परो।
इस देश की विपदा सारी हरो, कर जोड़ के अर्ज सुनाता हूँ॥६॥
अब जनक सुता को पहुँचाओ रघुनाथ के संग प्रीति लाओ।
निर्भय निज राज के सुख पाओ शुभ शान्त ध्यान मैं चाहता हूँ॥७

दोहा

इतनी सुनकर भूप को चढ़ा क्रोध विकराल।
तेजी से कहने लगा भृकुटि मस्त कराल॥
रामचन्द्र क्या चीज है मूढ़मति अय वीर।
लक्ष्मण जो है छूरता छिन में बालू वीर॥

चक्र सुदर्शन गया हाथ से, जो यह है अब मेरा ।
बिगड़ा क्या उसके जाने से, उस का नहीं साहस गया मेरा ॥
सब कर दूंगा चूर्ण चूर्ण, जो करू मुष्टी प्रहार उसे ।
इस धमकी के डर से हर्गिज, ना दूंगा सीता नार उसे ॥

दोहा

शक्ति इस लंकेश की, जाने सकल जहान ।
जीते मैंने समर में अमित भूप बलवान ॥

अमित भूप बलवान नाम सुन होते पानी पानी ।
किया दिग्विजय भुजा मेरी, पत्नीपन की खास निशानी ॥
रघुवंशिन के बीच सुहागिन छोड़ नहीं पत्नाणी ।
तुम जैसा नर और कोई है कायर मूढ़ अज्ञानी ॥

दौड़

सहित चक्र लक्ष्मण को पहुंचाऊंगा परभव को ।
राम का नहीं पठाऊं, तेज दिखाकर भुजबल का,
इन सब को स्वाद चखाऊं ।

दोहा

जसी मति वैसी गति कही श्री जिनराज ।
सिर पर धींमा भूप के, रहा काल का बाज ॥
शिक्षा पर शिक्षा सभी, दे दे कर गये हार ।
लक्ष्मण फिर लंकेश का बोला गिरा उचार ॥

दोहा (लक्ष्मण)

अच्छा तो अब सम्भलकर, हो जाइये होशियार ।
यदि शक्ति है आप में रोको हमारा वार ॥
तेरा ही यह चक्र सुदर्शन, तेरी ओर चलाते हैं ।
यह वार अगर का समझ तुम्हें हम साफ साफ बतलाते हैं ॥

पहले माया हरू तेरे, फिर सीता को ले जाऊंगा।
जो करी प्रतिज्ञा आज यही, पूरी करके दिखलाऊंगा॥

दोहा

इतना कहकर अनुज ने, किया भूप पर वार।
दशकन्धर ने चक्र पर, दिया मुष्टी प्रहार॥

किन्तु काल के आगे किसी की, पेश नहीं चल सकती है।
और युक्ति चाहे हजार करो कोई काम नहीं आ सकती है॥
चक्र सुदर्शन ने रावण का हृदय कमल विदार दिया।
उस रणभूमि की धूलि में, रावण ने पैर पसार दिया॥
प्रस्थान कर गया परभव को उस समय जीव दशकन्धर का।
फिर कहो तो क्या बन सकता है खाली गृह तन मन्दिर का॥
ज्येष्ठ कृष्ण एकादशी को पूरे सब श्वासोश्वास हुआ।
दिन के पिछले याम माग तज, पंक प्रभा में वास हुआ॥

चौपाई

वर्ष सहस्र पंचदस आयु पाई।
अशुभ कर्म संग्या दुःख पाई॥
दुर्गति दाता नार पराई।
गोरव इज्जत खाक रुलाई॥

—०—

विजय

दोहा

विजय हुई श्री राम की दशकन्धर दिया मार।
कुसुम वृष्टि कर व्योम में सुर मानव जयकार॥

अष्टम है य वासुदेव प्रतिवासुदेव, जिस मारा है।
बलदेव अष्टमें रामचन्द्र जिनका अति पुण्य सितारा है॥
धन्य राम जिन महासती, सीता का कष्ट मिटाया है।
और धन्य वीर लक्ष्मण जिसने, भाइ का अंग निभाया है॥
धन्य मित्र सुग्रीव मित्र के लिये सभी कुछ वार दिया।
वह धन्य विभीषण वीर जिन्होंने सत्यपक्ष स्वीकार किया॥

भन्य अंजनी लाल क्योंकि इस दल का स्तम्भ यही तो है।
रावण के सम्मुख भड़ा दिये घोड़े रणधीर यही तो है॥

दोहा

रघुवरदल आनन्द में राक्षस दल दुख पूर।
भाग रहे भयभीत हो रावण दल के शूर॥
रावण जब धरती गिरा सहसा चकलाय।
भालों आगे विभीषण के गया अन्धेरा छाय॥

वीर विभीषण ने कटार उस समय कमर से खास लिया।
अपने हृदय में मारने को दक्षिण मुट्ठी में तास लिया॥
फिर सर्द स्वास भरकर दाना नेत्रों में नीर बहाने लगे।
इन कर्मों की है विचित्र गति यह कहकर गोल सुनाने लगे।

गाना विभीषण का विलाप

आज हृदय की तप्त हाय मैं बुझाऊं किस तरह।
हो गया मुझ से जुदा वह वीर पाऊं किस तरह॥१॥
जिसकी शक्ति से धरणी क्या कंपता था आसमान।
शेर बब्बर था वीर मेरा अब उगाऊं किस तरह॥२॥
युक्ति लाखों ही चलाई, जिस तरह मारे बच।
पर निकाचित कर्म रेखा को मिटाऊं किस तरह॥३॥

हो गया संसार सूना, एक रावण के बिना ।
आज फलफल बाग की रौनक बढ़ाऊँ किस तरह ॥४॥
भाई के प्रतिकूल हो सम्मुख समर में डट गया ।
शक्ल दुनियां में के अपना, मुख दिखाऊँ किस तरह ॥५॥

शेर

महाबली योद्धा अतुल, यह आज रण में मर गया ।
मरना है तुमको एक दिन, मुझ को यह शिक्षा कर गया ॥
संसार में सब कुछ मिले पर भाई मिल सकता नहीं ।
वह कौन सृष्टि में मिले अन्तक निगल सकता नहीं ॥
फिर किस लिये आश्चर्य कर, भ्रम के में अपने कर मलूं ।
हृदय कटारा मार के, भाई के क्यों न संग मरूँ ॥
बस आज मे हृदय और, यही कटारा है ।
चाह लगा भाइ के तो यह मेरे पार है ॥

दोहा

देख विभीषण की दशा शीघ्र उठे रघुनाथ ।
धैर्य यों देने लगे पकड़ मित्र का हाथ ॥
बुद्धियान् हो मित्र तुम क्यों बनते अनजान ।
हम तुम सबका एक दिन, बने हाल यही जान ॥

जो होना था सो हो ही चुका अब रोने से क्या बनता है ।
और अशुभ ध्यान करने से आत्मा कर्मों से ही सनता है ।
महाबली योद्धे मित्र सब रण भूमि में मरते हैं ।
वह अपना आप मिटा देते नहीं पांव पिछाड़ी धरते हैं ॥
जो खिला बाग में पुष्प हमेशा खिला नहीं रह सकता है ।
इस जन्ममरण संसार में किस का कौन अमर कर सकता है ॥

चक्रवर्ती भी दुनिया में, लद गये और लद जायेंगे।
ना गई मेदिनी साथ किसी के, सब यहां ही तज जायेंगे॥
बस इतना ही संयोग मित्र था साथ तुम्हारे रावण का।
आ गया काल के गाल में फिर वह युद्ध करके नहीं आवन का॥
बिना आपके और कौन, हम सबको धीर बंधायगा।
जब आपकी ऐसी हालत है क्यों न सब दल घबरायगा॥
अब इस कटार को म्यान करो तुम बुद्धिमान् और स्याने हो।
सब बातों में चतुर आप सारे संसार में माने हो॥

दोहा

जरा माइ उपशान्त कर, किया कटारा म्यान।
धीर बंधाने को किया, राक्षस दल पर ध्यान॥
राक्षस दल के शूरमा मुख्य-मुख्य बलवान्।
वीर विभीषण सभी को बोला ऐसे आम॥

दोहा (विभीषण)

अब योद्धो अब किस लिये होवे हो भयभीत।
राम-लक्ष्मण शत्रु नहीं सब जग के हैं मीत॥

जो होना था सो हो ही चुका अपना भय दूर निवारो तुम।
श्री रामचन्द्र के चरणों में सिर शीश ध्यान के डारो तुम॥
औदारचित्त ये महापुरुष शत्रु पर कृपा करते है।
फिर हम तुम तो सेवक इनके, किस लिये आप यों डरते हैं॥
कोइ राजपाट धन-दौलत की, इनको कुछ भी नहीं इच्छा है।
शत्रु जन के भी हितकारी होती शुभ इनकी शिक्षा है॥
जिस कारण जंग हुआ भारी वह छिपी हुई कोई बात नहीं।
यदि सीता वापिस करते तो होती यह हलमी बात नहीं॥

दोहा

सब योद्धों को इस तरह, दे उपदेश सिखाय ।
भ्रम भूत उन सभी के मन से दिये निकाल ॥

विश्वास विभीषण ने देकर योद्धों को धीर बंधाई है ।
फिर देख भ्रात की लाश विभीषण, की तबियत घबराई है ॥
श्रीदारचित्त ने राक्षस दल को, प्रेम भाव दर्शाया है ।
सब तरह उन्हें आश्रय देकर, श्रीराम ने गले लगाया है ॥

दोहा

दशकन्धर के मरण की खबर गई झट फैल ।
पटरानी मंदोदरी बैठी थी निज महल ॥

जब लगा पता पटरानी के, हृदय पर वज्रपात हुआ ।
जो बैठी सारी सुध-बुध को पत्थर मूरत सम हाल हुआ ॥
संग में सभी रानियों को ले रणभूमि में आई है ।
समवेदना लंक वासियों में, जनता दुःख बीच समाई है ॥
महारानी का संताप देख सारे दल को संताप हुआ ।
रानी का दुःख अपार देख श्रीराम को पश्चात्ताप हुआ ॥
उस समय राम अपने मन में, ऐसे कर स्वच्छ विचार रहे
और देख-देख दुःख रानी का, अपना सिर भी झुक मार रहे

गाना श्रीराम का विचारना

आज इनकी दुर्दशा में, देखता हूं कि किस तरह ।
जैसे पत्थर दिल नहीं आंसू आता इस तरह ॥१॥
कर्मों के आगे क्यों यहां, पेश किसकी आ सके ।
अरिहन्त से भी ना टले, मैं तो हटाऊं किस तरह ॥२॥

भेमव्रतारिणी पतिव्रता मन्दोदरी रानी सती।
लाश जिसके गोद में, रावण मरा पड़ा इस तरह ॥३॥
छोड़ दूं यदि लाश इसके, शान्ति कुछ दिल को मिले।
इस पतिव्रता के अब आंसू सुखाऊं इस तरह ॥४॥
जीता न समझा भूप तो, मृतक का मन सकता है क्या।
ला कुछ ये ना "शुक्ल परमव में जाकर विस्तर ॥५॥

दोहा

करुणा सागर के उठी ऐसी दिली तरंग।
स्वतंत्र बस कर दिये सब सूरे एक संग॥

कुम्भकर्ण और इन्द्रजीत शूर, मय मेघवाहन आदि।
आंखों से नीर बहावे हैं, सब देख कुरे मिल बरबादी॥
सब गाव इकट्ठा हुआ आन जहाँ लाश पड़ी दशकन्धर की।
यहाँ सभी रानियां आ पहुँची हालत खराब मन्दोदरी की॥

दोहा

देख पति की लाश को व्याकुल हुई अपार।
मोह के वश मन्दोदरी वाली गिरा उचार॥
हा प्रीतम हा प्राणपति हा स्वामी गुलदान।
चले कहाँ अब छोड़ कर हमको जीवन प्राण॥

गाना (म० त) रानी मन्दोदरी का विलाप

आज हालत य आपकी कैसे हुई।
देखी जाती नहीं प्राणप्यारे पिया।
तुमने माना किसी का भी कहना नहीं।
आज गायब हुए हो मिलाए पिया ॥१॥
एक नारी के पीछे दई जान का।
गये परभव का करके किनार पिया।

आज स्वतन्त्र सारा जगत् हो गया ।
तुम के मरना तुम्हारा हमारे पिया ॥२॥
अपनी शक्ति से तुम थे त्रिलोकी बने ।
आज सोये क्यों पांव पसारे पिया ।
तुम बिना अब मैं किसका सहारा लेऊँ ।
जाते लंका को आज बिसारे पिया ॥३॥
मेरे खोटे कर्म हाय किसको देऊँ ।
तुम थे सुख दुःख के पूजन हारे पिया ।
आज पापिन ये धरती भी फटती नहीं ।
जिसमें छिप जांय सब गम हमारे पिया ॥४॥
रोवें भाई खड़े आपके सामने ।
जरा इनको तसल्ली बंधादो पिया ।
पाला पुत्रों का तुमने था जिस प्रेम से ।
इनको वैसे ही हृदय लगाओ पिया ॥५॥
हाय स्वप्न मेरा सब सत्य ही हो गया ।
मा हटे मैंने हरबार वारे पिया ।
यदि मरते 'शुक्ल' नेक कर्त्तव्य किये ।
पाते दुनियां में यश तुम सारे पिया ॥६॥

दोहा

कुम्भकर्ण आदि सभी सुत रानी परिवार ।
और सभी नर नारियाँ रोवें जारो जार ॥
दशरथ नन्दन फिर उठे समझाने को आप ।
लगे कहन मधु वचन यों मेटन को संताप ॥
धीर विभीषण मित्रवर मोह भ्रम दूर निवार ।
तुम पीछे रह रहे सब जन और परिवार ॥

राम—स्याने होकर के ऐसे अयाने बनें,
किया जाता है जिसका जिकर ही नहीं।
बिलबिलाने से वापिस ये आता नहीं
आते दिल में जरा भी सबर ही नहीं॥१॥
जन्म लेकर हमेशा जो जिन्दा रहे,
ऐसा दुनियाँ में कोई बशर ही नहीं।
एक दिन रास्ता सबने इसी चलना है,
सिवा सिद्धों के कोई अमर ही नहीं॥२॥

विभीषण—प्रभु हम सब को ऐसा ही मालूम है
पर करें क्या ये मोह दिल से जाता नहीं।
जिसकी रक्षा लिए इतनी मेहनत करी,
सोही भाई नजर आज आता नहीं॥१॥
यदि मरता ये ऐसे धर्म के लिए
तो मैं फूला बदन में समाता नहीं।
यश के इतिहास मरना बुरे कर्म का।
यह महा दुःख दिल में समाता नहीं॥२॥

दोहा (राम)

बिलकुल कहना ठीक पर, बन सकता क्या पीर।
संस्कार पूरक सभी, करना पड़े आखीर॥

आगे पीछे कहो मित्र ये कर्म तुम्हीं ने करना है
अब तो रावण की जगह इसे को तेरा ही एक शरणा है।
सामग्री सभी मंगाकर के, चन्दन की चिता चिना देया,
जैसी भी रीति तुम्हारी है वैसा ही शीघ्र बना दया।

ज्ञानी गये ध्यानी गये, मानी शूरवीर गये
बुद्धिमान् गये आगम पाठी पूजधार गये।
पापी दुराचारी सब, मूर्ख और गंवार गये,
रोगी क्या नीरोगी भागी मेंमरे साहूकार गये।
मिला अन्त कफन का बाना ॥ २ ॥
चौंसठ कला सारी, बहत्तर कलाधाम गये,
छोटे छोटे गये, और महान् से महान् गये।
बूढ़े बड़ुम्मार गये लाखों ही जवान गये
गये जमींदार छोड़, खेतों को किसान गये।
ठेकेदार गये सभी बड़े बड़े सेठ गये
सुभट सिपैये गये व्यापारी महान् गये।
काल ने तमाचे मारे, सभी चित्त लेट गये
शुभ कर्मी ऊंचे गये पापी सर्व हेठ गये।
रह गया पड़ा खजाना ॥ ३ ॥

दोहा

संस्कार मृतक किया धूम-धाम के साथ।
निवृत्त हुए स्नान कर, गई बहुत जब रात ॥
प्रात:काल श्रीराम ने, सबको लिया बुलाय।
औद्धार्धचित्त फिर प्रेम से यों बोले समझाय ॥
सदा एक सा ना रहे आयु साज समाज।
मिलजुल अब सब प्रेम से, करो लंक का राज ॥
काल अनादि से यही दुनिया का व्यवहार।
तुम सब को अब चाहिये, करना सोच-विचार ॥
वीरगति को प्राप्त दशानन, परभव को है सिधार गया।
सब राजपाट का भार समझ कर, भाग्य तुम्ही पर डार गया ॥

अब यही हमारा कहना है, मिल-जुल कर अपना काम करो।
और दशकन्धर की तरह आप, मशिहृ अंक का नाम करो॥

दोहा

सुन वचन श्रीराम के, खुशी सभी नरनार,
कुम्भकर्ण फिर उस समय, बोला गिरा उचार।

वैराग्य

दोहा (कुम्भकर्ण)

राजपाट की अब नहीं इच्छा है सुखधाम।
दुनियां में दुखपूर है, तनिक नहीं आराम॥

मेरा-मेरा करता ही प्राणी एक दिन मर जाता है।
मित्र प्यार क्या राजकोष सब कुछ यहां ही धर जाता है॥
जैसा करता कर्म कोई, वैसा ही संग ले जाता है।
कुछ पूर्व पुण्य यहां भोग और यहां का आगे आ पाता है॥
जो खिले फूल हैं बागों में आगे-पीछे मुरझायेंगे।
ये ही स्वभाव संसार का है कोई जाते हैं कोई आयेंगे॥
संयोग मूल दुख जीवों का सर्वज्ञ देव बतलाया है।
कर्मों के संग हो मूढ जीव ने अपना आप गंवाया है॥
यदि दुनिया में कोई सुख होता तीर्थंकर क्यों तजते इसको।
बिन त्यागे संसार मोक्ष का राज कहा मिलता किस को॥
शुभ बुद्धि सदा आत्मा को ठोकर खाने से आती है।
यदि समझ गया तो उच्चगति वरना दुगति मिल जाती है।

ग ना मातुकर्या जी की वैराग्य भावना

मिले जिस वार भी मौका, निकल जाय तो अच्छा है।
फिसलता यदि कोई प्राणी, संभल जाये तो अच्छा है ॥१॥
जमाना छानकर देखा कहीं भी सुख नहीं देखा।
इसलिये मोक्ष पथ पर जीव लग जाये तो अच्छा है ॥२॥
विना कारण कभी दुनिया से घृणा हो नहीं सकती।
श्री सर्वज्ञ की वाणी समझ, जाये तो अच्छा है ॥३॥
अनन्तीवार सब पुद्गल खा-खा करके उगला है।
नहीं सन्तोष आया किन्तु आ जाये तो अच्छा है ॥४॥
यह फिरता नरक गति नरगत पशुगति और सुरगति में।
प्रभु फरा अनादि का यह, टल जाये तो अच्छा है ॥५॥
चढ़ गया रंग असली अब य फीका हो नहीं सकता।
ध्यान आया "शुक्ल" अब सिद्ध बन जाये तो अच्छा है ॥६॥

दोहा (श्री राम)

संयम से बढ़कर नहीं दुनियाँ में कोइ चीज।
रागद्वेष का इस बिना नष्ट न होता बीज ॥

इस श्रेष्ठ काम की तो समझ पहले हम आज्ञा देवेंगे।
और कर्म अरि को काट आप निश्चय आनन्द पद लेवेंगे ॥
धन्य मात और तात आप यह कुल जिसमें तुम जाय हो।
वैराग्य भाव में रंग हुए, संयम मार्ग चित्त लाय हो ॥

दोहा

इन्द्रजीत का भी चढ़ा, यही मजीठी रंग।
मेघवाहन को लग रहा यह संसार भुजंग ॥

विरक्त हुआ दिल मन्दोदरी का कर रानियां साथ हुई।
था यों कर्दय इनके दिल में समझाम की क्या मनात हुई ॥

राजपाट समृद्धि की जिनके हृदय में प्यास नहीं।
उनको दुनियां में तप मात्र भी, अच्छा लगता-यास नहीं॥

दोहा

कुसुमोद्यान में थे मुनि, अप्रमेय बल नाम।
चार ज्ञान थे प्रथम ही, आत्म गुण के धाम॥

था उसी रात में महा मुनि ने, ब्रह्म-ज्ञान का पास किया।
घनघाती चारों कर्मों का तप जप संयम से नाश किया॥
कुम्भकर्ण आदिक सबने जा चरणों में शीश नवाया है।
केवल ज्ञानी सुख दानी ने ऐसे उपदेश सुनाया है॥

दोहा

इस संसार असार में दुःख संयोग वियोग।
सुनो भव्य जन कान धर, जरा लगाकर योग॥

जब मिले मनोगम चीज जीव तन-मन से खुश हो जाता है।
यदि मिले इसे प्रतिकूल वस्तु तो देख देख मुरझाता है॥
यह संसार असार सार, इसमें न किसी ने पाया है।
जिसने इससे मन मोड़ लिया, वह मुक्ति धाम सिधाया है॥
उपदेश सार गर्भित एसे अप्रमेय बल मुनि फरमाते हैं।
जिसको सुनकर ज्ञानीजन के, मुरझे दिल भी खिल जाते हैं॥
फिर इन्द्रजीत ने सर्वज्ञ के, चरणों में मस्तक धारा है।
और हाथ जोड़ बड़ी नम्रता से, ऐसे वचन उचारा है॥

दोहा

जग बन्धु सर्वज्ञ प्रभु, दीन बन्धु हित कार।
पूर्व जन्म का हाल कुछ भाखो जगदाधार॥

दोहा (मुनि)

पूर्व जन्म का हाल कुछ, सना लगाकर कान ।
सर्वज्ञ देव करने लगे, ऐसे प्रकट व्याख्यान ॥

चौपाई

इस ही भरत क्षेत्र के मांही, कौसुम्बी नगरी सुख दाई ।
प्रथम पश्चिम नाम तुम्हारा, शुभ संगति से पाप निवारा ॥
भगदत्त मुनि पास व्रत धारा शांत कषाय पाप विष टारा ।
विचरत फेर कौसुम्बी आये उपवन में निज आसन लाये ॥
ऋतु बसन्त खिली फुलवारी ठंडी पवन चले सुखकारी ।
नन्दी घोष राजा वहाँ आया संग महाराणी अधिक सुहाया ।
पश्चिम मुनि को इच्छा जागी, राजकुमार बनूं लव लागी ।
मनुष्य जन्म का बन्ध लगाया इक दिन काल मुनि का आया ॥

दोहा

इन्दुमालिनी राणी के, जन्म लिया तब धार ।
रति वर्धन शुभ नाम है पुण्यवान सुकुमार ॥

प्रथम मुनि जप तप करके, जा स्वर्ग पांचवें वास किया ।
वहाँ विषय विचारों ने, रतिवर्धन का अपना दास किया ॥
अवधि ज्ञान से देख प्रथम सुर ने आकर समझाया है ।
पूर्व भव का हाल देव ने प्रेम से सभी बताया है ॥
जब हुई प्रेरणा भाइ की तो जाति स्मरण ज्ञान हुआ ।
और सारासार दुनिया का तजकर, तप संयम में ध्यान हुआ ॥
ब्रह्मलोक पहुँचा जाकर, सुर का तन वैक्रिय धार लिया ।
पूर्व भव का जो था निदान कुछ चमरू फल का टार दिया ॥

दोहा

इन्दुमालिनी आकर हुई मंदोदरी महीं नार ।
स्वर्ग छोड़ तुमने लिया, जन्म इसी के धार ॥
सुने वचन सर्वज्ञ के, पुण्य उदय हुआ ज्ञान ।
यह संसार लगने लगा, महा दुःखों की खान ॥

ईशान कोण की तरफ बढ़, आभूषण वस्त्र उतार दिये ।
केशों का अपने हाथ से लुंचन, करके सभी उतार दिये ॥
मुख वस्त्रिका में डोरा डाल कर, मुख पर उसे सजाई है ।
और रजोहरण लिया बगल बीच, कर में झोली लटकाई है ॥
दीक्षा उत्सव करवा करके, श्रीराम ने शीश झुकाया है ।
फिर देव रमण में जाने को, झटपट विमान सजाया है ॥
सब भ्राताओं के साथ राम सीता के पास सिधाये हैं ।
उस तरफ कमलिनीवत् सीता ने, अपने नेत्र खिलाये हैं ॥

सियाराम

दोहा

आगमन सुन राम का, सीता मन रही फूल ।
सुख में लीन होकर सती, गाने में रही भूल ॥

सीताजी का गाना

पिया के दुःख ने मुझे, दुखिया बना रक्खा है ।
उनसे मिलने के लिये मन छोड़ महा रक्खा है ॥ १ ॥
भूल सकती मैं नहीं तेरी भोली सूरत ।
मैंने तो तुमको ही सुखधाम बना रक्खा है ॥ २ ॥

प्रेम के रंग में रंगी, तुमने ऐसी अद्भुत।
प्रेम के सम्मुख इक बार, जमा रक्खा है॥ ३॥
तेरे स्वागत के लिये मन रोज सफर करता है।
और आँखों का फर्श, रास्ते में बिछा रक्खा है॥४॥
मन के मन्दिर में तेरी, करती हूँ आरति हर दम।
तुमने तो पर्दे में दिल धाम बना रक्खा है॥५॥

दोहा

ऐस बैठी गा रही मन में अति उल्लास।
बार-बार देखन लिये दृष्टि करे विकाश॥

उधर विमान सरसर करते, देख रमस में आये हैं।
उमारे पास ही सिया जी के, उपकार के भाव सुनाये हैं॥
देख राम का जनक सुता नेत्रों से जल भर आये है।
और इधर राम क्या जनता ने आंसुओं की झड़ी लगाई है॥

दोहा

रामचन्द्र ने सिया का, शोभा गल लगाय।
बाकी सब उस सती को, मस्तक रहे झुकाय॥

चन्द्र चकोरी पूर्ण शशि का, देख तुरन्त खिल जाता है।
या मातःकाल ही चकवी को जैसे चकवा मिल जाता है॥
ज्यों सूर्य मकरी देख रवि का, फूला नहीं समाता है।
यह प्रेम दम्पतिका ऐसा रसना से कहा नहीं जाता है॥

दोहा

दुपक वन एसे हुआ जैस द्वितीया चन्द्र।
रूप नहीं है किसी पर, इमका रस सानन्द॥

भुवनालंकृत हस्ति पर, जगदम्बा को बैठाया है।
और सिंहासन पर बैठ अगाड़ी, राम अति शोभाया है।

श्रीराम सिया के जयकारों से देव रमण गुंजाया है ॥
है महासती ये व्योम बीच देवों ने शब्द सुनाया है।

दोहा

लंका नगरी की यहां शोभा कही न जाय।
प्रवेश समय चारों तरफ, ऐसी हुई सजाय ॥
लंका में प्रवेश सब, लगे करन जिस बार।
ऐसे फिर गाने लगे प्रेमभाव अनुसार ॥

सब का मिलकर मुबारकबाद देना—

गाना (तर्ज पंजाबी)

मिलकर के सब प्राणी तारीफ है गानी।
रामचन्द्र का आना भला ॥टेक॥

चाह दुनिया दर्श की आई है, सब ओर से मिले बधाई है।
ध्वनि वादित्रों की छाई है बर्षा स्वागत में आई है॥
हों वारी बलिहारी सुखकारी, मिल कर के सब प्राणी ॥१॥

लंका में अति आनन्द छाया, श्रीराम ने दर्शन दिखलाया ॥
भिन्न-भिन्न घर में मंगल गाया, याचक गण मन में हर्षाया।
॥हों वारी बलिहारी ॥२॥

प्रभु राम का मेह बर्षाया है, कंगालों को धनी बनाया है।
कैदी समूह छुड़वाया है आनन्द का बादल छाया है॥
॥हों वारी बलिहारी ॥३॥

कृपा हम पर महाराज करो, लंका का सिर पर ताज धरो।
सब जनता का संताप हरो हमरे सिर अपना हाथ धरो॥
॥ हों वारी बलि ॥४॥

हम लक्ष्मण को प्रणाम करें, सच्चे भाई सम काम करें।
सेवा हम आठों याम करें, निज आत्मा का कल्याण करें॥
॥ हों पारी बलि० ॥३॥
हर बार मुबारिक देते हैं सब शरणा तेरा लेते हैं।
ऐसा कृपा दान य कहते हैं, शुक्ल "शुक्ल" ध्यान में रहते हैं॥
॥ हों पारी बलि० ॥४॥

दोहा

आ पहुँचे दरबार में धूम धाम के साथ।
मिले परस्पर प्रेम से मिला मिला कर हाथ॥

श्रीराम स वीर विभीषण से फिर वाणी मधुर उचारी है।
राज करो प्रभु लंका का इच्छा बस यही हमारी है॥
यहाँ राजे सभी सिराजमान और सभी आपको चाहते हैं
अभिषेक राज का करने की सब सामग्री मंगवाते हैं॥

जन समूह कहने लगा ठीक ठीक सब ठीक।
सामग्री कहाँ दूर है सब कुछ यहीं समीप॥

विभीषण राजताज

दोहा (कपि)

महापुरुष करते सदा निज गौरव का ध्यान।
समविभागी नित्य समझते परहित में कल्याण॥

बाकी सभा स्वीकार किन्तु सभी हाँ कम भर सकते थे।
दे चुके वचन जिसका जैसा, उसमें कैसे फिर सकते थे॥
हँसकर बोले यों श्रीराम मित्र क्यों हमें लजाते हो।
आ बैठो आप सिंहासन पर, मस्तक पर तिलक लगाते हैं॥

दोहा

उसी समय श्रीराम ने पकड़ मित्र का हाथ।
प्यार चित्त कहने लगे, बड़े प्रेम के साथ॥

अय मित्र हमारी खातिर तूने, सब कुछ अर्पण कर डारा।
फिर राजताज क्या चीज भला तैने था मैंने सिर धारा॥
हे गुरु वचन अय वीर तुम्हें, सो पूरा आज निभायेंगे।
और ताज लंक का तेरे मस्तक, ऊपर आज सजायेंगे॥

दोहा

उसी समय श्रीराम ने किया यही आदेश।
उत्सव का करदो अभी, कैकिय और विशेष॥
योग्य समय शुभ नियत कर, उत्सव किया अपार।
तिलक किया जब राम ने, होने लगे जयकार॥

फिर ताज राम ने मित्र के मस्तक पर आप सजाया है।
उस समय सभी ने मिलकर के, जय खुशी का नाद बजाया है॥
कहीं गायन मुबारिक, वादी के नर नारी खूब सुनाते हैं।
अपराधी सब स्वतन्त्र किये सो भी मिल खुशी मनाते हैं॥

दोहा

विदा होन की राम ने, फेर चलाई बात।
रघुपति से मित्र लगा कहन जोड़कर हाथ॥
सीप बारिस की तरह, किया आपने प्रेम।
आप बिना हम इस तरह, ग्रीष्म में जिम हेम॥

सर्दी बिन महाराज बर्फ के पर्वत भी ढल जाते हैं।
स्वामी का फिरता हाथ नहीं यों प्राण सभी गल जाते हैं॥

कृपा आपकी से ही हमको, स्वामी है आनन्द अमन।
यह मम्र निवेदन चरणों में, इतनी जल्दी ना करें गमन॥

दोहा

विनती मित्र विभीषण की, छोड़ सके न राम।
सुन करके इस बात को जनता खुशी महान॥
सिंहोदर आदि राजे, निज सुता यहीं ले आये हैं।
और वहीं जगह सबके लक्ष्मण संग, पाणि ग्रहण करवाये हैं॥
श्रीराम लक्ष्मण सीता का सब लंका की सैर कराते हैं।
अब नित्य प्रति उनका स्वास्थ्य, और प्रमोद अधिक बढ़ाते हैं॥

—❀❀❀—

नारद

दोहा

इधर खुशी से लंक में, किया राम ने वास।
मातायें सब अवध में, होन लगी उदास॥

पुण्य योग से नारद जी यहाँ फिरते ७ आये हैं।
का यही उदासी रणवासों में देख मुनि घबराये हैं॥
भाव भक्ति को नारद को सिंहासन पर बिठलाया है।
अब रंग ढंग सब देख मुनि ने एस बचन सुनाया है॥

दोहा (नारद)

आज कहा तुम किस लिये आंसू रही बहाय।
कारण आवश्यान का, देवो हमें बताय॥

दोहा (कौश०)

दुख माचन मुनि राम यहीं, घर ना आये लाल।
आती है याद लघर पर, मिलन का अति ख्याल॥

पुत्रों का मुख देखने को दिल मेरा कबा तरसता है।
इस कारण से हे महामुनि नयनों से नीर बरसता है॥
तभी शान्ति मिले हमें जब राज कुंवर यहां आयेंगे।
मही तो ये प्राण तरसते ही, परभव को शीघ्र सिधायेंगे॥
किस हालत में है वैदेही कब उसके दर्शन पाऊंगी।
वह धन्य दिवस होगा जिस दिन, सीता को गले लगाऊंगी॥
इस कारण सोच समुद्र में, नित्य प्रति मैं गोते खाती हूं।
सुत वधु देखने की आशा में, समय संताप जाती हूं॥

दोहा (नारद)

जय रानी पुत्रवधु हैं तेरे सानन्द।
दशकन्धर का नाश कर बने सुरेन्द्र मानिन्द॥

यदि तुझे विश्वास नहीं तो स्वयं वहाँ मैं जाता हूं।
जहाँ तक होगा सुतवधू तेरे मैं जल्द बुलाकर लाता हूं॥
श्रीरामचन्द्र से मिलने को, यह दिल मेरा भी करता है।
अब तो लङ्का में गये बिना, नारद को भी नहीं सरता है॥

दोहा

इतना कह करके मुनि गये खगारी मार।
आ पहुंचे लङ्कापुरी जहाँ मुख्य दरबार॥
इधर राम से मिलन को, भरत है अति विकल।
यों विचार वे कर रहे, बैठे आप एकान्त॥

गाना (भरत)

गिन गिन के दिन गुजारे नहीं रामचन्द्र आये।
रघुवर ने हमको दर्शन अब तक नहीं दिखाये॥१॥
चौदह वर्ष हुवे पूरे और दिन भी आज का है।
आने की खबर उनकी नहीं मृत्युगण भी लाये॥२॥

माता बड़ी कौशल्या रोती है नित महल में ।
यह वीर की जुदाई मुझ से सही न जावे ॥३॥
कहदे मुझे कोई आकर वह राम आ रहे हैं ।
खुश हाथ उसको कर दू, यों "शुक्ल" मन में आय ॥४॥

दोहा

देख मुनि का लङ्क में खुशी सभी नर नार ।
सिंहासन देकर किया नारद का सत्कार ॥

नारद का स्वागत किया सभी ने, राम लखन हर्षाये हैं ।
और जनक सुता को भी रघुपति ने, मुनि के दर्श कराये हैं ॥
अन्न पान करवा करके सिंहासन पर बैठाये हैं ।
तब रामचन्द्र को नारद मुनि ने एस वचन सुनाये हैं ॥

दोहा (नारद)

माताओं की ओर भी, करना चाहिये ख्याल ।
आप यहाँ आनन्द में, उनका हाल महाल ॥

विरह पुत्र का माताओं से हरगिज सहा न जाता है ।
यो धन्य पुत्र जो मात तात का हृदय कमल खिलाता है ॥
मोह के वश होकर आर्त ध्यान में, सारा समय बिताया है ।
द्वितीया का चन्द्रमा जैसे उस तन सभी सुखाया है ॥
प्रथम सवा नौ मास उदर में, माता पुत्र को रखती है ।
फिर बाल अवस्था की सवा करती करती नहीं थकती है ॥
अब आपने और विलम्ब किया तो निश्चय प्राण गमायेंगी ।
फिर यहां रहें चाहे वहां जाय, माता न जीती पायेंगी ॥

दोहा

नारद के ऐसे सुने रामचन्द्र ने बैन ।
मुख विभीषण को प्रभु, लगे इस तरह कहन ॥

दोहा (राम)

मित्र विभीषण अब हमें, दर्में आज्ञा आप।
पुत्र विरह अब हो रहा, माताओं को संताप ॥

उपकार किये जो जो तुमने हम बदला नहीं दे सकते हैं।
प्रसन्न रहो आनन्द रहो आशीश यही कह सकते हैं ॥
अब तो माताओं के चरणों की रज मस्तक पर लावेंगे।
और पुत्र विरहिणी दुखियाओं के, हृदय सद बनावेंगे ॥

दोहा (विभीषण)

रामचन्द्र के सुन वचन गीले करके नैन।
वीर विभीषण प्रेम से लगे इस तरह कहन ॥

हे नाथ अवश्य सब माताओं का हृदय शान्त करना चाहिये।
पर एक हमारी विनती पर भी ध्यान जरा धरना चाहिये ॥
कुछ सोलह दिन तक और यहाँ रहकर पावन स्थान करो।
बस यही कृपा कर आज हमारे, ऊपर करुणा राम करो ॥
मैं अवधपुरी में लंका के, कुछ शिल्पकार भिजवाता हूँ।
मानिन्द लङ्क के अवधपुरी पन्द्रह दिन में बनवाता हूँ ॥
फिर बैठ के पुष्प विमान में आप वहाँ जाते शोभायेंगे।
और पीछे पीछे चरणों के सेवक, भी सारे आवेंगे ॥

दोहा

लङ्कपति की बात प लई राम ने मान।
नारद जी ने सब पता, दिया अयोध्या आन ॥

लङ्का के मानिन्द अवधपुरी पन्द्रह दिन में बनवाई है।
श्री रामचन्द्र के आने स पहले पहले सजवाई है ॥

इस तरफ राम न भी अपना, पुष्पक विमान सजाया है।
बहु जनसमूह श्री रामचन्द्र संग, अवधपुरी में आया है॥

दोहा

स्वागत करने को गया, जनसमूह हर्षाय।
आ रहे राम यह खबर सुन फूला नहीं समाय॥

अयोध्या

समस्त प्रजा का आनन्द मनाना

रामचन्द्र के दर्शन करन चले अवध के नरनारी।
कूंचे गलियों बाजारों में नवल सजाई फुलवारी॥टेक॥

बजे मर्फीरी अति सुरीली लड़ड़ाय फिर नक्कारा।
कोई बजाये सितार व बालक किसी पै खंजरी इकतारा॥
गंधर्व गावें टोडी भैरों राग है पुरप्यम मलारी॥१॥
रावण मारा लङ्का जीती मित्र को फिर राज दिया।
दस्त मशीन विभीषण करके, लङ्का का सिर ताज दिया॥
सब दुष्टों को रण में मारा देव हुए आज्ञाकारी॥३॥
भाग भाग भरत जारहे, फूल माला हाथों कर में।
सूर्यवंशी भण्डा लहरा, शब्द भरी गुल केसर में॥
"शुक्ल" ध्यान कर देखा आरही रामचन्द्र की असवारी॥४॥

दोहा

जय जय कार करते हुए, आ पहुंचे विमान।
वर्णन नहीं हुआ कर सके, समझो ठाट महान॥

चलें हैं दर्श करने को, अयोध्या के सभी वासी।
सुधी अपनी है बिसराई, नहीं फूले समाय हैं॥
महकते हैं गली कूचे महक घर-घर में फैली है।
सजे बहुमूल्य द्वारे किवार, मनोहर दृश्य छाये हैं॥
सभा में स्तम्भ स्वर्णों के मढ़क रत्नों की न्यारी है।
जिधर देखो मकानों पर, दिये घी के जलाये हैं॥
मगन मन में हैं माताये देख सिया राम की जोड़ी।
भरत और शत्रुघ्न ने भी चरणों में सिर झुकाये हैं॥
कवि इस वक्त की शोभा, "शुक्ल" कुछ कह नहीं सकता।
क्या शक्ति लखी की यहाँ इन्द्रगण भी लजाये हैं॥

—०※—

भरत मिलन

दोहा

जय जयकारों के शब्द गूंज रहे चहुं ओर।
भरत वीर श्रीराम से पूंछ्यास कर जोड़॥

दोहा (भरत)

अब तो भार गरीब के, सिर से लेवो उतार।
राज पाट यह आपका लेवो सभी सम्भार

धन्य-धन्य लक्ष्मण जी तुमको धन्य हजारों वारी है।
जिसने जाये धन्य सुमित्रा माता एक हमारी है॥
केवल एक निर्भाग्य मनुष्य मैं दुष्कर्मों का मारा हूं।
अब तो सेवक को क्षमा करो चरणों का दास तुम्हारा हूं॥

॥ ॐ श्री वीतरागाय नमः ॥

रामायण

चतुर्थ भाग

भरत वैराग्य

❁ मंगलाचरण ❁

दोहा—जिन वाणी नित्य वादिने अरिहन्त सिद्ध जगदीश ।
परमेष्ठी रक्षा कर त्रिपद धार मुनीश ॥

गाना मंगल—तर्ज, राधा यौवन बरसन लाग ।

जय श्री जिनके गुण गाया ।

शुद्ध मन से निश दिन जो सुमरत तन मन हर्षत सब रोम रोम ।
करते नित्य जय जय कार शब्द है तीन लोक में धूम ॥
कर कर्मनाश पावे प्रकाश चरणों के वास से मोक्ष धाम ।
इन्द्रगण मिल मङ्गल गावत चरणों में मस्तक नाय नाय ॥
नित्य नृत्य करें ध्वनि ताप ताप पूजन भय सुरपति आप आप ।
ध्या ध्यान कर परम शुभ 'शुक्ल ध्यान मय ध्याया ।

दोहा—सुना भव्य जन जगत् के, जरा लगा कर ध्यान ।
अवध पुरी में राम न किया बहुत शुद्ध दान ॥

भाग तीसरे में रावण का झगड़ा सभी समाप्त हुआ ।
यश कीर्ति राम की प्रगट हुइ रावण का पाप पर्याप्त हुआ ॥

दोहा

रामचन्द्र ने भरत को, प्रेम से गले लगाय।
बैठा कर फिर पास में, यों बोले समझाय॥

दोहा (राम)

मालिक हो कर कर रहे, कैसी मोली बात।
पूर्ण हैंने ही किया, वचन पिता का भ्रात॥

मिल आज परस्पर बैठे हैं, यह कृपा तुम्हारी ही तो है।
वैराज्य को वहाँ भिजवाना, यह प्रेम तुम्हारा ही तो है॥
धन्य कैकेयी मात जिन्हों के, ऐसे लायक पुत्र हुए।
रघुवंशिम के मणि मुकुट तुम ही इक पुत्र सुपुत्र हुए॥

दोहा

म म माथ से इधर यह, मिल रहे चारों वीर।
माताओं के भी उधर, बहे प्रेम का नीर॥

बार बार माताओं को, कुल वधुवें शीश निवाती हैं।
हम जैसी पुत्रवती हो तुम, यों सब आशीश सुनाती हैं॥
अब निवृत्त हो इन कामों से फिर, मांगलिक एक सभा लगी।
और याचक गण दुखिया प्राणी, क्या सबकी किस्मत आन जगी॥

दोहा

राम लखन भाई भरत और शत्रुघ्न जान।
जनक सुता, यहाँ पांचवी शोभ रही गुणखान॥

जमना यहाँ ओर थी लगी हुई जिसका था कुछ शुमार नहीं।
था चर्मरत्नि और रत्नों का, वाकी शोभा का पार नहीं॥

मीठ स्वर से कुल नर नारी, मिल गुल के गायन क्यार रहे।
सुन सुनपढ़ वाणी मस्त हुए, शुभ भाव से जन्म सुधार रहे॥

गन्धर्वों का उपदेशप्रद गाना

नर नारी सफल अवतार करो, सुनो ध्यान से।
शिक्षा विचार करो ॥ टेक॥

श्रीराम सुपुत्र कहाया है
जिस वचन पिता का निभाया है।
कर्तव्य जो है दिखलाया है,
अनुकरण सभी नर नार करो ॥१॥

सुमित्रा जैसी माई बनो,
और लक्ष्मण जैसे भाई बना।
सब भाई के भाई सहाई बनो
सब वीर और सम प्यार करा ॥२॥

सती सीता की महिमा अगाध कही
जिसने निज आश्रम साथ हई।
सती धर्म की महिमा याद रही,
पति धर्म पै सब न्योछावर करा ॥३॥

सब राज सुखों को त्याग दिया
और बन में पति का साथ दिया।
नहीं छाड़ा जिन रघुनाथ पिया
साथ बन पै तन निसार करा ॥४॥

लक्ष्मण ने बन में सेवा करी
श्रीराम की आज्ञा शीश धरी।

मित्र विभीषण की विपदा हरी,
तुम भी निज हृदय उदार करो ॥५॥
सत्य पुरुषों का अनुकरण करो
जिन धर्म की आकर शरणपरो।
सब एस ही पूर्ण प्रण करो
दुखियों पर करुणा अपार करो ॥६॥
हनुमत से सेवक ना पायेंगे,
जो सत्य पै रक्त बहायेंगे।
स्वामी हित कष्ट उठायेंगे,
ऐसे सब पर उपकार करो ॥७॥
कुसंग विभीषण छोड़ दिया
सत्यवादी का संग जोड़ लिया।
अन्याय से निज मन मोड़ लिया
तुम सज्जन जन से प्यार करो ॥८॥
सच्च सुग्रीव जैसे मित्र कहाँ,
और ऐसी भक्ति पवित्र कहाँ।
अब कलयुगी मित्र विचित्र कहाँ
ऐसों का मत विश्वास करो ॥९॥
तुम भी राम लखन से योग्य बनो,
इस भारत का सब रोग हनो।
सतयुग जैसे धर्मी बनो
शुभ ध्यान शक्ति सुलकार करो ॥१ ॥

(समाप्तोऽयं रामायणस्य तृतीयो भाग)

ओ३म् शान्ति शान्ति शान्ति ।

॥ ॐ श्री वीतरागाय नमः ॥

रामायण

चतुर्थ भाग

भरत वैराग्य

❀ मंगलाचरण ❀

दोहा—जिन वाणी नित्य धारिले, अरिहन्त सिद्ध जगदीश।
परमेष्ठी रक्षा करें त्रिपन धार मुनीश॥

गाना मंगल—तर्ज, राजा यौवन बरसन लाग।

अब श्री जिनके गुण गाया।

शुद्ध मन मे निश दिन जो सुमरत तन मन हर्षत सब रोम रोम।
करते नित्य जय जय कार शब्द है तीन लोक में धूम॥
कर कर्मनाश पाते प्रकाश चरणों क धाम लें मोक्ष धाम।
इन्द्रगण मिल मङ्गल गावत चरणों में मस्तक नाय नाय॥
नित्य नृत्य करें ध्वनि लाय लाय पूजन मन सुरपति चाय चाय।
क्या कथन करे महा शुभ 'शुक्ल' ध्यान मन ध्याया।

दोहा—सुना भव्य जन जगत् क, जरा लगा कर ध्यान।
अवध पुरी में राम न किया बहुत कुछ दान॥

भाग तीसर में रावण का झगड़ा सभी समाप्त हुआ।
यश कीर्ति राम की प्रगट हुई रावण का पाप पर्याप्त हुआ॥

आज अयोध्या में सार यहाँ, और न आनन्द बरस रहा।
नर नारी क्या बच्चा-बच्चा, श्री राम के दर्श को तरस रहा॥

दोहा—गये राम वनवास में और ध्यान पर्यन्त।
जो भी कुछ हुआ देखने, जमा हुवे एकान्त॥

नाट्यशाला में लंका का, जो महायुद्ध था दिखलाया।
शक्ति लक्ष्मण की एक सुदर्शन दृश्य भयानक बतलाया॥
जिस समय नाट्यशाला में था, विमान उठाया रावण का।
स्मशान यात्रा समय गायन, का दृश्य था एक सुहावन का॥

गायन—दशकंधर को इस कुम्भसम ने, मुर्दार कर दिया।
कर्मों ने रावण जहाँ में, गुनहगार कर दिया॥
यह त्रिखंडी राजनपति रत्नों का ताज था।
सिरताज गिराकर भूमी पर, मासार कर दिया॥
डरते थे योद्धे बड़े-बड़े ऐसा प्रताप था।
वह जिस्म बड़ा बलवान् था, बेकार कर दिया॥
इसके थी हजारों रानियाँ, आया न फिर सबर।
महारानियों को कर्मों ने, निराधार कर दिया॥
कर्मों के आगे सूर्य चन्द्र, तारे घूमते।
मुख रूप चन्द्र जैसा था, सब स्यार कर दिया॥
इस महापुरुष के मरने का, अफसोस है हमें।
हाय शूरवीर पै होनी ने क्या वार कर दिया॥
फरमाया श्री जिनराज ने विषय विष से खराब है।
इस कामदेव ने लाखों का सुख क्षार कर दिया॥
स्पर्शेन्द्रिय के वश मे हस्ती, फंसता कैद में।
और घ्राण विषय ने भ्रमर को बेजार कर दिया॥
रसना के वश में होकर, मछली देती प्राणों को।

और कर्ण राग ने तीर, हिरण के पार कर दिया ॥
जलते पतंग दीपक में, नेत्रों के विषय से ।
इन पांचों विषयों ने दुःखी संसार कर दिया ॥
ऐसी इच्छा ना करना कोई, नरनारी भूलकर ।
यह गायन सुना कर सबको, खबरदार कर दिया ॥
विषयों से मन हटा कर, धर शुक्ल ध्यान कर ।
श्री जिन की शिक्षा ने समुद्र जन पार कर दिया ॥

दोहा—देख देख जनता हुई आश्चर्य में लीन ।
दस कर्मी नम के हुवे भाव योग शुद्ध तीन ॥

नौ रात्री ये लगा रहा, नवराते वही मनाते हैं ।
रावण मारा था यही दशहरा, दशवें दिन दिखलाते हैं ॥
यही राम-रावण लीला का खेल एक ऐतिहासिक है ।
संसार में कोई निज गुण का और कोई परगुण का भाशिक है ॥

दोहा—विरक्त भरत पर और भी पड़ा प्रभाव विशेष ।
सो भी सुनिये ध्यान से कथा अगाड़ी शेष ॥

दोहा—पुरयभाव का पुराय सब रहे सदा निज पास ।
महापुरुष जहाँ पर रहे होवा वहाँ प्रकाश ॥

मद रहित हाथी को प्रेम से सब नर नारी स्वयं निहारते हैं ।
श्रीराम को ऐसे देख रहे दृष्टि न पीछे निवारते हैं ॥
भद्रारचित ने उसी समय दो प्रेम के नेत्र घुमाए हैं ।
मानो कि सब की आंखों में सुरमे की तरह समाए हैं ॥
दर्शन करता करता मानु अस्ताचल पर जा पहुंचा ।
था नियम अनादि पूर्ण करना यह भी कुछ दिल में सोचा ॥
श्री रामचन्द्र ने सन्ध्या करने का निज आसन जमा लिया ।
और लिए यही हो के माना, निमन्त्र का सामा बनाय लिया ॥

दोहा—निवृत्त हो निज कर्म से मित्र गणों के साथ।
सैर करन को चल दिये, दीनबन्धु रघुनाथ॥

सब दृश्य अवध का देख-देख, मन में मुस्काते जाते थे।
मार्ग में मिलते नर नारी चरणों में शीश झुकाते थे॥
नर-नारी क्या पशु-पक्षी सब प्रजा में था आनन्द अमन।
यह हाल देख मन मग्न हुआ फिर, तर्फ महल को किया गमन॥
प्रबन्ध भरत का देख-देख कर महा प्रसन्न श्रीराम हुए।
बड़ो भरत पर इस महा पुरुष ने, सिद्ध सभी के काम हुए॥
फिर सब ने ही आराम किया निज शयन गृह में जाकर के।
श्री भरत विचार में जा बैठे आसन पर ध्यान लगा कर के॥

दोहा—सब अनित्य संसार में, माया की बिनराज।
बिन त्यागे संसार के, सरे न आत्म काज॥

संसार समुद्र ऐसा है, जिसका न आदि अन्त कहीं।
अवतार पुरुष भी छोड़ गये, जब देखा इस में तत्व नहीं॥
जो भी कुछ रचना दुनिया में सब प्रकृति की माया है।
और नाशवान यह हाड़ मांस, लहू चमड़े की काया है॥

गाना (भरत विचार में)

कर्मों के न्यारे देखा, कैसे हैं ख्याल जी।
जो निकला इस जंजाल से, वो ही निहाल जी॥ टेक॥
एक मृत्युलोक क्या स्वर्ग नर्क, सारे ही लोक में।
इस मोह कर्म का शासन है फैला विशाल जी॥१॥
एक सिया भी जिन देख न कोई भी पा सका।
इस मोह कर्म की चालें हैं गहरी कमाल जी॥ २॥
फिरते हजारों गुप्तचर, एक-एक पतन पर।
विषयों से बचना आत्म को बराक मुहाल जी॥ ३॥

यह दुनिया भूल भुलैया, इसका जेल खाना है।
त्रिलयकी क्या बकी सुर भी हाल मेहाल भी ॥ ४ ॥
अपराधी पर अपराधी हम जैसे अधिकारी हैं।
हम रुष्ट पुष्ट म टकरा, हम हाये पामाल जी ॥ ५ ॥
फंसता स्वयं यह जीव जैसे मकड़ी जाल में।
जिन अरिहन्त न हुआ हस टेढ़ा ममाल जी ॥ ६ ॥
यदि चूका नर तम पाकर के तो फिर पछताऊंगा।
माह के वश कलुवे पर जैसे छाया शयाल जी ॥ ७ ॥
निश्चय शुक्ल, मुझ को हुआ दुनिया सब मूठी है।
अब तो श्री जिनवर क चरणों में ख्याल जी ॥ ८ ॥

दोहा—इसी तरह से ध्यान में हा आया प्रभात।
सेवक जन आ सामने खड़े जोड़ कर हाथ ॥

हाथ मक के दातुन था, दूजे क कर में झारी है।
फूलों की माला लिये खड़ा और कोई पान सुपारी है।
अवधेश का जब मालम हुआ और देखा मगन खड़ा करके ॥
अति नम्रता से सेवक जन का यों बोले समझा करके।

दोहा—अब भाई अब तो हमें रही न इनकी प्यास।
आज्ञा लन का चल रामचन्द्र क पास ॥

सेवक स्वामी का भम समी, अब हृदय स काफूर हुआ।
और राज लगाम म ठोकों स भी मी मी पाशम दूर हुआ ॥
अब तो हम सारे भम छोड़ धर्मों म बुद्ध मचायेंगे।
स्वतन्त्र आत्मा करने को श्री जिन दीक्षा ले जायेंगे ॥

दोहा वृत्तान्त समी यह सुन न कहा राम म जाय।
उसी समय आ भरत म, चरण गले लगाय ॥

आज प्रात जी अब तलक, मिले न मुझको आय।
या पाठ जाप करने लगे बैठे आसन लाय॥

दातुन मंजन भी किया नहीं, सेवक सम्मुख सब खड़े हुये।
क्या शय्या पर भी नहीं सोए, सब फूल खिले ही पड़े हुये॥
शीघ्र करो स्नान समय, दरबार का होने वाला है।
सूर्य है कितना चढ़ा हुआ मानस भी कसता जाता है॥

दोहा—इन सब भावों से हुई पृच्छा मुझको आज।
अब तो आज्ञा दीजिये, साधूं आत्म काज॥

यह संयम और त्याग नहीं, आत्म निर्मल कर सकते हैं।
सम ज्ञान दर्श चारित्र तप, इसके मल को हर सकते हैं॥
अब राजमहल यह फूलों की, शय्या नहीं मन को भाती है।
यह नश्वर मुझे सारी दुनिया, शूलों के मानिन्द भाती है॥
चढ़ गया मजीठी रंग कभी यह नहीं उतरने वाला है।
चाहे एक क्षण या काल भरत, संयम व्रत लेने वाला है॥
कुछ सेवा न कर सका आपकी, क्षमा दोष क्षमा दीजे।
संसार समुद्र से बड़ा यह, पार मेरा करवा दीजे॥

दोहा—कैसी भाखी बात यह, लगा कहत तू वीर।
वचन विरह का सुनत ही लगा कलेजे तीर॥

अभी करो साधन घर में मुनिव्रत निर्दोष फिर ले जाना।
पर तुम विरह का इस हालत में मुझे न भाई दे जाना॥
वर्ष हुए चौदह तेरे दर्शन के, लिए तरसता था।
और लिए तुम्हारे मिलने का नयनों से नीर बरसता था॥
अब तक आज्ञा पाली तुमने अब भी कहना स्वीकार करो।
मानिन्द भीम के बदन रहा मेरे मन का सन्ताप हरो॥

सुग्रीव आदि भी आ पहुँचे सब तेरी तर्फ निहार रहे।
यह स्वार्थ अभी परित्याग करो, दिल में क्या सोच विचार रहे॥

दोहा—जो कुछ मुख से कह चुका, है पत्थर की लीक।
अब त्याग भाई आपका भाव नहीं है ठीक॥

जिसको समझे तुम भरत वीर, यह भाई अब वह भरत नहीं।
दुनिया में फँसने वाली कोई मानूँ गा मैं शरत नहीं॥
जिसने था मुझे भुला रक्खा, उस मोह शत्रु का नाश हुआ।
सर्वज्ञ देव की कृपा से अब, अनुभव ज्ञान प्रकाश हुआ॥

गाना (भरत और राम)

राम—फिर हम तुमको समझाते हैं, संयम न धीर मुलाका है।
तू राज महल में फूलों की शय्या पर सोने वाला है॥
भ०—जिनको दुनिया कि स्वादिश,विषय सुख उनको लगतावाला है।
पर मुझ नजर आता सब मग में दुःख यह देने वाला है॥
राम—क्षुधातृषा सर्दी गर्मी आदि दुख धीरम भारी है।
आगार नहीं कोई जिसमें दर दर का मन भिखारी है॥
भ०—जब तक घृणा जिसको इसम, तो समझ दीर्घ बीमारी है।
आत्म के निर्मल करने का यही साधन हितकारी है॥
रा०—जब राग शोक कोई आन लगा तो फिर क्या यत्न बनाओगे।
आयुपर्यन्त अवश्य ही कैसे मोह समय बिताओगे॥
भ०—बस यही भ्रम है दुनिया में जिसने सबको भरमाया है।
यह अमर आत्मा ज्ञानमयी, बाकी पुद्गल की माया है॥
रा०—हमने भी देखे मस्त बहुत पर आपसा नहीं जमाने में।
दिल में कोई सोच विचार करो क्या आग इसमें रावान में॥

म०—जी हाँ यह मक्खी मस्त मभी, जो आते मगर जमाने में।
। हम विषयाशी पर मस्त हुए क्या होगे हमें फँसाने में॥

दोहा—जो कुछ इच्छा आपकी हमें वही स्वीकार।
किन्तु आप व्यवहार का कुछ तो करें विचार॥

पहिले यह हृदय सर्द करो जो, मुख्य कर्तव्य तुम्हारा है।
कुछ दिन के बाद बस आना फिर छोड़ न पवन हारा है॥
स्वयमेव आप नम करव से दीक्षा तुम्हें दिखायेंगे।
वह मन्य दिवस होगा जिस दिन हम भी इस पथ पर आवेंगे॥

दोहा—माई मुझ को नहीं रहा किसी वस्तु से राग।
समय समय पर बह रहा कर्मरूप विष बाग॥

सर्वज्ञ देव ने निश्चय से पहले व्यवहार बताया है।
क्योंकि इसके बर्ताव बिना, न मोक्ष किसी ने पाया है॥
बस आज्ञा हो मिल गई हमें, अब आपका कहना करते हैं।
और स्वल्प दिनों के लिये भाल का, वचन शीश पर धरते हैं॥

दोहा—एक दिन सब रङ्ग वास की, सीता आदिक नार।
सैर करन का चल दई भरतेश्वर के लार॥

जा निर्मल नीर सरोवर में जल क्रीड़ा सभी लगीं करने।
कई नौकाओं पर घूमरहीं कई लगी भुजाओं से तरने॥
मदमस्त हुआ सहसा हस्ती फिरता भ्रम से बाहिर हुआ।
सुनं हाथी को देख भगे चहुं ओर मे हा हा कार हुआ।
जो मिला सूँड से पकड़ कर, उसे फैंकता जाता था।
उन देख-देख पद हालत भर, भारी समुद्र घबराता था॥
जब पहुँचा पास सरोवर के, तो सभी रानियां घबराई।
यह समझ लिया कि आज हमारा काल आगया दिखाई॥

दोहा—देखकर सब को पैठे बड़े भरत यशवीर।
हाथी सम्मुख भरत के आया जैसे तीर॥

महाबली क्षत्रिय योधा भी बस खड़ा वहां बेबाक रहा।
वह हस्ती सन्मुख आन भरत को देख-देख कुछ सोच रहा॥
पुण्योदय से उस समय करी को जाति स्मरण ज्ञान हुआ।
और पूर्व जन्म के हाल देख कर दूर सभी अज्ञान हुआ॥
बकरी का जैसे कान पकड़ पाली आगे कर लेता है।
हस्ती भी ऐसे शान्त हुआ, अवधेश को कुछ नहीं कहता है॥
इतने में योधा आ पहुंचे, जो कि गजराज के पीछे थे।
कई वाजी गज पर थे सवार कई विकट गाड़ी का मीच थे॥

शेर—शान्त जब आकर लखा गजराज को श्रीराम ने।
शिक्षित स्वभावी बन गया कैसे भरत के सामने॥

जन्मांतरों को देख कर हस्ती किया विचार।
पशुयोनि मैंने लई मनुष्य जन्म को हार॥

बस भुवनालंकृत हस्ती को लाकर गजशाला में बांध दिया।
और सब दम खम को धार हृदय, मन कौतूहल से मोड़ लिया॥
कुल भूषण और देश भूषण उस तर्फ बाग में आकर के।
है समवसर केवल ज्ञानी वहां ऊपर मुख्य में आकर के॥

दोहा—सुन कर माली के वचन मन में खुशी अपार।
दिये राम ने भृत्य को आभूषण सभी उतार॥

समृद्धिवान हुआ माली, मालीपन उसका दूर हुआ।
जय तारण तरण महाराज आगये सभी जगह मशहूर हुआ॥
भ्रातों सहित सकल परिवार राम ने आकर दर्शन पाए हैं।
नर नारी क्या बच्चे बच्चे सब बाग की ओर सिधाए हैं॥

फिर नाशवान सब सभी जगत् को, नीच गति से करता है।
कभी कुमति का मन बने दास और कभी सुमति को चाहता है॥
सब तीन लोक में घूम कभी, तू ध्यान हृदय में लाता है।
मन धीर कभी कायर बन जाता, कभी बने दाता कंजूस॥
बने समुद्र गहन कभी गुण रत्नों की मनता मंजूस॥
निज स्वार्थ में अन्धा बनकर, कभी क्रूर कर्म को करता है।
और कभी पराए हित पापी, मन मारा मारा फिरता है॥
यह एक रूप मन हुआ न अब तक आगे कभी न होवेगा।
जो करे भरोसा इस मन का वह शीश पकड़ कर रोवेगा॥
इस मन के द्वारा तन्दुल मच्छ वह नर्क सातवीं जाता है।
जहाँ भयंकर दुःख रौरव नर्क का, तेतीस सागर तक पाता है॥

दोहा—मन के भेद अनेक हैं मत करना विश्राम।
जो इस मन को वश करे पावे मोक्ष निवास॥

किन्तु यह ध्यान हो प्रथम दुनिया से चित्त उदास करे।
और साथ-साथ काया वाणी को भी शुद्ध नित्य अभ्यास करे॥
मोह जाल अनादि बन्ध तोड़ जो संयम ध्यान लगाते हैं।
वह वीर पुरुष कर्म रूप शत्रु का मार भगाते हैं॥

दोहा—व्याख्या विविध धर्म की, करी वहाँ मुनिराज।
शीश झुका कर जोड़ कर बोले रघुकुल ताज॥

दोहा—तारण तरण जहाज हो, जिन शासन शृङ्गार।
दुःख हरते संसार के, शोक दाहम हार॥
क्या सम्बन्ध जन्मान्तर का हे प्रभु दीन दयाल।
हस्ती का और भरत का भाषो कृपानिधि हाल॥

तोड़ बन्ध गजराज बना स्वतन्त्र जो मद में फिरता था।
प्रत्येक मनुष्य सब धीर देख हस्ती के भय से गिरता था॥

कई धार धार करके कुभेष निज को ऋषि मुनि कहलाने लगे।
कन्द-मूल तो दूर रहा मद मांस तलक भी खाने लगे॥
कई तापस बन कर अग्नि में, तप तप कर पाप कमाने लगे।
अज्ञान कष्ट सुख भोग भोग भूनी में जीव जलाने लगे।

दोहा—कायर जन होते सदा, महा ढोंग में लीन।
मिथ्यावश इस जीव की होती है मति क्षीण॥

छन्द—प्रह्लादन सुप्रभ दो तापस की वृत्ति पाल कर।
चन्द्रोदय सूर्योदय, अगले जन्म हुए आन कर॥
चन्द्रोदय का जन्म फिर, भ्रमान्तर से गजपुर हुआ।
चन्द्रलेखा मात नृप भानु का कुलंकर सुत हुआ॥
गजपुर में ही विश्व भूति के एक अग्निकु का नार है।
सूर्योदय जन्मा यहां श्रुतिरति नाम कुमार है॥
नृप पद कुलंकर को मिला, नीति में रहते वे सन्न।
सैर के लिये भूपति एक रोज बन में किया गमन॥

दोहा—विराजमान थे बाग में ज्ञानी मुनि महान्।
नमस्कार कर भूपति बोले मधुर जबान॥
उपदेश कुछ सत्यधर्म का भाषो दीना नाथ।
क्या सम्बन्ध है कर्म का जीवात्म के साथ॥

दोहा—इस संसार समुद्र का कहीं न आदि अन्त।
जैसे तिल में तैल यों, आत्म का वृत्तान्त॥

तेली जैसे यन्त्र से खल तल अलग कर देता है।
बस इसी तरह शुभ साधन से आत्म निर्मल कर लेता है।
फूल से इतर पृथक होकर, फिर फूल नहीं बन सकता है॥
या यों समझे कि दग्ध बीज का अंकुर नहीं जम सकता है।

दोहा—धर्म कथन द्विविध कहा तीर्थंकर भगवान।
साधन कर यह आत्मा पावे पद निर्वान॥

सम्यक् ज्ञान दर्शन चारित्र, बिन कुछ भी नहीं बन सकता है।
और कर्मरूप शत्रु से बिन शक्ति रण नहीं ठन सकता है।
बस शक्तिमान ही कर सकते हैं, आत्म का कल्याण सदा।
शुभ शक्तिहीन मिथ्या धर्मी, कर्मों से पृथक् न होय कदा॥

दोहा—बिना ज्ञान करनी वृथा, केवल कष्ट अनेक।
उनमें से व्यक्ति प्रगट तुम्हें बतावें एक॥
तापस इस वन खंड में धूनी रहा जलाय।
उस में एक भुजंग है देखो जरत बचाय॥

उपदेश फेर सुनना बाकी पहिले उसका संताप हरो।
है पिछले भव का पिता तुम्हारा, काम शीघ्र यह आप करो॥
जहां दया नहीं वहां धर्म कहां, सारांश यही सब धर्मों का।
जब तत्त्वरूप जिनका ज्ञान नहीं वहां नित्यप्रति बन्धन कर्मों का॥

दोहा—तापस के डेरे पर गये, उस समय भूपाल।
धूनी से उस काष्ठ का, देखा बाहिर निकाल॥

जब मुख्य से लक्कड़ पड़वाया तो, निकला एक भुजंग वहीं।
है धन्य मुनि का कथन जो इसकी जान बची थी भली नहीं॥
धिक् ऐसी तापस वृत्ति पर, जो निश दिन पाप कमाते हैं।
फिर साधु पन का ढोंग बना कर, वृथा ही काल गंवाते हैं॥

दोहा—ज्ञान बिना करनी सभी कर्म बन्ध का काम।
भ्रमण करें संसार में वृथा जला कर चाम॥
आज्ञा ले मुनि चल दिये, लगा धर्म की आग।
देख हाल पीछे हुआ भूपति का वैराग्य॥

सर्वज्ञ देव ने सत्य कहा मिथ्यात्व महा विष मारा है।
मिथ्यात्व की करणी से आत्म संसार कूप में डारा है॥
सम्यक् ज्ञान दर्शन चारित्र, बिन आत्म दुःख पाता है।
कर्म संग हो मूढ जीव, संसार का चक्र लगाता है॥

जैसा भी कारण मिले, वैसा ही कार्य होय।
कुसंगति से आत्मा, आत्म गुण दे खोय॥
मुनि जन के उपदेश से, राजा बना सुपात्र।
रानी थी भूपाल की, व्यभिचारिणी कुपात्र॥
रानी का कुराग था श्रुति रति के साथ।
स्त्री के प्रपंच को नहीं समझा नर नाथ॥

नहीं समझा नर नाथ और, यह खोटी संगति ऐसी है।
जिसके समान जीवात्म का न दुनिया में कोई द्वेषी है॥
शुद्ध आत्म ज्ञान बिना विद्या चाहे पढ़ जावे कोई कैसी है।
मामिन्द दर्वी के विद्वान् को पशु कहो चाहे पहलो है॥

दौड़—शुभंकर नृप घर आया भेद रानी ने सुन पाया।
लगी दिल में घबराने
भीदामा पाप छिपाने को या लगी चक्कर दौड़ाने॥

दोहा—पाप छिपाने के लिये, करते कपट अपार।
इस कारण अज्ञान से रुलें जीव संसार॥

यह भ्रम पड़ गया रानी का नृप को ज्ञानी की संगति है।
यदि इन मिल गया भेद सभी तो मेरी बने विषम गति है॥
उसे ज्ञानी गुरु के द्वारा, यदि इस पता लग जायगा।
तो श्रुति रति से भी पहिले मुझ पर आपत्ति लायगा॥

दोहा—अच्छा है कि प्रथम ही, देऊं इसको मार।
नहीं तो यह मेरा कभी देगा कर्म उघार॥

अब प्रेम भाव में राजा का, मन अपनी तरफ झुका करके।
निष्कंटक होकर सुख भोगूं इसका परभव पहुंचा करके॥
कुछ मति रति ने भी राजा का मिथ्यात्व भरम में डाल दिया।
मुनि शिक्षा के शुभ संस्कार उन सब का बाहिर निकाल दिया॥
चौपाई—श्रीरामा ने कारण व्यभिचार, विष देकर मारा भर्तार।
इधर आयु घटी मर गया बार कर्म बांध करमत्त रही नार॥

दोहा-- भ्रमते भव संसार में, राजग्रही स्थान।
आगे पीछे सुत हुवे कपिल विप्र गृह आन॥

नाम विनोद बड़े का था और छोटा रमण कहाता था।
लघु बीर गया प्रदेश में क्योंकि, विद्या पढ़ना चाहता था॥
विनोद भाई की शाखा नारी दत्त विप्र से प्रेम हुआ।
यह काम बाण जिसको लागा बस कभी न उसके क्षेम हुआ॥
दोहा—शाखा यक्ष मन्दिर गई, दत्त से कर संकेत।
कारण नजर आता नहीं कैसा अन्धा हेत॥

कुछ पाकर भेद विनोदपति शाखा के पीछे आया है।
उस तरफ रमण विद्या प्राप्त कर, उस मन्दिर में आया है॥
प्रवश मुहुर्त कल का है यह सोच वहां आसन लाया।
इतने में शाखा आ पहुंची क्या भावीने मौका पाया॥

दोहा—दत्त समझ कामन बड़ी मिली रमण के साथ।
पीछे से आकम्त ने करी रमण की घात॥
रमण का खड्ग उसी समय, शाखा ने तुरत उठाया है।
और अपने आप बचाने को निज पति को मार गिराया है॥
इस कामदेव ने बड़े बड़ों का अन्त में सत्यानाश किया।
मर शाखा गई नर्क दोनों भाइयों ने परभव वास किया॥

दोहा—इस कर के संसार में इम घराने आय।
विनोद सेठ का सुत हुआ, नाम धनद सुखदाय॥
धनद का सुत था रमण हुआ, और लक्ष्मी जिसकी माता है।
पूर्व सुख साज समाज मिला, और भूषण नाम कहाता है॥
भूषण की स्त्री परणाई बत्तीस, थी इम घराने की।
शक्ति न लेखिनी जिह्वा में सार शुभ गुण कथ गाने की॥
दोहा—वीभर यद्यपि महान् न पाया केवल ज्ञान।
उत्सव करने देवता, लगे उधर का ध्यान॥
भूषण भी चल दिया श्री मुनिराज के दर्शन पाने को।
पर काल बली सन्मुख आया आगे घर एक बहाने को॥
विष धर एक भुजङ्ग बली ने भूषण पैर पर डंक धरा।
सब नस नस में मिल गया जहर, भूषण क्षणमें हा तंग मरा॥
दोहा—शुभ परिणामों में तजे सेठ पुत्र ने प्राण।
आगे जहां पैदा हुआ सुनो लगाकर काम॥
विदेह क्षेत्र में रत्नपुरी नगरी थी स्वर्ग समानी।
अचल नाम था चक्रवर्ति हिरणी जिसकी पटरानी॥
जन्मा आन प्रियदर्शन यहां नाम दिया सुखदानी।
बालपने से प्रेम धर्म में आगे सुनो कहानी॥
दौड़—धारह व्रत धारण कीने दान दया में चित दीने।
पापधोपधाम व्रत करके॥
आयु पूर्ण कर पैदा हुआ ब्रह्म स्वर्ग में जाकर के॥
दोहा—दूजा भाई धनद भी, पोदनपुर में आय।
शकुनादी मुख्य विप्र के, पुत्र जन्मा आय॥
मृदुमति नाम रक्खा इसका यहां खोटी संगत होन लगी।
कर्म-भीत ममता पिता न करता, पर माता मोह में रोन लगी॥

समुद्घात सूत्र में दीक्षा धारण की, सभी विधि बतलाई है।
संक्षेप रूप में कहा विधि, यहां लिखने में नहीं आई है॥
और संग भरत के हजार कर्मी जीवों ने संयम धारा है।
यह समझ लिया कि मायाजाल दुनिया सब धुंध पसारा है॥

गाना (भरत जी का संयम ग्रहण)

संयम भरत ने धारा दुनिया से किया किनारा ॥टेक॥
अमरधरा ने हुक्म सुनाया, तीन लाख सौनैया दिलाया।
ओघा पात्र मंगवाया नाई का दुःख निवारा॥स० १॥
स्वलिंग मुख पत्ति धारी पंचम गति देवन हारी।
हुए चार महाव्रत धारी, प्रवचन सारा सुखकारा॥स० २॥
सम्यग्ज्ञान दर्श चित्त लाया चारित्र से कर्म खपाया।
पुरुषार्थ मित्र बनाया निर्मल हो मोक्ष पधारा॥स० ३॥
आदर्श हुए मुनि त्यागी त्रियोग शुद्ध वैरागी।
हम करें सोही बड़ भागी, ध्यान 'शुक्ल" शुद्ध सारा॥स० ४॥

दोहा—कैकेयी ने भी उस समय एसा किया विचार।
पत्र पुष्प फल के बिना समझो वृक्ष निसार॥

चौपाई

झूठा जान जगत सब छोड़ा तप जप में आतम को जोड़ा।
वर्ण गंध रस से मन मोड़ा संयम रस जिम खूब निचोड़ा॥
दोहा—चार कर्म जब हन दिये प्रगटा केवल ज्ञान।
अन्त समाधि भरत ने शत्रुघ्न भय सह मान॥
कर्म काट कैकयी माता ने अन्त मोक्ष पद पाया है।
शुद्ध अनशन करके इसी पञ्चम सुरलोक सिधाया है॥
जो सच्चिदानन्द हुए उनका अनन्य हृदय में धरना है।
अब वासुदेव बलदेव की पदवी का वृत्तान्त यहाँ करना है॥

वीर मोर सम प्रेम सभी में जात पात का भेद नहीं।
दान शील शुभ धर्म भावना, करते यहां कुछ खेद नहीं॥
क्रोध मान और लोभ कपट यहां प्रायः सभी यह तजते थे
और सदाचार में लीन हर समय, पाप कर्म से बचते थे॥
थी सतागुणी बुद्धि जिनकी, घृत दूध दही के खाने से।
थे बन सदाचारी रहते थे आत्म ज्ञान प्रदान से॥
अवतार बीसवें मुनिसुव्रत स्वामी का जहां पर शासन था।
शुभ दया धर्म की शिक्षा का, प्रत्येक के दिल में आसन था॥
क्या शक्ति कलम जबान की है, जो सारे सुखों का बयान करें।
ये फरश मणि और रत्नों के, बाकी पाठक खुद ध्यान धरें॥
दोहा—जहाँ दया धर्म वहां धन बढ़े धन बढ़ मन बढ़ होय।
मन बढ़ता सन्सार में बढ़त बढ़त सब कोय॥
राजा प्रजा क्या सब धर्मी इसलिये अतुल सुख बढ़ने लगा।
मानिन्द रवि के पुरुष सितारा अद्भुत गौरव चढ़ने लगा॥
औदार चित्त ने देख समय दिल का दरियाव बनाया है
और सबसे प्रथम विभीषण को, लंकेश का तिलक सजाया है॥
सुग्रीव को वानर द्वीप और हनुमान् का श्रीपुर का इलाका।
कुछ क्रम से पहिले था जिनका उनउन को राज दिया वहां का॥
वीर विराध को पाताल लंक और नील को ऋक्ष पुर नगर दिया।
प्रतिसूर्य को हनुपुर के साथ कुछ प्रान्त नया एक और दिया॥
और रथनुपुर भामंडल का, कुछ प्रान्त स्वरूपावल का था।
दधोपगीत दिया रत्न जटी को, एक ग्राम हलारी दल का था॥
यथा योग्य सबको खुश करके, लाखों का जागीरें दई।
विमुख नहीं कोई रक्खा भाग्य में सबकी तस्वीरें लई॥
दोहा—राजनगर जागीर सब लेकर खुशी अपार।
शत्रुघ्न खाली रहा करत राम विचार॥

प्रति वासुदेव का अन्त कर सो वासुदेव कहाता है।
फिर कौन रहा स्वतन्त्र हमारी, समझ नहीं कुछ आता है॥
दूत भेज कर या तो उसको आज्ञा में प्रवेश करो।
नहीं तो मैं स्वयं समझ लूंगा कृपया करके आदेश करो॥

दोहा राम—भ्रम भाई तू मधु की मेल सके न चोट।
विजय करना कठिन है, मथुरा गढ़ का कोट॥

त्रिशूल एक चमरेन्द्र ने मधु मित्र को दे रक्खी है॥
मानो सारी दुनिया की शक्ति, निज कर में ले रक्खी है॥
इसी कारण रावण ने, अपना जामात बनाया था।
क्या पता हमें किस नीति से, आधीन न उस बनाया था॥

दोहा राम—कई योजन तक मधु की करे मार त्रिशूल।
पता जाने से ही प्रथम कर देय निर्मूल॥

उस दवमयी शस्त्र की मवक्षा, रोक कौन कर सकता है।
और ऐसा योद्धा कौन यहां जाने का दम भर सकता है॥
अब इस विचार को दूर करो भाई यह ख्याल हमारा है।
तुम खुद ही आप विचार करो क्या ठीक यह ध्यान तुम्हारा है॥

दोहा—त्रिखंडी भूपाल की करी आपन कार।
मधुक विचारा कौन है जिस में करा विचार॥
परशुराम देव की दई दुहा रावण प क्या शक्ति न थी।
और सहस्र एक मापी पिता पुत्रों में क्या भक्ति न थी॥
सुर सुन्दर आदि राजे सब दशकंधर का दम भरते थे।
सब ने साथ दिया रावण का पीछे पाय न धरते थे॥
तुमने सब शक्ति समझ दई उस महा यशी त्रिखण्डी की।
फिर क्या शक्ति मेरे आगे बस कायर मधु पाखण्डी की॥

सोच समी वजवाज शत्रुघ्न, दिल में हर्षाया है।
और समी कुछ ठीक हुआ पर एक नुक्स पाया है॥

दोहा नजर मिला घेरा लावे तो राज्यापन घट जावे।
मन में चक्कर खाया
कुछ सोचन के बाद और एक ढंग नजर में आया॥

दोहा पहिले लिख एक पत्रिका भेजूं मधु के पास।
यदि उत्तर कुछ न दिया मिले मुझे अवकाश॥

देख पत्रिका मधु जरा भी, ध्यान नहीं कुछ लायेगा।
किन्तु यह व्यर्थ समझ पत्र को रद्दी में गिरवायेगा॥
कारण जब बन जाता है कार्य होने में देर नहीं।
रस्ता हम को मिल जायगा, नीति में लवरा फेर नहीं॥

दोहा शत्रुघ्न ने झट लिया कागज कलम दवात।
मधुरागढ़ पत्र लिखा सिद्ध श्री कुशलात।

यहां पर है सब कुशल आप की कुशल सदा चाहता हूँ।
सर्व समाधान आप क्षत्रिय का गुन पाता हूँ॥
अपरञ्च यहां जो हुआ सभी, कुछ तुम को समझाता हूँ।
देखो जल्दी उत्तर नहीं मैं स्वयं आप आता हूँ॥

दोहा रामचन्द्र ने कर दिये दूर सभी तफ्सील।
खबर आपको कुछ नहीं क्या पढ़ रही अफीम॥

यह सभी देश मधुरा नगरी मेरे अधिकार में आई है।
अब आप मेरे अधीन बने इसलिए बात समझाई है॥
तीन दिवस अन्दर ही, उत्तर इसका देना चाहिये।
समय देख कर राग सम्बन्ध अपना सब कर लेना चाहिये॥

कहा कवि प्यारे जी जल्दी देखो जवाब शत्रुघ्न यह लिखवाया।
ले पत्रिका हाथ दूत को वहाँ पठाया॥

दोहा दूत अयोध्या से चला पहुँचा मथुरा जाय।
मधुराजा को जा दई मस्तक प्रथम नवाय॥

मस्तक प्रथम नवाय मधु ने पत्र हाथ जब लीना।
पढ़ कर के सब हाल समझ कर, फैंक किनारे दीना॥
कहा दूत से जाकर कह दो पत्र उसने रख लीना।
बात समझ मामूली नृप ने ध्यान नहीं कुछ कीना॥

दोहा....दूत ने वापिस आकर कहा सब कुछ समझाकर।
शत्रुघ्न आनन्द पाया
दल बल लेकर चल दिया, नदी तट पर विश्राम कराया॥

दोहा गुप्तचरों से हर समय रखत खबर तमाम।
एक दिन आ कहने लगे लगी होन अब श्याम॥
बस कुंवर की सैर को गये इस समय नृप।
भ्रमण कर रहे बाग में, रानी संग अनूप॥

मगन हो रहे भूप सैर में दिल में नहीं फिकर कोई।
त्रिशूल है आयुध शाला में और खाली नृप के कर दोई॥
आज अनुपम समय मिला अब देरी का कुछ काम नहीं।
यदि पता लग गया कहीं विजय, होगा फिर मथुरा धाम नहीं

दोहा—सुनते ही शत्रुघ्न ने दिया हुक्म फरमाय।
मथुरा के चारों तरफ लिया घेरा लगाय॥

अधिकार शस्त्र शाला पे जाकर अपना प्रथम जमाया है।
फिर तोप एक दम चला दई, मारू बाजा बजवाया है॥

लक्ष्मण कुमार ने उसी समय आ सम्मुख युद्ध मचाया है।
इस तर्फ लगा संग्राम हान, उस तर्फ मधुचक्र आया है॥
दोहा—लक्ष्मण कुमार संग्राम में परमव गया सिधार।
सुत मरना सुन मधु को छाया रोष अपार॥
किन्तु पुण्य बिना पराक्रम मानिन्द फूल के होता है।
और बिना पुण्य यह जीव हाथ मस्तक पर धरकर रोता है॥
देख रूप विकराल शत्रुघ्न के सारे घबराये हैं।
जो गये सामने मधुवीर के, वह सब मार भगाये हैं॥
दोहा—देख हाल यह मधु का बढ़ा शत्रुघ्न आप।
लगा मधु के सम्मुख यों चढ़ा धनुष शर चाप॥
क्यों साहिब अब किस लिये, रहे चौकड़ी भूल।
कहां गई शक्ति तेरी बिना हमें त्रिशूल॥
कहां गया त्रिशूल कहा जो, चमरेन्द्र वाली थी।
जिस शक्ति पर तुमने पत्रिका पढ़ाई गई आली थी॥
परवाह तक न करी अकल न क्या बुद्धि खाली थी।
स्याद् उसी का मिला आज हमको तुम ने बाली थी॥
दौड़—यदि है जान प्यारी मान ला शर्त हमारी।
आज्ञा में चलना होगा॥
दोहा—हे त्रिशूल क्षमा मांगा नहीं कर मल रोना होगा।
कष्ट कर मधु आयुध शालाका पुन सूने घर जिम स्याम॥
अब जीवित तुम को नहीं दूंगा हरगिज जान॥
दर्दन तुम्हारा जान कलकर बातें कर अकड़ की।
सिंह कभी डर सकता है क्या धमकी से गीदड़ की॥
परमय भंजू तुम्हें इकमन रखकर मथुरागढ़ की।
त्रिशूल कहां तू सह न सकेगा, मार एक थप्पड़ की॥

दौड़—हृदय यश फट गया सारा, छूटा है रक्त फुब्बारा।
पड़ा है रण भूमि में—
शूर वीर अकेला यह अब पड़ा मरण सूली में।

दोहा—तीर खा कर मधु ने, दिल में किया विचार।
सदा न यहां कोई रहा यह संसार असार॥

चक्रवर्ति से चले गये उन के न भूमि साथ गई।
ये सुन्दर तन अवतारों के, उनकी भी एक दिन राख हुई॥
संयोग मूल दुखका कारण शास्त्र में यही बताया है।
अफसोस मनुष्य तन पाकर के, मैंने यह वृथा गँवाया है॥
आगे का न कुछ ध्यान किया पिछली पूंजी को खा बैठा।
फँस कर इस झूठी माया में आयु भी आज गंवा बैठा॥
तप किया न करसे दान दिया विषयों में समय गंवाया है।
औरों को शत्रु समझ समझ, शत्रु को मित्र बनाया है॥
वैर विरोध का त्याग भूपने, शुद्ध भावना भाई है।
फिर समता के प्रभाव तीसरा, स्वर्ग मिला सुखदाई है॥

दोहा—शत्रुघ्न मथुरा लई, मधु दिव पहुँचा जाय।
त्रिशूल वही चमरेन्द्र को दई देव ने आय॥
दई देवने आय मधु मथुरा का हाल सुनाया।
मित्र तुम्हारा मधु शत्रुघ्न ने परभव पहुँचाया॥
इस फरेब से मथुरा पर, आकर अधिकार जमाया।
समय हुआ मेरा पूरा त्रिशूल आप की लाया॥

दौड़ लीजिये शक्ति अपनी करू प्रणाम मैं अपनी
आशा दो अब जाता हूँ।
सुत भी मारा गया मधु की खबर तुम्हें देता हूँ॥

प्रति वासुदेव का वासुदेव ही, पैदा होकर हनते हैं।
और तीन खण्ड का ताज शीश धर सबके स्वामी बनते हैं॥
अन्याय किया शत्रुघ्न ने, निर्दोष मधु को मारा है।
हा उसका भी अब कलश शीश पर, आकर आज पुकारा है॥

दोहा—इतना कह कर चल दिया, चमरेन्द्र तत्काल।
मथुरा नगरी का सभी, लगा देखने हाल॥

देखा मथुरा का हाल सभी, प्रसन्न चित्त नर नारी हैं।
घर घर मंगलाचार और व्यवहार सभी सुखकारी हैं॥
कई भूमिय महल और, अद्भुत जहाँ सभी अटारी है।
अति ऋद्धिशाली बड़े बड़े जहाँ, इभ्य सेठ व्यापारी है॥
जहाँ चोर जार का काम नहीं, एक दूजे का हितकारी है।
और प्रेम परस्पर ऐसा जैसे, मिश्री दूध में धारी है॥
मुख पर शुभ लाली चमक रही, कुछ द्वेष न माया चारी है।
खोटी संगत का नाम नहीं जहाँ शुभ शिक्षा हितकारी है॥
कष्ट किसी को जरा नहीं, सब इन्तजाम सरकारी है।
अनाथ अपाहिज भूखा प्यासा देखा न कोई भिखारी है॥
पंरया लुच्चा गुंडा डाकू न शराब न मांसाहारी है।
खाते हैं दूध दही मेवा मिष्टान्न की शक्ति भारी है॥
व्याख्यान धर्म स्थानों में जाकर सुनते नरनारी हैं।
जहाँ समासरण महाव्रत पालक, निग्रन्थ मुनि तपधारी हैं॥
तालाब सरोवर बाग बगीचे खिली जहाँ फुलवारी है।
क्या कहूँ वहाँ की शोभा जिसन इन्द्र की मतिमारी है॥
सब साज बाज गायन और स्वर-ध्वनि लग अति प्यारी है।
मिश्री लखिनी दाना न मिले, करके भजन गुजारी है॥
कैसे सब हाल बयान करूँ एक न एक में गुण भारी है।
बस कोई इसमा ए डाला यह माया समझ हमारी है॥

पुण्य योग तुम आ पहुँचे, कुछ अमर हमारी बाकी है।
ऊपर से बुगला भक्त विप्र यह अन्दर से महा पापी है॥

दोहा— देख हाल सुन भूप का, चढ़ा क्रोध विकराल।
बन्दी करवा कर कसे, दई हथकड़ी डाल॥

हुक्म दिया वन भूमि में, ले जाकर इसको मरवादो।
जिसकी मर्जी आकर देखे, सब जगह यह डोंडी पिटवादो॥
उस तरफ मुनि एक आ निकले जिस तरफ इसे ले जाते थे।
करुणा सागर कोई महामुनि जो इसे बचाना चाहते थे॥

दोहा— कल्याण मुनि के कथन से, दिया भूप ने छोड़।
श्रीधर ने भी ध्यमन से निज मन का लिया मोड़॥

समझ लिया कि धर्म बिना दुनिया में कोई मित्र नहीं।
जब काम पड़े तब बनें मित्र, पीछे दिखलावें चित्र यहीं॥
कल्याण मुनि ने आज मुझे, कल्याण का मार्ग दिखाया है।
दुनियां को झूठी समझ विप्र ने तप संयम चित लाया है॥

दोहा— संयम व्रत को पाल कर, पहुँचा स्वर्ग मंझार।
फिर मथुरा में आन कर, लिया जन्म वहाँ धार॥

चंद्रप्रभ नृपराज हरिकांता, एक पटरानी थी।
अचल नाम सुत पुण्यधाम, की अद्‌भुत पेशानीथी॥
आठ पुत्र थे और उन्हों को, मात पृथक् मानी थी।
भानुप्रभादि आठों की, मति उल्टी मस्तानी थी॥

दौड़— विरूप थे अचल भ्रातसे द्वेश था धन की बात से
खत्म करना चाहते थे
किन्तु पुण्य था अचलकुमार का, समय नहीं पाते थे॥

किया उपाय महाराजा ने, पर भेद नहीं कुछ पाया है।
उल्टा रूप भयंकर घर, व्याधि ने पैर जमाया है॥

दोहा—ऐसा कर शत्रुघ्न ने, आसन लिया जमाय।
कुछ देवी प्रकट हुई, खड़ी सामने आय॥
किस कारण तुमने किया याद मुझे भूपराज।
प्रगट करो मुख से जरा अभिप्राय सब आज॥

दोहा—आनन्द मंगल में सभी, थी प्रजा इस धाम।
पर रोग अति फैला यहां नहीं हुआ आराम॥
देवी तब कहने लगी, राजन करो विचार।
फल दिये बिन ना हटे अशुभ कर्म परिवार॥

चौपाई मधु राजा को तुम ने मारा चमरेन्द्र किया कोप अपारा।
उसने रोग सभी विस्तारा कारण यह तुम जाना सारा॥

दोहा—मेरी यह शक्ति नहीं, करूं रोग को दूर।
कारण जो था रोग का बतला दिया जरूर॥

किसी महा पुरुष की कृपा से ही, रोग दूर हट सकता है।
नित्य धर्म करो श्री जिनवर का जिससे संकट कट सकता है॥
लाखों चाहे यत्न करो, सब के सब निष्फल जायेंगे।
कोई महा पुरुष ही आकर के, व्याधि को शान्त बनायेंगे॥

दोहा—देवी निज स्थान को गई बता कर भेद।
शत्रुघ्न को हो रहा मन में अत्यन्त खेद॥

चल दिया वहां से उसी समय, कुछ सोच अयोध्या आया है।
श्री रामचन्द्र को मथुरा का जो था वृत्तान्त सुनाया है॥
रक्षा के लिये उपाय कोई श्री रामचन्द्र से पूछता है।
वात्सल्यमय है शत्रुघ्न का श्रीराम उपाय सोचता है॥

पुण्य योग तुम आ पहुँचे, कुल पसर हमारी बाकी है।
ऊपर से बुगला भक्त विप्र, यह अन्दर से महा पापी है॥

दोहा— देख हाल सुन भूप का, चढ़ा क्रोध विकराल।
बन्दी करवा कर उसे, दई हथकड़ी डाल॥

हुक्म दिया वध भूमि में, ले जाकर इसको मरवाओ।
जिसकी मर्जी आकर देखे, सब जगह यह ढोंडी पिटवाओ॥
उस तरफ मुनि एक आ निकले जिस तरफ इसे ले जाते थे।
करुणा सागर भाइ महामुनि जो इसे बचाना चाहते थे॥

दोहा— कल्याण मुनि के कथन से, दिया भूप ने छोड़।
श्रीधर ने भी व्यसन से, निज मन का लिया मोड़॥

समझ लिया कि धर्म बिना दुनिया में कोइ मित्र नहीं।
जब काम पड़ तब बनें मित्र पीछे दिखलावे चित्तर यही॥
कल्याण मुनि ने आज मुझे कल्याण का मार्ग दिखाया है।
दुनियां का झूठी समझ विप्र ने तप संयम चित लाया है॥

दोहा— संयम व्रत को पाल कर, पहुँचा स्वर्ग मंझार।
फिर मथुरा में आन कर, लिया जन्म यहां आर॥

चंद्रप्रभ नृपराज हरिश्चता एक पटरानी थी।
अचल नाम सुत पुण्यवान्, की अद्भुत पेशानीथी॥
आठ पुत्र थे और उन्हों की मात पृथक् मानी थी।
भानुप्रभादि आठों की, मति उनकी मस्तानी थी॥

दौड़— विरूप थे अचल भ्रातम, द्वेश था उस की जात से
खत्म करना चाहते थे,
किन्तु पुण्य था अचलकुमार का, समय नहीं पाते थे॥

गुरु आज्ञा अनुसार इन्द्रदत्त कर में धनुष उठाता है।
पर हाल देखकर अचलकुंवर कुछ अपना शीश हिलाता है॥
फिर अंग चेष्टा देख गुरु ने अचल पास बुलवाया है।
कुछ कला आप भी दिखलाओ यों गुरु ने वचन सुनाया है॥

शेर—धनुष को ले हाथ शर चिल्ले चढ़ाया वीर ने।
खींच कर कानों तलक, गुरु से कहा रणधीर ने॥
यदि मैं चाहूँ तो मध्याह्न में, सूर्य को छिपा दूं।
एक तीर से तूफान की, तस्वीर दिखादूं॥
मानिन्द प्रलय काल के, भूमि को हिलादूं।
ताजा फव्वारा काढ के, पानी का पिलादूं॥

दोहा—तीरन्दाजी की कला दिखा किये सब दंग।
अचल कुंवर के सामने लगते हैं सब नङ्ग॥

इन्द्रदत्त ने अचलकुंवर को निज पुत्री परणाई है।
पृथ्वी नामा राजकुमारी सब कला सुखदाई है।
बढ़ा सितारा अचलकुंवर का दिन-दिन कला सवाई है।
अंग आदि देश विजय करके, कुछ शक्ति और बढ़ाई है॥
जब देखा शक्ति पूर्ण है मथुरा पर धावा बोल दिया।
जा सीमा पर करके पड़ाव जो था मार्ग सब रोक लिया॥
उस तरफ आठों भाइयों ने भी अपनी सेना तैयार करी।
शस्त्र गोला शस्त्रादि सब कार्यों में भी बारूद भरी।

दोहा—चन्द्रप्रभ प्रधान फिर, गया अचल के पास।
नमस्कार करके किया, ऐसे वचन प्रकाश॥
कौन आप किस पर चले अपना कटक चढ़ाय।
किसकी इसमें हार है, किसकी विजय कहाय॥

जो रास्ता आप बतावेंगे उस पर मैं चलना चाहता हूं।
प्रतिकूल आप की मर्जी के, कुछ भी नहीं करना चाहता हूँ॥

दोहा—मंत्री ने झट परस्पर करया दिया तब प्रेम।
फिर क्या था दोनों तरफ, लगा बरसने प्रेम॥

राज तिलक मथुरा नगरी का, अचल नृप को करवाया।
पूर्व पुण्य जो किया जहाँ, भोगन का अवसर शुभ आया॥
भाई बान्धव क्या सभी प्रेम से एक हुक्म में चलते हैं।
प्रत्येक चौधरी बने जहाँ तहाँ, सार ही कर सकते हैं॥

दोहा- मुख्य मुतकों का वहाँ आया नट गिरोह एक।
बासों पर नट नाचते रहा भूपति देख॥

जिसने कांटा काढ़ा था, सो अंक नजर वहाँ आया है।
उसी समय पहिचान भूप ने अपने पास बुलाया है।
प्रदान किये ग्राम कई, मन्त्री पद पर आरूढ़ किया।
यदि मित्र हो तो ऐसा हो मित्र को सुख भरपूर दिया॥

दोहा—बिन्दु से सिन्धु करे यही बड़ों की रीत।
कष्ट कुसंगत से मिले जो चलते विपरीत॥
श्री समुद्राचार्य, मुनि पधारे आन।
नृप ने जा सेवा करी, सुना धर्म व्याख्यान॥

वैराग्य मजीठी रंग चढ़ा सब राज पाट को छोड़ दिया।
यह नाशवान दुनिया झूठी विषयों से मनको मोड़ लिया॥
पंचम देवलोक पहुंचा तप जप करणी करके भारी
सो अचल आन शत्रुघ्न हुआ यह भाव तुम्हारा हितकारी॥
अंक दीप संग्रामो रथ का बना सारथी-पना करके।
इस कारण प्रेम था मथुरा से सब कहा तुम्हें समझा करके॥

सातों मुनियों ने मथुरा नगरी में चौमासा आन किया ।
अष्टम दशम द्वादशादि तप संयम रस को छान पिया ॥

दोहा—आहार न मिलता सुलभ, मथुरा नगरी माय ।
अन्य ग्राम सातों मुनि करें पारणा जाय ॥

उनकी तप जप करणी से सब रोग शान्त हो जायेगा ।
लब्धि धारक मुनि के चरणों में जो कोई मस्तक नायेगा ॥
गरुड़ सामने सर्प इस तरह समझो रोग न पायेगा ।
चमरेन्द्र कृत सब रोग हटें घर घर में मंगल छायगा ॥

दोहा—एक दिवस सातों मुनि पुरी अयोध्या आय ।
क्षेम पारणा सेठ के, घर में पहुँचे आय ॥

छन्द—फिरत चौमास में यहां अर्हदत्त को शंका भई ।
मावबिन कर जोड़ कुछ भोजन मिठाई सब दई ।
सोचता दिल में रहा किस काम का आचार है ।
भेष तो साधु का पर, भगवान की लापी कार है ॥
द्युतिधर आचार्य जो उपाश्रय में रहते थे यहाँ ।
आहार करने के लिए, सातों मुनि आये वहाँ ॥
मुनि द्युतिधर आचार्य ने, स्वागत मुनि जन का किया ।
प्रणाम कर आगम पूछने के लिए अवसर दिया ॥

दोहा—द्युतिधर ने उन्हों से पूछा सब वृत्तान्त ।
हाल सभी बतला दिया आदि अन्त पर्यन्त ॥

द्युतिधर के सिवा किसी ने जरा नहीं सम्मान किया ।
और आत्मार्थी मुनियों ने अपमान पै ना कुछ ध्यान दिया ॥
गगन गति कर गये मुनि मथुरा में चरण टिकाया है ।
अर्हदत्त इस तरह सामायिक, करने उपाश्रय आया है ॥

सकल रोग को दूर हटाया। जसधा सवधि का दरशाया॥
सुखी किये नरनार नार ॥२॥ सब०
शत्रुघ्न नृप हरषित भारा। नमें मुनि को वारम्बारा॥
सप्त ऋषी सुखकार कार ॥३॥ सब०
चमरेन्द्र जो रोग फैलाया। धन्य गुरु तुम दूर हटाया॥
वरत्या मंगलाचार चार ॥४॥ सब०
मथुरा पावन करने आये। जिनमत भूपका दुःख मिटाये॥
मूलेंगे ना उपकार कार ॥५॥ सब
चंपाचार मुनिवर प्यारे। अतिशय न सब कष्ट हटाये॥
भवोदधि से तार तार ॥६॥ सब

है नाथ आपकी कृपा से यह रोग शोक सब दूर हुआ।
नरनारी सबों सबों का, चरणों में ध्यान जरूर हुआ॥
अब यही प्रार्थना है स्वामी यहां से न कहीं विहार करें।
हम जैसे पतियों की विनती, पर भी स्वामी कुछ ध्यान करें॥

दोहा—आप हमको हो गये यहां महीने चार।
राजन् अब हम नियम से हैं बिल्कुल लाचार॥

मत कल्पी शुभ विहार, मुनिराजों का जिन फरमाया है।
जो बिन कारण मर्यादा तोड़ें सो विराधक कहलाया है॥
जिस कारण पर भार तजा सो भी कुछ कार्य करना है।
जो आज्ञा श्री जिनवर की है सो सिर मस्तक पर धरना है॥

दोहा—चलता पानी स्वच्छ रहे ठहरा गंदला होय।
त्यागी जन चलते भले, दाग न लागे कोय॥

सर्वज्ञों की आज्ञा में जो चले वही जन सच्चा है।
चल नहीं तो पट मराक होंगी सो पुष्प में कच्चा है॥

धर्म ध्यान तप जप करने में कमी न दुःख सहाते हैं।
मन रागी की यथा तुम्हें एक भी जिस धर्म बताते हैं॥

तर्ज—(रख मिलता गरीबी वाले)

सत धर्म का पाले प्राणी। जो सुख पाना चाहते हैं।
क्यूं जनम अमोलक हीरा। नरजन्म वृथा गवाते हैं॥टेक॥
जितने जीव जगत के प्राणी। उनको प्यारी है जिन्दगानी।
मत करो किसी की हानी। गुरुवर यूं फरमाते हैं॥१॥
दिल में रंज कभी न लाना। अभिमान को दूर भगाना।
को तजो कपट मो स्याना। प्रभु जिनवर फरमाते हैं॥२॥
साधु श्रावक धर्म बताया। जिस पाला सो सुख पाया।
समता धर्म जैन बतलाया। जिसको सुरपति गाते हैं॥३॥
साधु पांच महाव्रत प्यारा। बारा व्रत श्रावक ने धारा।
हो गया उसका निसतारा। जिनके ये मन भाते हैं॥४॥
पराया धन कंकर अनुसारी। जानो माता सम परनारी।
सन्तोषी बन के तृष्णा मारी। श्राही मुक्ति पद पाते हैं॥५॥
दुनिया में प्रेम क्या करना। होगा एक दिन निश्चय मरना।
इसलिये धर्म मन धरना। जिससे दुःख नस जाते हैं॥६॥
लग सदा धर्म में रहना। पड़े कष्ट जो तन पर सहना।
यही धर्म गुरु का कहना। सुखमयी राह बताते हैं॥७॥

दोहा—वैताढ्य गिरी पर्वत भला दक्षिण श्रेणी मान।
रत्नपुरी नगरी जहां नृप रत्नरथ बलवान॥

रत्नरथ भूपाल चन्द्रमम चन्द्रमणी रानी थी।
मनोरमा पुत्री यमन और बुद्धि सामानी थी॥
एक रोज लगा दरबार भूप ने परीक्षा करवानी थी।
मनोरमा है चतुर सब तरह कायल सम वाणी थी॥

दौड़—भूप का भवन बड़ा था, जन समूह खड़ा खड़ा था।
समय परीक्षा का आया
होनहार इस तरफ आन नारद ने दरश दिखाया ॥

गाना—सुरत कर जोड़ राजा ने, सिंहासन पर बैठाया है।
परीक्षा लड़कियां देंगी, भेद सारा बताया है ॥ टेक ॥
लगी परीक्षा सभी देने विदुषी लड़कियां क्रम से।
धर्म शास्त्र व वैद्यक की कला संगीत गाया है ॥ १ ॥
कला चौसठ की सब ज्ञाता अन्य इल्मों का क्या कहना।
ज्ञान सम दर्श चारित्र, और भी तत्त्व दिखाया है ॥ २ ॥
विवेचना अष्ट कर्मों की राजकुमारी ने दर्शाई।
प्रजा राजा मुनि क्या सब, को ही आश्चर्य आया है ॥ ३ ॥
स्याद्वाद न्याय की व्याख्या सभी कह कर सुनाई है।
मुनि नारद ने भी अब नेत्रों को ऊपर उठाया है ॥ ४ ॥
चली जब सप्त भंगी पर, अचम्भा हैरान है सबको।
क्या जिनवाणी सरस्वती ने वास इसके ही पाया है ॥५॥
क्रोध और मान माया का, दिखाया खैंच कर चित्र।
फेर भूपाल ने प्रशंसा, कर प्रश्न सुनाया है ॥ ६ ॥

दोहा—कौन भरी संसार में, दुःख दबे भरपूर।
मित्र कौन ऐसा बड़ा करे कष्ट सब दूर ॥
प्रमाद धारि सबके लिये देता दुःख अति क्रूर।
उद्यम सज्जन के मित्र बन कष्ट काफूर ॥

कौन बड़ा ऐसा दुनिया में जो सबको प्यारा लगता है।
और किसका नाम स्मरण करने से, अन्दर आप मलकता है ॥
धर्म चीज एसी दुनिया में जिसको सब कोई चाहता है।
पाप शब्द ही बुरा जगत में, नहीं किसी को भाता है ॥

दोहा—इत्यादिक भूपाल ने, किये भरन कई और।
नारदजी का मन यहीं, लगा रहा है दौड़॥
प्रणाम कर कुमारी चली सभी सहेली साथ।
पीछे से भूपाल ने, कही इस तरह बात॥
दोहा—जैसी गुणवन्ती सुता, ऐसा कोई राजकुमार।
जिस के संग शादी करूँ मेरा यही विचार॥
राजा के सुन कर वचन रहे सोचते और।
नारद जी भूपाल से लगे कहन इस तौर॥
जैसा चाहिए आप को, उससे भी जो चन्द।
लक्ष्मण भाई राम का दशरथ नृप का नन्द॥
नारद—तीन खण्ड में लक्ष्मण जैसा राजकुमार नहीं पावेगा।
हल हल खुश होवोगे, जब यहाँ पर व्याहने आवेगा॥
शान्ति जिस की माँग खतम की, और कोई ले जावेगा।
इससे यदि विपरीत किया, तो हे राजन् पछतावेगा॥
गाना—आप सब दूर कर दो हम उसे बिल्कुल मना देंगे।
बंधा कर मुकुट और कंगना, तेरे घर पर झुका देंगे।
लग्न लिखवा के अब यहाँ से भेजो तैयार लगा करके।
मुहूर्त दल कर वापस हम यहाँ से चढ़ा देंगे॥
दोहा सुनी झट करती हुई बातें सभी अपार।
दशरथ का कोप कर, बोला राजकुमार॥
आ पूरे मन्दर मुझे मुँह सम्भाल के बोल।
क्यों यहाँ घबराने लगा तन होशों का पोल॥
क्यों शत्रु की प्रशंसा करके हृदय में नहीं लाता है।
ज्यादि पैर जिन्हों से उनके आगे हमें झुकाता है॥

तेरे जैसा टुकड़े खोर ही, पैसों के गुण गाता है।
जान बचा कर भाग यहां क्यों अपनी मौत बुलाता है॥

गाना—आया ब्याह रचाने वाला, बन दुष्टों का।
अब जा जा जा बस बस बस बस (आप)

आंखें हाथी सम पीली लड़ाकू बौनों के ऊपर चढ़ा हुआ।
शेखी क्या मारता है, पाजी यहाँ खड़ा हुआ।
अब जा जा जा बस बस बस बस ०

(गाना—थियेटर)

तू कौन न ब्याहने वाला इस लड़की का।
स टीलि सीलि टीलि टीलि टीलि सीलि॥
ला और कोई दूसरी, बना कर राज।
तब न ब्याहना इस, लड़की का अब न अक्ल॥

बस बस तू कौन न ब्याहने वाला इस लड़की का।
स टीलि सीलि टीलि टीलि टीलि सीलि स टीलि॥

दोहा—आ मूढ़ तूने अक्ल, दई कहाँ पर खाय।
तुमको क्या संसार में, जो मर्जी सो होय॥

गाना प०त० बाबा आकर के, आराम का साधन करो।
हा हा लाकर के, चूमें तुम्हारे कदम॥
बूढ़ा सूमट हुआ लाइ सारी कमर।
अब यहाँ से पधारो, यह कौन करम॥
तुमको किसने कहा, ब्याह रचाओ सिय।
सब कहा यहां सभा में उठा के भ्रम॥
कुछ भी कुछ बकते हो क्यों पागल की तरह
जा यहां से चला जा कुछ करके शरम॥

मनोरमा कुमारी ने परीक्षा दई यहाँ पर आ करके।
कुछ भीड़ देख हम भी आ बैठे नृप का आदर पा करके ॥
मनोरमा की करूं प्रशंसा शक्ति नहीं जबां में है।
जो दृश्य बैठ कर देखा था मैंने यहाँ खास सभा में है ॥
अद्भुत वस्त्र थे तन ऊपर, थी जवाहरात जड़ी सारी।
मानिन्द सूर्य के मस्तक, पर तेज था शुभ लखाय भारी।
थी नागिन सी दो जुल्फ मांग, मोतिन की लगे बड़ी प्यारी ॥
और मंद मंद मुस्कान छबीली सम्मुख इन्द्राणी हारी ॥
शक्ति नहीं इतनी मुझमें कैसे सब हाल बयान करूं।
राजा आता है रघुकुल की मंदगत पर जो ध्यान धरूं ॥
चन्द नारद हाल आगे का कहूँ, तबियत तो यह चाहती नहीं।
यदि न कहूँ तो पाप है अन्दर समाती भी नहीं ॥
ख्याल था मेरा यह लक्ष्मण की यह रानी बने।
काम्प सी अब बोल सभी, रणवास महारानी बने ॥
लेने के देने पड़ गये आगे जरा सुन लीजिये।
और आज सूप बंगियों की भूपति रस लीजिये ॥
नृप ने कहा जैसी कुमारी पतिव्रता गुणवान है।
वैसा ही होना चाहिये कोई कु वर भी पुण्यवान है ॥

दोहा—लक्ष्मण सा मैंने कहा, पुण्यवान न काय।
सूर्यवंशिन के सिवा सभी जगत् का टाय ॥

यह शब्द उन्हों के हृदय पर, मानिन्द तीर के जा बैठा।
नृप रत्नरथ का पुत्र उस समय गुस्से में भर कर ऐंठा ॥
कुछ बात और मुखों में भरी कुमति यहां पर कर डारी।
हैं द्वेषानल में जला हुये रघुवंशिन का दल भारी ॥

जब पढ़ा पत्र तो क्रोधानल में, सहसा ज्वाल दिखाई है।
फाड़ के दूत को काढ दिया नयनों में सुर्खी छाई है ॥
रत्नरथ ने पुत्र का, समझाने में न कसर करी।
पर होनहार ने भी अपनी गहरी आकर के नींव धरी ॥
दल बल सकल विमान सजा कर आन ओरचा छाया है।
इधर लखन ने भी अपना, दल सम्मुख जाय अड़ाया है ॥
निज संग्रामी रथ का जब, लक्ष्मण ने पेश दबाया है।
तब रत्नरथ ने सम्मुख आकर, ऐसे वचन सुनाया है ॥

दोहा—कौन सुभट ने आन कर लिया नया अवतार।
दुर्जय क्षत्रिय भूप पर, पकड़ी है तलवार ॥

पकड़ी कर तलवार, कौमती घत्रामी ने जाया है।
यह किसने कर अभिमान रत्नपुर पति को पत्र पठाया है ॥
अब डोला लेने वाले का तलवार से शीश उड़ाना है।
बस एक न जीता जाय, सभी का परभव आज पठाना है ॥

दोहा—मैं क्षत्रिय पैदा हुआ रघुवंशी अवतार।
माय आप का लाइने आया हूँ सरकार ॥

पुत्र जमाई यह दोनों, बस एक सार कहलाते हैं।
पर बुद्धिमान् इस से पहिले, जिह्वा न कभी चलाते हैं ॥
मात सुमित्रा पटरानी ने अतुल पक्षी में जाया हूँ।
पत्र भेजा श्री राम न था मैं आज्ञा पालन आया हूँ ॥

दोहा—बातों बातों में पड़ी, रामों की तकरार।
फिर क्या था संग्राम में लगी बजन तलवार ॥

त्रिखंडी रावण का जिसने मार धूम कर डाला था।
अनुमान सभी कर सकते हैं, यह राजा कौन विचारा था ॥

सुख शय्या पर सो रही, जनक सुता सुकुमार।
रानी को एम हुआ, स्वप्न में कुछ सुमार॥

शरभ नाम विमान व्योम में अपनी चमक दिखाता है।
युगल देख जोड़ा यहां से, एक चला वहां को आता है॥
अद्भुत रंग दिखा करके, अवतार सुख करता हुआ।
फिर आया एक विमान सा, कुछ गया नेत्र खिल करता हुआ॥

दोहा—धर्म ध्यान ध्यात हुवे, हो आया प्रभात।
रामचन्द्र के पास जा, कही स्वप्न की बात॥
फल स्वप्न का सोच कर, बोले दशरथ नन्द।
अय रानी सुनहो मेरे पुण्वान सुखकन्द॥

सुरपुर से चय कर आये यह जो पुण्यवान् दो प्राणी हैं।
चरम सुगल पने पैदा होंगे, यह राजकुमार सुखदानी॥
किन्तु साथ कुछ दुःख भी है अनुमान नजर यह आता है।
जितना हो तुमसे दानपुण्य कर, जीव को यही सहायता है॥

दोहा—जनक सुता टाइम लगी, सभी गर्भ के बाप।
कर्मयन्त्र से हर समय, रहती गई सानोरा॥
सीता का बढ़ने लगा नित्य प्रति अति सम्मान।
इस देख साक्रम लगी मन दिल में पछतान॥

यदि एक जरा सा कम कारण, परा मंत्रों में गिर जाता है।
तो सोचें आप जरा कर्म, यह मानव का बहकाता है॥
साक्ष्य का तो कहना क्या, यह बुरी भूल की हाली है।
यदि पार समाये सौभाग्य को तो जड़ा मूल से लाती है॥

दोहा—सीता से प्रतिकूल अब पड्यंत्र लगा होन।
द्वेष ईर्षा के बिना दुनियां में घर कौन॥

दोहा—करके सारा मशवरा, फूली न अंग समात।
सज धज कर आने लगी सिया से करने बात॥
सीता ने सब का किया, स्वागत और सम्मान।
बातों बातों में लगी अपना ढंग रचान॥
अयि सीते दशकंधर से, डरता था संसार।
उस रावण का था कहो, कैसा रूप अपार॥

कैसा सुन्दराकार कहो नित्य पास तुम्हारे आता था।
क्या शब्द बोल धमकी देदे क्या २ तुमको समझाता था॥
क्या खान पान मेवा आदि सब तेरे लिये मंगाता था॥
कैसे उसके शुभ लक्षण, तुमको रंग रूप दिखाता था।

गाना

तर्ज-प्रभु वीर ने हमको फरमाया नित्य पंच प्रमेष्टी समो॥१॥

क्या बात कही तुमने मुझसे, क्या शर्म जरा नहीं आई हो।
अनुचित बातें सब बोल रही, जब की तुम यहां पर आई हो॥
तुम आई हो यहां पर जब की क्या अक्कल गई मारी सब की।
कुछ साच करो बन्नी रब की, क्या ओछी बात सुनाई है॥
मैंने देखा नहीं कोई मुख खाती क्या मूर्ख यी बोला साती।
नहीं कसम अंगूठे की खाती ना ऊपर नजर उठाई है॥

दोहा—किया इशारा एक ने पूजी का समझाय।
कागज साही लेखनी सन्मुख रक्खो आय॥

कागज दवात मंगा करके झट कलम सिया आगे कीनी।
पित लगा तुम्हार महलों में क्या पवन चले धीमी धीमी॥
बस रावण के चरण अंगूठे का इस कागज पर नक्शा कीजे।
कैसा था पलवाम हृदय, हम को भी कुछ दिखला दीजे॥

श्रीराम ने इस बात पर, तनिक न लाया ध्यान।
ऐसा करना चाहिए, हमें सुना अब ध्यान ॥
सुनलो सारी ध्यान लगा ऐसा मैं यत्न बनाऊँगी।
सीता के हाथों का नकशा घर घर में सभी दिखाऊँगी ॥
इस अंगूठे का देख देख प्रेमी का स्मरण करे सिया।
बराक रावण संग लंका में, सीता ने व्यभिचार किया ॥
लेजा बांदी तू तस्वीर री, रावण के चरण अंगूठे की ॥ टेक ॥
सकल घरों में जाकर दिखाना, अब दासी अब देर न लाओ।
यह उपाय भालीर री है ॥लेजा ॥१॥
नगर नगर में चर्चा फैलादू, इन महलों से सीता कढ़ादू।
तुम धारो सब मन धीर री ॥ लेजा ॥ २ ॥
सीता का सत देख लिया मैं तब यत्न अब ऐसा किया मैं।
क्या अच्छी तदबीर री ॥ लेजा ॥ ३ ॥

दोहा –लेकर के तस्वीर को, बांदी चली सचत।
रस्ता पर तप रहा जैसे भाड़ रत।

शिखर दोपहरी धूप तेज से छाया सब कुम्हलाई है।
बह रहा पसीना ऐसे जैसे हिम पिघल कर आई है ॥
नारही हारा मन व्याकुल है, गर्मी से घिरनी लाई है।
चली तुर बैठी महलों में मुझ पर आपत्ति लाई है ॥

दोहा प्रत्येक से यों कहने लगी, क्या आई हूं देख।
सीता ना मक्कार है, तुम समझी थी नेक ॥

दासी तुम समझी थी नेक, पाप सीता का प्रकट होआया है।
उस कामी रावण से जिसने अपना सब धर्म डुबाया है ॥
कभी बात न चली महल में सब हम से भेद छिपाया है।
यह रची यंत्र में है कलंक, जो बीज पाप का बोया है ॥

दोहा—आज्ञा पाकर भृत्य झट, आया यान जुड़ाय।
और भृत्य जा बाग में यों बोला समझाय ॥
अय माली झट हो खड़ा त्याग निद्रा घोर।
आलस्य में क्यों पड़ा है, होने वाला भोर ॥

भाई खोले खोल बाग को, सब देखो तुम क्यारी।
सिया राम की आमी आ रही बागों में असवारी ॥
इधर फव्वारा खोल नीर का, खिल जावे फुलवारी।
काट छांट कर जल्द बना ले, गुलदस्तों की क्यारी ॥

दोहा—यहां सवारी आज से हाकर के तैयार।
रामचन्द्र और दासियां चली संग सिया नार ॥

मन्द मन्द चहती वायु प्रसन्न चित्त करने वाली।
कुछ अन्य दिनों से थी सवेरे कुछ काली भी थी मतवाली ॥
वसन्त ऋतु भी अपने यौवन में इतराई फिरती थी।
मानिन्द मोतियों से चहुत जुगनु से भलाक मिलाती थी ॥
दोनों पास भरकर अंजली, फूलों की डाली लड़ी हुई।
कई मन्द मन्द मुस्कान सहित टेढ़ी दरख्त पर पड़ी हुई ॥
समय तर्फ ठंडे मार्ग पर, कुछ पंछियाँ खड़ी हुई।
ऊपर से घस दिखें शिखर, मानो आपस में लड़ी हुई ॥

दोहा—महेन्द्रोदय बाग में जा पहुँचे श्रीराम।
छोड़ सवारी बाग में घूमन लगे तमाम ॥

सब संग दासियों के सीता जिस तरफ घूमन जाती है।
इस तरफ कलियें सीता के, चरणों में फूल चढ़ाती हैं ॥
इस तरफ वृक्षों पर यौवन था उस तरफ बसन्त में अमती थी।
स्वागत करने को वनस्पति मानों सन्मुख आ नमती थी।
पक्षी चहुं ओर मीठे स्वर से खुशी खुशी सब बोल रहे ॥

मतलब अंग फुरकने का भी, कई तरह का होता है।
बाकी कर्मों की गति भुगतता, जीव जिस तरह भाता है॥
जो हुआ सभी कुछ देख लिया, होगा सा देखा जावेगा।
सौ रोगों का रोग शुबहा, यह तुमको फिकर सतावेगा॥
दुख सुख में माहसिक रहा, यह जिनवरजी का कहना है।
जो बन्ध निकाचित् कर्मों का, भुगते बिन कर्मी न रहना है॥
भाई ध्यान मिटान का शुभ धर्म ध्यान ध्याना चाहिये।
और वृथा भ्रम में पड़कर आत्म को नहीं कल्पाना चाहिये॥
दान पुण्य करने से निधत्त कर्म सभी टल जाते हैं।
तपी जपी के सम्मुख तो यह कर्म हाथ मल जाते हैं॥
इस सुख्ती का छोड़ दिया, अब सावधान जोशा करता।
दान पुण्य करने में अब कुछ हाथ और पोशा करता॥

दोहा—बैठ यान में चल दिये, रामचन्द्र सिया नार।
महलों में जा इस तरह, करने लगी विचार॥

गाना (सीता की उदासी में कम स्वरूप विचार)
तर्ज—पाप का परिणाम भारी भोगत संसार में "सोहनी"

अए कर्म मुझ पर मुसीबत, और क्या ? लावेगा।
यह डर मुझे तेरा लगर किन झमझमों में फंसावेगा॥१॥
पत्थर हृदय भरा तू दलाल निर्दय कर्म।
तुमसा निठुर दुनिया में कोई दूसरा न पायेगा॥२॥
प्रथम दिया भाई का दुःख दूजा स्वयम्बर का दिया।
तीज दिया बनवास का दुःख जोड़ कौन लगावेगा॥३॥
चौथ दिलाया द्वीप रावण, हाय रे तूने कर्म।
सुन राम होने हैं लाड कैसे कह कब गायेगा॥ ॥

मन में यह विश्वास हुआ, मम इनके मन पर भारी है।
पूजन के लिये रघुपति न, फिर ऐसे गिरा उचारी है॥

दोहा—क्यों भाई तुम किस लिए चुप रहे हो आज।
साफ साफ हमसे कहो, अपने दिल का राज॥

आज तलक यह हाल तुम्हारा, कभी न मैंने देखा था।
जो कम्पन पायलिङ्गी तुम पर,यह रोग किस तरह बैठा था॥
सत्य सभी कुछ बतलावा, कोई भय न जरा मन में करना।
नहीं सोचकर आंच कभी तो सत्य धर्म का तुम हारना॥

दोहा—मुख छोटे बातें बड़ी, पड़ किस तरह पार।
शक्ति कहने की नहीं माफ साफ इरकार॥

सम्मुख कहने की शक्ति, हम में स्वामी नहीं पड़ती है।
यदि नहीं कहें तो स्वामी द्रोह के, पाप न आत्मा डरती है॥
इस तरह पेच का देख देख, यह मन काया घबराती है।
अब नहीं छछुन्दर सर्प न लाई जाय न छाड़ी जाती है॥
जो भी कुछ हमन कहना है, मा स्वामी का दुखदायी है।
सब दाप हमारे क्षमा करें चरणों में यही दुहाई है॥

दोहा—कैसा ही तुमने किया दाब आज अमूर।
अभय दान हमने दिया कहो भ्रम सब दूर॥

सत्य ममी कहदा जल्दी दरी काम का काम नहीं।
सत्य बराबर दुनिया में सुखका कोई दूजा धाम नहीं॥
झूठ और प्रपंच बड़ा दुखदाई जाल भयंकर है।
सत्यशील सन्तापी जन का सब ही दशा स्वर्ग भर है॥

दोहा—स्वामी सच सुन लीजिए जरा लगाकर कान।
जो भी कुछ हमन सुना अवध पुरी दरम्यान॥

छोटी धातु के बर्तन को सब मांज मांज शुद्ध करते हैं।
चांदी सोने को मूठ नहीं लगती सब अन्दर धरते हैं॥
शक्तिशाली जन निर्बल को तो सुरूपा गुरुता करते हैं।
और जो मर्जी सो करें वह, पर शुद्धाचारी रहते हैं॥
चिरकाल रही रावण घर सीता फिर भी सती कहाती है।
यह बड़े पुरुष की रानी है क्या पेश किसी की जाती है॥
अब नम्र हमारी विनती पर भी, ध्यान प्रभु धरना चाहिये।
जिससे अपवाद यह हट जावे वह काम शीघ्र करना चाहिये॥

दोहा—श्री ऋषभदेव से आज तक, शुद्ध रहा यह वंश।
दाग न लाया किसी ने रह सभी प्रशंस॥

जनकसुता के कारण सारा वंश कलंकित बनता है।
अब लगी कीर्ति नष्ट होने यह कह मामने जनता है॥
एक सिया हुई न हुई रानियों की कुछ आपको कमी नहीं।
और एक बार यह गिरी हुई इज्जत फिर किसी की बनी नहीं॥

दोहा—इन बातों ने राम का हृदय दिया विदार।
उत्तर में गम्भीर मन, यों बोले सरकार॥
जो भी कुछ तुमने सुना, साफ सुनाया आन।
इस पर मैं प्रसन्न हूँ देख तुम्हारी बान॥

रघुवंश पर अब आइ हम धब्बा नहीं आने देंगे।
इसका गौरव सफल रक्खा फिर हम कैसे जाने देंगे॥
इन प्राणों की परवाह नहीं, फिर कौन बिचारी सीता है।
जिसमें है कीर्ति दुनिया में बस वही मनुष्य एक जीता है॥

दोहा—एक खास था गुप्तचर, जिसका था विरकाम।
रघुवर ने एकान्त में कहा इस तरह साफ॥

अपवाद सिया का फैल रहा जैसे चिकनाई पानी पर।
कोई कहता है धिक्कार राम, और सीता की जिन्दगानी पर॥
कई कहते हैं सुन्दर शरीर, को राम नहीं कोई लगता है।
और धिक ऐसों का नाम घना गन्दा नाला सा बनता है॥

दोहा—आगे यह एक महल के, छज्जे बैठ गये राम।
ऊपर बातें कर रहे, एक पुरुष दो बाम॥
बसते हैं धर्मात्मा, तुम जैसे महाराज।
स्वर्गपुरी जैसा समय अवधपुरी में आज॥

जहां चोर जार का नाम नहीं सब पुण्यवानों का रहना है।
मैं आई जन्म देख यही, सब जवाहरात का गहना है॥
इस नगरी में पुण्यवान ही, आकर पैदा होते हैं।
अन्य जगह उत्तम होकर, बेशक कर्मों को रोते हैं॥
जिससे सारे सुख मनचाहे, यह मिला यहां नर कुल में।
सब ही आकर मिल जाते हैं, यहां एक वृक्ष के सुख कुल में॥
शुद्ध सामयिक नित्य नियम प्रेम से सब नर नारी करते हैं।
और पांचों अंग झुका करके, गुरु के चरणों में गिरते हैं॥
कुछ पुण्य किया था मैंने भी चरणों की सेवा पाई है।
जो मात पिता ने तुम जैसे पुण्यधाम के संग परणाई है॥

दोहा—बेशक सिया राम हैं महा पुण्य पुण्यवान।
जिन की कृपा से मिला सब को सुख सामान॥

महा सती सीता माता रघुकुल में पुण्य निशानी है।
मानिन्द स्वर्ग के बनी हुई यह अवध पुरी सुख दानी है॥
यह वही अवध है दशकंधर, को भय यहां पर भारी था।
छिपता फिरता था महाराज, दशरथ राजा आचारी था॥

क्या भूल बढ़ाकर आई है जो गई थी संग वनवासों में ॥
लंकापति ने प्रेम सिया का अबतक भी न दूर हुआ।
कर्त्तव्य नहीं पटरानी का, हर घर में यह मशहूर हुआ ॥
चरण युगल चित्र सीता पै दशकंधर का निकल आया।
क्या पता आपको सेठ साहिब घर-घर में सब का दिखलाया ॥

दोहा—सुन्दरताई पर फिरे मुग्ध हुये श्री राम
सफर नहीं रविवंश की बढ़ रही भूल तमाम ॥

दश चक्षों में अंधा बराक, राम राग में अन्धा है।
कुछ पता नहीं दुनियाँ में, हो रहा अच्छा या कि मन्दा है ॥
शक्ति न बरयू किसी की रुकी न रुकने पाएगी।
यह थोड़े दिन भी रही सिया तो वंश की लाज उड़ाएगी ॥

दोहा—राग सुगन्ध श्वांसी सुरके द्वेष खून मद पान।
कभी छिपाये न छिपे प्रगटें सन्मुख आन ॥

सा सेठ साहिब कुछ ख्याल करें यह पाप कहीं छिप सकता है।
का दाग लगा रविवंशिन पर इस हालत में मिट सकता है ॥
प्रशंसा करन वाला भी कर्मों का बन्धन करता है।
यह गिरा हुआ पशुओं से जो बदनामी लेकर मरता है ॥
धिक्कार है ऐसे बड़प्पन पर लानत हजार जिन्दगानी पर।
धिक धिक् है बड़ घरानों का धिक पटरानी अभिमानी पर ॥

दोहा—श्री राम आगे चले छोड़ इस दरम्यान।
पापी का एक आ गया सुन्दर बड़ा मकान ॥

दोहा—पापी का भी हो गई महुत पाप पर देर।
पर आने पर न मिली पापीन घर में मेर ॥

पिपाड़ के वस्त्र रमे थे जिस कारण देर लगाई थी।
कुछ था गुस्सा का जोर बड़ा जिसमें आप्म घबराई थी ॥

रामचन्द्र के सीता के प्रति विचार

दफे हो दूर हो दुष्टन नालायक बेशऊरन तू।
जो कुलटा कामिनी होवे, सदा ठोकर ही खाती है॥
चाहे मैं गरीब हूं धोबी तो भी पर्वा नहीं तेरी।
निकल जा मेरे घर से तू, बुरी का कोई न साथी है॥६॥

दोहा—पश्चाताप हृदय हुआ, सुन धोबी की बात।
रामचन्द्र निज महल में, आ पहुंचे प्रभात॥

कर मंजन स्नान सामायिक, नित्य नियम का काम किया।
फिर करके अन्न जल पान भरा सुख शय्या पर आराम किया॥
चतुर गुप्तचर रामचन्द्र ने सभी जगह पैलाये हैं।
वही बात और वही कहानी सुनकर सारे आये हैं॥

दोहा—सुनत ही श्रीराम के, दिल में उठी तरङ्ग।
मन ही मन कहने लगे हाकर के चित्ति तङ्ग॥
यह क्या तूने किया कैसा तेरा काम॥
महा कष्ट मागे मगर, छुटे न अब तक नाम।
बचपन में भामंडल का दुःख सीता ने बर्दाशत किया।
फिर कर्म स्वयंवर रचवा करके कष्ट उसे यह खास दिया॥
लाके बसाई वन मन की अब निठुर तूने फिरवाकर।
लाखों का रक्त बहाया फिर, रावण से इसको मिलवाकर॥

दोहा—कष्ट अतुल हम पर पड़ कह न सके जबान।
फिर भी तू बढ़ने लगा आगे और मसान॥
गाना—अय कर्म तूने बदनामी यह मुझे धोखा दिया।
घर का न छोड़ा घाट का यह क्या अजब मौका लिया॥१॥

दो० राम—पुण्य हमारे में कमी, है कुछ कसर जरूर।
शक्ति का करना नहीं चाहिये कभी गरूर॥

बड़ जाय् असली होता है औरों के सिर चढ़ वार करे।
महा बली उसको कहते हैं जो दिन के होते रात करे॥
बुद्धिमान् वही होता है जो बुद्धि का प्रयोग करे।
पुण्य सम करते हैं जिससे शत्रु जन भी शुद्ध योग करे॥

दो० राम—तीर्थंकर न कर सके, अभव्य को भव्य जीव।
अग्नि को ठंडा करे शीतल नीर सदैव॥

शक्ति के दिखलाने से, अपवाद नहीं रुक सकता है।
हां नरमाई से नर तो क्या दया का मन झुक सकता है॥
घर घर मंजन द्वार लोक होते क्या शुभकथ चाकर नहीं।
पर जनक सुता को रखने की कोई भी वमती रावक नहीं॥

दो० लक्ष्मण—जनक सुता में दोष क्या करलो स्वयं विचार।
अबला को घर से बाहर, क्यों करते सरकार॥

पानी में पत्थर तर जाय अग्नि में कोई जल नहीं।
सागर मर्यादा तज देय स्थल पर से पानी हले नहीं॥
कमल पत्र पत्थर पर भी जड़ जमा कर विस्तार करीं।
असहमी बातें बन सभी पर सीता श्राप क्यार नहीं॥
अमृत बन जाय कालकूट चन्द्रमा अग्नि बरसाय।
करुणा बकपी नित्य रहें पास, न विरह रात्रि का आये॥
दिशाभूल भानु होय मरु स्वभाव से चल जाय।
पत्न् का दिन में मजर पड़ अभिमान सिंह का टल जाये॥
भन्य भनि क ति मानी हो कायर मैदान में डट जाय।
सत्यवादी विरपाम किमी का र्कर के फिर मट जाय॥
चंचल मन म वाड़ पुरुष मुस्कार हमेशा ध्यान धरे।
पर सीता सदृश शील रत्न क तन मन धन कुर्बान करे॥

दुनियां सब दुष्ट दुरंगी का दबदबा हो सदा दबाता है।
जो करे इन्हों से खासपात यह अपना आप गंवाता है॥
तम से छाया घन स बिजली, क्या दूर कभी हो जाती है।
क्या धर्म लिये मरने वाले, की भी हिम्मत सो जाती है।
सागर क्या निजगुण तज कर के, छोटे तालाब बन जाते हैं।
औदार चित्त क्या जरा जरा, सी बातों पर तन जाते हैं॥
विद्यमान है वीर विभीषण निश्चय उनसे करलेवें।
हां निकले दोष यदि कोई तो फिर सीता को तज देवें॥

विभी०—समक्ष हमारा मनुज का पास विभीषण आन।
आदि अन्त पर्यन्त तक लगे सभी समझान॥

दोहा—सबद्र क्षमा और आहिमसि, सती शील प्रधान।
यह निजगुण तजते नहीं तज देते हैं प्राण॥

वह जिह्वा नहीं मेरे मुख में, जिससे माता के गुण गाऊं।
संसार में खाली नजर नहीं दे उदाहरण क्या समझाऊं॥
मैंने अपने नेत्रों से नित्य सीता का तेज निहारा है।
पवनों का झगड़ा दशकन्धर प, समय समय पर मारा है॥
तुम जैसों का भी दशकन्धर, आगे हृदय घबराया था।
इस महासती क्षत्राणी न रावण स भय नहीं लाया था॥
वास्तव में इस आत्मशक्ति स विजय आपने पाइ थी।
जिस लवास म बठ आप कह रहा तुम को नहीं बड़ाई थी॥

दोहा—माता का अपमान है कह मफत पर
सीता में स्वामी नहीं आसिम का लवलश

सतियों में है शिरोमणि सीता चिरयाचीन।
हाथों बदन जिस का सभी हमा करो यह रीत॥

चाहे प्रेम सिया का रग रग में है कूट कूट कर भरा हुआ।
बन लरमूजे बस ऊपर से, अभी मन का अफसर बन जा ॥२॥
कुछ धर्माधर्म नहीं जग में मन जरा कल्पना ऐसी कर।
इस उल्ट पंथ में यथा ज्ञान हैरान तू ही रहकर बस जा ॥३॥
पीर पराई के वक्त मसीहा, दरद दूर कर देता है।
तू भी मन जान सिया की खातिर तेग धार गस्त बन जा ॥४॥
जुल्म सितम चाहे कितना हो इक सत्य सामने धरा कर रख।
जितना मर्जी कोई समझाय मर्मों को तज पत्थर बन जा ॥५॥
कृतान्त वदन के साथ वनों में, जल्द सिया को पहुँचा दे।
इसी फैसले पर जम दिल पत्थर बन क्या पत्र बन जा ॥ ॥

दोहा—सेनापति कृतान्त को श्रीराम ने बुलवाय के।
रहस्य सब एकान्त में समझा दिया बैठाय के
कागज के ऊपर लिख दिया एक खत खूब बनाय के।
कृतान्त वदन के हाथ देकर यों कहा समझाय के।

(गाना राग

श्रीराम का यूं समझाना हुआ कृतान्तका ऐसा सुनाना हुआ। टेक।
देखो रखना यह ध्यान कहूं कान दरम्यान।
करना किसी का न बयान जो गुप्त तुम्हें जितलाना हुआ ॥१॥
जाके बन मंझार, छोड़ा सीता यह नार।
मत सुनसी पुकार, हुक्म पूरा करो फरमाना हुआ ॥२॥
तजी सीता की प्रीत देखा दुनियां की रीत।
क्षेम कर प्रतीत सतीजी का दुःख सागर बहाना हुआ ॥३॥
हुआ सुन के हैरान कृतान्त वदन सब जान।
हुआ वहां से रवाना क्यों के भूपति का हुक्म बजाना हुआ ॥४॥
देखो कर्मों की चाल करत दिन में पहाल।
इसका हाला अंगाल सीता जी का वनों में जाना हुआ ॥५।

सीता वनवास

दो० राम—ग्राम बिकट में सिया को, और दासी थिरवाल।
ले जाओ वन खण्ड में, मान धार हरहाल॥

रथ से वहां उतार उलटे फिर, हाल यह सभी बता देना।
यदि और तुम्हें कुछ कहे सिया, तो पत्र उन्हें सुनादेना॥
है कर्मों की चाल बता करके, वापिस रस्ता लेना।
यह नित्य नियम का आसन, और पुस्तक का जो बस्ता देना॥

दोहा—सेनापति रथ ले गया, जनक सुता के द्वार।
सीता सरल स्वभाव थी, झटपट हुई तैयार॥

यह कर्म महा बलवान् जीव को नाना रंग दिखाते हैं।
कभी रङ्ग महल में सुख विनोद कभी वन की खाक छनाते हैं
झट रथ की कथा दबाई तो, गंगा सागर के पार हुये।
जब सम्म अरण्य में पहुँचे, आगे चलने से लाचार हुये॥

चौपाई—रथ से उतरे हे जगदंबा, देखो नैन उठाय अचम्बा।
है वनखण्ड भयानक लम्बा, हाल तेरा दुःख मम दिल कम्प

दोहा—जनक सुता न त्रास, समय देखा नयन उठाय।
दृश्य भयानक देख कर, यों बोली घबराय॥

सीता—आप भाई रथवान यह सेनावान ज्यान।
साफ साफ जो बात है, कहो सभी व्याख्यान॥

छन्द—पहिले थे जिस वनवास में, वैसा ही आता है नजर
सोई था जागू था रहा, या स्वप्न कोई क्या खबर
अवध के महलों में हूँ, क्या स्वप्न आता था मुझ
जल रहा हृदय मेरा यह वन अब कैसे मुझे

तू ही बता कृतान्त अब, श्री राम लक्ष्मण हैं कहां।
देकर दगा क्या राम लक्ष्मण, भी मुझे तज गये यहां॥
रो रहा रथवान सम्मुख मैं इधर हूं रो रही।
हे प्रभु कर्मों की गति यह, क्या खबर क्या हो रही॥
आई थी मैं तो भ्रमण को, माहन्द्रोदय उद्यान में।
किन्तु खड़ी हूं इस भयानक, अरण्य के मध्यान में॥
हैरत में हैरत हो रही क्या माजरा मालूम है।
बन शून्य रथ स्वामी नहीं पंचम क्या मजब यह स्याम है॥

दोहा—सब रोगों से है, बुरा परतंत्रता रोग।
पराधीन नर को रहे, सदा निरन्तर शोग॥

पाप कर्म के उदय भाव से, पराधीनता मिलती है।
फिर निशदिन रहता भय दिल में, हृदय की कलिनहीं खिलती है॥
पराधीन स्वप्ने सुख नाहीं सदा पुरुष बतलाते हैं।
कर्मबन्ध के काम सभी जन मूर्खों से करवाते हैं॥
सर्दी गर्मी आंधी बारिश, से मारे मार फिरते हैं।
फिर भी स्वामी घुर घुराय कर बचारों पर गिरते हैं॥
पराधीनता के बश में कई, अनय करने पड़ते हैं।
सतमयों में भृत्य एक, आजीविका भय से डरते हैं॥
हे मात जरा अब धीर धरो इस रोने से क्या बनता है।
सब कष्ट इसका कर के तरा पत्थर का कलेजा खमता है॥
कुछ धीर धरोगी तुम पहिले तबही कदम मैं पाऊंगा।
नहीं तो यह देख दशा तेरी मैं रो रो कर मर जाऊंगा॥

दोहा—पर दुःख भंजन कारण सीता दिल को थाम।
पाली हो कह दो मुझे, भाइ हाल तमाम॥

पशुओं के भी सहायक, आते हैं नजर दुनिया में।
मेरा यह कष्ट नहीं, दुनियां में मेटन हारा ॥३॥
आज उपालम्भ किसी को देऊँ तो क्या।
कर्मों के चक्कर में मरा आया है पुण्य सितारा ॥४॥
मेघ धारा से पहाड़ों, तक भी तर होते हैं।
पूर्ण चातक न कह साफ ग्रन्थों में उचारा ॥५॥
आज संसार का, आधार रविकुल है।
रहना मेरा ही नहीं, कर्मों को आज गवारा ॥६॥

दोहा—क्यों माइ कुछ और भी, कहा तुम्हें श्रीराम।
सो भी बतला दो मुझे, पति का हुक्म तमाम॥

दोहा पत्र एक मुझको दिया है स्वामी ने मात।
खबर नहीं मुझको लिखी क्या इसमें है बात॥

दोहा—ले पत्र रथवान स, पढ़ा सिया न खोल।
अन्त में यह राम ने लिखे शब्द अनमोल॥

दोहा जड़ चेतन का लोक में, जो था नित्य स्वभाव।
नित्य स्वभाव का न हुआ, न होगा कभी अभाव॥

जो आत्म सो ज्ञान ज्ञान मो ही आत्म कहलायगा।
यह निजगुण ज्ञान आत्म का न गया कभी न जायगा॥
संयोग अग्नि का मिलन से जल उष्ण हुआ कहलाता है।
पर निज गुण उसका शीतलता यह कभी कहीं नहीं जाता है॥
इसी तरह निश्चय में न मैं तेरा न तू कुछ मेरी है।
बाकी सब रंग बिरंगी यह कर्मों की चढ़ी अन्धेरी है॥
किन्तु एसी अवस्था में अब तक हम तुम नहीं आये हैं।
क्योंकि आत्म प्रदेशों पर, कर्मों के बादल छाये हैं॥

और बहुत क्या बतलाऊं तुम जिन शास्त्रों की वेत्ता हो।
निश्चय में कोई मनुष्य नहीं, पुद्गल में विभाग का लेखा हो॥

दोहा—निश्चय नय की बात यह, आगे सुन व्यवहार।
सामंजस्य दोनों करे, आगम के अनुसार॥

व्यवहार जिन्हों का शुद्ध उन्हीं का निश्चय निर्मल होता है।
जो करे एक से पृथक् वह, मिथ्यात्व नींद में सोता है॥
व्यवहार बिना दुनिया का कोई चलता कारोबार नहीं।
यही तो एक कसौटी है इस बिन होता भवपार नहीं॥

दोहा—प्रेम तुम्हारे से मेरा हुआ न होगा दूर।
भावी वश अन्तर पड़ा आगे पड़े जरूर॥

उदाहरण देते हैं जिनका मतलब आप समझेंगी।
प्रेम मेरा प्रगट होगा शिक्षायें तुम्हें मदद देंगी।
बूटी एक लज्जावती यहां, वनस्पति कहलाती है।
कभी अपना गुण न तजे पुरुष की छाया से मुर्झाती है।
सोना गुण न तजे सुहाग, से मट मेल बनाता है॥
पर सिक्के से न मिले थाह, वह अपना आप गंवाता है।
अग्नि जल को तप तपा करके स्टीम बनाता है॥
पर निज गुण शीतलता का जल कदम से कमी न जाता है।
काल अनन्त एकेन्द्रीय में यह जीव अतुल दुःख सहता है॥
फिर भी निज गुण ज्ञान आत्मा की सत्ता में रहता है।
यह चेतनमयी ह जनक सुता परमा कोइ तजे स्वभाव नहीं॥
बस इसी तरह से प्रेम मेरे का तुम से हुआ विभाव नहीं।

गाना—जिसने गौरव न अपना बचाया पिया।
उसने वृथा ही जन्म गंवाया पिया॥टेर॥

बस यही भावना है मेरी, तुम में न कोई कसर रहे।
फिर अंगुली करने वाला तुम पर, कुछ न कोई बशर रहे॥
आप भविष्य में सतियों के, लिये उदाहरण बन जाओगी।
संसार में नाम प्रगट होगा, और अन्त मोक्ष पद पाओगी॥

प्रिया तुमको संकट देकर के, आराम न कोई पायेगा।
और समय समय पर आकर के, सबको ही कर्म सतायेगा॥
हूँ निरांक मैं यहां बैठा मन मारा मारा फिरता है।
बस बुद्धिमान के लिये पर्याप्त, ज़रा ज़रा इशारा है॥

दोहा—अब भाई रथवान् अब तुम मत मनो अधीर।
जो जो पड़े अवस्था मा सो सहे शरीर॥

स्वामी की आज्ञा पालन करना, शुभ कर्तव्य तुम्हारा था।
यहाँ अन्य किसी का दाप नहीं, योंही बस कर्म हमारा था॥
श्री रामचन्द्र के चरणों में, कह देना मेरी बात सभी।
इस जन्म में आशा टूट गई परभव में देना दरश कभी॥

जो कुछ आपने किया मेरे संग सोच के ठीक किया होगा।
या पिछले भव का बदला मुझ से आपने कोई लिया होगा॥
फेरों के समय जो किये प्रण, मा मुझ मे नहीं पल होंगे।
या आपके ध्यान से हे स्वामिन कुछ देर के लिय टले होंगे॥

बस यही भावना है मेरी, पुरुष रूप आप का यश रहे।
एक सीता हुई न हुई तो क्या रघुकुल का न कोई दाग रहे॥
निश्चय में कर्म हमारा आपने यात ठीक बतलाई है।
व्यवहार की तो पर हे स्वामी, कुछ भाती नजर सफाई है॥

व्यवहार को रखते हुए आप, मालूम तो मुझ से कर लेते।
कुछ ख्याल नहीं मुझको भाता चाहे शूली पर धर देते॥

सब तरह आपका संशय करती, दूर आह करवालेते ।
कम से कम कोई गुप्त तलकर, धीरज से काम जरा लेते ॥
बस और कहूँ क्या आप से मैं तुम जिन शास्त्र के वेत्ता हो ।
अति पुण्यधाम रघुकुल दिनेश, तुम तीन लोक के नेता हो ॥
सिन्धु से गम्भीर सौम्य शशि, शीतल स्वभाव में चन्दन हो ।
तेज प्रताप प्रचण्ड आपका पुण्यधाम रघुनन्दन हो ॥
पसन्द ऋतु सम तुमने, सबके हृदय कमल खिलाये हैं ।
क्या दोष आपका मुझ निर्भागन का, यदि सुख नहीं पाये हैं ।

दोहा सीता—पूर्व भव मिथ्यात्व में बांधे कर्म अपार ।
पांचों आस्रव न तजे, दुखी किये नर नार ॥

शरने चार नहीं भजे न धर्म चार प्रकार किया ।
त्रिकरण शुद्ध न किये योग जीवों को दुःख अपार दिया ॥
करी ना वश पांचों इन्द्रिय हर समय चार विकथा करी ।
तीव्र कषाय करी चारों जिस कारण मुझ पर व्यथा पड़ी ॥
है दोष सभी मेरे कर्मों का स्वामी का लवलेश नहीं ।
भुगते कर्मों का दिये बिना आत्मा का मिटे क्लेश नहीं ॥
संयोग मूल दुःख जीवों का अरिहन्त देव यों कहते हैं ।
इस मोहनी कर्म के वशीभूत हो वृथा जीव दुःख सहते हैं ॥

दोहा सीता—जिस कुल घर या नगर में प्रजा देश में हाय ।
उसकी रक्षा करन से रक्षा सब की हाय ।

इसलिये राम की प्रजा करना मुख्य कर्तव्य तुम्हारा है ।
लक्ष्मण जी का भी यह देना शिक्षाप्रद वचन हमारा है ॥
बस और नहीं कुछ कह सकती, पर सर मेरा चकराता है ।
तन में न शक्ति रही मेरे, बस गिरी तिमारा आता है ॥

दो० कवि—इतना कह करके सिया, गिरी मूर्छा खाय।
देर बाद आ होश में यों बोली घबराय॥
बेशक स्वामी के लिये, बनी आक का फूल।
ऊपर सादी रमज्ञी, अन्दर विष का मूल॥

स्वामी पुष्प गुलाब किन्तु, मैं लिए उन्हीं के कांटा थी।
वह स्फटिक रत्न हीरे जैसे, मैं अनघड़ पत्थर भाटा थी॥

वायमा कौशिक चन्दन का, सब कोई लेने आता है।
पैरवक निकम्मी लकड़ी को, कोई जगह न देने आता है॥

दोहा सीता—सज्जन ऐसा चाहिये, जैसे रेशम तन्द।
धागा धागा लंड हो, गिरह न करे पसन्द॥

श्रीराम तो बेशक हैं सज्जन, मैं ही निर्भाग नकारी हूँ।
है रङ्ग मजीठी प्रेम उन्हों का, मैं कर्मों की मारी हूँ॥
पाप कर्म के उदय भाव से, वेद स्त्री पाता है।
जिसका न जोर कहीं चलता वह इस पर भीस जमाता है॥

दोहा सीता—दोष नहीं कुछ राम का, सुन सेनापति वीर।
उपालम्भ सबका हुआ सुना आज आखीर॥

गाना—करू किस पे जाकर मैं किस की शिकायत।
करो कौन मेरी करेगा हिमायत॥ १॥
मुझे ख्याल है तो सिर्फ एक ही है।
प्रभु ने सुनी न हमारी शिकायत॥ २॥
पिया को यह कहना मुझे माफ करदें।
यदि मुझ से निकली तुम्हारी शिकायत॥ ३॥
कर्म कर्ता मेरा न पिछला ही उतरा।
तो आगे किसी की करू क्या शिकायत॥ ४॥

जो उपकार मुझ पर, किया था पति ने ।
क्या कृतघ्न हूँ मैं, जो करूंगी शिकायत ॥ ५॥
मुझे कोई दुःख है तो, इस बात का है ।
करे न कोई मम, पति का शिकायत ॥ ६ ॥
खसम सब कहामी, ये शिकवे हमार ।
गई टूट प्रभु की यह, हम से शिकायत ॥ ७ ॥
मुबारिक यह तुमको, तुम्हारी अयध हो ।
सुनेगा अरण्य ही हमारी शिकायत ॥ ८ ॥
फलो फूलो स्वामी, रहो सुख हमेशा ।
यहां मेरी बनचर सुनेंगे शिकायत ॥ ९ ॥
यह निर्मल सदा ही रहे कुल तुम्हारा ।
करेगा न कोई अब इस की शिकायत ॥१० ॥
सबर के सिवा बस, करू तो करू क्या ।
जबां प न लाऊंगी, कोई शिकायत ॥ ११ ॥
सदा रंग बरसे, तुम्हारी अयध में ।
मेरी भावना यही समझो शिकायत ॥१२ ॥

दोहा—सज्जन जन सुन लीजिए जरा लगा कर कान ।
रानी तज रोता चला वापिस अब रथवान ।

चौपाई—वन में फिरतो जनक दुलारी, हिंसक जीव जहां दुखकारी ॥
हरा भयानक दश्य भयारी, तृषातुर विपदा की मारी ॥
पथ भ्रष्ट हिरणी सम वाले, शब्द भयानक वनचर वाले ॥
सीता एक शिकार टटोले, बैठी आप वृक्ष के ओले ॥

दोहा—कभी कभी गम सागिरे रह न कुछ भी होश ।
या रोती निज कर्म का या रहती खामोश ।

वचन और सब प्रण भी तेरे बहाए नीर में।
राम जैसे की भी तूने, फके डाला पीर में॥
तो ही बन में अकेली फसाया मुझे॥ २॥

भाग है कर्मों की यह, मुझको कलंकित कर दिया।
बदर्द विधना ने भी लाकर, किस जगह पर धर दिया॥
कैसी विपदा में आज फंसाया मुझे॥ ३॥

किस जगह किस तरफ जाऊं अप कम यह तो बता।
आता मगर कोई नहीं पूछेंगे किससे क्या पता॥
भूखी प्यासी का चक्कर सा आया मुझे॥ ४॥

दोहा—इतना कह कर के सिया गिरी धरणी मंझार।
देर बाद आ चेत में रोय जारो जार॥

जब लगे धीरज धर समाचार, मन्त्र को पढ़ने लगती है।
जब रोती है तब आंसों से पानी की धारा बहती है॥
देख सिया का रुदन वहां पत्थर का कलेजा फटता है।
अब देखो कहा टलने का भी, आकर क्या कारण बनता है॥

दोहा—स्वामी कहे रानी सुनो क्षुधा रही सताय।
इस दुर्गम उद्यान में करमा कौन उपाय॥

पीपल का यह वृक्ष सामने देख नजर आ जाता है।
आप यहां बैठें मैं उसके फल लाऊं मन चाहता है॥
पानी का भी संयोग मिला तो वहां देख कर आऊं गो।
यदि पात्र नहीं तो और, मिगाकर लाकर तुम्हें पिलाऊं गी॥

दाहा सीता—बहु बीज सब फलों का मेरा तो है नम।
हरी तू जान यहि निम जय आत्म को धम॥

आज अष्टमी है पानी भी, कोई सचित पीना ही नहीं।
नियम भंग करके मुझको, अच्छा लगता जीना ही नहीं॥
हां मैं यहां पर बैठी हूँ, तुम यहां पर देर लगाना नहीं।
एक परमेष्ठी का शरणा लो बस दिल में कुछ घबराना नहीं॥

दोहा—आज्ञा ले स्वामी चली बड़ी वृक्ष पर आय।
फल तोड़ने से प्रथम, बोली यूं अकुलाय॥

छन्द—पहले लिया करके सिया को पीछे खाती थी सदा।
साथ उनके ही नियम, करती थी मैं भी सदा सदा॥
संग उनके मरना जीना ही, मेरा कर्त्तव्य है।
जो करे सीता वही करना मेरा मन्तव्य है॥
ऐसा कह उतरी तरु, विश्राम छाया में लिया।
जो करे सीता वही, करना प्रण मन में किया॥

दोहा—पहले ना तुमको सिया, ले गई वन में साथ।
कर्त्तव्य अब पालन करू रहूँ संग दिन रात॥

इस अन्तर में कष्ट दूर, हाम का कारण बनता है।
उपयोग शुद्ध जिसके, शुभ प्रकृति का ताना तनता है॥
निज कर्म आत्मा के शत्रु बाकी तो निमित्त बहाने हैं।
पाप उदय हों कष्ट पुण्य के उदय ठाठ शहाने हैं॥

दोहा—विभीषण का स्वाम था, सिद्ध पुरुष एक मित्र।
ये भी नारद की तरह, था शुद्ध व्यक्ति विचित्र॥

नारद होता कलहप्रिय पर यह समता रस पीता था।
विद्याधर शुद्धात्मा जिसने कामदेव को जीता था।
बीर विभीषण ने इसको था गुप्त रूप में समझाया।
और गुप्त रूप में सीता की रक्षा के कारण पहुँचाया॥

दोहा— खास पुरुष थे सिया का, रखता था नित्य ध्यान।
कष्ट असह्य मापके, कोई भयानक धाम।

श्री वज्रजंघ मिलाप

दोहा—'पुंडरिकपुर' का भूपति 'शम्भु श्री' अंगजात।
'वज्रजंघ' शुभ नाम है 'गजवाहन' नृप तात॥

गजवाहन का पुत्र 'रत्नसुन्दर' एक पटरानी थी।
धर्मन रूप अपार देख इन्द्राणी शरमानी थी॥
पतिव्रता सुशिलीत नियम, तप जप में भगवानी थी।
प्रजा पालक थे भूप स्वर्ग, सम सभी राजधानी थी॥

गाना (राजा वज्रजंघ की श्रद्धा का वर्णन)

देव अरिहन्त की शिक्षा दया में धर्म जाना था।
था निश्चय आप्त वचनों पर, गुरु निर्ग्रन्थ माना था॥१॥
व्रत बारह के थे धारक, रवि सम तेज था जिनका।
सम्यक् समदृष्टि का पहिला मित्र सारा जमाना था॥२॥
गुणी के गुण को लखते थे रहें मध्यस्थ निर्गुणों से।
शुद्ध वचन मन काया से वह करुणा का लजाना था॥३॥
सिवा निज नार के माताएँ, भगिनी सम थी सभी नारी।
सदा सत् संगति ही में, जिन्हों का आना जाना था॥४॥
'सुमति' प्रधान था जिनका निपुण नीति सर्व गुण में।
दूध घी पूत फल मेवा सभी का स्वच्छ लाना था॥५॥
यथा राजा तथा प्रजा सभी थे धर्मी नर नारी।
त्याग साता कुव्यसनों का शुद्ध सब मन समाना था॥६॥

दोहा—इत्यादि गुण का धनी वज्रजंघ भूपाल।
कारण हस्ती पकड़न आया वन में चाल॥

साथ सुमति प्रधान और, कुछ सैनिक योद्धे भारी हैं।
और सिकट गाड़ियों में, खाना पीना सब सरकारी हैं॥
हस्ती लेकर यह आ निकले, जहां रोती जनक दुलारी थी।
देख सिया को कुछ योद्धों ने, ऐसी गिरा उचारी थी॥

दोहा—क्या बन की देवी कोई बैठी आसन मार।
चमक दमक चेहरा करे, शशि वदन अनुहार॥

बन रूपी रजनी में यह, मनिंद शशि के शोभ रही।
तेज प्रतापप्रचंड महा भानु के मन को शोभ रही॥
इसमें शीतलता टटक रही, उसमें गर्मी का रूपक है।
यदि यह है रत्न व्योम का तो, यह भी इस बन का भूषण है॥
यह दुःखदाई है किसी किसी को यह सब को सुखदाई है।
उसे महत्व भी लगता है इसकी नित्य कला सवाई है॥
ज्योतिष चक्र से या कोई, कल्प लोक से आई है।
शुभ लक्षण हैं सब तन जिसके, शोभा अति अधिकाई है॥
स्वर्णहार सच्चे मोती युत, पोशाक जरी सारी।
हैं हार गले में पचरंगी, माला भी शोभ रही न्यारी॥
और कभी कभी यह चहूँ ओर क्या नजर घुमाकर देख रही।
कुछ कारण नजर नहीं आता, बन में आकर क्यों बैठ रही॥

दोहा—सीता का था उस समय नमोकार में ध्यान।
फिर न आकर के लगा, आर्तध्यान समान॥

शब्द भयानक रोने के, जिस समय भूप का आने लगे।
तो साथ साथ फिर मन में सब, अनुमान इसी का लाने लगे।
यह वज्रजंघ सत्य धर्मी राजा सप्तस्वरों का ज्ञाता है।
कुछ सोच समझ इस तरह भूप मन्त्री का मथन सुनाता है॥

चौपाई—गर्भवती यह रानी कोई, जो इस समय चिंता से रोई।
आप्त बचन न भेद स्वर कोई, खबर नहीं विधना क्या होई॥

दोहा—पता लेन उस सती का, चला उसी की ओर।
सुन आहट कुछ सिया के, दिल में मच गया शोर॥

सोचा कि अरण्य भयानक में, यह चोर लूटने वाले हैं।
अपना धर्म बचाने लिये, आभूषण सभी निकाले हैं॥
सब सम्मुख उनके फैंक दिये यह दल भूपति आया है।
और नम्रता से जनक सुता ने ऐसे बचन सुनाया है॥

दोहा—अय भाई तुम इस तरफ, आए हो जिस काम।
लो आभूषण यह सभी पहुँचो निज निज धाम॥

करोड़ों का यह माल तुम्हें, इस जन्म के लिये पर्याप्त है।
किस लिये क्यों और मनुष्यों पर, चलाते जाकर आफत है।
अनुग्रह करके मुझको कोई रास्ता तो जरा बता देवो।
कुछ होगा भला तुम्हारा यह, आभूषण सभी उठा लेवो॥
यह सायम मेरी आगामे पीयस की गाले ला करके।
जाने वाली है सधातुर, कुछ अपनी भूल मिटा करके॥

दोहा—राज्य और कर्त्तव्य लख, भूपति करे विचार।
महासती निश्चय कोई जिस पर कष्ट अपार॥

दोहा—धर्म शील अपला कोई शील रत्न की खान।
समझ ठीक कहने लगा, बज्रजंग बलवान्॥

दोहा—बहिन जरा भी मत डरो, दिल में सोच विचार।
भाई हूँ मैं धर्म का अर्हि दूर निवार॥

पता चिन्ह अपना कहदो किस कारण बन में आई हो।
क्या कष्ट मिला तुमको कोई जिससे इतनी घबराई हो॥

पति ने क्या किया उपकार, कैसे भूल जाऊं मैं।
बचाया है धर्म मेरा तो इन, फिर अवश्य क्या निकले ॥६॥
सबर फिर भी न आया, दुष्ट इन बेदर्द कर्मों को।
कलंकित कर निकाला मुझको यहां इसवनमें क्या मिकले ॥७॥
कर्म भर स्वयं आय, किसी का दाप क्या इस में।
स्वामि मेरा "शुक्ल" सुन कर, इधर से तुम भी क्या निकले ॥८॥

दोहा—समझ लिया मैंने सती, तुम हो अति गुणवान्।
वहिन समझ लो आप के, कष्टों का अवसान ॥

सिवा धर्म के बहिन जीव का कोई न जग में साथी है।
नदी नाव संयोग मिलाइ जावे, जिस तरह बराती है॥
भामंडल समझो मुझ को, अपने दिल का संताप हरो।
धर्म ध्यान में रहो सदा, अरिहंत देव का जाप करो॥
तू महासती गंभीर सती, तेरे गुण कैसे गाऊं मैं।
अहो भाग्य तुमरे चरणों की रज निज मस्तक लाऊं मैं॥
मिथला नगरी से बढ़ कर समझो, यह पिहर तुम्हारा है।
धन्य भाग धन्य घड़ी, मिले दर्शन कुछ पुण्य हमारा है॥
रघुकुल दिनरात तुमको तरसकर, न नींद सुखों की सोएंगे।
और कलंक लगाया जिन्होंने तुमको, सिर धुन धुन कर रोएंगे॥
सुसर गृह से लस लड़की, तो पिहर में आ जाती है।
बस यहां से आगे ठौर कहीं सतियों की नजर न आती है॥

इतने में ही आगई वह दासी विश्वास,
शुभ प्रकृति ने लिया पलटा दुर्द कमाल।
दानों ने उपवास शुद्ध कर लिये थे चौविहार,
शुद्ध तपस्या के सामने वन कर्म लाचार।

दोहा—सीता का मन टल गया, था जो मन में क्लेश।
पुण्डरीकपुर में ले गया, आदर सहित नरेश॥

ऐसे धर्मी के घर में रानी भी कुल उजियारी थी।
जो राजा था यदि धर्म शशि तो यह भी नभ सितारा था॥
नृप से पहले कर के रानी ने सीताजी का सत्कार किया।
मस्तक दिया धार सार चरणों में, भवन और विश्राम दिया॥
नित्य ननद ननद करती रानी, सेवा में निशदिन रहती है।
सीता भी उसको भाभी, और भाई राजा को कहती है॥
सुखपूर्वक सुख पर पांच समय पर संध्या नित्य प्रति करती है।
बिना किये नित्य नियम कभी भी, जल की घूंट न भरती है॥
एक हाथ में ले पुस्तक पढ़ दूजे से समझाती है।
देती सब को उपदेश इस तरह, अपना समय बिताती है॥

दोहा—इधर क्षेम लिया बहिन की आया जब भूपाल।
दूरदर्शी सोच में कह लिया निज हाल॥

दोहा—भाई शरण आपके आई हूं यहां पास।
एक बात पर आप को रखना होगा ख्याल॥

अभ्यास तो भाग्य यहां इतने कोई मुझ दर्शन आयेगा।
यदि आया भी तो दूर घनों, मैं पाविम ही सुध आयेगा॥
इस हालत में मैं भाई हरगिज न अयोध्या जाऊंगी।
यदि जाऊंगी तो गौरव से नहीं तो यह प्राण गंवाऊंगी॥

दोहा—जो भी कुछ आशा मेरी व्योम कुसुमवत् जान।
यदि यह पूरी न हुई तो कर यों अपमान॥

प्रकट करूं आशाओं को बुद्धिमानी न जाहिर है।
कहने न मार नहीं रहता यह मशहूर जग जाहिर है॥

कहना उसको जो कर कहना, नहीं करे सो फिर क्या कहना है।
बैठो उस पे जो अपने गुणका नहीं तो बेइज्जती से रहना है॥
गुण अपगुण की पहिचान नहीं वहां पांव नहीं धरना चाहिये।
बेइज्जती का टुकड़ा खाने से, तप जप करके मरना चाहिये॥
इसलिये आप ने कुछ दिन तक, जो देना मुझ को शरना है।
तो राम से मेरी जाकर के, य कोई विनती करना है॥
सत्य मेरा प्रगट होगा, यह समय एक दिन आवेगा।
नहीं तो पूर्व कृत कर्म का, कर्जा ही टल जावेगा॥
निश्चय मुझ को जिनवाणी पर यह कष्ट कटने वाली है।
अब शुक्ल मुनि ने भी आकर, इस आग पे धूनी डाली है॥

दोहा—जो कुछ आज्ञा आप की, पालूं बहिन जरूर।
आप से जो प्रतिकूल वह मुझ नहीं मंजूर॥

कह कुछ वीर मार्तण्ड सम, मैं सच्चा वीर धर्म का हूं।
सर्वज्ञ देव की कृपा से, कुछ ज्ञाता सभी कर्म का हूं॥
जैसा हूँ वैसा हाजिर हूं, सेवा करने को खड़ा हुआ।
एक सिया धर्म के दुनिया में, बाकी है भी क्या पड़ा हुआ॥

दोहा—सिया यहां रहने लगी, आर्त सभी निवार।
यहां पहुँचा रथयान भी, रामचन्द्र के द्वार॥

॥ सीता के वियोगजन्य दुःख से सन्तप्त रामचन्द्र ॥

दोहा—रामचन्द्र ये विरह में सिर्बल दुखित शरीर।
सेनापति कहने लगा भर नयनों में नीर।

नौ॰ दोहा कृतान्त वदन सेनापति

सूर्यवंश कुल मणि मुकुट हे स्वामी जगराज।
आज्ञा आप की सब तरह पूर्ण हुई महाराज॥

कजा दई महाराज किन्तु मन मेरा घबराता है।
कहा नहीं कुछ जाय इस समय मस्तक चकराता है॥
पांव नहीं जमते धरती पर, तन गिरना चाहता है।
लगन पर भी पियास न पानी हलक तले जाता है॥

गाना कृतान्त वदन सेनापति की दुख से घबराहट वर्णन

तर्ज—(पड़ी है नाव चक्कर में तिरा होगा तो क्या होगा)।

आह! माता यह सुन के कह, गिरा एक चक्कर खा करके।
तुरन्त फिर रामन पूछ समी थामूं बिठा करके॥१॥
किया उपचार शीतल नीर, मुख पर राम ने छिड़का।
दिया पंखा तल मखमल की गद्दी पर लिटा करके॥२॥
हृदय धमका भयानक घूमता था। आगे आंखों के।
मिटाई तर बतर चीजें इस गर्मी मिटा करके॥३॥
हुआ दिल धड़कन में बन्द फिर कुछ चेत में आया।
गिरा श्री राम के चरणों में निज मस्तक झुका करके॥४॥

दोहा—क्या कुछ सीता ने कहा क्या था उसका हाल।
हृदय यदि अब ठीक है तो कहा सभी तत्काल॥

दोहा—हरा अरण्य का हाल माता तारं अमीर।
समझ मैं व्याकुल हुआ सुना रघि कुल मीर॥

मूर्च्छा पर मूर्च्छा आन से बह बार धरती पर गिरती थी।
हरा भयानक वन आया भयभीत हुई अति डरती थी॥
नयनों से पानी बहता था चरन कमलों का रोती थी।
धनकी थी हाय कठोर कर्मी, आतम ज्ञान का खोती थी॥
यह जिद्दा नहीं मेर मुख में जिससे सब हाल बयान करू।
सिर चकराता है आज मेरा अब वनके दुख पर ध्यान करूं॥

जो जो सीता ने बतलाया सोही मैं क्या बताता हूं।
सारी याद न रही मुझ को कुछ २ चुन कर बतलाता हूं॥

॥ दोहा कृतान्त सीता की तरफ से ॥ (सीता सदेश)

दोष नहीं कुछ राम का निश्चय मम कर्म अपार।
किन्तु नहीं व्यवहार पर, आपने किया विचार॥

कृतान्त (सीता सन्देश)

व्यवहार और नीति का तो समवेश नजर नहीं आया है।
जो बिना खबर इस तरह आज अटवी में मुझे पहुँचाया है॥
अपना अपराध नहीं करती, कुछ दोष न देती स्वामी को।
यह केवल आप की आज्ञा से तज देती मैं राजधानी को॥
बस और कहूं क्या स्वामी को, पर्याप्त यही इशारा है।
कुछ सोच समझ कर ही मुझ को,स्वामी ने आज निकारा है॥
जिस तरह आपकी मर्जी हमने उसी तरह से रहना है।
पर एक जरूरी बात याद आई, सो तुम का कहना है॥

दोहा कृतान्त (सीता सन्देश)

अन्य जनों के कहने से तजा मुझे भर्तार। —
इसी तरह कुछ और न तज देवें सरकार॥

राज खजाने महल नार यह, फेर हाथ आ सकते हैं।
भाई बन्धु और मित्र आत्मा सङ्ग नहीं जा सकते हैं॥

एक धर्म ही ऐसा है जो संग जीव के जाता है।
अष्ट कर्म मल टाल इसी से अक्षय मोक्ष पद पाता है॥
अन्य किसी के कहन से धर्म न तजियो पीव।
कुछ दाता संसार में ये ही अमर सदैव॥

क्षमा सभी अब कर देना जो कुछ अपराध हमारा हो।
यही भावना है मेरी, युग युग में यश तुम्हारा हो॥
अक्षय शिवपद हुई आज से, सारी अक्षय कहानी है।
प्रसन्न रहो सुख शान्ति से और अवधपुरी राजधानी है॥
सर्प बीन पर मस्त इस तरह, राम सीता का पटक रहे।
और श्वेत श्वेत मोती की मानिंद आंसु नीचे टपक रहे॥
दोहा—सुन सुन कर के मूर्च्छा, रघुवर को गई आय।
जरा देर के बाद फिर, यों बोले अकुलाय॥
दोहा—आज किया मैंने बुरा सीता दई निकाल।
सिर अपराधिन पर पड़ी, क्या आपत्ति काल॥
एक सिया के बिना सभी महलों में घोर अंधेरा है।
कर्मों ने कैसे आज अचानक भंग रंग में गेरा है॥
याद आय सिया के गुण, हृदय में नहीं लगती है।
इस प्रेम ने ऐसे तंग किया आंसुओं की धारा बहती है॥
दोहा—एक नहीं दो चार क्या गुण थे भरे अनेक।
जिसका गुण मैंने नहीं धारा हृदय में एक॥
मैत्री भाव सभी पर सीता तीन योग से रखती थी।
सत्य वचन कहने में उसकी, शक्ति अद्भुत कहती थी॥
पर पुरुष देखने में अन्धी विकथा सुनने में बहरी थी।
कुवचन कहने में थी गूंगी बुद्धि सागर सम गहरी थी॥
पर घर जाने में थी पंगुली, नहीं कर थे पर धन हरने में।
सम थी कपाय चारों पतली न भय था उसको मरने में॥
सम्मति देने में मंत्रीवत् थी काम संवारण की दासी।
और पाप जरा से भी यह समझे थी गदन की फांसी॥
सब एक से एक बढ़कर गुण थे यह चौसठ कला की ज्ञाता थी।

दोहा—कर्म हीन को कम मिले शुभ वस्तु का योग ।
यदि मिल भी जाय कभी, होता शीघ्र वियोग ॥

(गाना)

आज किस्मत ने हमें नाच नचाया कैसे ।
सुख का एक दिन न मिला हमको सताया कैसे ॥१॥
वर्ष चौदह तो सहा, कष्ट के काट बन में ।
वहां भी कर्मों ने कई बार फंसाया कैसे ॥२॥
युद्ध रावण से हुवा शक्ति भाई को लगी ।
तूने हृदय यह मेरा आज जलाया कैसे ॥३॥
सुन हालों का किया जिसके कारण हमन ।
आज उस से ही मेरे मन को फंसाया कैसे ॥४॥
लालों के सम्मुख मुझको भर्तार बनाया उसने ।
फर्ज मेरे से मुझे, किस्मत ने हटाया कैसे ॥५॥
सब ने समझाया मगर, एक न मानी मैंने ।
अक्ल मेरी प हाय, पर्दा यह छाया कैसे ॥६॥
मेरा अपराध भी सीता से क्षमाने न दिया ।
आज होनी ने अजब ढंग रचाया कैसे ॥७॥
मिथिलेश सुता रघुकुल की मधु श्रेष्ठ सती
शुक्ल बिपिना न टली तन को गंवाया कैसे ॥८॥

दोहा—कर्तव्य अपने पर रहे रामचन्द्र पछताय ।
लक्ष्मण जी कहने लगे ऐसे सम्मुख आय ॥
क्यों भाई हमने प्रथम समझाया हरबार ।
किन्तु न मानी किसी की ऐसा चढ़ा सुमार ॥
यह उसी बात का मिला तुम्हें फल आंसु भर भर रोते हो ।
न सोये अब तक नींद सुखों की सोयोगे न सोते हो ॥

दोहा – इसी जग में बहुत हैं ऐरावत गज एक।
कामद सर्वोत्तमता कहां, घाड़े फिरें अनेक॥

चौ० —गंधोदक है एक जगत् में जलाशयों का पार नहीं।
क्षीरोदधि समुद्र जैसा उदधि कोई और नहीं॥
मणियों में चिन्तामणि कही ग्रामों में अमरपुरी ना बड़ा।
देवों में अरिहन्त देव और, तपस्या में ब्रह्मचर्य बड़ा॥

दोहा—मन्त्रों में मन्त्र बड़ा, परमेष्ठी नमोकार।
कल्पवृक्ष जैसा नहीं, वृक्ष कोई सुखकार॥

नग में एक सुदर्शन नग कुछ और नगों का अन्त नहीं।
वीतराग के धर्म सिवा बाकी धर्मों में तन्त नहीं॥
हैं पतिव्रता नारी अनेक, पर सीता सी नहीं पाएगी।
अब 'शुक्ल' अगाड़ी इसी सती की कथा सुनाई जाएगी।

दोहा कवि—युगल पने दो सुत हुए, सिया के पिछली रात।
रूप रंग संस्थान में एक जैसे दोनों भ्रात॥

इस समय सिया की खुशियों का सर्वज्ञ देव ही ज्ञाता है।
खुश वजरी सुन कर वज्रजंघ, नृप फूला नहीं समाता है॥
राज चिह्न के सिवा सभी आभूषण तुरत उतारे हैं।
हार सहित सब ही आभूषण दासी को द डारे हैं॥
मस्तक तिलक किया दासी के, दासीपन को दूर किया।
धर्म संस्थाओं को नृप ने दाम बहुत भरपूर दिया॥
रियासत भर के ये जितने कैदी सब स्वतन्त्र कराए हैं।
था जन्मोत्सव का पार नहीं घर घर में मङ्गल गाए हैं॥

दोहा—अनंगलवण शुभ नाम है, दासी वदन सुखकार।
मदनांकुश था दूसरा, सुन्दर राजकुमार॥

देवलोक से चयकर आये, पुण्यवान अति प्यारे हैं।
पांच धाय माता पालें, और सभी खिलायन वारे हैं॥
देख अवस्था राजा ने, फिर विद्या उन्हें पढ़ाई है।
हुए बहत्तर कलाओं के ज्ञाता, सब शस्त्र कला सिखाई है।
तीक्ष्ण बुद्धि देख देख अध्यापक प्रेम बढ़ाते हैं।
और नमस्कार त्रिकाल कंवर, मामे को करने जाते हैं॥
रत्न सुन्दरी रानी भी अति प्रेम इन्हों पर करती है।
समय समय पर खान पान, सामान अगाड़ी धरती है॥

दोहा—देख देख सुत अपने सीता खुशी अपार।
मन ही मन करने लगी ऐसे जरा विचार॥

दोहा—मन से था मैंने दिया सासु चरणों में शीश।
क्या सासु ने था मुझे, शुभ दीया आशीश॥

हम जैसे पुत्र जन्मोगी वैराग्या भी थी साथ मेरे।
और वाममवाशी देख उस समय लगा हुआ था साथ मेरे॥
प्रत्यक्ष सासु के आशीसों का, फल मैं सम्मुख पाई हूं।
बाकी हैं मेरे कर्म अशुभ जिन्ही वश से छोकर आई हूं॥
भाग्यहीन मैं क्यों सासु के, चरणों में नित्य प्रति पड़ती।
तब ही यह जन्म सफल होता कुछ उनकी मैं सेवा करती॥
धन्य घड़ी धन्य दिन होगा जब सासु के दर्शन पाऊंगी।
जो लगा हुआ मेरे कलंक, इसको भी दूर हटाऊंगी॥

दोहा—सीता ऐसे कर रही अपना निजी विचार।
सिद्ध पुरुष वहीं आगया जनक सुता के द्वार॥

एक हाथ में झोली थी दूजा कर खाली लटक रहा।
मुख पर मुखपत्ती लगी हुई मस्तक चाली से दमक रहा॥

था रजोहरण मायी कक्ष में और उसकी द की मंगी है।
आकाश गामिनी है विद्या, अनुव्रत धारी मन रंगी है॥
चादर और चोल पट्टा, साधु की तरह दिखाता है।
समझ गई सीता अनुव्रती, भोजन कारण आता है॥
जप तप करके विद्या साधी ज्योतिष का पूरा ज्ञाता था।
था रामचन्द्र से मुख्य प्रेम ब्रह्मचारी जग विख्याता था॥

दोहा—प्रेम भाव से सिया ने दिया उस अन्न पान।
हाल पूछने के लिये बोली मधुर जबान॥
कहां घूम कर आ रहे, भाई कहो तमाम।
नाम काम अपना कहो जाते हो किस धाम॥

सिद्धार्थ—सिद्ध पुत्र कहते मुझे, असल सिद्धार्थ नाम।
निर्ग्रन्थों के दर्श को फिरूं एक यह काम॥

सर्वज्ञ देव की वाणी कुछ यहां पर कानों में गिरती है।
आर भिक्षा करके उदर पूर्ण करना मेरी वृत्ति है॥
अपना कुछ हाल कहो भगिनी यह कान अपरसा धारी है।
नेत्रों में पानी भरा हुआ निकली आवाज कुछ भारी है॥

दोहा सीता—हा भाई कुछ कम का है ऐसा ही दौर।
विधना ने आगे कहा चले किस तरह जोर॥

आदि अन्त पयन्त सिया ने वचन दुःख सुनाये हैं।
राजकुमार उस तरफ माता का शीश झुकाने आये हैं।
माता ने दोनों राजकुमार, आपके चरणन लाये हैं।
उस समय सिद्धार्थ ने सीता को एम वचन सुनाये हैं॥

दोहा सिद्धार्थ-पुत्र तेरे पुण्यवान हैं, भगिनी फिक्र मत कर।
सभी ठीक हो जायगा, है थोड़ दिन हो पर॥

मनुज पक्षी योद्धा दानों, सब नाम तेज अति पड़े हुये।
यथा योग्य शुभ लक्षण हैं और दांत परस्पर बड़े हुये॥
सर्वज्ञ देव ने बतलाये शास्त्रों में जो शुभ लक्षण हैं।
सब आते नजर इन्हों में हैं, आर बुद्धि के बड़े विलक्षण हैं॥

दोहा—विनती एक भाई मेरी, इस पर देवें ध्यान।
विद्या इनको दीजिये, विधि सहित शुभ ज्ञान॥

सुनी प्रार्थना सीता की, सिद्धार्थ का दिल नर्म हुआ।
कुछ पुण्य सितारा बच्चों का भी, और शुभ कर्मोदय हुआ॥
विद्या विविध प्रकार उन्हों को, विधि सहित सिखलाई है।
और कुछ दिन में ही सिद्धार्थ ने सारी पास कराई है॥

दोहा—देखा कि अब हागये, विद्वान् सुकुमार।
सीता के सुपुर्द किये, बोला वचन उचार॥

सिद्धार्थ-दानों सुत तेरे हुये विद्याओं में पास।
कुछ दिन में भगिनी तेरा हागा पुण्य प्रकाश॥

मनुष्यमात्र तेरे पुत्रों का, नहीं जीतने पावेगा।
अन्तिम निराश होगा उन पर, जो आक्रमण करके आवेगा॥
नाम प्रगट तेरा संसार में, अब सीता करने वाले हैं।
सुत विनयवान् हैं भव्य जीव न किसी से डरने वाले हैं॥
पुत्र समर्थ तेरे हैं अब मेरी ड्यूटी पूर्ण हुई।
तेरी सेवा में रहा नित्य मेरी चिन्ता भी चूर्ण हुई॥
हे जगदम्बा उपकारी एक विभीषण वीर है दुनिया में।
सम्यग्दृष्टि अद्वितीय, वज्रकरण सा और न दुनिया में॥

दोहा—इतना कह करके चला सिद्धार्थ निज धाम।
सीता से सम्मान का केवल लिया इनाम॥

यही सोच कर तुम्हें साज में विजय माल पहनाती हूँ।
कंगना दानों के हाथ म, और मस्तक पर तिलक सजाती हूँ ॥

गाना—(म० ठ०)

ऐसा कह हार दोनों को पहना दिये।
और विजय का तिलक फिर सजाने लगी ॥
मस्तक चुचकार करके बड़े प्यार से।
थापी देकर वचन यों सुनाने लगी ॥
दूध के भी ना टूटे तुम्हारे कुमर।
कह कर अग्नि में तुम को कुदाती हूँ मैं ॥
जाओ बेटे खुशी मे समर भूमि में।
पहिली बातों को फिर से सुनाती हूँ मैं ॥
सर चला जाय बेशक हो परवाह नहीं।
नाम जाय म कुल की सुनाती हूँ मैं ॥
लाज रखना मेरी दूध की लाडला।
अपना हृदय सबर से सुनाती हूँ मैं ॥

दोहा—माता छोटे देख कर, दिल अपने मत भूल।
छोटे बच्चे सिंह के, मारें गज स्थूल ॥

रण भूमि में जब उतरेंगे, सन्नाटा सा छा जायेगा।
जननी ने कोई जना नहीं जो सम्मुख पांव टिकायेगा ॥
जो कहा मात मा ही निश्चय करना करके दिखलायेंगे।
नहीं तो चुल्लू भर पानी में बस डूब कहीं मर जायेंगे ॥

दोहा—नमस्कार कर मात को चले युगल दो वीर।
माता ने उत्साह दिया और पंचाद धीर ॥

फिर टूट पड़े अरिन्दल पर तब हाहाकार मचा भारी।
अग्निज्वाल तूफानमयास जैसे घनघार घटा भारी ॥

पवनऊग से नारद ने, कुछ रहस्य जरा सुन पाया है।
फिर पृथु भूप के पास मुनि ने निज आसन जा लाया है॥
कहो मुनि मदनांकुश किस, वंश का राम कुमारा है।
भेद बताने को नारद ने ऐसे वचन उचारा है॥

दोहा—नित्य उठ करता है सदा अन्धकार का नाश।
आता है सबको नजर, देख रवि प्रकाश॥

आदिनाथ का बड़ा पुत्र जो चक्री भरत कहाता था।
सूर्ययश था पुत्र भरत का तेज सहा नहीं जाता था॥
सूर्ययश से सूर्यवंश यह, चला तभी से आता है।
राम पिता सीता माता और, कुल रविवंश कहाता है॥
गर्भ में जब यह दोनों थे कुछ लोगों ने अपवाद किया।
उसी समय श्रीरामचन्द्र ने, सीता को बनवास दिया॥
यह महा सती है पतिव्रता, कालिख कैसे लग सकती है।
कभी तेज सूर्य का घटे नहीं चाहे कुछ दुनियां बकती है॥

दोहा—सूर्य वंश सुन पृथु को आई खुशी अपार।
कनका लड़की का किया उसी समय तैयार॥

धूम धाम से विवाह किया कुश को जामात बनाया है।
दिल खोल भूप ने दाम दिया राजा से प्रेम बढ़ाया है॥
पवनजंघ राजा की जा शुभ, थी विचार सो फल आई।
पहिले थी जैसी काम मधुरता, पृथु भूप का दरसाई॥

दोहा—नारद मुनि कहने लगा मदनांकुश को बात।
चलो मिलायें आप को राम लखन के साथ॥

चौ०—राम लखन तुमको दिखलायें अवध पुरी यदि जाना चाहें।
यह अतुल बली महागुरु कहावें, सुर नर जिनकी सेवा बजावें॥

समझ गये हम राम साथ, तेरा जंग सुझने वाला है।
हम भी देखेंगे अवधपुरी में, क्या गुल खिलने वाला है॥
इतना कह कर नारदजी ने तो अपना प्रस्थान किया।
इस तर्फ इन्होंने भी यहां से, कूच करने का सामान किया॥

दोहा—इधर उधर के देश कुछ, साधन का था ख्याल।
लोकपुरी के पास जा दई छावनी डाल॥

कुबेर भूप को जीत फेर, लम्पाक पति को विजय किया।
भातृ शलक पर आक्रमण करके, विषमस्थली को घेर लिया॥
गंगा नदी के उत्तर पार, कैलाश की ओर सिधाये हैं।
सिंहलगल कुन्तल यह तीनों देश जीत सुख पाये हैं॥
भूतवरदी कालांबुमटी सन्दम यह भी सब देश लिये।
भीम भूत शसभानत, तीनों राजे साथ विरोध लिये॥

दोहा—सिन्धु का जिनने लिया सर कर परला कूल।
छोटे छोटे भूपति हुए बहुत अनुकूल॥

अब खुशी खुशी श्री वज्रजंघ, निज पुण्डरीकपुर को आये हैं।
और लवणांकुश ने माता के, चरणों में शीश झुकाये हैं॥
देख तेज निज पुत्रों का, सीता माता खुश होती है।
जब स्मरण हों पिछली बातें, तो मन ही मन में रोती है॥
माता की सब चिन्ताओं का भी लवणांकुश ने पाया है।
श्री वज्रजंघ मामाजी का दोनों ने वचन सुनाया है॥

दोहा—मामाजी अब अवध को देखन का है ख्याल।
राम लखन देखे नहीं, कैसे शूर विशाल॥

रण करने का स्वाद आज तक हमको कहीं न आया है।
अवधेश की शक्ति देखेंगे, हृदय में यही समाया है॥

इस समय आप जो कहते थे अब काम है वहाँ दिखाने का।
कुछ देर नहीं अब एक ध्यान है आपकी आज्ञा पाने का॥

दोहा—जो कुछ करना आपने, मुझे नहीं स्वीकार।
किन्तु ऐसे काम में, करना ठीक विचार॥

आज्ञा देने में तुम को है कुमार मुझे इन्कार नहीं।
मैं कारण बनूं क्लेशों का, और मिलेगा कुछ सार नहीं॥
अब मगाना सभी परेशां हैं औरों का हँस में वश नहीं।
लड़ना तो वन से दूर रहा, यहाँ काम करेगी अकल नहीं॥
त्रिलोकी जिन से हार गये हम तुम तो हैं किस पानी में।
मिलना तो मिलो प्रेम से, क्यों दुःख पावोगे नादानी में॥
कुछ विघ्न हुआ यहाँ पर तुमको, यहाँ जलकूला दुःख पावेगी।
आपस में इनको लड़ा दिया बदनामी मुझ को आवेगी॥
मेरी तो यही सम्मति है, सीता से आज्ञा ले आवो।
देने का मैं तैयार साथ, जो भी कुछ तुम करना चाहो॥

लवणांकुश और राम का युद्ध

दोहा—इसी समय दोनों कुमर, गये मात के पास।
नमस्कार कर के किये अपने भाव प्रकाश॥

दोहा—खुश हो कर दे दीजिये, आज्ञा हम को मात।
अपयशी पिता के दर्श को चलें करें दो बात॥

दोहा—म्लान गई आकृति से बेटा प्राण आधार।
इस काम का आप का बिल्कुल नहीं विचार॥
आता नजर मुझे ऐसा तुम जाते जंग मचाने।
नंगी तलवार पकड़ि शस्त्र बांधे सब आग ठिकाने॥

मुझ कर्मों की मारी को, क्यों लगे पुत्र कल्पाने।
बेटा करो विचार लगे क्यों, सोता काल जगाने॥

छन्द—दर्शन को जाओ लाडलो, मैं रोकती तुम को नहीं।
जंग करने चले स्वीकार, यह मुझ को नहीं॥
जिन की शक्ति से धरण और, स्वर्ग डर जाता सभी।
सोते कर्म मेरे कुमर फिर, न जगा देना कभी॥

दोहा—विनय करें कर जोड़ कर, चरण नियायें शीश।
आज्ञा देनी मात जी होगी विश्वावीस॥

दोहा—नरमाई से मात जी मिलते कायर क्रूर।
मिलें तेग की धार से, योद्धा क्षत्री शूर॥

करने को संग्राम मात, अवधेश से हम जावेंगे।
दई न तुम को जगह उन्हें कर अपने दिखलावेंगे॥
दुनिया से भी पुत्र मात, तेरे न दहलावेंगे।
काढ दई थी उस के पुत्र हम कभी न कहलावेंगे॥

गाना—लवणांकुश का माता को धैर्य देना (य० त)

माता पुत्र तेरों को विजय कर सके।
ऐसा दुनिया में कोई बशर ही नहीं॥
राम लक्ष्मण के संग सारी दुनिया चढ़े।
तो भी दिल में हमारे खतर ही नहीं॥
हो के क्षत्राणी माता क्यों कायर बने।
मेरी शक्ति की तुम को खबर ही नहीं॥
शान भुजबल की उन को दिखाये बिना।
माता आयगा हम को सबर ही नहीं॥

प्रमाद नाम की है माता दुनिया में बड़ी बिमारी है।
नरमी से यहाँ न काम बने, जिसका चढ़ रही खुमारी है॥
किसमिस की तरह औषधी, मीठी सब से श्रेष्ठ बताती है।
बादाम के मानिन्द दूजी, जो अन्दर से अच्छी पाती है॥
ऊपर नर्मी अन्दर सख्ती, जैसे की बेर छुहारा है।
चौथे मानिन्द सुपारी के, आप्त ने वचन उचारा है॥
मात पिता से पहिली संख्या, की ही विनय हमारी है।
या दूजी संख्या की समझे, दिल से न दूर बिसारी है॥
है मात सिंह का बच्चा पंजों, से ही विजय बजाता है।
क्षत्रिय का विजय समर में ही शस्त्रों से परखा जाता है॥
बेशक वह है सिंह मात तो, हम भी बच्चे हैं।
तुम निर्भय हो आज्ञा माता, हम किसी रण में नहीं कच्चे हैं॥

दोहा—नमस्कार कर के चले, दे माता को धीर।
सीता को धरनी पड़ी दिल में धीर आखीर॥
सीता आँसू गेरती हा कर के हैरान
क्योंकि दोनों तर्फ है, अपना ही नुकसान॥
जंगी बिगुल बजा दिया हुवे वीर तैयार।
पाखाओं को जा रही, दिल में खुशी अपार॥

आ वज्रजंघ भीर प्रभु परस्पर, संग में पोतनपुर वाला।
लम्पाक कालाम्बु पति और, मुकुल कूल का मतवाला॥
शलभानस आदि नरेश, लवणांकुश के संग आए हैं।
श्री राम लखन की सीमा पर, आ तम्बू डेरे लाए हैं॥
विमान गगन में घूम रहे संग्रामी रथों का पार नहीं।
और विकट गाड़ियां गू ज रही तोपों का हुआ पसार कहीं॥

राम लखन की सेना में भी आन मोर्चा आया है।
और नारद का भेजा भामण्डल, पास सिया के आय है॥

चौ०—पुण्डरिक पुर भामंडल आया, सीता को निज शीश निमाया।
दुःख परस्पर सुना सुनाया सीता ने सब वचन सुनाया॥

दोहा—जो कुछ कर्मों ने करी भाई मेरे साथ।
सिर धुन धुन रोई अति पकड़ पकड़ कर माथ॥

निश्चय में है किस्मत मेरी कारण भी राम कहाए हैं।
बनवास में मुझे निकाल दिया कुछ ख्याल नहीं दिल लाए हैं॥
अब जैसे तैसे भाग कष्ट के, दिन मेरे सब दूर हुये।
और लवणांकुश भानजे आप के, शूर वीर मशहूर हुये॥

दोहा—अब दुःख अपने की कथा लाख कहूँ या एक।
भाई इस दम चौकसी, रही सुख तरह मूख॥

कुमर गये दोनों रण करने, जिद अपनी में आकर के।
अब किसी तरह से हे भाई, समझाओ उनको जा कर के॥
जंग वहां पर राम लखन संग अब होने वाला होगा।
अन्तिम अपनी सब हानी है, अपना ही मुँह काला होगा॥

दोहा—नारद ने अच्छा किया मुझको दिया बताय।
लवणांकुश को मैं अभी देखूँगा समझाय॥

बुरा किया दोनों ने किस के, साथ समर की ठानी है।
सुरा सुर न उनको जीत सके, क्या पेश मनुष्य की जानी है॥
नाग पवनिये दिये छेद एक बच्चों की नादानी है।
बिना समर सुत अपनों की क्यों बैठेंगे निम्नगामी है॥

दोहा—भामण्डल सीता सही, दोनों बैठ विमान।
उसी समय पहुँचे वहां जहां था रण मैदान॥

लवणांकुश ने देख मात को, चरणन शीश झुकाया है।
विनय सहित भोजनशाला में, खाना तुरत खिलाया है॥
बोली यह भामंडल भाई, जो मामा सगा तुम्हारा है।
शिक्षा इसकी हृदय धरना, क्योंकि हमदर्द हमारा है॥

दोहा—भामंडल ने लवण को, समझाया हर बार।
किन्तु न माना एक भी, सीता का सुकुमार॥

भामंडल स्वयं ही समझ गया और जंगी भरती भरने लगा।
लिये युद्ध के भामंडल पुरुषार्थ अपना करने लगा॥
पता नहीं होगी क्या क्या, मंजूर सिया यों कहने लगी।
छिड़ गया समर संग्राम घोर, रण में तलवारें बहने लगी॥

दोहा—रामचन्द्र की फौज सब भागी प्राण बचाय।
लवणांकुश के सामने, गये सभी घबराय॥

सुग्रीव विभीषण बड़े-बड़े योद्धा फिर सन्मुख आये हैं।
इस तरफ चली भामंडल ने भी, अपने शस्त्र उठाए हैं॥
जब आम परस्पर मेल हुआ तो शूरवीर हर्षाए हैं।
और देख वीर भामंडल को, सुग्रीव ने वचन सुनाए हैं॥

दोहा—आश्चर्य मुझको हुआ, एक बात का देख।
हमसे क्यों मित्र फटा तू भामंडल एक॥

रामचन्द्र का सेवक तू, बहनोई सगा तुम्हारा है।
लंका पर करी चढ़ाई तबसे, तुम से प्रेम हमारा है॥
क्यों प्रतिकूल हुआ लक्ष्मण से हमको पता न पाया है।
यह कौन इन्होंने क्या मारा जो हम पर चढ़ कर आया है॥

दोहा—अब भी मैं श्रीराम का हूँ मित्र अनुकूल।
हुआ न होऊँगा कभी, मनसे मैं प्रतिकूल॥

तुम हम मित्र पुराने हैं, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं।
वैसा ही प्रेम हमारा है, तुम से टूटा कुछ नेह नहीं॥
किन्तु प्यारा हो ब्याज मूल से, बुद्धिमान् यों कहते हैं।
और सोच समझकर शूर वीर, बस, न्याय पक्ष को लेते हैं॥

दोहा—सुत दानों श्रीराम के, सीता के अंगजात।
लवणांकुश मम भानजे, युगल भ्रात दो भ्रात॥

रामचन्द्र ने सीता पर जो, महा विपत्ति डारी थी।
न अवधपुरी में मिली जगह बन-बन फिरती दुखियारी थी॥
यह दोनों सिंह उसी के हैं, श्रीराम को कुछ भी खबर नहीं।
निज म सक्त बदला लिये बिना, इनको बस आता सबर नहीं॥

दोहा—तुम भी अब इस पक्ष को, करो मित्र स्वीकार।
सीता के दर्शन करो फेंको सब हथियार॥

कम बिगड़ न जाए कहीं इस कारण शस्त्र उठाया है।
रहस्य बात का मित्र आज हमने तुमको बतलाया है॥
अब हम तुमने ही मिल करके, इनकी संधी करवानी है।
फिर किस कारण किससे लड़कर, आपस की करनी हानि है॥

दोहा—भामण्डल से जब सुनी, सभी बात सुखकार।
संग सबों के आ मिले फेंक सभी हथियार॥

सेना सहित सभी योद्धा, आ भामण्डल के साथ मिले।
यह दृश्य देख सब सेना क्या श्रीराम लखन के हृदय हिले॥
एक तर्फ आ लवण वीर ने राम की सेना घेरी है।
तरफ दूसरी आकर कुश ने अपनी की दम फेरी है॥

दोहा—आप आपु में कई भगे डार हथियार।
रामानुज दोनों चढ़े होकर के लाचार॥

क्या जादू है कोई शत्रु पर, जो सबको वश करते हैं।
जिन पर था विश्वास वोही आ आरि चरणों में पड़ते हैं॥
सब करत करते यों विचार, श्री राम समर में आये हैं।
तब लवणांकुश ने उधर, सामने आकर वचन सुनाये हैं॥

दोहा—नजर कोई आता नहीं, रघुवंशिन का सूर।
लंकपति को मारकर, इतना बढ़ा गरूर॥

इतना बढ़ा गरूर किसी, नीति का भी न ख्याल रहा।
कुल सोचो सदा किसी का यहां, न एक सरीखा हाल रहा॥
सहस्र अक्षौहिणी हनी यहां, यहां पर भी कुछ दिखलायेंगे।
शक्ति देखे बिन आप की बस, हम भी न यहां से जायेंगे॥

दोहा—लवणांकुश को देख कर, राम लखन हैरान।
रूप रंग संस्थान को, दिल में लगे सराहन॥
क्या दोनों आकर हुवे, मदन कुबेर अवतार।
संस्थान सब एक सा, सुन्दर रूप अपार॥

क्या मन्मथ ही उमर किन्तु, तेजी का लगता पार नहीं।
भोलापन मुख पर बरस रहा, गुस्से के कोई आसार नहीं॥
चाहे शत्रु हैं पर इन से हमारा, दिल मिलने को चाहता है।
बस देख देख इनको अन्दर, से प्रेम उमड़ता आता है॥

दोहा—क्या जादू के आगय, चमकर दोनों वीर।
पस्तर शस्त्र सब किस, तरह सोम रहे हैं तीर॥

सुग्रीव आदि सब योद्धों पर, भी यही मोहिनी जारी है।
कुछ असर हमारे दिल पर भी मोह करने लगी बिमारी है।
हम पहिले इनको समझा दें, क्यों वृथा प्राण गमायेंगे।
नहीं तो शत्रु से प्रेम ही क्या, परभव इनको पहुंचायेंगे॥

दो०-लक्ष्मण—बालक हठ इन को चढ़ा, क्या समझाते वीर।
मरने का यदि आगया, इनका आज आखीर॥

अभी तुम के ज्ञान नहीं, माहिर हैं कुछ इस फन के।
चित्त से बाहिर करें बात, मेंढक से उछल बछल के॥
बदल बदल कर चाल हमें दौसाने लड़के कल के।
एक वार न झेल सकें, रह जायेंगे कर मल के॥

सवैया (लक्ष्मण)

मूर्ख बाल गुमान भरे मम माँहि, न लाएं किसी की शंका।
काल को आप बराय रहे शठ, तेग दिखाए हुए रण बंका॥
अन्न जल आज घटा इनका लंकेश का अस्त हुआ जिम डंका।
क्या पेश चले जब आयु घटी सिर काल ने आन बजाया डंका।

दौड़—क्या तुम पर लाते हैं, जिस लिये समझाते हैं।
क्योंकि दोनों बच्चे हो
इस रण के फन में आप लड़कों, बिलकुल तुम कच्चे हो॥

दोहा—वसगी वस यह दया की, है ऊपर की बात।
दया करी सो देखलें हृदय पर धर हाथ॥
बालक हम को समझ कर, धोखा न खा जाय।
आज समर में आकर के, सब तोते उड़ जांय॥

तोते सब उड़जाएं, यदि हम हैं कुछ असल नसल से।
सुग्रीव आदि सब भूप कहां हैं मोर्चे नरा अकल से॥
तेज दिखाएंगे हम तुम को, आज रण के बल से।
पड़ा नहीं था पाला अब तक आपका किसी सबल से॥

गाना (ल० ल०) कह के बालक ही बालक डराते हमें।
इनकी शक्ति की कुछ भी खबर ही नहीं॥

राम लखन के वार सभी, खाली के खाली जाते हैं ॥
इस तरफ निशाना यचा बचा यह दोनों मार चलाते हैं।
विमान गगन में घूम रहे, योद्धा धरती पर लड़ते हैं ॥
महा भयानक देख युद्ध कायर भूमि पर पड़ते हैं।
देवाधिष्ठित अस्त्र सभी निज कुल पर कभी न चलते हैं।
देख वार सब के सब खाली राम लखन कर मलते हैं ॥

दोहा—अस्त्र शस्त्र दे गय, आज सब तरह जवाब।
मालूम हो रहा रहा, या आया काई ख्वाब ॥

छन्द—राम वार सब खाली गये क्यों समझ में आता नहीं।
सिर पर पड़ा आता अरि, शंका जरा लाता नहीं ॥
क्या खेल आज यह हमारे साथ यह सब हो रहा।
या कोई अशुभ कर्मों का दौरा शुभ कर्म है सो रहा ॥
वज्रावर्त धनुष भी मुख कर बैठा हार के।
अरिदल दलन मूसल रत्न भी गिर पड़ा सिर मार के ॥
अंकुश अरि गंजन महा यह भी दगा अब दे गया।
शीतला है आज सब मैदान शत्रु ले गया।

दोहा—इसी तरह लक्ष्मण बली कर रहा सोच अपार।
आज अरि के सामने पड़ किस तरह पार ॥

दोहा—आज हमें सब तरफ से आ रहा आर्तध्यान।
महा सबल योद्धा अरि, देखत में नादान ॥
युक्ति कोई आज नहीं चलती सिर में चक्कर सा आया है।
होनहार ने आज खबर क्या कैसा जाल बिछाया है ॥
किस वन के हैं बने हुए शत्रु न मारे जाते हैं।
आक्रमण करते हुए आज सब हमें दबाये जाते हैं ॥

सन सनाट करता तब चक्र, कुश की तरफ सिधाया है।
देख चक्र को लवणांकुश का, सारा दल घबराया है॥
प्रदक्षिणा देकर के कुश की, लक्ष्मण के कर पर आ बैठा।
या जैसे पक्षी उड़ करके फिर, निज स्थान पर आ बैठा॥

दोहा—फेर चलाया अनुज ने, ला कर जोश अपार।
कुल वंश पे कर सकता नहीं, चक्र सुदर्शन वार॥

वार तीसरी फेर अनुज ने, मारा चक्र घुमा करके।
परिक्रमा देकर उसी समय लक्ष्मण कर बैठा आकरके॥
इस वार तीनों खाली, रामानुज अति हैरान हुए।
लगी आग चक्कर खाने, दिल में कुछ ऐसे ध्यान हुए॥

दोहा—आज सब उलटे हो गये, शक्ति में कमजोर।
शत्रु सिर पर चढ़ रहे, मचा मचा कर शोर॥

छंद—था भरोसा चक्र पर, सो भी दगा अब दे गया।
क्या खबर है आज शक्ति, कौन सारी ले गया॥
अस्त्र कभी खाली न जावे वंश वंश का टाल के।
कर दिये निष्फल अरि ने आज जादू डाल के॥
बलदेव वासुदेव क्या पैदा हुए दो वीर हैं।
अमर है खानी जिन्होंकी युद्ध में अति धीर हैं॥
सब पराया राज्य यह, दान में अब क्या देर है।
यदि रहा यह हाल तो बस कुछ ही दिनों का फेर है॥

दोहा—बन्द लड़ाई हो गई हुई जिस समय रात।
तैयारी होन लगी होत ही प्रभात॥

शत्रुंजन मंजन में निपुण हो श्रीराम सभा में बैठे हैं।
तैयार हुए अनुक्रम में आकर, शस्त्र योद्धा तने हैं॥

सिद्धार्थ के सहित उधर से, नारद चल कर आये हैं।
चेहरा देख उदास राम का, मुनि ने वचन सुनाये हैं॥

दोहा—चेहरा खिलता था कभी, देखत हर्ष अपार।
किन्तु आज किस सोच में, बैठे गर्दन डार॥
पूर्ण पुण्य पूरा किया मिला सभी सुख साज।
सकल सिद्ध कार्य हुए, नृप तुम्हारे आज॥

सिद्ध हुआ सब काम आपका, सुयश चहुँ दिशा छाया है
पर कृपणता ने आज आपके, दिल पर डेरा लाया है।
अतुल खुशी का आज दिवस, मनवांछित तुमने पाया है।
किन्तु यहाँ पर उत्सव का कोई चिन्ह नजर नहीं आया है॥

दोहा—जगह खुशी की आपको हो रहा आर्तध्यान।
खड़े हुये सब दीखते चेहरे के बयसाम॥
कुछ तोपें आज खुशी की तुमने हे राजन् चलवानी थी।
और उत्सव की सब सामग्री, एकत्र यहाँ करवानी थी॥
अयधपुरी में आज अद्वितीय सुन्दरता दिखलानी थी।
राम राम पुण्य खुल्ले दिल से देकर नौबत बजवानी थी॥

दोहा - राम लखन समझे मुनि ताने रहा लगाय
इसको हांसी सूझती देश हमारा जाय॥
वीर परस्पर सज रहे करने को संग्राम।
नारद जी का इस तरह बोल उठे श्रीराम॥

दोहा—आज मुनि क्यों घाव पर, रहे नमक बुरकाय।
रघुवंश का आज सब जो था गौरव जाय॥
गाना—आज पराक्रम थक गये हैं, सब तरह आते नजर।
शत्रुओं का भेद अब तक भी, न कुछ पाया मगर॥

सुग्रीव मार्मडल पे क्या जादू अरि ने है किया।
अस्त्र शस्त्रों ने भी हमको, आज यम धोखा दिया॥
जीते थके मैदान थे शत्रु कभी स्वाई नहीं।
पर आज तो लड़कों के आगे पार बस पाई नहीं॥

दोहा— जैसी जिसकी नीत हो वैसो होय मुराद।
जैसे हों माता पिता, वैसी हो औलाद॥

सीता को तुमने दुख दिये, यह उसका ही फल पाया है।
उस महा सती के लालों ने तुमको हैराम बनाया है॥
लवणांकुश दोनों भाइ सीता के पुत्र कहाते हैं।
अपनी माता का दूध लजाना रघुवंशी नहीं चाहते हैं॥
दयाधिष्ठित शस्त्र सभी निज वंश पे कभी नहीं चलते हैं।
समय तुरी के भाग आप कर साथ घुमा कर मलते हैं॥
आदिनाथ के पुत्र भरत बाहुबल का जब युद्ध हुआ।
न चला चक्र बाहुबल प क्योंकि, नहीं वंश विरुद्ध हुआ॥
बस पुत्र सपुत्र सिंहनी का ही माथा सिंहा के सहता है।
गंध हस्ती का ही बच्चा हाथी के सम्मुख अड़ता है॥

दोहा—नारद का यह वचन सुन हर्ष न हृदय समाय।
मूर्च्छा खा धरणी गिर लीना तुरत उपाय॥

उस खुशी का कैसे दर्शायें यहां लिखने में नहीं आता है।
शक्ति न लेखनी जिह्वा की सपत्र वेग ही लगता है॥
शस्त्र सब राम ने फेंक दिये सब अंगी वस्त्र उतारे हैं।
झट हस्ती रथ विमान सुतों का साथे लिए श्रृंगारे हैं॥

दोहा—राम लखन दोनों चले और हजारों साथ।
लवण उधर से चल दिये मदनांकुश संग भ्रात।

मामंडल सुग्रीव उधर, लवणांकुश के संग आये हैं।
राम लखन के चरणों में, दोनों ने शीश निवाये हैं॥
रामानुज ने पकड़ पुत्र, दोनों निज हृदय लगाये हैं।
और प्रेम के आँसू उसी समय, सबके नेत्रों में आये हैं॥

दोहा—देखा जब यह सिया ने मिट गया सब संताप।
बैठी पुरष विमान में, पुण्डरीकपुर गई आप॥

श्री रामचन्द्र ने आकर एक, भारी दरबार लगाया है।
नर नारी क्या बच्चे बूढ़े जन समूह देखने आया है॥
लवणांकुश को नर नारी, बच्चे बूढ़े क्या सभी निहार रहे।
सीता को दोष दिया जिस जिसने, निज आत्मा धिक्कार रहे।
राजकुमारों को राजे सब झुक झुक विनय बनाते हैं।
सम्बन्धी सारे आ करके, अति प्रेम से ताज लगाते हैं॥
दादी चाची सब प्रेम भाव से दोनों का शीश चूमती हैं।
छोटी माताएँ प्रेम भाव से चारों ओर घूमती हैं॥
देख देख कर लवणांकुश को सब आश्चर्य पाते हैं।
भाट चारण स्तुति करने वाले, कब कब मंगल गाते हैं॥
पुत्र जैसी चीज नहीं संसार में कोई प्यारी है।
शोभन लक्षण बत्तीस अंग पर, रूप कला कुछ न्यारी है॥
पुत्र नहीं जिनके घर में, वहाँ सदा अन्धेरा रहता है।
मेरु समान भी धन होकर सुख बिन क्या को दहता है।
जय जय शब्दों की ध्वनि सहित जब नगरी में प्रवेश किया।
कैदी जन छोड़ दिये नृप ने सब दान खूब दिल खोल दिया।
बाजार दो तरफी छज्जों पर, माताएँ जहाँ अपार खड़ी।
स्वागत करने के लिये व्योम में मेघ घटा सुखकार चढ़ी॥

देख देख उस उत्सव को इन्द्र भी लज्जा लाता है।
सोच रहा इसका उत्सव यह मेरी शान घटाता है।

दोहा— इसी तरह सदर्प सब, पहुँच गये दरबार।
भूम भाम चहुँ ओर से आ पहुँचे नर नार।।

अवधपुरी में आज प्रेम की, वारिस अद्भुत बरस रही।
भावि सभी विदा होकर कर मन मन अपने तरस रही।।
भ्रातृ लखन विभीषण और, सुग्रीव आदि सब आ करके।
श्री रामचन्द्र का लगे कथन यों मग्न वचन समझा करके।

दोहा आप तक सीता ने सहे, बन में कष्ट अपार।
वर्तमान अब हाल पर, स्वामी करें विचार।।

किसी तरह पक्षियों अयडों को, दिन रात बैठकर सेती है।
फिर इधर उधर से घूम घाम कर चोगा लाकर देती है।।
हिरणी अपने बच्चों को नित्य प्रति देख देख खुश होती है।
देख विरह को खाना पीना त्याग रात दिन रोती है।।
निर्बुद्धि सुत पर से भी तो माता का प्रेम न जाता है।
पागल पुत्र को भी इसे बिन खाना बसे न भाता है।।

दोहा–सीता के जैसे लाल न दुनिया में कोई और।
जनक सुता अपना समय काटेगी किस ठौर।।

प्रथम मान रखा नौ जिसने गर्भवास में पाले हैं।
फिर निराधार होने पर भी कैसे गुण इनमें डाले हैं।।
अब सोचो आप जरा दिल में कैसे वह समय बितावेगी।
पुत्र विरहिनी मात सिया तज खान पान मुर्झायेगी।।
अब उनको भी हे नाथ, तसल्ली देकर ले आना चाहिये।
या पुत्र यहाँ भेजें उनके, या आप यहाँ जाना चाहिये।।

दोहा राम—हर तरह से आपका, सब है ठीक विचार।
पूर्ण आशा अब उसका, हुआ न ठीक विचार॥

वही समस्या कठिन सिया और कुल की शान घटावेगी।
पहिले से ज्यादा इसमें अब आपत्ति फिर कुछ आवेगी॥
क्या दोष जानकर छोड़ी थी अब क्या गुण करके लाए हैं।
इसका उपाय भी बतलावो, जो विनती करने आए हैं॥

दोहा—इस दुनिया के बीच में भांत भांत के लोग।
क्या असाध्य अपने लिये, लगा है भ्रम के रोग॥

हीरे की जौहरी परख करे मूर्ख ने रोड़ बताना है।
गुणियों की सेवा करे गुणी दुष्टों न सुख सताना है॥
एक रंग दुनिया सारी न हुई न होने पावेगी।
नेकों के दिल में नेकी और बद के दिल बदी समावेगी॥
जिसकी जैसी है प्रकृति आयु पर्यन्त न जाएगी।
अमृत से सींचो नीम चाहे अन्तिम कडुआई आएगी॥
दुनिया का दौर दुरंगा है सर्वज्ञदेव न मिटा सके।
और एक अभव्य आत्मा को भी करके भव्य न दिखा सके॥

दोहा—जो कुछ भी तुमने कहा है सब ठीक जवाब।
किन्तु दुनियादार को रखनी चाहिये आब॥

जिसने निज गौरव भुला दिया, उसकी दुनिया में आब नहीं।
जब आब नहीं शुभ ध्यान कहां फिर रहे किसी पर दाब नहीं॥
निज गौरव का रखकर ही तो उपकार कोइ कर सकता है।
फिर कष्ट हजारों आ जायें दुनिया से नहीं डर सकता है॥
व्यवहार शुद्ध अपना रखना यह सबके लिये जरूरी है।
व्यवहार बिना दुःख देने वाली होती सदा गरूरी है॥

बिना दाव के अांस म्यानी वीर पुरुष नहीं बाहते हैं।
क्षत्रिय कुल पर न दाग लगायें खेल जान पर जाते हैं॥

दोहा—हम तुम सबको ज्ञात है सीता में नहीं दोष।
औरों पर भी न हमें करना चाहिए रोष॥

शंख सभी मेघों का गुण अवगुण देखा जाता है।
मानुषिक का ज्ञान सभी रखा देखन में आता है॥
रखते हैं सभी कसौटी पर, निर्मल सोने का शंख से।
भैंसे की परीक्षा करते पहिले चाल लगा कर डंडा से॥
जवाहरात क तावन का हाथी एक कसौटी होती है।
धर्म की परीक्षा करन का भी होती कोई कसौटी है॥

सीता के पतिव्रत नियमों में पुष्ट मन समुद्र का शस्य है।
व्यवहार में है सो ठीक क्यों कि वह रही अरण्य लंका है॥
परीक्षा देकर ही अपना गौरव सीता रख सकती है।
वरना गयी है जान जगत में वह नहीं मर सकती है॥
महल मात स्वीकार कर ना फिरसे पूछा जाकर के।
निज पर यदि उन्हें भरोसा है तो परीक्षा दयें आकर के॥
निश्चय है सुमको सीता इस बात में न घबरायगी।
और खुशी खुशी परीक्षा दन कारण यहां आयेगी॥

दोहा—आज्ञा पा श्री राम की कपिपति बैठ विमान॥
पुण्डरिकपुर का गमन किया धर हृदय शुभ ध्यान॥

इधर राम ने पास बाग के एक मैदान बनाया है।
इधर बालन मण्डप सजवाकर सामान सभी रखवाया है॥
वहां जानकि गुफा था जाकर के, सुग्रीव ने शीश झुकाया है।
फिर विनय सहित चलि समका में सब वचन सुनाया है॥

दोहा—माता तुम को धन्य है धन्य हमारो वीर।
सती सती त्रिखण्ड में, हो रही गूंज अपार॥

हो रही गूंज अपार, खास तुम ने ऐसे जाये हैं।
देख तेज भी राम लखन, दोनों ने भय लाये हैं॥
नाम किया तेरा प्रसिद्ध, अति योद्धा कहलाये हैं।
मम निवेदन आप से कुछ, हम करने को आये हैं॥

दौड़—अवध में दर्श दिखाओ पावन सब देश बनाओ।
खुशी सब का दिल होवे—
पुरी अयोध्या मात तुम्हारे बिन बिलकुल न सोहे॥

दोहा—जो कुछ मैं तुम का कहूँ, सो यदि हो स्वीकार।
तो फिर मुझ को भी, नहीं जाने में इन्कार॥

अग्नि का कुंड बना देवें, सब खैर काष्ठ गिरवा कर के।
कोई शेष न बाकी रहे अवध, सारी वहां बैठे आकर के॥
रघुकुल दिनेश फिर कहें मुझे, सबके सन्मुख मुंजला करके।
यदि सच्ची हो तो कूद अग्नि में,दो निज धर्म दिखा करके॥

दोहा—बातें सब होंगी यहां विनती करो स्वीकार।
अवधपुरी क्या जगत को आपका है आधार॥

दोहा—वही अवध वही महल, वही स्वजन वही नाम।
जनक सुता मैं हूँ वही वही लखन वही राम॥

लवणांकुश जाकर मिले पिता से सुशो मेरे मन भारी है।
अब अवध पुरी में ऐसे जाऊं, मुझे साफ इन्कारी है॥
एक मेरे कारण रवि वंश शुद्ध कुल को धब्बा आता है।
इसलिये किसी को दुःख देना, यह मुझको भी नहीं भाता है॥

जैसा भी मुझ पर समय पड़ा, सहलिया और कुछ सहलूंगी।
कहना सुनना क्या उसका है अपने कर्मों को फल लूंगी॥
कौन किसी के पास कष्ट में, आया और कब आता है।
घोर अंधेरे में तन का, साया भी दूर पलाता है॥

दोहा—माता अब यह ख्याल, सब मन से करदो दूर।
भेजे आप श्री राम के, हम चरणों की धूर॥

यह समय सभी अब बीत गया, क्यों दिल में इतनी डरती हो।
और जली धूप की छाव का भी, विश्वास आप नहीं करती हो॥
प्रबल सिंह हैं पुत्र तुम्हारे, सब दुनिया डरती है।
यह आत्म शक्ति है जगदम्बा, काम तुम्हारी करती है॥

दोहा—जिस कारण मुझ आरोपण कर दोष।
जब तक यह न दूर हो, मुझ नहीं संतोष॥

फिर अवधपुरी में शुद्ध हुए, बिन माई मैं नहीं जाऊंगी।
सब पूर्व जन्म मेरे न दोष किसी का लाऊंगी॥
वनवास दिया है स्वामी ने सहर्ष यही स्वीकार मुझे।
न दिल है न कुछ इच्छा न सुख, जान का मैं कहूं तुझे॥

दोहा—परीक्षा कारण हो सही चला आप उस धाम।
अग्नि कुंड जैसा कहा रचवा देवें राम॥

दोहा—यह तो मैं भी कह चुकी सुख न स्वयं उपाय।
मेरी इच्छा अनुकूल जो मुझे यही स्वीकार॥
कुंड तक क्या पांच मैं कर सभी स्वीकार।
निश्चय मुझ का धर्म पर, यही मेरा सुखकार॥

दोहा शुभ्री सहित विमान में बैठ गई सिया मार।
माहेन्द्रोदय बाग में आकर दई उतार॥

इसी समय आ अवसर ने, चरणों में शीश निमाया है।
और वीर 'भामण्डल' आदि सब राजों ने दर्शन पाया है॥
अब नर नारी बच्चे बच्चे सब तर्फ बाग की धाये हैं।
एक से एक ने आगे हो, सीता को शीश झुकाये हैं॥

दोहा—सहज इधारन की करी सब ने विनय अपार।
लेकिन सीता ने करी, एक नहीं स्वीकार॥

चौपाई—पास सियाके रघुपति आया अलक झुकाने शीश निमाय।
देखत नयन मगन भर आये, रामचन्द्र ने वचन सुनाये॥

दोहा प्रिये रानी तैंने सहे, आज तलक दुःख भूर।
कारण इस में मैं बना तेरा नहीं कसूर॥

दुःख सहे उधर तैंने बन में, तो मैं ने क्या सुख पाया है।
मेरी जिह्वा नहीं कह सकती, जितना दुःख उठाया है॥
अब तेरी इच्छा साहत और एक कष्ट मैं देना चाहता हूँ।
महा खेद आज इस बात को कहते जरा न लज्जा लाता हूँ॥

दोहा—अग्नि कुण्ड यह आप की मर्जी के अनुसार।
फिर भी तुम अपना सिया करलो निजी विचार॥

दोहा—प्राण पति प्रीतम मेरे, जीवन प्राण आधार।
जो कुछ भी मैंने कहा सहर्ष मुझे स्वीकार।

आप तो रक्षक हैं सब के किस्मत ही बुरी हमारी थी।
यदि पहिले कुछ परिक्षे होता, तो क्या मुझ को इन्कारी थी॥
स्वर्ण भी निर्मल करने को अग्नि में तपाया जाता है।
फिर आत्मा मल हरे बिना कहो कौन मोक्ष पद पाता है॥
इसी तरह से आज मुझे, दुनिया अजमाया चाहती है।
लो अग्नि कुण्ड में खुशी खुशी से सीता छाल लगाती है॥

इस में विघ्न डालने वाला भी गद्दार कहलायेगा।
उपकारी उस को मानूंगी, जो मुझ को साहस दिखायेगा॥

दोहा—चन्दन काष्ट गिराय कर अग्नि दइ लगाय।
जली हुताशन इस तरह, लपट कही न जाय॥

देख तेज उस अग्नि का, जनता का हृदय कांप गया।
सुग्रीव लक्ष्मण आदि सब के मानों हृदय पर सांप गया॥
सब कहते हैं हो गई परीक्षा आप में कोई कसर नहीं।
मैंसार में दाग लगाने वाला तुम को कोई बशर नहीं॥

दोहा—सागर टर मेरु टरे धरती भी टर जाय।
मैं बिल्कुल टरनी नहीं, पड़ू अग्नि के मांय॥

बिना हाड़ की इस जिह्वा को हिलते लगती देर नहीं।
जा समय आनके मिला मुझ, अनमोल यह मिलना फेर नहीं॥
एक बार अग्नि में कूदूंगी फिर बाद में देखा जायगा।
पहिले मैं क्या कह सकती हूँ कि क्या मेरे मन भावेगा॥

दोहा—सज्जन गणों सुन लीजिये जरा लगा कर ध्यान।
चार एक घटना हुई उसी समय में आन॥

वैताढ्य गिरी उत्तर की श्रेणी हरि विक्रम नृप रहता था।
जयभूषण था सुत पुण्यवान जो पर नारी दुःख सहता था॥
किरण मंडला नार पासमा उसका अधिक सताती थी।
हम शिखर पति का नाम का, सुत से मिलती आती थी॥

दोहा—इरक मुश्क खांसी खुरक छिपे नहीं सुन मान।
कभी छिपाए न छिपे प्रगट होय अपमान॥

जयभूषण को लगा पता मेरी नारी व्यभिचारिण है।
राज्य से बाहिर निकला था उस कृत्य का इस कारण है॥

होकर दुखित यह रानी मरी, आयु का लेश तमाम हुआ।
यह राक्षसी व्यन्तरणी और विद्युदंष्ट्रा नाम हुआ॥

दोहा—जय भूषण तज दिया बुरा धाम संसार।
संयम व्रत का धार कर, तप जप किया अपार॥

अवधपुरी के बाग में आकर, ध्यान मुनि ने लाया था।
वहाँ उसी राक्षसी ने आकर मुनिराज को खूब सताया था॥
सम दम खम को धार मुनि निश्चल रहे ध्यान लगा करके।
केवल ज्ञान हुआ जिन को, घनघाती कर्म खपा करके॥

दोहा—आए उत्सव करन को स्वर्गपुरी से देव।
इन्द्रादिक करने लगे समोसरण स्वयमेव॥

इधर सिया तैयार खड़ी थी अग्निकुण्ड में पड़ने को।
एक देव भेद तब इन्द्र को, यों लगा वेनती करने को॥
अग्निकुण्ड में पड़ने को, स्वामी सीता तैयार खड़ी।
निर्दोष सती पर आज विपत्ति देखो आन अपार पड़ी॥

दोहा—सुनते ही राजेन्द्र ने लाया निज उपयोग।
उसी समय कहने लगे टालन को यह शोक॥

दोहा—अनीकपति जाओ अभी जरा न लाओ बार।
कष्ट सती पर आ पड़ा जाओ अभी निवार॥

दोहा—आज्ञा पा सुर कुञ्जर के, झटपट पहुँचा पास।
शीलवान के होत हैं देवपति भी दास॥
पढ़ा सती ने उस समय परमेष्ठी नमोकार।
शरणा ले अरिहन्त का बोली वचन उचार॥
वीतराग भगवान का सब जगत का ज्ञान।
केवल ज्ञानी साधु गुरु, तुम भी देना ध्यान॥

रजनी साक्षी चन्द्रमा, तारा मंडल साथ।
नित्य प्रति आवे हो, यहां तुम भी हे दिवानाथ ॥
लोकपाल लेते खबर, चारों समय समान।
जितने जग में पुरुष हैं, टाल एक श्री राम ॥

सिवा राम के अन्य पुरुष, मन वच काया कर चाहा हो।
स्वप्न मात्र भी अशुभ ध्यान, मेरा विषयों पर आया हो ॥
विषय वासना वर्धक का कोई शब्द जिह्वा पर लाई हूँ।
क्या आज से हाथ संभाली, तन क्या जब से लाई हूँ ॥

दोहा—मेरे पतिव्रत धर्म में, साक्षी हो सब आप।
यदि मुझे कोइ लगा, विषय सम्बन्धी पाप ॥
पक्षपात मेरा कोई, करना नहीं लगार।
दोष यदि मेरा कोई, तो बस भस्म होऊँ क्षार ॥

नहीं तो अग्निकुण्ड आज एक जलाशय शुभ बन जावे।
यदि अंश मात्र भी दोष कोई तो तन मेरा सब जल जावे ॥
ध्यान है द्वादश व्रतों पर अब है आगे को भरती हूँ।
स्तुति एक पढ़ते ही भगवन् अग्निकुण्ड में पड़ती हूँ ॥

तर्ज—मरता मरता रे मातनी आजादी गाव।
इस हवन कुण्ड पे रे सिया परमेष्ठी गुण गावे ॥ टेक ॥
पंच परमेष्ठी सिया और कुछ मुझ को नहीं भावे ॥
अरिहन्त देव को रे, सिया हृदय से सिर नावे ॥ इस ॥ १ ॥
ज्वाला अपना तेज प्रभु, यह कैसी दिखलावे ॥
हो आपकी कृपा रे प्रभु यह पानी बन जावे ॥ इस ॥ २ ॥
प्रलय काल की भीति आकर के, हम का घबरावें ॥
सिद्ध प्रभु को रे जपन से, सब विलीन पावें ॥ इस ॥ ३ ॥

आचार्य श्री की शिक्षा से, कर्म वीर कहलायें ॥
सर्वस्व लगा कर रे शील की महिमा प्रगटावें ॥ इस ॥३॥
उपाध्याय के ज्ञान की महिमा, आत्म शक्ति पावें ॥
मरते मरते र शील सत्य की, महिमा गावें ॥ इस ॥ ४ ॥
तारण तरण जहाज मेरे निर्ग्रन्थ मुनि कहलावें ॥
"शुक्ल" ध्यान से रे सदा, परमानन्द पद पावें ॥ इस ॥५॥
कितनी शक्ति शील धर्म में, आज प्रगट बतलावें ॥
इतिहास भविष्य में रे, सभी को मार्ग दर्शावें ॥ इस ॥ ७ ॥

दोहा—अग्निकुण्ड में सती ने मारी सहसा छाल।
ज्वाला का सुर ने किया, निर्मल जल तत्काल ॥

सिंहासन की रचना सुरने अद्भुत एक निकुर्वी है।
आस पास जल से चहुँ तर्फा, भरी हुई सब उर्वी है ॥
पंकज ऊपर हंसनी ज्यों ऐसे बैठी जनक दुलारी है।
देख दृश्य यह जय जय की, जनता ने ध्वनि उचारी है ॥

दोहा—शील रत्न की देख कर महिमा सकल जहान।
लगे परस्पर एक को, एक ऐसे समझान ॥

दोहा—शील रत्न जैसी नहीं शक्ति है कोई और।
कर्म काटने के लिये, शील शस्त्र सिर मौर ॥

शीलवान पर तन्त्र मन्त्र यन्त्र कोई नहीं चल सकता है।
आपत्ति जो कोई पड़े आन क्षण में सबको टल सकता है ॥
आज सामने अग्नि का जिसने पानी कर डाया है।
जनक सुता ने जनता का संशय सब दूर निवारा है ॥
इस ही आत्मशक्ति ने त्रिखण्डी रावण को मारा था।
शील रत्न की ताकत ने अरमाण का कष्ट निवारा था ॥

और हनुमान ने लंका का, आशाली कोट बिदारा था।
अक्षकुमार रावण का बेटा, धरनी बीच पछाड़ा था॥
फिर देखो दशरथ घर के, मस्तक का ताज गिराया था।
इसी सिया की शक्ति से, यह जान बचाकर आया था॥
इस महासती को दोष लगा कर, घर के बाहर निकाला था।
उस समय बताओ किसने यहां, आकर के दिया सहारा था॥
शीलवान का शील सदा, रक्षक भगवान् बतलाते हैं।
आपत्ति सारी दूर भगे शास्त्र सभी दर्शाते हैं॥

दोहा—पतिव्रत के धारी हुये, श्यान अमोलक लाल।
जिनकी आज बराबरी, कौन करे भूपाल॥

राम लखन भी जिनके सम्मुख खड़े करके पछताते थे।
यह इसी सती की शक्ति थी जिन रण में तेज दिखाते थे॥
जनक पिता का धन्य मात पैदा जिसने जाई है।
नगर धन्य कुलवंश धन्य और धन्य जिसने परणाई है॥
धन्य धन्य ये महासती आकाश में देव पुकार रहे।
जिन जिन ने दोष लगाया था यह निज आत्म धिक्कार रहे॥
सब क्षमा मांगते आकर के, चरणों में शीश निमाते हैं।
कह देकर के उपदेश शील पालन का नियम दिखाते हैं॥

दोहा—भूचर खेचर भूपति, करें नमो प्रणाम।
धन्य सती के भाग के, यों भाखें श्री राम॥

दोहा—वीतराग की कृपा से सिद्ध हुआ सब काज।
आज सभी के सामने खुल गया सबही राज॥

यह मुझी पर सब भारी था उतरा कलंक सर शिर का।
सूर्यवंश की लाज रही निरपम गौरव मेरे घर का॥

बाकी जो तुमको दुःख दिये, मैं क्षमा सभी की चाहता हूँ।
शीतल स्वभाव चन्दन तेरा, हर समय देख यह पाता हूँ॥

दोहा—ऐसी बातें मत कहो, जगत मुझको दोष।
मेरा कुछ भी है नहीं जरा किसी पर रोष॥

यह सभी आपकी कृपा है, जो कष्ट सामने दूर हुआ।
और आपके नाम के साथ साथ, मेरा भी कुछ मशहूर हुआ॥
कृपा आपको मे स्वामी, मेरा अपवाद मिटाया है।
बचा अग्नि से सिंहासन पर, तुमने आज बिठाया है॥
भूमि रज की क्या शक्ति है भानु की प्रभा को मन्द करे।
उपकार सभी यह वायु का, जो चढ़ी व्योम आनन्द करे॥
जब आप सर्प के मस्तक पर, मेंढक भी नाच दिखाता है।
स्वभाव सभी यह मंत्र का, जो आह न उसे मिटाता है॥
बसन्त ऋतु में कोयल की, क्या मीठी वाणी होती है।
यह गुण आम्र कलिका में है जो कंठ के मल को खोती है॥

दोहा—पारस के प्रसंग से, लोहा भी सोना होय।
क्षीर नीर के मेल को, दूध कहे सब कोय॥

महापुरुष की संगत से पापी जन भी तर जाते हैं।
जा लगे रहें शुभ कर्मों में वह नाम अमर कर जाते हैं॥
प्रत्येक जीव सब कर्मों के, फल को दुनियाँ में पाते हैं।
बिन भोगे छूट नहीं सकते, सकल देव बतलाते हैं॥

दोहा—मेरे कारण जो सहे आप ने कष्ट अपार।
क्षमा आप से हे प्रभु मांगू बारम्बार॥

दशरथ नृप महाराज सदा शान्ति करते ही आये हैं।
हित अन्य के आपत्ति निज सिर पे धरते ही आये हैं॥

सुग्रीव विभीषण हनुमान, आदि सब की आभारी हूँ।
उपकार एक लक्ष्मण जी का देने से मैं लाचारी हूँ॥
सभी अवध के नर नारी अब क्षमा मुझे बतलायेंगे।
ऐसा वर दाम सभी देकर, मुझको कृतार्थ बनायेंगे॥
दोहा—हृदय से सिया कर रही, सब से क्षमा की आस।
जनता सीता से करे माफी की दरखास॥
सुरमें की मानिन्द सीता जी, सब के नयनों में समा गई।
अरिहन्त देव की सम हम सब, पावों हृदय में जमा गई॥
मन वच काया से नर नारी झुक झुक चरणों में पड़ते हैं।
श्री राम लखन सुग्रीवादिक, इस तरह प्रार्थना करते हैं॥
दोहा—हाथी रथ विमान क्या, हैं सब ही तैय्यार।
अवधपुरी में चलन का जल्दी करो विचार॥
दग्ध हृदयों को दे सीता जल, कर के शान्त बनाओ तुम।
अवध बाग पतझड़ सब को फिर से फल फूल लगाओ तुम॥
पुण्य कली सब मुर्झाई हृदय के कमल खिलाओ तुम।
सुनसान पड़े इन महलों में, कर के उत्सव दिखलाओ तुम॥
दोहा—काम धीन कर के सभी, देख लिया संसार।
मृगतृष्णावत् जीव सब भागें दुःख अपार॥

सीता का वैराग्य

गाना

तर्ज—(पाप का परिणाम —)

अनुभव से मैं संसार की सब मित्रताई देखली।
प्यारा था जिन से अधिक उनकी भलाई देखली॥१॥
वेदर्दी से छोड़ी मुझे जन शून्य इस बन खंड में।
प्रेम दर्पण देखकर प्रीति सफाई देखली॥२॥

सच है दुर्भाग्य से संसार सब सुख मोड़ले ।
कम सम जो देखनी थी, सब बुराई देखली ॥३॥
दुःख दिया अत्युग्र मुझे, देखो हृदय को चीर कर ।
मन के दर्पण से सभी, की भावनाएं देख ली ॥४॥
जान कर ऐसा तमाशा, दुनिया में तो सुख है नहीं ।
पूर्व कर्मों ने आपत्ति, जो दिखाई देख ली ॥५॥
भूल कर के भी किसी को, अपना समझना पाप है ।
ठोकरें खा खाके बस, सब की रसाई देख ली ॥६॥
छोड़ कर के भ्रम सारा 'शुक्ल' अपना ख्याल कर ।
सवाय आपी के सिवा नकली पढ़ाई देख ली ॥७॥

दोहा सीता—नाथ भाग मेरा हुआ, ध्यान और से और ।
जिस आत्म अम्बर खला, एक ठग दूजा चोर ॥

यह शत्रु साथ अनादि से, मुझ को भरमाते आते हैं ।
कभी नर्क गति में ले जाकर, मुझ को अत्यन्त सताते हैं ॥
तिर्यञ्च गति के दुःख स्वामी, नहीं जिह्वा से कहे जाते हैं ।
एक गर्भ दूजा मीठा नहीं तरस किसी पर आते हैं ॥

दोहा सीता—मुश्किल से यदि मनुष्य का जन्म जीव ले धार,
राग द्वेष फिर भी इसे लें निज फंदे में डार ॥

मोह कर्म आदि के फन्दे में आतम को खूब फंसाते हैं,
फिर निकल नहीं सकता दिल से यह ऐसा असर जमाते हैं ॥
दुनिया की रंग बिरंगी चीजों पर इस का भरमाते हैं ।
दृष्टान्त न जिस का मिला 'शुक्ल' यह ऐसे मस्त बनाते हैं ॥
कोई मिष्ठ हास मस्त कोई मास मस्त कोई ऐश्वर्य के पाने में ।
कोई रंग महल में मस्त फिरे कोई मस्त है विवाह कराने में

कोई क्रोध मस्त कोई मान मस्त, कोई मस्त है दगा कमाने में।
कोई नाच रंग में मस्त फिरे, कोई हार शृङ्गार बनाने में॥
कोई आभूषण का पहिन मस्त, कोई मस्तक तिलक लगाने में।
कोई कृपणता में मस्त कोई आलस से गप्पा लगाने में॥
अन्याय पन्थ पर सदा मस्त, कोई अपना ठाठ बनाने में।
कोई दुर्व्यसनों में परम मस्त, कोई मांस गन्दगी खाने में॥
मृषा लफन में मस्त कोई वेश्या गन्दी पे जाने में।
कोई परनारी पर पुरुष मस्त कोई रंगकर वस्त्र सजाने में॥
मदिरा पीकर के मस्त कोई, औरों को दोष लगाने में।
कोई भगवा वस्त्र पहिन मस्त, कोई मस्त है जटा रखाने में॥
कोई नगन मस्त कोई मग्न मस्त, कोई मस्त भाग के खाने में।
कोई दुःख देन में मस्त किसी की हस्ती सफा मिटाने में॥
कोई अद्भुत रूप को देख मस्त रहता है उसी ठिकाने में।
मैं जिन वाणी पर मस्त हुई, अरि कर्म का वंश मिटाने में॥
वस राग द्वेष के वशीभूत यह जीव मस्त हो जाता है।
दुःख भोग भोग कर मस्ती में अनमोल रत्न खो जाता है॥

दोहा सीता—सुरपुर की इच्छा कभी होती इसे अपार।
बाजीगर के खेल ज्यों, यह भी सदा असार॥

आयु के पूर्ण होन पर, सुरपुर भी तजना पड़ता है
यह वृथा जीव मरी मरी कर, मान में यों ही अकड़ता है॥
भव भ्रमण अनादि अनन्त पार, गति चौरासी का चक्कर है।
सम्यक् ज्ञान दरश चारित्र बिन खाता दुःख टक्कर है॥

दोहा सीता—सुर नर क्या अरिहन्त के, तन नहीं जाय सार।
सदा दुःख संसार में कुछ नहीं निकस सार॥

संयोग मूल दुःख जीवों का सर्वज्ञ देव बतलाते हैं।
अज्ञान अन्ध में पड़े हुए, न स्वर्ग अपवर्ग पाते हैं॥
राग द्वेष के फंदे में, निश्चय अब मैं नहीं आऊँगी।
छोड़ दिया संयोग अधम के, महलों में नहीं जाऊँगी॥

दोहा राम—शब्द विरह के हे प्रिया, मुख से कहो न मूल।
दुखित हृदय पर लग रहे, जैसे तीक्ष्ण शूल॥

गाना—ऐसी बातें जबां पर, न लाओ सिया।
मेरे दिल को दुखी न बनाओ सिया॥

तेरी शिकायत क्या करूं, कोई नजर आती नहीं।
तू किसी का दिल दुखाना भी, जरा चाहती नहीं॥
चल कर महलों की शाम बढ़ाओ सिया।
शेर के पंजे में पड़ कर भी धर्म तोड़ा नहीं॥
प्रेम मेरा उस समय पर भी, जरा छोड़ा नहीं।
अब भी मुझ से न दिल को चुराओ सिया॥
मेरी खातिर भागती दुःख साथ, बन बन में फिरी।
अब बनाया सख्त दिल किस, साथ सागर में गिरी॥
जख्मी दिल पर न नमक लगाओ सिया।
मैंने तजा था तुमको क्या दिल फट गया इस बात से॥
और ही तुमको था कोई रंज मेरी जात से।
अपने मन का तो भाव बताओ सिया॥
इस हुताशन कुण्ड में तुमने लगाई छाल है।
महल में चलने से फिर क्यों आपका इन्कार है॥
पिछली बातों को दिल से भुलाओ सिया।
नीर अग्नि का किया तुम में नहीं कोई असर॥

है धर्म अवतार तू प्रत्यक्ष में आया नजर।
मुझसे हृदय सभी के लिखाओ सिया ॥
दोहा सीता—पहिले ही मैं दे चुकी, मन का उत्तर तमाम।
दुनिया से रखा नहीं मैंने कुछ भी काम ॥
राम—भव रंग में भंग डाल दिया, मैं बार बार समझाता हूँ।
एक बार अवध के महलों में, ले जाना तुमको चाहता हूँ ॥
सीता—आगे पीछे भंग रंग में अवश्यमेव ही पड़ता है।
यह महल नहीं बन्दी खाने में वृथा मुझे जकड़ना है ॥
राम—प्रिये त्याग अवस्था में आयु पर्यन्त कोई विश्राम नहीं।
रूखी वृत्ति ऐसी है जिस में, कोई भी आराम नहीं ॥
सीता—जी हाँ यह बिल्कुल ठीक किन्तु, संयम बिन सुधरे काम नहीं
जिनको आराम की इच्छा है उनको मिलता सुख धाम नहीं।
राम—कोई रोग लगा यदि आन तुम्हें तो फिर क्या यत्न बनाओगी
दुःख दर्द मिटाने का सीता संयोग वहाँ न पाओगी
सीता—अग्नि कुण्ड से बढ़कर के वहाँ रोग कौन सा आवेगा।
यदि आया भी तो तप रूपी, अग्नि में जल जावेगा ॥
राम—जंगल में सोना धरती का नहीं गदूदी तकिया पाना है।
सर्दी गर्मी का दुःख भयानक, दिल तेरा घबराना है ॥
सीता—यह सभी आपकी कृपा ने पहिले ही मुझे सिखाया है।
बनवास में रह करके अपने तन को मैंने अजमाया है ॥
राम—दर दर की बने भिखारिन तू और मांग के टुकड़ा खाना है।
क्यों कटुक वचन सहे लोगों के नाहक निज मान घटाना है
सीता—चक्रवर्ती क्या तीर्थंकर भी भिक्षा ही करके खाते हैं।
जबतक ना मान हटे मन से तब तक ना मुक्ति पाते हैं ॥

इस सुनियां ने भयभीत हुई, यह शय्या आपकी आई है।
सर्वज्ञ आप से क्या छानी यह बैरेही की आई है॥

दोहा—श्रीराम योग्य की तर्फ हो, सु न किये सब केश।
सुलपति सुख योच कर, किया आर्या का भेष॥

गणभूषक केवल ज्ञानी ने सीता का पाठ पढ़ाया है।
समुत्थान सूत्र में कथन सभी, यहाँ लिखने में नहीं आया है॥
विधि सहित सीता माता ने चार महाव्रत धारे हैं।
अब तप संयम में लीन हुई सब आगमन दूर निवारे हैं॥
शील योग से सुव्रता, गुरुणी की विनय बजाती है।
सम दम शम को धार ज्ञान शक्ति नित्यमेव बढ़ाती है॥
बार बार श्री राम केवली, के चरणों में पड़ते हैं।
अति नम्रता से हाथ जोड़ कर विनती ऐसे करते हैं॥

दोहा—आप जगत में हे प्रभु, तारण तरन जहाज।
प्रश्न पूछना एक मैं चाहता हूँ महाराज॥

सुलभबोधी या दुर्लभबोधी, मैं किस में कहलाता हूँ।
धर्म अधर्म शरीरी का भी, निर्णय भगवन् चाहता हूँ॥
भव्य और अभव्य इन्हों में मेरी संख्या किस में है।
और चारित्र सेवा मैंने किसी और जन्म या इसमें है॥

वासुदेव प्रति वासुदेव चक्री और बलदेव।
भव्य सभी होते सदा अवतार कहें स्वयमेव॥

सुलभ बोधी हे राजन तुम भव्य जीव कहलाते हो।
जो कुछ करते नियम उसे, हृदय से पालना चाहते हो॥
मोह सभी झट पट दुनिया का, संयमव्रत को धारोगे।
तुम धर्म शरीरी इसी जन्म में राजन् मोक्ष सिधारोगे॥

दोहा—कारण से कार्य सभी, होते दुनिया मांय।
मिलना है कारण तुम्हें, मोह तजने का भाय॥

बलदेव की पदवी का राजन अवसान जिस समय आवेगा।
उस समय आप को संयम लेने का कारण मिल जायगा॥
आप के सुनकर वचन राम के हृदय में सुख भारी है।
अवसर देख विभीषण ने, फिर वच गिरा उचारी है॥

पूर्व जन्म वर्णन

दोहा—नाथ आप को धन्य है, धन्य श्री जन धर्म।
आपश्रों के आप से, मिटत अनादि भ्रम॥

कौन कर्म अनुसार हरी रावण ने जनक दुलारी थी।
फिर लक्ष्मण के हृदय मध्यी अमोघ विजय क्यों मारी थी॥
दशकन्धर का लक्ष्मणजी ने, रण भूमि में मारा था।
पूर्व का कुछ था सम्बन्ध या भया वैर अब धारा था॥
भामण्डल सुग्रीवादिक यह, लवणांकुश जो भार हैं।
किस कर्मानुसार सभी के सब श्री राम के भक्त यह भार हैं॥
तारण तरण जहाज आप सब जीवों के हितकारी हो।
कुछ व्याख्या पूर्वभव सुनने से शंका मन दूर हमारी हो॥

दोहा—ध्यान लगाकर के सुना आज सभी नर नार।
कर्म शुभाशुभ भोगते जग में जीव अपार॥

चौ०—दक्षिण भरत 'क्षेमपुर' जान 'नयदत्त' सेठ धन गुणवान।
नार सुनन्दा चतुर सुजान धनदत्त वसुदत्त सुत पुण्यधाम॥

दोहा—'याज्ञवल्क्य' एक मित्र था दोनों का प्रधान।
अब आगे जो कुछ हुआ सुना लगा कर ध्यान॥

'सागर' वणिक न्मी नगर का पूजा रखने वाला था।
'गुणधर' नामक पुत्र 'गुणवती', कन्या रूप विशाला था॥
सागरदत्त ने पुत्री की, 'धनदत्त' से करी सगाई थी।
'रत्नप्रभा' मारी को पर, लालच ने भाग लगाई थी॥

दोहा—'श्रीकान्त' एक सेठ था, बड़ा साहूकार।
रत्नप्रभा ने व्याह दई, कन्या उसके लार॥

याज्ञवल्क मित्र ने मित्रों को यह बात बताई है।
यह माग आपकी अब मित्र श्रीकान्त सेठ ने ब्याही है॥
वसुदत्त छोटे भाई का सुनकर गुस्सा आया है।
कई समय देख श्रीकान्त सेठ के मारन को चल पाया है॥

दोहा—वसुदत्त ने आय से मारा एक प्रहार।
श्रीकान्त ने शत्रु के, मारा खेंच कटार॥

विन्ध्या अटवी में हिरण, हुवे पैदा यह दोनों जाकर के।
फिर गुणवन्ती भी आयु पूरण कर हिरणी हुई आकर के॥
उस हिरणी के लिये उन मृगों न, लड़ कर प्राण गंवाये हैं।
जन्म मरण के चक्कर में कर्मों ने खूब सताये हैं॥

दोहा—धनदत्त ने आकर सुनि वसु भ्रात की सार।
भ्रात विरह में अति फिरा, होता बड़ी उदास॥

एक दिवस रजनी समय साधु जन के पास।
क्षुधा वश करने लगा भोजन की अरदास॥

महाराज मुझ है इस समय भोजन की दरकार।
यदि हो तो कुछ दीजिये थोड़ा मुझे आहार॥

अब भाई तो लीजिये है सन्तोष आहार।
हम जैसे बस आप भी देखें समय निहार॥

सन्तोष सिवा दूजा भोजन, नहीं मुनि रात को करते हैं।
दिन में न संचय करें रात, का पास न अपने धरते हैं॥
रात्रि भोजन करने वाले, मनुष्य निशाचर होते हैं।
फिर साधु होकर करें तो करनी पानी बीच डबोते हैं॥

दोहा—मनुष्य मात्र को चाहिये, रात्रि भोजन त्याग।
उनका तो कहना ही क्या जिनके दिल वैराग्य॥

दुर्लभ मिलता मनुष्य जन्म, फिर पुण्य से आयु मिलती है।
मानिन्द बर्फ के सो भी तो देखो प्रति दिवस पिघलती है॥
सन्तोष बिना तृष्णा प्राणी की कभी न मिटने वाली है।
अग्नि में जितना घी डालो उतनी ही लपट दिखाती है॥

दोहा—राजा और यम देवता पेट समुद्र घर।
भरे न भरने के कभी पावक वैश्वानर॥

महापुरुष भी पेट रूप, इस गढे को भर भर हार गये।
सब अनुभव अपना कर करके, बस अन्त में सिर का मार गये॥
अनन्त बार यह सर्व लोक का सारा पुद्गल खाया है।
किन्तु फिर भी हे भ्रात, इस जीव का सबर न आया है॥
अब भी यदि य हाल रहा तो मनुष्य जन्म सुख जायेगा।
फिर नहीं खबर कि कालान्तर क, बाद फर कब पायगा॥
जिसने निज आत्म को दमा नहीं औरों क पास दमाना है।
बस पश्चात्तापोंगे फर भाष लो समय हाथ नहीं आना है॥

दोहा—सुन वचन मुनिराज क, हुए ठीक श्रद्धान।
शुभ-शुभ आत्म का लगा, हान अनुभव ज्ञान॥

त्याग किया रात्रि भोजन और देश व्रतों का धारा है।
जा स्वर्ग सुधम में देव हुआ जहाँ संपत्ति और सुख भारा है॥

अम आगे का भव हाल सुनो, जहां पर जन्मा यह जाकर के।
अच्छी संगत के अच्छे फल, ही लग समेरा आकर के॥

दोहा—'महापुर' नामक नगर था, 'मेरुसेठ' सुजान।
सेठानी थी 'धारिणी', जन्मे उसमें आन॥

'पद्मरुचि' था नाम शान, विद्या बुद्धि का सागर था।
द्वादश व्रत धार जिसने सुमति करुणा का आगर था॥
परोपकार के लिये हमेशा, निशिदिन तत्पर रहता था।
और देख दुखित को सुखित हुवे के मयनों से जल बहता था॥

दोहा—एक दिन रस्ते में पड़ा देखा बैल अनाथ।
ऊपर सिर पर थी लकड़ी, आने वाली रात॥

अति शाचनीय थी दशा और, अज्ञानी लोग सताते थे।
रास्ते में जो था पड़ा हुआ, ऊपर से आते जाते थे॥
और हेमन्त ऋतु भी अपने यौवम में इतराई फिरती थी।
आँखों से आँसू दुखित बैल के मुख से सांसें गिरती थी॥

दोहा—पद्म रुचि ने बैल का, एक तरफ ले जाय।
ऊपर की जा वेदना, सारा दई मिटाय॥

इधर उधर जो लगा हुआ था, दूर सभी दुर्गन्ध किया।
औषध आदि खान पान और छाया का प्रबन्ध किया॥
किन्तु आयुष्य पूर्ण हुई का कहो कौन बचाने वाला है।
जैसा कर्म करे यहाँ आता, प्राणी जाने वाला है॥
मन्त्रराज का द रसरण उस बैल का कार्य सारा है।
तिर्यचगति का त्याग मनुष्य. तन रत्न आन के धारा है॥

दोहा—'छत्रछाय भूपाल के 'श्रीदत्ता' पटनार।
'वृषभध्वज' पुत्र हुआ, पुण्यवान सुकुमार॥

क्रीड़ा करता राजकुमार, एक दिवस यहाँ पर आ पहुँचा।
जहाँ बैल मरा था देख एक दुनिया कुछ मन ही मन सोचा॥
जाति स्मरण ज्ञान हुआ देखा उपयोग लगा कर के।
बनवा कर एक भवन यहाँ, शुभ रत्नालय दिया बना कर के॥

दोहा—पद्म रुचि को कुंवर ने अपने पास बुलाय।
हृदय लगा कर प्रेम से, यों बोले मुस्काय॥
परोपकारी तुम मेरे, गत भव के गुरु राज।
कृपा तुम्हारी से मिला मरतन सब सुखसाज॥

महा कष्ट त्रियच गति का, आप ने सभी हटाया है।
संसार समुद्र से तुमने ही मुझे किनारे लाया है॥
संसार में चीज नहीं कोई जिसको दे प्रत्युपकार करूं।
गुरुराज आपके चरणों में अपना यह आज निढाल धरूं॥
राजपाट क्या जिस्म तलक, यह सभी आपकी माया है।
पर्याप्त मुझको केवल आपके चरण कमल की छाया है॥

दोहा—महाराज आपका यह सभी पुण्य उदय हुआ आय।
बाकी निमित्त हैं सभी कारण दुनिया मांय॥

मैंने तो अपने हृदय की पीड़ा उस समय मिटाई थी।
निश्चय में अपनी औषधि थी व्यवहार में तुम्हें पिलाई थी॥
नमोकार मंत्र तुमने पढ़ा था जो जिनवर की वाणी है।
बस यही जीवको मनुष्य जन्म क्या मोक्ष सुखों को दानी है॥

दोहा—दोनों ने धारण किये, द्वादश व्रत सुख कार।
आयु पूर्ण कर गये, दूजे स्वर्ग मंझार॥

वैताढ्यगिरि 'नंदावत नगरी अद्भुत एक नजारा था।
और कनक प्रभा थी पटरानी नन्दीश्वर राजा प्यारा था॥

पद्मरुचि आकर जम्मा, दूसर स्वर्ग से आ कर के।
'नयनानन्द' नाम धरा सुत का, शुभ मात पिता ने चाह करके॥

दोहा— राज संपदा भोग कर, फिर संयम लिया धार।
पंचम सुर फिर जा लिया, विरस वैक्रिय धार॥

पूर्व विदेह 'क्षेमा नगरी, एक खास राजधानी थी।
'विमलवाहन' था भूप चतुर, 'पद्मावति' पटरानी थी॥
'श्रीचन्द्र' हुआ पुत्र जिन्होंने, मुख्य दया मानी थी।
सभी तरह आनन्द, श्री जिनवर की मेहरबानी थी॥

दौड़—'समाधिगुप्त' मुनि आया, परख ना शीश निमाया।
समझ जग धुन्द पसारा—
मुनि पास श्रीचन्द्र कुँवर ने तप संयम व्रत धारा॥

दोहा—ब्रह्म लोक पंचम लिया धार दूसरी काय।
दिव तज दशरथ सुत हुवे, रामचन्द्र यह आय॥

'वृषभध्वज का जीव आन सुग्रीव यही तो जन्मे हैं।
इस कारण श्री रामचन्द्र की, भक्ति इनके मन में है॥
जैसा कोई बोवे कर्म बीज उसका वैसा फल पायेंगे।
अब श्रीकान्त का हाल तुम्हें, पहिले यहाँ कुछ दर्शायेंगे॥

दोहा—'मृणालकन्द' एक नगर, 'वज्रकंठ' नरेश।
हमवती रानी भली सुन्दर सारे भेष॥

वही श्रीकान्त जन्मान्तर से इनके यहाँ राजकुमार हुआ।
'शम्भु' नाम धरा जिस का अति रूप कला सुखकार हुआ॥
राज पुरोहित 'विजय' नाम थी रत्न चूलिका, पुरोहितानी।
'वसुदत्त इनके आकर श्रीभूति' पुत्र हुआ सुखदानी॥

दोहा—'सरस्वती' नामक प्रायक्षी श्रीमूर्ति' की मार ।
गुणवती न इसके उदर, जन्म लिया शुभ धार ॥

'वेगवती' था नाम, कला सब, चौसठ की वह ज्ञाता थी ।
राग द्वेष के वशीभूत मपाचारिणी विख्याता थी ॥

कर्मों के संग मूढ़ हुआ यह जीव अतुल दुख पाता है ।
और जिसने नीचे गिरना हो, वह पर निन्दक बन जाता है ॥

दोहा—एक मुनि यहां निस्य प्रति करते थे शुभ ध्यान ।
जनता सब ऋषि का करती थी सम्मान ॥
'वेगवती' ने एक दिन निन्दा करी अपार ।
जनता से कहने लगी ऐसे गिरा उचार ॥

दोहा—ढोंगी है बिल्कुल बुरा यह साधु मक्कार ।
मैंने देखा सामने करता हुआ व्यभिचार ॥

समझ दुराचारी उसको बहुतों ने संगत छोड़ दई
कइयों ने निन्दा करी खूब कइयों ने तबियत मोड़ लई ॥
देख धर्म की हानि मुझे साधु के मन में ग्यास हुआ ।
यह दूषण दूर हटाने का प्रतिज्ञा पर अब ध्यान हुआ ॥

दोहा—यही प्रतिज्ञा आज से, करता हूँ भगवान् ।
दूषण दूर हुये बिना खोलूं गा नहीं ध्यान ॥

सूज गया मुख वेगवती का सुर ने हाल बेहाल किया ।
और समझ गये सब हम बदिन ने मुनि को झूठा आल दिया ॥
मुख से नहीं बोल निकलता है साथ सबके सब मन्द हुये ।
और लगे कोसन नर नारी, पर के भी मार रंग हुये ॥

दोहा—झूठा था मैंने दिया मुनिराज को आल ।
बोली सबके सामने आया मेरा काल ॥

फिर मुनिराज से आकर के, सबने अपराध खमाया है।
निर्मल आत्म है साधु की, सबके दिल यही समाया है।"
दोष दूर होगया समझ, मुनिराज ने धर्म ध्यान किया।
वेगवती को भी ऋषिराज नें, निर्भयता का दान दिया॥
वेगवती भी भूति सबने, देशव्रत को धारा था।
कर्म बन्धन का हेतु महा, मिथ्यात्व को दूर निवारा था॥

दोहा—शम्भु नृप मोहित हुआ, वेगवती को देख।
इसी तरह बनती सदा, खोटी विधना रेख॥

मिथ्यात्वी समझ के श्रीभूपति ने, विवाह न उसके साथ किया।
शक्ति से कामी वेगवती, और श्रीभूति का घात किया॥
दुखदाई होके राजा को, श्रीभूति निदान कर जाता है।
कुछ दिन में वेगवती को नृप ने, घर से बाहर निकाला है॥

दोहा—निराधार बाला हुई होती फिरे उदास।
आर्यिका आकर बनी, हरिकान्ता सती पास॥

पंचम देवलोक पहुंची, शुभ तप जप ध्यान लगा कर के।
महा ब्रह्मलोक तज जनक भूप के जन्मी सीता आ करके॥
सब झूठा दूषण मुनिराज को इसने धर्म लगाया था।
अपवाद यहां पर हुआ सिया का उस भव का फल पाया था॥
भव भव में रुला अपार भूप, शंभु का हाल सुनाता है।
जिसने आकर के लंकपति दशकन्धर नाम कहाता है॥

दोहा—'कुशध्वज' नामक विप्र था 'सावित्रि' तसु नार।
शम्भु इनके सुत हुआ 'प्रभास' नाम सुखकार॥
संयम लिया प्रभास ने 'विजयसिंह' मुनि पास।
महाव्रत धारण किये कर मिथ्यात्व विनास॥

दुष्कर करनी करी मुनि ने, सभी परिषह जीते हैं।
और संयम व्रत में निश्चल मन से, वर्ष बहुत से बीते हैं॥
एक 'कनकप्रभ' विद्याधर, राजा दर्शन करने आया था।
तब ऋद्धि उसकी देख प्रमाण, मुनि का मन ललचाया था॥

दोहा—तप जप का मुझको मिले, इसी तरह फल आय।
निदान कर पैदा हुआ, स्वर्ग तीसरे जाय॥

स्वर्ग तीसरा छोड़ यहां जन्मा दशकन्धर आकर के।
याज्ञवल्क तू हुआ विभीषण आये प्रथम बता कर के॥
और भी भूति था विप्र जो कि शम्भु राजा ने मारा था।
वह वशीभूत कर्मों के होकर, पहली नरक सिधाया था॥

दोहा—नर्क भोग पैदा हुआ विदह क्षेत्र में जाय।
'पुनर्वसु' खेचर बना विद्याधर सुखदाय॥
'पुण्डरीक' एक नगरी है महाविदेह मंझार।
चक्री 'त्रिभुवनानन्द' को जाने सब संसार॥

'अनंगसुन्दरी' उस चक्रवर्ती की पुत्री एक कहाती थी।
थी रूप कला में अद्वितीय सर्वत्र वेद गुण गाती थी॥
पूर्व पुण्य से रूप अति सब साधन था शोभन पाया।
धर्मरत गौरव पाली, सदाचार था मन भाया॥
उड़ विमान में बैठ एक दिन चली सैर को जाती थी।
भागी भँवर गोली सदा पुष्पों की टोली आती थी॥

दोहा—कामी विद्याधर हुये मोह कर्म वश लीन।
राज कुमारी का लिया विमान ब्याज से छीन॥
दोनों विद्याधर कुमारी को वश में करना चाहते थे।
किन्तु दुष्ट विचारों को या सफल न करने पाते थे॥

इस अन्तर में था पुनर्वसु, विद्याधर सन्मुख आ पहुँचा।
देख कष्ट में अबला कुँवारी को, अपना कर्तव्य सोचा॥

दोहा—पुनर्वसु का परस्पर, हुआ उन्हों से जंग।
किन्तु भाग निकले यहां, दोनों होकर तंग॥

राज कुमारी के लड़ाकू, विमान को कर बेकार गये।
उल्टा षड्यंत्र रच डाला, क्योंकि असफल हुए हार गये॥

पुनर्वसु ने लड़की को अपने विमान में बिठलाई है।
उसके स्थान पहुँचाने को चलने की कला दबाई है॥
पीछे से चक्रवर्ती की, दौड़ विमानों की आई।
यह देख हाल लड़की, अपनी इज्जत के कारण घबराई॥
थी निश्चय शुद्ध आत्मा पर यह दुनियाँ बड़ी दुरंगी है।
फिर षड्यंत्र कोई रच डाले फिर तो व्यवहार बिरंगी है॥
आत्मिविधान कुलवान सदा, चाहे खेल जान पर जाते हैं।
पर निश्चय और व्यवहार में, कोई धब्बा नहीं लगाते हैं॥

दोहा—सुभटों ने उसका किया, झटपट पीछा आम।
दोनों दल इस हाल को दिल में गये घबराय॥

फिर सोचा कि मैं पुनर्वसु अपरचित संग पाजाऊंगी।
और पीछे पिता पास जाकर, अपना क्या मुख दिखलाऊं गी॥
ऐसा सोच अनंगसुन्दरी उस जंगल में कूद पड़ी।
अब बिना धर्म मेरा बचाव होगा नहीं ऐसी सूझ पड़ी॥

दोहा—दुखक कूपक मिलकी कहीं संयम व्रत लिया धार।
संयम नित्य करने लगी तप जप व्रत सुख कार॥

पुनर्वसु जैसे तैसे हुआ, दाव पेच से निकल गया।
किन्तु दुखी था उपकारी हृदय जिसका हो विकल गया॥

परमार्थ करने पर भी कभी कष्ट सामने आता है।
कर्मों के कुछ क्षयोपशम से सीधा रास्ता मिल जाता है॥

दोहा—संयम व्रत धारण किया हो कर के साधार।
तप जप शुभ करनी करी, मन अपने को मार॥

तप संयम करनी निदान, से वासुदेव पद पाते हैं।
उस पूर्व बात का स्मरण कर, अब निदान करना चाहते हैं
मैं अनंग सुन्दरी को पाऊं ऐसा निदान कर डारा है।
फिर छोड़ के इस औदारिक तन का, जिस्म वैक्रिय धारा है॥

दोहा—देवलोक पुण्य से मिला सभी सुख भरपूर।
किन्तु सभी अनित्य यह बने एक दिन दूर॥

छोड़ स्वर्ग नृप दशरथ के घर जन्मा लक्ष्मण आकर के।
यहां पूर्व पुण्य फल भोग रहे हैं वासुदेव पद पाकर के॥
श्री अनंग सुन्दरी ने भी तो तप संयम खूब कमाया था।
और अन्तसमाधि मरणत्याग तनको शुभ ध्यानलगाया था॥

दोहा—एक अजगर ने सती को बना लिया निज आहार।
त्याग दूसरे काल कर, पहुँची समता धार॥
त्याग स्वर्ग आकर हुई वैशल्या सुख कार।
प्रेम लखन संग इस तरह पूर्व पुण्य अनुसार॥

चौपाई—गुणवती का गुणधर भाई प्रथम नाम संज्ञा बतलाई।
कुण्डल मंडित जन्मा जाई विषयों ने आत्म भरमाई॥
एक दिन पास मुनि क आया, साधु ने उपदेश सुनाया।
त्याग कुव्यसनों का करवाया गृहस्थधर्म जिसके मन भाया॥

दहा—देशव्रत धारण किया किन्तु राज्य में ध्यान।
कु डल मंडित मर कर हुआ भामंडल यह आन॥

जनक भूप का पुत्र सती, सीता का भ्रात कहाता है।
अब लवणांकुश का हाल सुनो, संयोग चला क्या आता है॥
काकन्दी था नगर यहां पर 'वामदेव' एक धर्मी था।
एक 'श्यामा' नार कहाती थी परिवार सभी शुभकर्मी था॥

दोहा—श्यामा के दो पुत्र थे पुण्यवान सुखकार।
नाम 'सुन्द' 'वसुनन्द' था सुन्दर रूप अपार॥

यहाँ एक मास का लेने पारणा, मुनिराज पर आया था।
तब उत्कृष्ट प्रणामों से दोनों भाइयों ने आहार बेहराया था
पुण्य प्रकृति बांध लई, आयु का खाता तमाम हुआ।
उत्तर कुरु में भोग के सुख, फिर प्रथम स्वर्ग का धाम हुआ॥

दोहा—काकंदी का भूपति 'रतिवर्द्धन' शुभ नाम।
थी पट नार 'सुदर्शना' राजा को अभिराम॥

प्रथम स्वर्ग से आ कर के, दानों ने यहां पर जन्म लिया।
और जन्मोत्सव का खुशी खुशी, राजाने सब सामान किया॥
नाम प्रियंकर और 'स्वयंकर', दोनों के शोभाते थे।
संसार से चित्त उदास हुआ संयम व्रत लेना चाहते थे॥

दोहा—त्याग अथिरथ संसार को महाव्रत लिये धार।
सम दम शम को धार के, तप जप किया अपार॥

नवग्रैवेक स्वर्ग में जाकर, सुख मनोगम पाये हैं।
लवणांकुश दोनों भाई बस, स्वर्ग से चलकर आये हैं॥
पुंडरीकपुर में जनक सुता, ने दोनों पुत्र जाये थे।
यहां अनुव्रत धारी सिद्धार्थ ने, दानों भ्रात पढ़ाये थे॥
यही सिद्धार्थ पूर्व दूसरे भव की मात सुदर्शना थी।
इसी प्रेम अनुसार पढ़ाने की, आ मिली स्पर्शना थी॥

दोहा—जन्मान्तरों की बात सुन गये भव्य जन चाप।
कइयों ने संसार का, त्याग दिया सन्ताप॥

संयमव्रत को धार लिया आत्म के निर्मल करने को।
कई वीतराग की अमृत वाणी, लगे हृदय में धरने को॥
देशव्रत का धार कई, दिल में आनन्द मनाते हैं।
सम्यक् दृष्टि बन गये बहुत, तीर्थंकर के गुण गाते हैं॥

जैसी भी जिसकी शक्ति थी, उसने वैसा व्रत धार लिया।
और कर्म बन्ध का कारण सब ने मिथ्या भ्रम निवार दिया॥
उसी समय रघुकुल दिनेश फिर, पास सिया के आये हैं।
अति नम्रता से विधि सहित शिक्षाप्रद वचन सुनाये हैं॥

दोहा—सती तुम्हारे जन्म को धन्य धन्य हरबार।
मोह कर्म बारदल के, सिर में डारी छार॥

कुछ कहना तुमको जैसे सूर्य को दीपक दिखलाना है।
किन्तु फेर भी व्यावहारिक, हमने कर्तव्य बजाना है॥
अबतक तुमने जो कष्ट सहे, संयम का उनसे भारी है।
ना पार सके यहां बड़े बड़े योद्धों ने हिम्मत हारी है॥
क्रुद्ध सिंह के सम्मुख भी जाना आसान बताया है।
कालकूट को अमृत जैसा खाने में सुन पाया है॥
हो सकता है कोई पर्वत को, मस्तक से तोड़ फैंक देवें।
और इन्हीं हाड के दांतों से लोहे के चने चबा लेवें॥
तलवार पकड़कर के उल्टी शत्रु का मार गिरा देवें।
और महासमुद्र में हाथों से तर कर कोई प्राण बचा लेवें॥
किसी निमित्त से कर सकता है इन अनहोनी बातों को।
पर संयम व्रत को कहा कठिन जीत जो आठों कर्मों को॥

दोहा—हृदय से तुमने तजा, यह संसार असार।
तो अब दुनिया का नहीं, करना जरा विचार॥

स्वर्णिम मन गयों श्राप से जो, तुमने सुखपति धारी है।
ता अपने मायों से भी इसको, रखनी होगी प्यारी है॥
जिसने इसे विसार दिया आगे जो इसे बिसारेगा।
तम से घोखी का श्राम मना बूझे बिन मति संमारेगा॥
बुद्धिमान् समदर्शि जन को, एक इशारा काफी है।
दुष्ट आत्मा तो जैसे मुरझाई चिल्म की साफी है॥

दोहा—इतना कह भी राम ने, दिया सभी को मान।
अवध पुरी का वस दिये लेकर निज संग मान॥
अनिक पति कृतान्त भी लेकर संयम भार।
दुष्कर करनी कर गया, पञ्चम स्वर्ग संभार॥

साठ वर्ष तक जनक सुता ने, तप जप खूब कमाया है।
तेतीस दिवस का अनशन कर, आ स्वर्ग बारहवां पाया है॥
स्त्रीवेद छेदन कर के बाईस सागर स्थिती पाई है।
अच्युत इन्द्र बना सभी पर, हुक्म अधिक पुण्याई है॥

लवणांकुश की शादी

दोहा—वैताढ्य गिरी पर नगर था कंचन पुर सुप्रसिद्ध।
पिता लक्ष्मि भूपति पुण्यवान समृद्ध॥

मंदाकिनी और चन्द्रमुखी दो सुता भूप का प्यारी थी।
अब शादी कारण करी स्वयम्बर, मण्डप की तैयारी थी।
पुत्रों के परिवार सहित श्री राम लखन बुलाये हैं।
और यथा योग्य स्वागत कर सब को, मण्डप में बिठलाये हैं।

अब लवण के चरणों में गिर के, बच सकते हैं यह ।
या मौत के इनको हुक्म, परवाने हासिल हो गये ॥७॥

दोहा—चचेरे भाइयों का कसा, लवणांकुश ने नाश ।
नम्र वचन कहने लगे, सब भाता के पास ॥

लवणांकुश—जाति गौरव वंश का, करना चाहिये ध्यान ।
नीति विनय व्यवहार सब, समय देख का ज्ञान॥

प्रथम तो मित्र पर का प्रश्न उद्गार चितमहीं लाते हैं।
लाचार यदि आ भी जावे तो, फिर भी समय बचाते हैं॥
शर्म धर्म भी दुनिया में, आत्म का रक्षक होता है।
विपरीत इन्हों से चलने वाला, निज गुण सारा खोता है॥
बुद्धिमान् को तनिक इशारा ही बतलाया जाता है।
अब रघुवंशिन का पुण्य घटा यह नजर सामने आता है॥
बदचालन से तेज सुनो, भाइयो-क्षयपानल होती है।
गौर व इज्जत क्या राज पाट, सुख जड़ामूल से होती है॥

दोहा—देख मूर्खता सुतों की बढ़ गया रोष अपार ।
पुत्रों को धिक्कारते, बोले वचन उचार ॥

गाना—बने सब आज निर्बुद्धि शर्म तुमको न आई है ।
धूल में अपनी और कुल की सभी इज्जत मिलाई है ॥१॥
लाज रघुकुल की रखने को, राम ने राज त्यागा था ।
तुच्छ एक आज परमाला पे, तुमको तेजी आई है ॥२॥
प्रेम दुनिया से बढ़कर है हमारे सारे भाइयों में ।
किन्तु तुमने यह कैसी आग द्वेपानल दिखाई है ॥३॥
बड़े भाई की पत्नी को सदा मैं माता कहता हूं ।
तुम्हें धिक लेना परमाला यहीं से दिल में समाई है ॥४॥

तुम्हें अधिकार क्या पठने, का था बिन राम के पूछे।
दाप पद कुल से पढ़कर जो मर्यादा घटाई है ॥५॥
था रघुवंश के हो तो, क्षमा अब मांग लो सारे।
नहीं तो राज में रहना तुम्हें मेरी मनाई है ॥६॥
राम का भय श्याम कुल की, 'शुक्ल' दिल में समाई है।
तुम्हारी धरना छिन मात्र में, कर देता सफाई है ॥७॥

दोहा—देख रहे थे राम जी बैठे सभा मंझार।
दिल ही दिल में कर रहे थे इस तरह विचार ॥
अरिहन्त देव ने सब तरह दिये जीव समझाय।
व्यवहार कसौटी से कोई, देखे यदि लगाय ॥

जहां सत्य प्रेम की वृद्धि हो बस धर्म वहां पर बढ़ता है।
और क्षमा शील के होने से आत्म का गुण नहीं घटता है।
क्रोध प्रेम का नाश करे, अभिमान विनय को खाता है।
यह मित्रता का दमन करे जा फरेब नरों में लाता है ॥
लोभ दुष्ट यह महा बुरा सब ही कुछ नाश बना डारे।
संभूम चक्रवर्ती की तरह, संसार में रुला वृथा मारे ॥

दोहा राम—सूर्यवंश में आज तक रहा अखंड प्रेम।
अब आगे भाता मगर, रहे न पूरा प्रेम ॥

जहां विनय नहीं वहां धर्म घटे, फिर दान पुण्य घटजाता है।
और गिरे हुए गौरव यश से सहसा मन फट जाता है ॥
क्रोधानल यह बुरी बला है जिस जगह जरा सी आती है।
वहाँ फूट डालकर रूप भयंकर, सब कुछ नाश मनाती है ॥

दोहा— बुद्धिमान होता वही, चले समय अनुसार।
समय देख भीष्म जी, बोले वचन उचार ॥

दोहा राम—क्या बच्चों की बात पर, रोष किया तू वीर।
लक्ष्मन आप को चाहिये होना अति गम्भीर ॥

ऐसी बातें सब बालपन में प्रायः पाई जाती हैं।
लेकिन्कर अवस्था यही तो, बिल्कुल अलमस्त कहाती है ॥
समझना हो यदि बच्चों को तो प्रेम से समझना चाहिये
इस तरह रोष में आकर के, दिलमी न मुर्झाना चाहिये ॥

दोहा—आज मर्म की बात एक, सुन ए लक्ष्मण वीर।
पुत्र सूर्यवंश का हुवा आज आखीर ॥
ऐसा कह श्रीराम ने झगड़ा दिया मिटाय।
अब अपना अपराध भी, सबने लिया खमाय ॥

अब खुशी-खुशी श्री राम लखन, सब पुरी अयोध्या आये हैं।
पर वासुदेव के पुत्र कुछ अपने मन में शर्माये हैं ॥
संसार से चित्त उदास हुआ आज्ञा ले संयम धार लिया।
श्री मुनि महाबल से दीक्षा ले, आत्म कार्य सार लिया ॥

दोहा— मार्तण्ड भूपाल जी, बैठे महल मंझार।
शुद्ध भावना भावते ऐसा किया विचार ॥

वैताढ्य गिरि की दोनों श्रेणी, मैंने बस में करली हैं।
दुनिया के सुख भी भोग लिये रानी भी कितनी वरली हैं ॥
किन्तु साथ मेरे दुनिया से, कुछ नहीं जाने वाला है।
और काल बुलावा एक दिवस मुझको भी आने वाला है ॥

दोहा—इतना कहते ही पड़ी विद्युत सिर पै आय।
मारत क्षोभ पैदा हुआ देवकुरु में जाय ॥
समवसरण कर विमान में भ्रमण गये हनुमान।
वापिस आते का मिला, कारण ऐसा आन ॥

अस्ताचल को जा रहा, छिपने को रवि विमान,
हनुमान को उस समय, आया ऐसा ध्यान ॥

तरुण रवि था किस तरह, तेज द्युतिमान् ।
नजर फेर था देखता, जब था मध्य जुवान ॥

अब सभी कान्ति क्षीण हुई, क्यों कि यह छिपने वाला है।
फिर निबड़ तम घोर अन्धेरा, यहां पर बिछने वाला है ॥
आयु के पूर्ण होने पर एक दिन मैं भी छिप जाऊंगा ।
मिट गये अनन्ते मुझ जैसे मैं भी ऐसे मिट जाऊंगा ॥
आठ मद शत्रु मर जन पर, न कुछ भी ध्यान दिया ।
वीरों का शत्रु नाम मान, निर्दोषों का घमसान किया ॥
क्रोध मान माया लालच यह सब का ही मर्माति हैं ।
ऐसा महाभाग इन्हों का है सत्पथ पर जात शर्माति हैं ॥

दोहा—है निशंक संसार यह निश्चय सभी असार ।
पहले तीर्थंकर सभी तज गये आखिर कार ॥

छोड़ दूं संसार तपही मोक्ष पद पाऊंगा मैं ।
वरना इस चक्कर से हरगिज पार न पाऊंगा मैं ॥ १॥

नर्क तिर्यक मनुष्य क्या सुरपुर में पूर्ण सुख नहीं ।
भवसागर में रहा ममा पूछा तो पछताऊंगा मैं ॥ २ ॥
जो भी कुछ आता नजर, पुद्गल की माया है सभी ।
अरिहन्त की इच्छा न इस पर, अब न मुझाऊंगा मैं ॥ ३ ॥
शिक्षा जिनवर की 'शुक्ल' नस नस के अन्दर रम गई ।
अब तो सच्चिदानन्द ही पद के दिखलाऊंगा मैं ॥ ४ ॥

दोहा—राजपाट दे पुत्र को धर्म रत्न गुरु पास ।
उत्सव सहित सभी गये दिल में अति उल्लास ॥

कषाय छोड़ की वर्ष बड़े सब केश लुंच कर डारे हैं।
मुखपत्ति मुख पर बांध, हस्त भाग में पात्र धारे हैं॥
यथा योग्य सब विधि पूर्ण करके, फिर सम्मुख आया है।
श्री धर्म रत्न गुरुराज ने तब दीक्षा का पाठ पढ़ाया है॥

दोहा—धार महाव्रत धार के, किया ज्ञान अभ्यास।
फिर तप जप में लग गये, करने कर्म का नाश॥

चौक०—पद्मरागादि रानी कइयां ने संयम धार लिया।
गुरुणी जी श्री लक्ष्मी की आज्ञा को सिर पर धार लिया॥
मिश्री की मक्खी के मानिन्द ऐसे नर नारी कहाते हैं।
दुनिया के विषय सुख छोड़ सभी, यह त्याग अवस्था चाहते हैं॥

दोहा—नाश किया चारों कर्म घनघाती बलवान्।
उसी समय हनुमान को हो गया केवल ज्ञान॥

जिन को केवल ज्ञान हुआ सो, गये मोक्ष सुख पायेंगे।
अब राम लखन के प्रेम सम्बन्धी हाल अगाड़ी आयेंगे॥
कर्मों में सबका महाराजा एक मोहिनी कर्म कहाता है।
जिस समय उदय इसका होवा, वह सब को ही भर्माता है॥

दोहा—हनुमान ने जिस समय संयम व्रत लिया धार।
सुनते ही श्रीराम ने ऐसे किया विचार॥

दोहा राम-किस कारण हनुमान ने त्याग दिया संसार।
विषय सुख भगमान तज महा कष्ट लिया धार॥

दोहा— शक्रेन्द्र पहिले स्वर्ग सभा सुधर्मा मांय।
देख रहा था भारत को निज उपयोग लगाय॥
रामचन्द्र के धर्म से प्रतिकूल परिणाम॥
देख इस कहने लगा सुन रहे देव तमाम॥

दोहा शक्रेन्द्र—रामचन्द्र जी कर रहे उल्टा आज विचार।
आश्चर्य मुझको हुआ अद्भुत आज अपार॥

धर्म शरीरी राम आज उपहास्य धर्म का करता है।
इस राग द्वेष में बंधा जाय नहीं कर्म बंध से डरता है॥
इस बात को अब मैं समझ गया कि प्रेम लखन संग भारी है।
और प्रेम के वश में हुये राम ने उल्टी मति मन धारी है॥

दोहा शक्रेन्द्र—राम लखन जैसा नहीं प्रेम कहीं पर और।
भारत क्षेत्र सब छान कर, देख लिया चहुं ओर॥

मनुष्य मात्र क्या देव नहीं, कोई प्रेम इन्हों का हटा सके।
प्रपंच करो हजार चाहे पर उनका दिल नहीं फटा सके॥
श्रीराम बिना भी लक्ष्मण जी, एक पल भर नहीं रह सकते हैं।
और एक वचन भी भाई के प्रतिकूल नहीं सह सकते हैं॥

दोहा—दो देवों के बात यह दिल में बैठी नाय।
शक्रेन्द्र को इस तरह बोले सम्मुख आय॥

दो० दो देवता—मृत्यु लोक का प्रेम है क्यों जैसा खेल।
मोढ़े का चिकना पना क्या दिखलावे तेल॥

सब देखो अब हम राम लखन का प्रेम छुड़ा कर आते हैं।
इस बात की साक्षी सभी परिषदा का करता कर जाते हैं॥
प्रेम लखन का रामचन्द्र जी से काफूर बना देंगे।
और एक से एक का प्रतिकूल कर, दोनों का बदला देंगे॥

दोहा—इतना कह कर चल दिये अवध पुरी की ओर।
प्रेम छुड़ाने के लिये खूब लगाया जोर॥

महल रंग पर लखन का चढ़ा मन प्रतिकूल रंग।
फिर ऐसी युक्ति करी मन में होकर दंग॥

अब था विचार यह देवों का, जाकर क्या मुख दिखलावेंगे।
यदि प्रेम नहीं टूटा इनका तो शर्मिन्दे हो जावेंगे॥
देवों ने फिर झूठी एक, माया ऐसी रच डारी है।
और मृतक तन एक बनाय राम का रुदन मचाया भारी है।

दोहा—हा प्रीतम हा रामजी, हा बेटा हा बाप।
छोड़ हमें क्यों चल बसे, स्वर्ग धाम में आप॥
दुःखदायी यह शब्द जब, पड़े लखन के कान।
धमक सहसा सुनन को, आया अपना ध्यान॥

इतने में रोते सिर धुनते, सब भृत्य सामने आये हैं,
सब देख हाल यह अनुज साथ, सागर में ओर समाये हैं॥
और ऊँचे स्वर से सब ने हा, दुःखदाई रुदन मचाया है।
फिर गद्गद् स्वर से भृत्यों ने, लक्ष्मण को वचन सुनाया है॥

दोहा देवमायाभृत्य —
महा शोक प्रलय हुई, हाय हाय सरकार।
आज राम परभव गये देकर दगा अपार॥
सोच के कुछ बातें करो, पच्छे मूढ़ गँवार।
शब्द अपशकुन का कहा, गर्दभ सर्प स्यार॥
देखो तो यह सामने पड़ी राम की लाशा।
राज कुमार रानी सभी रोते हैं तज आशा॥

शेर—आज अवधपुर नाथ स्वामी राम परभव चल दिये।
सब की आशाओं के अंकुरे यद्यपि न फल दिये॥
क्या क्या हैं हैं मर गये आज राम भगवान।
जी हां अब मरघट पर तज लखन ने प्राण॥
पत्थर की मूर्ति के माफिक सिंहासन पर थे पड़े हुए।
और स्वर्ण हीरों के आलम्बन तकियों पर थे सिर धरे हुए॥

थे नेत्र मानों मिच हुए और कर गालों पर तन रहे।
दो सिंहासन के अग्रभाग में, पांव भूमी पर जमे रहे॥
आयु का शेष तमाम हुआ और श्वासोच्छ्वास खतम सारे।
यह देख हाल देवों के भी मन में हुवे अस्म मारे॥
चौथी पृथ्वी पर जा पहुंचे, उत्तर की दिशा धूम धारे।
कोई जैसा प्राणी कर्म करे, वैसे सम्बन्ध मिलत सारे॥

दोहा—देख लखन की मृत्यु को लगे देव पछतान।
जैसे हृदय में लगे, जहर बुझे शत बाण॥
आज हमारे से हुआ, कैसा अनर्थ घोर।
अब इनके भ्राता यहां, हाय हाय का शोर॥

यहां परीक्षा कारण हमने, महा पाप कर डारा है।
अब देख हाल उस का क्या, होगा जिसका भाई प्यारा है॥
निश्चय इन जैसा दुनियां में प्रेम नजर नहीं आया है।
जो हमने बतलाया था उस से भी प्रेम सवाया है॥

दोहा—सुरपुर को सुर चल दिये होकर के लाचार।
पुरी अयोध्या में लगा होने हाहा कार॥

माताएं क्या सभी रानियां ऊंचे स्वर से रोने लगीं।
अधिकारी जन क्या सारी प्रजा आँसुओं से मुंह धोने लगी॥
रुदन भयंकर सुनते ही श्री रामचन्द्रजी आये हैं।
और हुक्म तेजी में आकर के, मुख से यों वचन सुनाये हैं॥

दोहा—क्यों तुम सब पागल हुवे अपशकुन किया अपार।
जीता है भाई मेरा मूर्च्छा है दुःखकार।

राजवैद्य क्या अन्य कई श्रीराम ने तुरत बुलाये हैं।
और सिंहासन से शय्या पर, निज कर से लखन सुलाये हैं॥

कभी बुला कर ज्योतिषियों से, फाल चक्र लगवाते हैं।
कभी सयानों को बुलवा कर, मन्त्र यन्त्र करवाते हैं॥
'मर गया यदि कोई कहे शब्द उस पर झु मला कर पड़ते हैं।
मोह नशा देख भी राम का यहां सारे के सारे डरते हैं॥
हो गया असाध्य रोग कह करके, सभी ने जान बचाई है।
श्री रामचन्द्रजी इसी समय झट गिरे मूर्छा आई है॥

दोहा—शीतलता कर राम को दिया तुरत बैठाय।
हो सचेत फिर लखन को, बोले गले लगाय॥
क्यों भाई कुछ सा कहो अपने दिल का हाल।
प्रेम रोग ने कर दिया तेरा हाल निढाल॥

क्या तू मुझ से रूस गया, या कोई गुप्त बीमारी है।
या कोई चोट तेरे हृदय पर, लगी आन कर भारी है॥
जो कुछ हालत आज तुम्हें, लंका में यही बिमारी थी।
अमोघ विजय दशकंधर ने शक्ति हृदय में मारी थी॥
अब भी तुम पर क्या कोई शत्रु ने मन्त्र चलाया है।
क्या उसने आज तुम्हारे को ऐसा लाचार बनाया है॥

दोहा—लक्ष्मणजी का विरह यहा, सब का हृदय विदार।
रामचन्द्रजी भी लगे, करने और विचार॥
शत्रुघ्न सुग्रीवजी और, विभीषण वीर।
रामचन्द्र का इस तरह, लगे बंधाने धीर॥

दोहा—भगवन् इस तन में नहीं, जीव लखन का सार।
स्वामी जल्दी से करो अब इनका संस्कार॥

संयोग लखन का इस भव का जितना था उतना खतम हुआ।
इनके वियोग का दे स्वामी सब के दिल भारी जखम हुआ॥

बांध धीर को धीरवान, भोरों को धीर बन्धाओ तुम।
इस मृतक तन का यथा योग्य अग्नि संस्कार कराओ तुम॥

दोहा—लगे राम को यह वचन, हृदय तीर समान।
उत्तर यों देने लगे, कुछ तेजी में आन॥

दोहा—बस बस बस रोको जरा अपनी जबान सम्भाल।
मूर्च्छा में लक्ष्मण पड़ा वीर सुमित्रा लाल।

मर गये तुम्हारे कोई होंगे, जल्दी से उन्हें जलाओ तुम।
बस यहां बैठन का काम नहीं, बस बाहिर चले सब जाओ तुम॥
अपशब्द बोलते क्या तुम को, बिल्कुल ही शर्म नहीं आती।
और बदले में सुख देने के, सब जला रहे मेरी छाती॥

दोहा—रामचन्द्र जी हो रहे मोह में अति गलतान।
लवणांकुश कहने लगे रामचन्द्र को ध्यान॥
बचा साहिब की मौत का सारे मचा काल्हाल।
अयोध्यापुरी का हो रहा पिता हाल बेहाल॥

गाना—दरो दीवार से आती पिता आवाज मातम की।
मौत आगे चले तदबीर क्या किसी वैद्य हाकिम की॥१॥
ठिकाना एक न इस जीव का मानिन्द बिजली के।
कभी यहां पर कभी यहां पर, कहीं पर जा कभी चमकी॥२॥
ब्राह्म तम सुर असुर नर क्या भी अरिहन्त जाते हैं।
सिवा मिट्टी में मिलने के नहीं तजवीज इस तन की॥३॥
अनन्त यहां हो चुके त्रिखंडी क्या छः खंड के मालिक।
निशां बनका यदि है तो सिर्फ, एक पास है मन की॥४॥
जीव से रहित तन मिट्टी, लिये क्यों आप बठे हैं।
करो मृतक सभी क्रिया पिता मनवा के चंदन की॥५॥

दोहा—बस खबरदार इस बकवास को रक्खो अपने पास।
मुझे नहीं मंजूर यह, बड़ी बुरी दरख्वास॥

गाना—

किसी ने आज क्या तुम को, नशा कोई चढ़ाया है।
इस कदर बोलने का, हौसला जिसने बढ़ाया है॥१॥
किसी को एक तकलीफों में, जो हाँसी उड़ाते हैं।
वही फल करके सहते हैं, यह हमने आजमाया है॥ ॥
मौत का शब्द दुखदाई सदा हर एक प्राणी को।
तीर सीने मेरे जोड़ी आज, तुमने लगाया है॥३॥
यदि तुम राज्य की खातिर, बुरा चाहते हो लक्ष्मण का।
सँभालो सब हुकूमत क्या, खजाने रत्न माया है॥४॥
एक ही जन्म में सब कुछ मिले हर बार प्राणी को।
सहोदरका 'शुक्ल' मिलना असंभव ही बताया है॥५॥

दोहा—पिता क्षमा कर दीजिये यदि कुछ समझें और।
एक हमारी विनती, पर कुछ कीजिये गौर॥

अब आज्ञा हम को दे दीजे दुनिया से चित्त उदास हुआ।
तप संयम ध्यान लगाएंगे बस यही इरादा खास हुआ॥
इसी तरह से पिता एक दिन, आप हमारा आना है।
और यदीसमययदि निकलगया तो फिर पीछे पछताना है॥

दोहा आज्ञा लेते समय भी तामा रहे लगाय।
उसी तरह का राज्य अब, मुझ को रहे जलाय॥

जिस जिसको दीक्षा लेनी है, उन सब को आज्ञा मेरी है।
इन्कार नहीं मुझ को कोई लेने वालों की देरी है॥
किन्तु भाई का खाब नहीं, दीक्षा दिलवाने जाऊंगा।
मैं बिना वीर का सुरती किये कुछ भी नहीं करने पाऊंगा॥

दोहा—प्रणाम कर के पिता को, लवणांकुश सुकुमार।
मोह जाल सब तोड़ कर, दोनों हुये तय्यार॥

चौपाई—अमृत घोष मुनि पास सिधाये लवणांकुशने शीश निमाये।
मुनि ने कर्म भेद बतलाये सुन कर रोम राम उठ आये॥
संयम से तप जप किया भारा अष्ट कर्म दल को संहारा।
आप तरे औरों को तारा, सच्चिदानन्द सिद्ध पद धारा॥

दोहा—रामचन्द्र मोह में हुवे फिरें अति गलतान।
कभी मनाते हैं कभी करवाते स्नान॥
मौत अनुज की अन्य जन सुन पाए नृप राय।
घी के दीपक बल गये अरिजन के घर मांय॥

इन्द्रजीत और सुन्द आदि के, सुत बलवान कहाते थे।
क्योंकि शत्रुता पुराना थी दिल में सो लेना चाहते थे॥
और ये आज्ञा में इनको शक्ति आगे शीश झुकाते थे।
जो चाहते थे दिल में करना वह मौका कभी न पाते थे॥

कारणवश ये विभीषण रामचन्द्र के पास।
पीछे से इन सभी ने, अवसर किया तलाश॥

बांध गोल अपना भारी सब अयोध्यापुरी पर आये हैं।
विमान गगन में घूम रहे मानिन्द घटा के छाये हैं॥
विकट गड़ियें रथ संग्रामी शस्त्र गाड़ों का पार नहीं।
और अश्वार तन पर धारे जिन पर,शस्त्र करता वार नहीं॥

दोहा—इसी समय श्री राम ने धनुष लिया कर धार।
जंगी बिगुल बजा दिया हुए शूर तैयार॥
सुग्रीव विभीषण आदि योद्धे इसी समय चढ़ धाये हैं।
प्रबन्ध सभी करके जल्दी, अपने विमान सजाये हैं॥

शत्रुघ्न और आदि का पहरा, लक्ष्मणजी पर भारी है।
और पुण्यवान का पुण्य, सहायक बने सदा हितकारी है॥

दोहा—देख जटायु का कंपा, सिंहासन तत्काल।
अवधि ज्ञान से अवध का देखा सारा हाल॥

मातुष्कार करने की खातिर, उसी समय चल आये हैं।
विस्तार वैक्रिय फौज गुप्त, आदि सब मार भगाये हैं॥
इधर विभीषण आदि, योद्धाओं ने अरि दबाये हैं।
सन्धि का दिया निशान तुरत क्योंकि शत्रु घबराये हैं॥
शर्म सार हो गये अति चुभित से चित्त उदास किया।
फिर सुन्दरादिक ने संयम व्रत, मुनि मतिवेग के पास लिया॥

दोहा—मोह के वश श्रीराम ने धरा भ्रात सिर हाथ।
लक्ष्मणजी को इस तरह, कहन लगे नरनाथ॥
तुम भाई मूर्छित हुये दे गये पुत्र जवाब।
शत्रु भी आकर लगे करने वास खराब॥
राम-जटायु ने लखा मोह में अब गलतान।
व्याकरण कर इस तरह, लगा ध्यान समझान॥
कमल शिला पर रोप कर, सींचा सूखा वृक्ष।
बीज जमाने कल्लर में, बीज रहा प्रत्यक्ष॥

बालू पील पील घानी में, ऊपर पानी छिड़क रहा।
कभी जल में डाल मथानी को दोनों हाथोंसे रिड़क रहा॥
श्री रामचन्द्र का मूर्खता पर, ध्यान जिस समय आया है।
तब समझाने का रघुनन्दन ने, मुख से वचन सुनाया है॥

दोहा—स्याना होकर कर रहा, बच्चों वाला खेल।
निकला न निकलेगा कभी बालू में से तेल॥

कमल शिला पर खिले नहीं, न सूखा वृक्ष हरा होवे।
कल्लर में खेती पके नहीं चाहे नित्य नीर भरा होवे॥
जैसे पत्थर की मूरत से, अन्त में फल कुछ नहीं पाता है।
यूँ खाली नीर बिलोने से, माइ मक्खन नहीं आता है॥

दोहा—यदि मेरे पुरुषार्थ यह, सब ही निष्फल जांय।
तो फिर मृतक ललन भी जीने के कभी नांय॥

दोहा—अकल खोलने की तुम्हें, पापी बिल्कुल नांय।
कैसा खोटा शब्द तू, मुझ को रहा सुनाय॥

चल हट परे यहां से नहीं तुझको परभव पहुँचा दूंगा।
उल्ट पुल्ट बातें करना यह, सारी अभी भुला दूंगा॥
सच कहा मूल के समझाने में ज्ञान गांठ का लाना है।
विक्षिप्त चित्त वाले को तो भी कुछ कहना सब रोना है॥

दोहा—देव जटायु के हुए, निष्फल सभी उपाय।
कृतान्तवदन फिर इस तरह आया रूप बनाय॥

एक मृतक स्त्री को लेकर, राम के सम्मुख आया है।
दो चार बात शुरु कर करके मसका एक चीर चढ़ाया है॥
देख हाल रघुकुल दिनेश, श्रीराम जरा मुस्काये हैं।
अनभिज्ञ मनुष्य कोई समझ, राम ने ऐसे वचन सुनाये हैं॥

दोहा राम—अय भाई यह मर चुकी किसे रहा समझाय।
संस्कार इसका करो अब जीने की नाय॥

दोहा कृ —वचन अमंगल मत कहो मुख से हे सरकार।
दिल से कभी न उतरती जीवित है मम नार॥

दोहा राम—प्यार में प्यारा कभी मरा न भावे कोय।
भूत भविष्यत् हाल क्या देखो चहुँदिशो जोय॥

दोहा ६०—परापदेश को चलत है, सबके दाम जवान।
मिज कर्त्तव्यों पर नहीं, करते कुछ भी ध्यान ॥

जीता हुआ लखन को कहते मृतक इसे बनाते हैं।
तुम महापुरुष हो करके भी यह क्या मुझसे बतलाते हैं॥
पहिले अपने का देख भाल फिर औरों को कहना चाहिये।
यदि नहीं तो सबको मस्त भाव से, हे स्वामिन रहना चाहिये।

दोहा—श्री रामचन्द्र ने जब दिया इन बातों पर ध्यान।
लक्ष्मण जी के मरण का, हुआ यथार्थ ज्ञान ॥

गाना

क्या आशा है जीवन की अब प्यारा पता बैरी हुआ अपना।
मोड़ गये मुख वनपक्षी भी हवा पलट गई एक दम पछी ॥
घटा गम की उठी घमघोर ॥१॥
माग्य चन्द्र राहु ने ग्रस लीना कठिन कष्ट कर्मों ने दीना।
यह कैसा काम कठोर ॥२॥

दोहा—राग सभी संसार का होता क्षण भंगूर।
बिन त्यागे इसको कभी मिल न सुख भरपूर ॥
त्रिषष्टिशलाका पुरुषों क, तन में यह गुण बतलाया है।
पट मास तलक न बिगड़ सके, आकृति और शुभ काया है॥
उसी समय दानों देवों ने, परपम शीश निवाया है।
और अयध पुरी में आने का अपना सब भेद बताया है॥

दोहा—संस्कार मृतक सभी किया राम लाचार ॥
माह कर्म पोचाल क, गई धूल सिर डार ॥
दुनिया की अब राम का रहो न कुछ दरकार।
राम पुत्रा शत्रुघ्न का धाम अयन हवार ॥

दोहा राम—भरत वीर त्यागी बने, लक्ष्मण कर गये काल।
राज करो अब आप सब सुनो हमारा हाल॥

संसार से चित्त उदास हुआ संयम व्रत लेना चाहता हूं।
और अवधपुरी का राज आप, अब तुमको देना चाहता हूँ॥
काम यहां का आप बिना, नहीं कोई सम्भालने वाला है।
और तुम से बढ़कर काल मात, को कौन जानने वाला है॥

दोहा शत्रुघ्न—आप का जो अच्छा लगे, वही मुझे मंजूर।
जिससे घृणा है तुम्हें, मैं भी उससे दूर॥

यदि राज भार अच्छा है तो, फिर आप क्यों तजना चाहते हो।
और बुरा आपने समझा तो क्यों हमको आप फँसाते हो॥
ना साथ गया यह राज सखम के, साथ न मेरे जायेगा।
है क्षेम मुझे रखने वाला जब काल बुलावा आयेगा॥

दो० शत्रुघ्न—साथ आपके भ्रात मैं, धारू संयम भार।
देख लिया है खास कर सब संसार असार॥

दोहा—लवण कुमार का पुत्र था, अनंगदेव गुणवान्।
धीर वीर गंभीर बर, धर्मी अति पुण्यवान्॥

अनंगदेव को राजतिलक कर, ताज शीश पर धारा है।
जयकारों के सहित राज्य, अभिषेक किया अति भारा है॥
निवृत्त होकर इन कामों से दीक्षा के लिए तैयार हुए।
थे साथ राम के मित्र भक्त प्रेमी राजा कई सार हुए॥

दोहा शत्रुघ्न सुग्रीव जी और विभीषण वीर।
राजे सब श्रीराम संग चले विराध रणधीर॥
रनवासी परिवार सब समवशरण के माय॥
सुरी सुरी पहुंच सभी, करें संघ मन चाय॥

चौपाई—मुनि सुव्रत के शासन मांही, मुनिवर अरहदास सुखदाई॥
अरण्य कमल में पहुँचे जाई, नमस्कार कर विनती सुनाई॥

दोहा—चार गति संसार में घूमें काल अनन्त।
दुःख का कर सकती नहीं, जिह्वा सब वृत्तन्त॥

(गाना—राम का मुनियों से प्रार्थना रूप स्तुति)

आज दुखियों की तरफ, ध्यान तो लगा लेना।
दुष्ट कर्मों से प्रभु आज तो छुड़ा देना॥१॥

कर्म व्याधि को मिटाने के लिये वैद्य हो तुम।
करे जो रोग निवारण, या ही दवा देना।२॥

गतागति चक्र में अनादि से घूमाते हैं कर्म।
दयानिधि करके दया, आप ही बचा लेना॥३॥

राग और द्वेष ने, भव भव में रुला के मारा।
अंश इसका भी प्रभु, आज से मिटा देना॥४॥

संसार समुद्र की लहरों में बहे जाते हैं।
इनसे बचा करके प्रभु, मोक्ष में पहुँचा देना॥५॥

जन्म मरण से अनन्त, जीव बचाये जिसने।
शुक्ल के दिल में वही ज्ञान तो बसा देना॥६॥

दोहा (अर्हदास मुनि)

आप ही करता भोगता कर्म शुभा शुभ जीव।
कारण दोनों के लिये, होते अमर सदैव॥

जो सहित वासना कर्म करे शुभ दुनिया के सुख पावे हैं।
और अशुभ कर्म से निर्विचार पद पापी कष्ट उठावे हैं॥
निरिच्छा शुभ कर्मों से बस, सदा निर्जरा होती है।
निर्मल संयम वृत्ति इस आत्म के मल को धोती है॥

चार महा व्रत ग्रहण करो संयम सत्रह विधि धारो तुम ।
पाँच सुमति और तीन गुप्ति गोपन स्वभाव पद धारो तुम ॥
अब बारह भेद कहे तप के, इन से, कर्मों को मारो तुम ।
धर्म "शुक्ल" दो ध्यान धरो, पहिले दो अशुभ निवारो तुम ॥
चार गुण सम दृष्टि के दश विध यति धर्म को पालो तुम ।
द्रव्य क्षेत्र और काल भाव, समयानुसार सम्भालो तुम ।
नव बाड़ सहित ब्रह्मचर्य व्रत हृदय में उसे जमालो तुम ।
कपट क्रोध मद लोभ त्याग पुद्गल से प्रेम हटालो तुम ॥
राग द्वेष दो कर्म बीज भव भव दुखदाई होते हैं ।
जा फँसे इन्हीं के फंदे में फिरते संसार में रोते हैं ॥

दोहा—मुनिराज के सुन वचन चढ़ा मजीठी रंग ।
वैराग भाव की तरफ झुक गई सभी एक संग ॥

वस्त्र और आभूषण जो थे तन पर सभी उतार दिये ॥
फिर केश पंच मुष्टि लुंचन कर सिर के भार उतार दिये ॥
चादर पहिन चोलपट्टा मुख पत्ति मुख पर धार लई ।
बायें कर झोली शोभ रही, दहिनो बांह दण्ड पसार लई ॥

दोहा—ऐसा हरख पायी सकल स्वजन लिये बुलाय ।
मस्तक झुका कर आ गई सब बालक सम्मुख आय ॥

गाना—देख लिया संसार निराला ॥ टेक ॥

अंधकार में हाथ फैलाया कहीं का कहीं अपना पाया ।
प्रथम मात की बैठ गोद में देखा रूप सदा विकराला ॥देख ॥१॥
मृग तृष्णा के मानिन्द भटका कहीं था वैभव कहीं था सम्भ्रम ।
अज्ञान गया हुआ ज्ञान पसारा निज मार्तण्ड किया उजियाला ॥२
विधि साध्य साधन की पाई, इस आराधन शुद्धि आई ॥
झूठा माया जाल पसारा जाल महा उलझाने वाला ॥देख॥३॥

दोहा—दीक्षा देने की घड़ी, लगी जिस समय खास।
धर्मदास गणधर श्री बोले ऐसे भाष्य ॥

सब के सब सावद्य भारी, योगों का त्याग कराया है।
फिर मुनिराज ने विधि सहित दीक्षा का पाठ पढ़ाया है ॥
चार महा व्रत धार सभी साधु निर्ग्रन्थ कहाने लगे।
सब शक्ति के अनुसार नित्य तप संयम ध्यान लगाने लगे ॥

दोहा—साठ वर्ष गुरु चरण में, रहे राम पुण्यधाम् ॥
चौदह पूर्व का पढ़ा गुरु कृपा से ज्ञान ॥

पञ्चम अष्टम आदि तप श्रीराम ने किया अति भारी ।
थे विनय वान सब गुण पूर्ण गुरु वचनों के आज्ञाकारी ॥
फिर हुई अकेला विचरण की, आज्ञा गुरु ने परीक्षा करके।
पीठ ठोक हित शिक्षा दी, मस्तक पर अपना कर धरके ॥

दोहा—देश प्रान्त और नगर में लगे विचरने राम।
बिना एक शुभ ध्यान के, और नहीं कुछ काम ॥

एक दिवस फिर लगा लिया, दृढ़ आसन कर ध्यान।
चौदह राजु लोक का, पाया अवधि ज्ञान ॥

अब जो कुछ है संसार में सब नजर सामने आने लगा।
फिर अपने पूर्व जन्मों का उपयोग, राम मुनि लाने लगा ॥
धनदत्त और वसुदत्त का भव नजर सामने आया है।
उस समय राम ने मन ही मन में ऐसा ख्याल जमाया है ॥

दोहा राम-जिस भव में मैं धनदत्त था लक्ष्मण था वसुदत्त।
मर कारण था मरा अटल कर्म की गत ॥

अब भी यहां आकर हुआ भाई लक्ष्मण खास।
चौथी पृथ्वी पर हुआ पैदा करके नाश ॥

कुमार अवस्था सौ वर्ष, मण्डलीक शत तीस।
वर्ष लगे मध दिग विजय, करने में चालीस॥

वासुदेव पदवी में बाकी सारी उमर बिताई है।
और ग्यारह सहस्र वर्ष सब, आयु धर्मदेव बतलाई है॥
सर्वज्ञदेव ने इसीलिए, संसार अनित्य बतलाया है।
जिसने इसका त्याग किया, अपवर्ग उसीने पाया है॥

दोहा राम—अगृत में कर्म कर, पहुंचा आंगन द्वार।
मम हम भ्रम बिन कर्म पर, चल न कोई वार॥

ना टले कर्म ना टलते हैं यह, सोच ध्यान का मांड लिया॥
फिर उसी तरह निज आत्म का निज आत्म में गाड़ लिया।
चौदह मास पारणा कारण, मुनि नगर में आये हैं।
'स्यन्दनस्थल' के नर नारी, मध दरशन करने आये हैं॥

दोहा—सारे शहर में मच गया भारी था इक शोर।
उसी समय पर हो गई अद्भुत घटना और॥
गजशाला से छूट गया, मस्त हुआ गजराज।
यहाँ जनता भारी जमा था रहे यहाँ मुनिराज॥

देख के हस्ती को घबराये नर नारी सब दौड़ हैं।
और इस हलचल में चमक उठे जो चमकन वाले घोड़े हैं॥
जिसको जहाँ पर मिला रास्ता भागे जान बचाने को।
करुणा निधान श्रीराम मुनि महाराज लगे पछताने को॥

दोहा—देख दरश यह राम जी, वापिस गये पधार।
अटवी में जा इस तरह करन लगे विचार॥
प्रथम तो जनता को हुई, मेरे कारण त्रास।
फिर जो मैं वापिस हुआ सभी किये निराश॥

बन में ही यदि मिला आहार, तो पराक मोक्षम पाऊँगा।
अब महा कष्ट पड़ने पर भी, मैं बस्ती में नहीं जाऊँगा॥

निर्दोष जहाँ पर मिले मुझे, थोड़ा सो ही सुखदाई है।
जिसमें हो कष्ट किसी को कुछ वह विष मुझको दुखदाई है
अनादि काल स प्रकृति को, नित्य प्रति खाता आया हूं।
बस सब ही तो इस जन्म मरण से छुटकारा नहीं पाया हूं॥

किस कारण फिर निज पर को मैं वृथा कष्ट देऊँ आ करके।
घनघाती कर्म खपावेंगे शुद्ध उत्तम ध्यान लगा करके॥

दोहा—इसी तरह मुनि हो गये, शुद्ध विचार में लीन।
कर्म अरि मागन लगे बन कर तेरह तीन॥
स्यन्दनस्थल का भूपति अति नंदी शुभ नाम।
आकर पड़ाव वहाँ पर किया, जिस बन में श्रीराम॥

अब लगे पारणा राम मुनीश्वर, इसी जगह पर आये हैं।
नृप खुशी हुआ देकर भोजन, फिर पांचों अचरज पाये हैं॥
अहो सुपात्र दान महा-सुर, ऐसे शब्द सुनाने लगे।
गंधोदक की वृष्टि कर के, तप संयम के गुण गाने लगे।

दोहा—मुनिराज ने फिर दिया विविध धर्म उपदेश।
सब जनों संग सुन रहे हर्ष चित्त धर्म नरेश॥

सुन गृहस्थ धर्म द्वादश प्रकार का प्रतिनन्दी ने धारा है।
और मात कुम्भसम तजो सपने महा मिथ्या भ्रम निवारा है
बस मुनिराज ने वापिस आकर, तप संयम में ध्यान दिया।
प्रतिनन्दी नृप ने भी वहाँ से अगले दिन ही प्रस्थान किया॥

दोहा भिन्न भिन्न आसन किये मुनि बहुत उपवास।
मास कभी दो मास और, कभी किये चौमास॥

दिन में ताप रवि के सम्मुख, होकर के नित्य सहते हैं।
रात्रि में आसन लाकर के नित्य मेव ध्यान म रहते हैं॥
चंगुप्तों के मार कभी, संयम में ध्यान लगाते हैं।
और निज स्वभाव में लीन हुए कर्मों का अंश मिटाते हैं॥

दोहा—चौरासी आसन किये, इसी तरह मुनिराज।
विचरत कोटि शिला पर, जा पहुँचे महाराज॥

चौ०—निश्चल मन कर ध्यान लगाया, शुक्ल ध्यान शुभ चौथा पाया
अवसान कर्म चारों का आया, घातक जिनका नाम बताया॥

दृढ़ ध्यान में राम को देखा है जिस बार।
उसी समय सीतेन्द्र ने, ऐसा किया विचार॥

दोहा—श्री रामचन्द्र का हो गया, यदि निर्विघ्न ध्यान।
तो फिर लगती देर क्या होने में ब्रह्म ज्ञान॥

कर्म काट फिर इसी जन्म से सिद्ध अवस्था पावेंगे।
हम रह यहां गोते खाते वह मोक्ष धाम का जावेंगे॥
बहतर है श्री रामचन्द्र का यह शुभ ध्यान चला लेऊँ।
यस गिरा मोक्ष की श्रेणी से अरसा मैं साथ बना लेऊँ॥

दोहा—उसी समय गये राम पै सीतेन्द्र तत्काल।
बसन्त ऋतु सम फर दई अद्भुत ऋतु कमाल॥
गैंदा गुल दाड़िम गुलाब के हैं, फूल कहीं पर खिले हुवे।
और जूही बेल चमेली के कमुकम से सारे मिले हुवे॥
ये निम्बू और नारंगी खिरनी आम अनार का पार नहीं।
और इनसे बढ़कर मृत्युलोक में लगे और कहीं नार नहीं॥
हैं चौदह लाख हरि की जाति कहा तलक गिनवायेंगे।
वन नंदन वन से अधिक समझ, दृष्टान्त समझायेंगे॥

दोहा—मलयाचल से आ रही, लेकर मरुत सुगन्ध।
कोयल शब्द सुना रही, भ्रमर करें आनन्द॥
सीता से बढ़कर किया, यौवन और शृंगार।
जो देखे उसके बिना, समझे सभी असार॥

मन कुबेर कुमरी समान, सुन्दर स्वरूप बनाया है।
मानिंद मोर की गर्दन के नेत्रों में सुरमा पाया है॥
और आभरण न मिले कहीं ऐसे सब अंग पहिने हैं।
इसी तरह से यथा योग्य, तन पर धारे सब गहने हैं॥

दोहा—मत्यु लोक में न हुआ न होगा ऐसा रूप।
सब सुर धारण किया सुन्दर रूप अनूप॥

जैसा साज बाज के सहित ध्यान के राम सामने खड़ी हुई।
था हार गले में हीरों का चौंपें बालों पर खिली हुई॥
अग्रभाग में स्तनों के नागिन की पट्टियें झुकी हुईं।
सब रंग बिरंगी पंक्ति जवाहर की साड़ी पर जड़ी हुईं॥
वे छह राग छत्तीस रागनी, जसे कोयल कूक रही।
सब नाच रंग स्वर ताल ग्राम में, जरा मात्र न चूक रही॥

दोहा—वनवास प्रकार के, बजें वादित्र सार।
नाटक तन मन किये सब बत्तीस प्रकार॥

असली रंग पर चढ़ नहीं सकता नकली रंग।
राम चले नहीं ध्यान से सीतेन्द्र हुआ दंग॥
रग-रग बहुत जिन्हें अग्निम बने कुरंग।
ज्ञान भी सर्वज्ञ का असली एक सुरंग॥

यह रंग जिन्हों पर चढ़ा हुआ ना और कहीं पर चढ़ता है।
वह अमल में सब होते फीके इसका नित्य गौरव बढ़ता है॥

वीतराग का नाम रख कर गया सो ऋषि कहाते हैं।
बाकी दुनिया में पेटू सब क्या, क्या नहीं ढोंग रचाते हैं॥
भेष भूप का धरें कई पर, भूप नहीं बन सकते हैं।
नारी का रूप अनेक धरें एक, पुत्र नहीं जन सकते हैं।
असली के सम्मुख आखिर में, नकली का गौरव गिरता है।
सूर्य प्रकाशी कमल जिस तरह, रवि बिना नहीं खिलता है॥
शुद्ध असली रंग हजारों बारी, धोने से नहीं जाता है।
और किसी तरह भी उसके ऊपर, धब्बा दाग न आता है॥
जिन पर न असली रंग चढ़ा विषयों से वह भी हार गये।
रुल गये अनन्ते चक्कर में, शुभ करनी खाक में डार गये॥
स्वर्ण को जितना सेक लगे, उतना ही निर्मल थाता है।
और चोट हजारों लगने पर, बहुमूल्यवान बन जाता है॥

दोहा—राग द्वेष को राम ने, बिल्कुल दिया मिटाय।
काम वासना सब तरह धूल में दई मिलाय॥

वीतराग हुए भी राम, अब कौन दिखाने वाला है।
वज्र हीर की हस्ती को अब कौन मिटाने वाला है॥
जब सीता का भाव रंग गायब सब कुछ बेकार हुआ।
फिर मिष्ट वचन से सीता ने हो कर के यों लाचार कहा॥

दोहा—पिछली जो गलती भई क्षमा कीजिये नाथ।
फेर नहीं ऐसा कभू रहूँ आप के साथ॥

उस समय आपकी आज्ञा से, मानी अज्ञान में भूल गई।
शोभन सब उत्तम भाग तजे क्या मेरी इज्जत धूल रही॥
अब के तुम मुझको अपनाओ फिर कभी न धोखा खाऊँगी।
कृपा करदो अब मेरे स्वामी, फिर वन दुख मचाऊँगी॥

दोहा—धन बल सुत मत कुटुम्ब सब क्यों छोड़े भरतार।
पर भोगों का त्याग कर, उठा लिया सिर भार॥

एक दूसरे से बढ़कर, संसार के सुख मनभाती है।
सब चटकमटक कर बात विषय की काम जगाना चाहती है॥
पत्थर की मूर्त से भी क्या, कुछ कभी किसी ने पाया है।
इसी तरह सीतेन्द्र ने भी, अपना समय गंवाया है॥

राम केवली

दोहा—निश्चल जब मुनिराज का, पूर्ण हुआ ध्यान।
कर्म घाति घातक हने प्रगटा केवल ज्ञान॥

जा पूर्व दिशा से निकल रहा, भानु तमनाश करण हारा।
प्रारम्भ ध्यान में रामचन्द्र ने, था पद्मासन को धारा॥
माघ सुदि शुभ द्वादशी के दिन केवल प्रगटा आकर के।
तब उत्सव किया महा भारी जहां सुर असुरों ने चाह करके॥

दोहा—सीतेन्द्र चरणों में गिरा पांचों अंग निमाय।
नमन इस तरह से किया सब अपराध खमाय॥
किया आपने हे प्रभु! जन्म मरण का अन्त।
जिसमें अब मेरे सभी कथन करो वृत्तान्त॥

शंबुक रावण लक्ष्मण का भी, हाल पूछना चाहते हैं।
राग द्वेष में फँसे जीव कर कर्मबन्ध दुःख पाते हैं॥
वीतराग जिन बिन सभी, संशयों को मेटन हारा है।
सर्वज्ञ बिना इस लोकालोक का कोई न देखन हारा है॥

दोहा—जीव अनादि काल से कर रहा उल्टा खेल।
राग द्वेष है जब तलक छुटे न तब तक मैल॥

कोई मित्र के लिए कर्म करता, कोई अन्य की खातिर मरता है।
और मिश्रित कार्य करे कोई संसार में विपदा भरता है।

सत्य शील संतोष क्षमा, शुभ कर्मों से मित्र करता है।
फिर क्रोध मान के वशीभूत हो, नीच गति को पड़ता है॥

दोहा—शम्बुक रावण लक्ष्मण भी, करके द्वेष महान्।
बस इन्द्र के का पसे तीनों ही महमान॥

चौथी पृथ्वी पर तीनों का, युद्ध परस्पर होता है।
और वैसा ही फल मिले जिस तरह बीज आत्मा बोता है।
श्री लक्ष्मण रावण निकल यहां, से मत्यलोक में आवेंगे॥
यहां 'विजय पुरी नगरी में दोनों मनुष्य जन्म को पावेंगे।

दोहा—विजयपुरी में 'सुनंद' के, रोहिणी नामा नार।
जन्मेंगे यहां आन के दोनों सुत सुखकार॥

नाम 'सुदर्शन लक्ष्मण का, रावण जिनदास कहावेंगे।
शुद्ध दयाव्रत को पाल स्वर्ग, पहिले में दोनों जावेंगे॥
'विजया' नगरी में फिर दोनों सुरपुर से चल कर आवेंगे।
फिर 'हरिवास क्षेत्र में जाकर, जन्म युगल शुभ पावेंगे॥

दोहा युगल जन्म के भोग सुख लेंगे सुरपुर जाय।
आगे का वृत्तान्त भी सुनलो कान लगाय॥
'विजयापुर' का भूपति कुमार पाल' गुणखान।
पटरानी लक्ष्मीवती' चौसठ कला निधान॥

'जयप्रभ' और जय कान्त बनेंगे, लक्ष्मी के सुत आकर के।
वह संयम व्रत कर स्वर्ग जगा लेंगे फिर दोनों जाकर के॥
इस अवसर में स्वर्ग जाय, शुभ भरत क्षेत्र में आवोगे।
और 'सर्वरत्नमति चक्रवर्ति' ऐसा शुभ नाम कहावोगे॥

दोहा—सुरपुर तज तेरा बने रावण राज कुमार।
'इन्द्रायुध' शुभ नाम से होगा यश विस्तार॥

कंचन पुत्र बन 'मेघरथ' नाम कहे सुखकार।
प्रति पालक दुःखी जनों का धर्मी रूप अपार॥
चक्री तुम संयम लेकर के, वैजयंत स्वर्ग में जावोगे।
यहाँ एक तीस सागर आयुष्य का, अनुपम स्वर्ग सुख पावोगे॥
। उसी जन्म में इन्द्रायुध, तीर्थंकर, गोत्र बांधेगा।
। ध्यान समाधि धार सभी कर्मों पे तरकश साधेगा॥

दोहा—अगले भव में आन फिर, जिन पद होगा धार।
भव्य जीव होंगे कई, वाणी सुन भव पार॥

उसी समय वैजयंत छोड़, तुम गणधर पदवी लेवोगे।
संसार तरोगे आप और, उपदेश शरण भव देवोगे॥
घनघाती सब कर्म काट केवल, प्रकटेगा आकर के।
फिर मोक्ष पद पावोगे, सैलेशी भाव जमा करके॥

दोहा—संयम लेकर मेघरथ, पहुँचे स्वर्ग मंझार।
आगे इसका भी सुनो, करके जरा विचार॥
पुष्कर नामक द्वीप है, पूर्व विदेह के मांय।
पदवी चक्री की लहे मेघरथ वहां पर जाय॥

तीर्थंकर पद भोग उसी, भव में निर्वाण सिधारेंगे।
कर्म अरिदल का बिल्कुल ही, सर्वनाश कर डारेंगे॥
उसी दिवस से सव्वसफली, सादि अनन्त कहलावेंगे।
शुभ अष्ट महागुण वाली पदवी, सिद्ध अवस्था पावेंगे॥

दोहा—सीतेन्द्र को शुभ हुआ सभी पदार्थ ज्ञान।
नमस्कार कर चल दिये तीनों को सममान॥

आ देखा चौथी पृथ्वी पर, तो खूब परस्पर लड़ते हैं।
शंबुक रावण 'क्रोधातुर हो लक्ष्मण ऊपर आ पड़ते हैं॥

रूप वैक्रिय धार धार, आक्रमण परस्पर करते हैं।
'शुक्ल' कर्मना छूट सकें सब, करनी के फल मरते हैं॥

दोहा—जिह्वा कर सकती नहीं सभी दुःखों का बयान।
देख हाल सुर यों लगा दोनों को समझान॥

दोहा—पिछले कर्मों से मिला तुम्हें बुरा स्थान।
इस से आगे किस जगह, करना है प्रस्थान॥

जन्मान्तर से तुम दोनों आपस में लड़ते आये हो।
अब तीन खण्ड का क्रोध ऐश्वर्य पास यहाँ पर पाये हो॥
द्वेष ईर्षा में न कोई सुखा, सुखी न होवेगा।
नर्क निगोदों में फिर फिर यह जीव हमेशा रोवेगा॥

गाना

कभी मिलता नहीं आराम जीवों को लड़ाई में।
सदा रहता है आनन्द प्रेम और दिल की सफाई में॥
द्वेष अरु ईर्ष्या निन्दा इन्हों को नीच करते हैं।
जो उत्तम हैं वह रहते हैं क्षमा और शीतलाई में॥१॥
अनादि काल से यह जीव लड़ते भिड़ते आये हैं।
इसी कारण तो फिरते हैं नर्क तिर्यच-खाई में॥२॥
क्रोध और मान में आकर अमोलक रत्न तन खोया।
यहाँ पर भी परस्पर लड़ रहे अज्ञानताई में॥४॥
पतित जीवों का दुःख हरती, सदा सर्वज्ञ की शिक्षा।
तुम्हें कल्याण कारी 'शुक्ल' आकर के सुनाई है॥५॥

दोहा—कथन राम सर्वज्ञ का समझाया जिस वार।
शम्बुक रावण लछन ने गुस्सा दिया निवार॥

निपम भमादि भटल नहीं, टल सकता सारे भूमि फर्षों का।
भति महा बुरा है कारागार, यह घोर भसंख्यों वर्षों का॥
सीतेन्द्र के कहने से कुछ इतना हुआ सुलाशा है।
भापस में लड़ने भिड़ने का सब ऊपर का दुःख टाला है॥

चौ—दश विध क्षेत्र वेदना भारी, भुगत रहे कर्मन अनुसारी।
राग द्वेष न करी सवारी, सीतेन्द्र ने गिरा उचारी॥

देख तुम्हारा कष्ट यह मुझ को कष्ट अपार।
किन्तु भनादि नियम के, आगे हूँ लाचार॥

तुम सब को यहां से लेजा कर पहुंचा दूं स्वर्ग ठिकाने में।
न हुआ न है न होगा। ऐसा, आगे किसी जमाने में॥
भ्रम मिटाने के लिये अभी, यह सो कर के दिखलाता हूँ।
अब स्वर्ग पुरी में ले जाने का निज कर पर बिठलाता हूँ॥

दोहा—ऐसा कह सीतेन्द्र ने तीनों लिये उठाय।
पारे की मानिन्द पड़े, हलक हले को जाय॥

पुरुषार्थ किया उठाने को, फिर उसी जगह पर पाये हैं।
और उल्टी अधिक वेदना, होने से तीनों घबराये हैं॥
अशुभ कर्म के भोगे बिन न हुआ कभी छुटकारा है।
लाचार फेर उन दुःखियों ने उस आशा वचन उचारा है॥

शेर—रावण आदि

दिल तो समझता था विपत्ति, भाग सारी जावेगी।
क्या खबर थी ऐसा करने से अधिकतर आवेगी॥

दोहा—जो करता सो भोगता कर्म शुभा शुभ बन्ध।
टाल कोई सकता नहीं आप गये भग गन्ध॥

आप के करुणा करने में बिल्कुल न कोई कसर रही।
कर्मों का कर्जा दिये बिना छुट सकता सुर या नरार नहीं॥
फिर यह तो चौथी पृथ्वी है यह सकती कोई अपील नहीं।
प्रपंच मूठ को चला सके ऐसा कोई यहां वकील नहीं॥

दोहा—तुमने हम पर कर दिया अद्भुत करुणा काम।
हमने देना है सभी कर्मों का भुगताम॥

बस कारण हमारे तुमने भी अपना सब सुख भुलाया है।
और भूत भविष्यत् के जन्मों का आकर हाल सुनाया है॥
सुर पुर को प्रस्थान करो, अब विनती यही हमारी है।
ऊपर का दुःख हटाया कुछ यह भी सब कृपा तुम्हारी है॥

दोहा—देवकुरु में फिर गये सीतेन्द्र तत्काल
भामंडल के जीव को, बतलाया सब हाल॥
रावण शम्बूक लखन यह तीनों नरक के द्वार।
सीता सुख में लीन है अच्युत स्वर्ग मंझार॥

श्रीराम ऋषि केवल ज्ञानी ने, दुनिया में प्रचार किया।
संसार समुद्र से बचा कर, भव्य जनों का पार किया॥
पच्चीस वर्ष तक केवल की पर्याय जिन्होंने पाली थी।
पाली गती हंस निराली सम और छवि अति मतवाली थी॥

दोहा—पन्द्रह सहस्र वर्ष की सब आयु का सार।
तप जप संयम से दिये कर्म असाधि हार॥

स्थिर कर सब योग अयोगी बने फिर मोक्ष नगर जा वास किया॥
ना वापस आना पड़े कभी, यह शुद्ध ठिकाना खास लिया॥
रोग शोक का नाम नहीं ना मृत्यु जनम यहां पर है।
जैसा है परमानन्द यहां ऐसा न कहीं जहां पर है॥

नियम अनादि अटल नहीं टल सकता सारे भूमि फर्षों का।
अति महा दुरा है कारागार, यह घोर कर्मस्थों वर्षों का॥
सीतेन्द्र के कहने से तुम इतना हुआ सुखासा है।
आपस में लड़ने भिड़ने का, सब ऊपर का दुःख टाला है॥

चौ —इस विध क्षेत्र वेदना भारी, भुगत रहे कर्मन अनुसारी।
राग द्वेष ने करी ख्वारी, सीतेन्द्र ने गिरा उचारी॥

देख तुम्हारा कष्ट यह मुझ को कष्ट अपार।
किन्तु अनादि नियम के, आगे हूँ लाचार॥

तुम सब को यहां से लेजा कर, पहुँचा दूं स्वर्ग ठिकाने में।
न हुआ न है न होगा। ऐसा आगे किसी जमाने में॥
भ्रम मिटाने के लिये अभी, यह भी कर के दिखलाता हूँ।
अब स्वर्ग पुरी में ले जाने का, निज कर पर बिठलाता हूँ॥

दोहा—ऐसा कह सीतेन्द्र ने तीनों लिये उठाय।
पारे की मानिन्द पड़े हाथक उधे को जाय॥

पुरुषार्थ किया उठाने का फिर उसी जगह पर पाये हैं।
और उल्टी अधिक वेदना, होने से तीनों घबराये हैं॥
अशुभ कर्म के भोगे बिन, न हुआ कभी छुटकारा है।
लाचार फेर उन दुःखियों ने उस आरा मधुर उचारा है॥

शेर—रावण आदि

दिल तो समझता था विपत्ति, आज सारी जायगी।
क्या खबर थी ऐसा करने से अधिकतर आयेगी॥

दोहा—जो करता सो भोगता कर्म शुभा शुभ बन्ध।
टाल कोई सकता नहीं भाप गये मतिमन्द॥

आप के करुणा करने में बिल्कुल न कोई कसर रही।
कर्मों का कर्जा दिये बिना छुट सकता सुर या नरार नहीं॥
फिर यह तो चौथी पृथ्वी है चल सकती कोई अपील नहीं।
प्रपंच झूठ को चला सके ऐसा कोई यहां वकील नहीं॥

दोहा—तुमने हम पर कर दिया अद्भुत करुणा दान।
हमने देना है सभी कर्मों का भुगतान॥

बस कारण हमारे तुमने भी, अपना सब सुख भुलाया है।
और भूत भविष्यत् के जन्मों का आकर हाल सुनाया है॥
सुर पुर को प्रस्थान करो, अब विनती यही हमारी है।
ऊपर का दुःख हटाया कुछ, यह भी सब कृपा तुम्हारी है॥

दोहा—देवकुरू में फिर गये सीतेन्द्र तत्काल
भामंडल के जीव को, बतलाया सब हाल॥
रावण शम्बूक लक्ष्मण यह तीनों नरक के द्वार।
सीता सुख में लीन है, अच्युत स्वर्ग मंझार॥

श्रीराम ऋषि केवल ज्ञानी ने दुनिया में प्रचार किया।
संसार समुद्र से पका कर भव्य जनों का पार दिया॥
पच्चीस वर्ष तक केवल की पर्याय जिन्होंने पाली थी।
चाली गती हंस निराली सम और क्षमि अति मतवाली थी॥

दोहा—पन्द्रह सहस्र वर्ष की सब आयु का माप।
तप जप संयम से दिये कर्म अनादि ताप॥

स्थिर कर सब योग अयोगी बनें फिर मोक्ष नगर जा धाम किया॥
ना आवे काल का पहुँच सके यह शुद्ध ठिकाना थाम लिया॥
रोग शोक का नाम नहीं ना मृत्यु जन्म यहां पर है।
वैसा है परमानन्द यहां ऐसा न कहीं जहां पर है॥

दोहा—राम ऋषिवर हो गये, साधी और अनन्त।
कष्ट मेल निर्मल बने, पूर्ण सच्चिदानन्द ॥

नमो नमो श्री राम ऋषिवर, अजर अमर पद पाया है।
अरिहन्त देव की शिक्षा ने ही, सच्चिदानन्द बनाया है॥
जिनवाणी सुखदानी को जो हृदय "शुक्ल" जमावेगा।
वो समझ लेवो सच्चिदानन्द बन वही परम पद पावेगा॥

गाना शिक्षा

शिक्षा दे रही जी हमको, रामायण सुखदाई ॥टेक॥
सीता सती ने पति धर्म पर, अपनी जान लगाई।
वनवास में गई पति संग राज्य मोह छिटकाई ॥१॥
लक्षण और तलवार के डर से जरा नहीं घबराई।
इसीलिये श्री रामचन्द्र के, प्रथम दर्जे आई ॥२॥
रामचन्द्र ने पितु की आज्ञा, अपने शीश उठाई
राज्य तिलक को छोड़ दिया प्रतिज्ञा खूब निभाई ॥३॥
राम लखन का प्रेम था कैसा, दूध नीर सम भाई।
गये साथ में रामचन्द्र के, सेवा खूब बजाई ॥४॥
सुग्रीव भूप की मित्रता ने सर्वस्व दिया लगाई।
पद भूप रावण का छोड़ा, हुवा राम अनुयायी ॥५॥
स्वामी भक्ति में हनुमत पूरा, न्याय नीति मन लाई।—
विपत्त समय में रामचन्द्र की कीनी खूब सहाई ॥६॥
विभीषण की निष्पक्षता प्रसिद्ध जगत् में भाई।
अन्यायी बंधु को तज के, न्याय नीति चित्त लाई ॥७॥
बुद्धिमती मंदोदरी रानी समझाया अधिकाई।
मरम गर्म कह वचन पति को जरा नहीं घबराई ॥८॥

सिया हरण के समय जटायु, स्वामी भक्ति दिखलाई ।
गया रावण के सम्मुख लड़न अपनी जान गवाई ॥६॥
युद्ध वीरता में था पूरा, हट धर्मी अधिकाई ।
राज काज में लुब्ध था रावण, पहुँचा दुर्गति माई ॥१०॥
शूर्पनखा सी बना न नारी, दुष्टन यत में आई ।
विषय भोग की करी विनती राम लखन ठुकराई ॥११॥
भरत राम ने राज तिलक की कैसी गेंद बनाई ।
आज कल के मनुष्य सुना दानों ने ठोकर खाई ॥ ॥
आचार चतुर्दश वर्ष भरत ने, सेवा राज्य बजाई ।
फेर त्याग संसार "शुक्ल" तप जप से मुक्ति पाई ॥१२

गाना—अरिहन्त देव के सत्य धर्म पर, जो जन चित्त लगावेंगे ।
रामचन्द्र की तरह काट सब कर्म मोक्ष पद पावेंगे ॥टेक॥
वचन पिता का पाला जिसने राज्य निछावर कर डारा ।
वनवास का जिसने महाकष्ट, कैसा अपने सिर पर धारा ॥
सीता हर के दशकंधर ने, फिर किया जिगर पारा पारा ।
चाहे पकड़े की लाग रक्खी रघुवंशी नहीं धर्म हारा ॥
माता पिता गुरुजन के सेवक, अमर लोक में जावेंगे ॥१॥
लगा बिभीषण को जब मारण रावण शक्ति कर में तान ।
मित्र बचाया निज भाइ को दिया मौत के मुख में जान ॥
आपत्ति का नहीं उस समय दुनिया को है इसका ज्ञान ।
किया वचन पूरा मित्र को संकट का दिया दान महान ॥
पालें जो इस तरह मित्रता वही परम सुख पावेंगे ॥२॥

तीन लोक की तज प्रभुताई, धार लिया फिर संयम भार ।
केवल पाया धर्म दिपाया, तप जप कर आगम अनुसार ॥
अष्ट कर्म दल को संहारा, क्षमा खड्ग निज कर में धार ।
गौरव पाया कर्म खपाया, तरे आप औरों को तार ॥
सम दम शम को धार हृदय में, सच्चिदानन्द कहावेंगे ॥३॥

कष्ट सहे पर शील न त्यागा यह था निज शिक्षा का असर ।
कर्म भोगने पड़े सभी को, बच नहीं सकता कोई बशर
अग्नि कुंड में पड़ी नीर हो गया सभी को पड़ा नजर ॥
स्वर्ग बारहवें पहुँच गई तब संयम में न रक्खी कसर ।
सत्य शील इस भव पर भव में सुख अनुपम दिखलावेंगे ॥४॥

दशरथ के पुत्रों में देखो कैसा प्रेम निराला था ।
मानिन्द गेंद के अवधपुरी का राज ठिकर कर डाला था ॥
प्राणों से भी बढ़ करके भाई का भाई प्यारा था ।
तीन लोक को जीत सभी तो ताज शीश पर धारा था ॥
प्रेम शील सन्तोष 'शुक्ल' यह शुभ गुण सभी बढ़ावेंगे ॥ ५ ॥

श्री पूज्य श्री सोहनलाल जी भव्य जनों के तारन हार ।
वर्तमान में परम पूज्य श्री काशीराम जी का आभार ॥
संगीत यह श्रीरामचन्द्र का 'शुक्ल' मुनि शुभ हुआ तैयार ।
भूल चूक रह गई सभी सज्जन गण गुण वाले करें सुधार ।
इस भव पर भव में सुखदाई जो जन पढ़ सुनावेंगे ।
रामचन्द्र की तरह आठ सब कर्म नाश पद पावेंगे ॥ ६ ॥

दोहा—सम्वत् शुभ चौबीस सौ वीर जिनवर जान ।
ठीक अगहन सम्पन्न यह। प्रभु वीर निर्वाण ॥

बासठ उत्तर और चौबीस सो सम्वत् यह प्रचलित कहाता है।
उन्नीस सौ छत्तीस यहां पर सन ख्रिस्त में आता है॥
१९३६ ई० स०

कार्तिक छब्बीस प्रविष्टा यहां और दश तारीख नवम्बर है।
तिथि द्वादशी मंगलवारी शोभन शरद ऋतुवर है॥
सम्वत् शशि मह समम यहां न्यून एक दिगि जाम।
वहि अङ्क उत्तर धरा विक्रमादित्य प्रमाण
नहीं बुद्धि नहीं वचन बल साहित्य का नहीं ज्ञान।
क्षमा भूल सब कीजिये सुजन कवि गुणधाम॥
गुरु कृपा से होश्यारपुर किया प्रथम चौमास।
'शुक्लचन्द्र' चाहता सदा उपाय मोक्ष सुखधाम॥
सिद्ध हुए भी राम जो कर्मों का कर अन्त।
गुरु कृपा से हो गया आज समाप्त ग्रन्थ॥

ओम् (ॐ) महिमा

(तर्ज—आम् अनक धार धाल)

ओम् मं हो नित्य हीम प्रेम के पुजारी ॥ टेक ॥
बीज मंत्र यही सार । प्राणी मात्र का आधार ॥
पांचों पदे इस में सार । शुद्धनिर्विकारी आम् ॥१ ॥
सर्वज्ञ शास्त्र को पहिचान । अर्थ योजना व्याख्यान ॥
गाते गुण गण सुजान । कर्म विष हारी ॥ आम् ॥२॥
ध्यानी ध्याते हैं हमेशा । काटने को सब क्लेश ॥
इसके वश में है सुर सुरेश । काम पाश हारी । ओम् ॥३॥
मोक्ष गामी करते जाप । काटने को कर्म पाप ॥
आत्मा स्वयं हो आप, ओम् हित कारी ॥ ओम् ॥४॥
प्राणी मात्र इसका नाम । जो जपे हो सिद्ध काम ।
अन्त पावे मोक्ष धाम । 'शुक्ल" ध्यान धारी ॥ओम् ॥

—0—

शुक्ल मोती

मनुष्य जन्म अनमोल है वीतराग गुण गाया कर ।
ज्ञानामृत लिया कर, आत्म गुण विकसाया कर । टेर ।
निज गुण तज कर अब प्राणी तू क्यों परगुण में राच रहा,
नाशवान वैभव संमझ कर गरज मोरमत माच रहा ।
झूठी ममता छोड़ कर, नर तन सफल बनाया कर ॥ १ ॥

चौरासी कर पार मनुष्य तन का पाना कोई खेल नहीं
पूर्व संचित पुण्य उदय का, होता जब तक मेल नहीं
दुर्गति भय जंजाल से अपना आप बचाया कर ॥२॥
जननी-जन्मभूमि जिनवाणी, ने कितना उपकार किया
मत बदला तून भी कब, कितना सेवा सम्मान दिया
इतिहासों की लाइन में मत अपना नाम लिखाया कर ॥३॥
दश धर्म संग गुरु सेवा बिन तैंने मौज उड़ाई क्या,
स्वधर्मी भूखा अनाथ फिर तैंने रोटी खाई क्या,
परमार्थ कुछ भी किये बिन भोजन तू मत खाया कर ॥४॥
खेल तमाशा गायन सिनमा विषयों में गलतान रहा
खान पान मज्जन शृङ्गार कर, बाग सैर सुख मान रहा,
इन झगड़ों को छोड़ कर सत्संग में आया कर ॥५॥
षट् द्रव्यों में चेतन द्रव्य तू निश्चय राम अनूपम है
त्रियारत शुद्ध वा शुभ परणामा यागाभ्यास अनूपम है
तज विभाव का बाना निज स्वभाव में आया कर ॥६॥
करुणा प्रमोद मैत्री माध्यस्थ का जिस घट में संचार नहीं
दान शील तप भाव बिना होता हरगिज भव पार नहीं
इन प्रश्न आराधन कर हर्ष मन परसाया कर ॥७॥
इस शास्त्र इतिहास छान कर वैभव कितके साथ गया
राय रंक जिम जिसका इरादा अन्त पसार हाथ गया
पर परणति का त्याग कर, 'शुक्ल' ध्यान शुद्ध ध्याया कर ॥८॥

इति रामायणव्याख्यान समाप्त
ॐ शान्ति शान्ति शान्ति

प्राप्ति स्थान

१—पूज्य श्री सोहनलाल
पुस्तक धर्मोपकरण सामग्री भण्डार अम्बाला

२—लाला प्यारेलाल ओमप्रकाश पीढ़ी वाले
नया बांस देहली